

॥ धा ॥

इलाजुलगुरवा

हिन्दी भाषा

जिसको

भीयुत मुन्शी रामनारायण भार्गव सम्पादक मथुरा मेसने
अत्यन्त परिश्रम के साथ बहुतसा द्रव्य व्यय करके कई
भाषा से देवनागरी भाषा में भीयुत हकीम लाडिली-
मन्नाद गुप्त से चर्चा कराकर

हस्व खादिश बाबू सुदर्शनलाल भार्गव

शुक्रसेखर पुण्ड बनरल आईर सपलायरस

मथुरा निवासी के

वम्बई

दाएँ में रामनारायण प्रेस में बाबू राधाधरमण भार्गव के प्रयत्न
से मुद्रित कराया ।

इस लाकीक महकूत है ।

प्रथम बार
१२०० निरुद

सन्मत १९०० भाषा

{ मूल्य प्रति पुस्तक १।।

सन १९२४ ई०

प्रस्तावना ।

श्रीकान्तललिताननमधुरिषु कृष्ण भजेहं सदा वेश्य

चेपण तत्पर प्रियकर धन्वतर माधवम् । दुःखघ्न

कामलाक्षमिन्दु बदन मंजीर पाद हरिं गोपाल

यमुना प्रिय व्रतपतिं वैद्यं महा सुन्दर मू. १

सब स्तुति उसी निर्दिष्ट परमेश्वर परम वैद्य व योग्य हैं जिसने अपनी माया और शक्ति से समारथी रचनाकर चौरासी लक्ष यानि फों उत्पन्न किया और इस तुच्छ मनुष्य को सर्वोपरि बनाया और इसका जीवन-मरण आरोग्यता और रोग पर निर्भर रखवा और इस आरोग्यता की रक्षा तथा नष्ट हुई निरोग्यता की प्राप्ति के लिये अनेक आहार और औषधियों को उत्पन्न किया और उनकी परीक्षा तथा रोगों के लिये शारीरिक और आत्मिक वैद्यों को सर्वोत्तम किया और उनके जात्युपकार द्वारा कैसी आपत्तियों से मुक्ति दी जैसे कि धन्वतरि और भुक्त इत्यादि, कि जिन्होंने मनुष्य को मृत्यु के मुख से निकालकर अमृतफल खिलाया और वैद्यक विद्या को प्रकाशित किया और व्यास-कपिल-वृद्ध त्रेय इत्यादिक जिन्होंने अज्ञानरूप रोग को नष्ट कर के ज्ञानरूप अमृत पिलाया और ज्ञान विद्या का प्रकाश किया और उसी निराकार परब्रह्म ने कृपायुक्त जीव का समार सागर से पार उतारने के लिये श्रीकृष्णचन्द्र पादमकता युक्त पूर्ण अवतारत्वाधीश्वर गवद्गोता द्वारा जगत में अमृतजल की वृष्टि की अवसरमस्त वैद्य मात्र महाशयों से निबदन है कि वैद्यक विद्या जो मनुष्य की आरोग्यता की जड़ है आज तक बहुतसी पुस्तक निर्माण हुई परन्तु उनकी सिवाय संस्कृत पाठी वैद्यों व चर्द, फारसी जानने वाले हकीमों के कोई नहीं समझ सका इसलिये एक पुस्तक इलाजुलगुरवा नामक जिसमें हकीम गुलाम हमाम वैकुण्ठबासी ने बहुत अच्छे २ तुल्य लिखे हैं चर्द बापा से दखनागरी भाषा में उल्हास करार सब महाशयों की सुगमता के लिये पंडित रामनारायणजी सारथ भागव "पुत्र सन्धी रामधनदासजी भसिद्ध खुशनवीस" सम्पादक मथुरा ग्राम ने छापकर प्रकाशित किया था अब समस्त वैद्यमंत्रों से निबदन है कि एक मति इसकी अपन विद्यलय में रखकर लाभ उठावे ।

शुभचिन्तक सुदर्शनलाल भार्गव

बुकसेलर नया बाजार मथुरा

हलाजुल्लुगुरवा

सूचीपत्र मिनम्

खण्ड पहला

विषय	पृष्ठ	पंक्ति	विषय	पृष्ठ	पंक्ति
अध्याय पहला प्राकृतिक के			सातवा अध्याय सुसहित		
प्रकरण में	१	५	अर्थात् विरेचक की विधि में	१३	६
अध्याय दूसरा अपस्था के			पित्त पकाने की औपधि	१४	५
प्रकरण में	४	७	कफ पकाने की औपधि	१४	१०
अध्याय तीसरा उन दर्कारी			वायु पकाने की औपधि	१४	१५
खद बुद्धियों के प्रकरण में			पित्त के जुल्लोब की औपधि	१४	१६
जो प्राण रक्तक हैं	४	१५	कफ के जुल्लोब की औपधि	१४	२२
गुणअलादिक वृत्ता त में	६	४	वायु के जुल्लोब की औपधि	१४	२५
गुण जलपान के प्रकरण में	७	१९	रुधिर विकार की औपधि	१४	२८
गुण व्यायाम अर्थात् वह			गाढवा अध्याय फल के प्र० में	१५	१२
व्यायाम कि जिससे शरीर			नवा अध्याय हनामत, जलक		
को हरकत हावी है	६	८	अर्थात् पछने, सींगी और		
प्रथम स्नान विधि	१०	१	जाकों के प्रकरण में	१६	६
चौथा अध्याय नाडी के			दसवा अध्याय दोष आदिकी		
प्रकरण में	१०	१८	पक्वता के लक्षणों के प्र० में	१६	२०
पाचवा अध्याय मूत्र परीक्षा			ग्यारहवा अध्याय प्राण रक्षा		
के प्रकरण में	११	१०	के वर्णन में	१७	१५
दहा अध्याय मल के विषयमें	१२	२६	छहवा अध्याय हठ स्थाने की वि०	१८	१७

खण्डे दूमरा

विषय	पृष्ठ	पंक्ति	विषय	पृष्ठ	पंक्ति
इलाय सुदाअर याना दर्व			फमल मिरगी की दवाइयों		
सिर के बयान में	१८	२७	के घर्णन में जो मिरगी		
पित्त की मस्तक पीड़ा का ल०	१८	५	बालकों को होती है	३०	१
कफ की मस्तक पीड़ा का ल०	१८	५	फ० सक्ता यानी शून्य घाय		
वात की मस्तक पीड़ा का ल०	१८	१३	की औषधियों के प्रकरण में	३२	२७
इतरीफता कशनीजी जो			फसल भूत रोग की औष-		
मस्तक पीड़ा, औष और			धियों के प्रकरण में	३३	१८
नेत्र रोगों को गुणदायक है	१८	२०	फमल दवार, सदर अर्थात्		
दवा जो पित्त की मस्तक			मौर और चक्कर की औष-		
पीड़ा को गुण करे	२१	१२	धियों के प्रकरण में	३४	२१
जमाव, तिला गाँवा पतला			फसल सवात अर्थात् विशेष		
लेप जो मस्तक पीड़ा और			निद्रा की औषधियों के प्रकरण में	३५	६
आवासीसी को गुण करे	२४	२	फसल सदर अर्थात् विशेष		
गुलकन्द बनफरा जो मस्तक			जामर की औषधियों के प्रकरण में	३६	१६
पीड़ा, खाँसी और छाती			फसल फालिज अर्थात् पक्षा		
के रोगों को गुण करे	२६	२७	घात, लकवा अर्थात् टेढ़ा		
फसल सरसाम की औषधियों			मुँह पड़ जाने की औषधियों		
के घर्णन में	२८	२२	के प्रकरण में	३७	१

विषय	पृष्ठ	पंक्ति	विषय	पृष्ठ	पंक्ति
पत्तों का तेल जो पक्षाघात को गुण करे	४०	८	कमल रश्मिलाल अर्थात् शरीर के फटने की चिकि० में	४५	१३
तेल जो पट्टों को बल प्राप्त करे			कमल राशद अर्थात् कपन		
अर्द्धांग वात और सर्वांग वात के रोगों को गुण करे			वायु की चिकित्सा में	४५	१६
और वायु को पचावे	४०	१२	कमल नेत्र रोगों की चिकि०		
तेल जो सीस के रोगों को गुण करे	४०	१८	तत्ता में	४५	२१
तेल जो पक्षाघात और कम्पन वायु को दूर करे	४१	७	कमल रमद में	४६	१
तेल जो कफ और वात के रोगों को दूर करे	४१	१२	कमल अर्थात् रसौद की चिकित्सा में	४१	१०
सफूफ अर्थात् फफूँ जो अर्द्धांग वात और वायु के रोगों को गुण करे	४२	४	कमल सहर अर्थात् दिनोषी की चिकित्सा में	४२	१०
कमल मालिन्धिया अर्थात् वायु कम्पन की चिकित्सा में	४३	७	कमल सलाक अर्थात् पल- कों के माटे हो जाने की चिकि०		
अगलवेद की शिकजभीन			तत्ता में	५२	२२
आ वात के रोगों को गुण करे	४३	२४	कमल ननूक समाय अर्थात् मालिन्धिया की चिकि० में	५४	१८
			कमल भेग और पलकों की खुमली की चिकि० में	५६	२०
			कमल नेत्र की ज्योति पट जामे की चिकित्सा में	५६	१९

विषय	पृष्ठ	पंक्ति	विषय	पृष्ठ	पंक्ति
फसल सबल अर्थात् मोड़ा,			फसल कानमें पानी रहजाने		
फूलानकरह अर्थात् नाखूना			की चिकित्सा में	७०	८
और प्याज की चिकित्सा में	१८	१५	फसल नाक गों की चिकि० में	७०	१४
फसल जर्का अर्थात् फज्ज	६३	९	फसल जुकाम और नजले		
फसल गर्भ अथवा नासूर	६३	१४	की चिकित्सा में	७२	३
फसल शरह बोहसूल	६४	६	नास की पुरानी आघासीसी		
शुभ्र नायद अर्थात् प्रवाल	६४	१३	व बन्द नजल को खोलने	७४	८
फसल कर्ण रोगों की चिकि०	६४	२०	फसल नेनुक अनफ अर्थात्		
फसल तुशगोश पानी बहने			नाक की वासकी चिकित्सा में	७४	१३
पन की चिकित्सा में	६६	२६	फसल अतसह मुफरत	७४	२१
फसल कुरहगोश अर्थात् कान			फसल किसी वस्तु का सरोद		
के घाव की चिकित्सा में	६७	१२	जवान पर न आने की चि० में	७५	७
फसल अनफजारुल गोश			फसल दाँतों के रोगों की चि		
अर्थात् कानके बहने की चि० में	६८	१	कित्सा में	७५	१४
फसल बर्गगोश अर्थात् कान			फसल वजा स्नान अर्थात्		
की सुनन की चिकित्सा में	६८	९	दाँतों की पीडा की चि० में	७५	२०
फसल क्रमगोश अर्थात् कान			फसल जर्म अर्थात् दाँतों की		
में कीड़े पड़ जाने की चिकि० में	६८	१७	शुदी की चि० में	८१	१०
फसल त्वाशगोश और कान			फसल दाँतों के छेद होजाने		
में खुजली होने की चिकि० में	७०	५	की चिकित्सा में	८१	१७

विषय	पृष्ठ	पक्ति	विषय	पृष्ठ	पक्ति
फसल बच्चों के सहज ही दांत निकलने की वि० में	८१	२३	फसल छाती के रोगों की		
फसल जीम के रोगों की चिकित्सा में	८२	१	स्वाम रोग की वि० में	८२	१८
फसल सोजिश जमान और जीम की जलन की वि० में	८२	२	फसल सिल अर्थात् रुधिर धूकने के रोगों की वि० में	८५	१७
फसल मुह आलाने की वि० में	८२	१२	फसल हज्जह अतफाक अर्थात् बच्चों की पसली रोग की चिकित्सा में	८६	८
फसल मुह से लार बहने की चिकित्सा में	८४	६	फसल जातुलजब अर्थात् पहलू की पीड़ा की वि० में	८८	५
फसल शकाकलय अर्थात् होटों के फटने की वि० में	८४	१८	फसल सबाक अर्थात् खासी की चिकित्सा में	९८	२२
फसल अमराज हफक अर्थात् कठ रोगों के वर्णन में	८४	२५	फसल की सांसी की वि० में	९८	२८
फसल बहतुस्त अर्थात् गला पड़ाने की चिकित्सा में	८६	२७	फसल नफसदम अर्थात् रुधिर धूकने के रोग में	१०२	८
फसल खनाजीर अर्थात् कठ माछ की औषधियों के वर्णन में	८७	२४	फसल हृदय के रोगों अर्थात् होलदिली की चिकित्सा में	१०४	२४
फसल कठ में ओक बिगट जाने की चिकित्सा में	८९	७	फसल गरी अर्थात् अनेत-सवा की चिकित्सा में	१०८	२७
			फसल दाग रोगों की वि० में	१०९	११
			फसल नगा रोग की वि० में	११०	१७

विषय	पृष्ठ	पक्ति	विषय	पृष्ठ	पक्ति
फमल हैजे की चिकित्सा में	११६	१६	फमल फिरमानशिकम अर्थात्		
फमल हुचकी की चि० में	१२०	१७	पेट में कीड़े पडजाने की चि०	१५२	२
फमल अत्य अर्थात् विषेय			फमल खरुजुलमिकद अर्थात्		
प्यास की चिकित्सा में	१२२	१	काच निकलने की चि० में	१५४	१३
फमल उदर में दृष दही जम			फमल बवासीर की चि० में	१५५	१६
आने की चिकित्सा में	१२२	१७	फमल, गुरदे और मसाने के		
फमल माटी कोइका खाने			रोगों की चिकित्सा में	१६४	४
को मन चले उसकी चि० में	१२३	४	फमल सोजाक की चि० में	१६६	२३
फमल नी मिचलानेकी चि०	१२३	७	फमल पेशाब की विशेषता		
जिगरकी बीमारियोंकी चि०	१२५	१४	की चिकित्सा में	१७०	२६
फमल यरका के इलाज			पेशाबके बन्द होजानेकी चि०	१७२	५
अर्थात् फमलवायकी चि० में	१२६	२५	फमल पेशाब में रुधिर निक्-		
फमल अमरौज तहाल अर्थात्			लने की चिकित्सा में	१७३	१४
सापतिहली की चिकित्सा में	१३१	१८	फमल सौक बाह	१७३	२५
फमल अमत्रा अर्थात् आतों			नपुसकता की चिकित्सा में	१७४	३
की बीमारियों की चि०	१३४	१३	अडकाप के रोगों का वर्णन	१८४	१२
फमलजर्दन अर्थात् पेशाब			अडकाप की चिकित्सा	१८४	२१
वापेशक की चिकित्सा में	१४६	८	और रोग का वर्णन	१८६	२६
फमल कुलम अर्थात् वाय			गघ्यापा की चिकित्सा		
शूल पीडा की चिकित्सा में	१४७	२५	गर्मिणी की बिधि का व्या-	१८८	१५

विषय	पृष्ठ	पंक्ति	विषय	पृष्ठ	पंक्ति
गर्भरक्षक औषधि	१६६	५	सुख्तिबाद की चिकित्सा	२३५	७
उन औषधियों का वर्णन जो			दाद का वर्णन	१३५	२८
स्त्री को लाभ करें	२०१	२	दाद की चिकित्सा	२३६	९
गर्भापात की औषधियाँ	२०२	२१	सूखी तथा तर खुनलों की		
स्त्री धर्म में अधिक रुचिर			व्याख्या और चिकित्सा	२३८	६
स्राव का वर्णन और चि०	२०६	१७	कक्ष दुर्गन्धि की चि०	२४१	२२
श्रुतकाल के रुकजाने की			पाषों में अधिक पसीना		
व्याख्या और चि०	२०८	१३	आने की चिकित्सा	२४२	१
जोड़ पीड़ानुकरस आदि की			उगलियों क फूजने और		
व्याख्या और चिकित्सा	२१०	१२	उनकी खुबली की व्या० चि०	२४२	२२
उपदर का वर्णन	२१८	१	घावों की व्याख्या और चि०	२४३	१
उपदर की चिकित्सा	२१८	८	प्रत्येक प्रकार के घावों के		
कुष्ठ रोग की व्याख्या	२२९	१४	मरहमों की व्याख्यान में	२४६	१२
कुष्ठ रोग की चिकित्सा	२२५	१६	सगमरमर की घूलका मरहम	२४७	३
गज का वर्णन	२२८	५	दानों की चिकित्सा जा		
गज की चिकित्सा	२२८	६	वर्षात में होते हैं	२४६	१०
घसे या बहक का वर्णन	२२६	२३	नासूर की चिकि०	२५०	२४
मारव का वर्णन	२३३	२१	रुचिर बन्द करने की दवा	२५०	१५
मारव की चिकित्सा	२३३	२५	भाग से खल की चि०	२५३	१
सुख्तिबाद का वर्णन	२३५	१	चोट का वर्णन	२५३	२०
			चोट की चिकित्सा	२५४	३

विषय	पृष्ठ	पक्ति	विषय	पृष्ठ	पक्ति
अधिक मोटा होजाने की			उन औषधियों का वर्णन जो		
व्याख्या और चि०	२५५	२२	बाकों का निकलने से रोकें	२७१	११
टुबेला होजाने की व्याख्या			बाल गिरजाने की चिकित्सा	२७२	७
व चिकित्सा	२५६	६	ध्वरों का वर्णन	२७२	२०
मुहसि आदि की वर्णन व चि०	२५६	२३	तपेदिक का वर्णन	२८१	११
मुख का रंग बिगड़ जाय ताकी			तपेदिक की चिकित्सा	२८२	२
व्याख्या और चिकित्सा	२५७	१२	बौहरान की व्याख्या	२८२	१२
भाई की चिकित्सा	२५८	१४	विष खाने का वर्णन	२८३	५
छीप की चिकित्सा	२५८	१६	विष खाने की चिकित्सा	२८३	१४
मससे तथा तिलकी चिकित्सा	२५८	२६	साँप के काटने की चिकित्सा	२८५	१३
बंद की व्याख्या और चिकि०	२६०	१४	बिच्छू के काटने की चिकि०	२८७	१२
सूजनों का वर्णन और चिकि०	२६१	२३	भिड़ के काटने की चिकित्सा	२८७	२४
कुमियों की चिकित्सा	२६५	३	छपकली के काटने की		
हाथ पाँव के फटजाने की			चिकित्सा	२८६	१०
व्याख्या और चिकित्सा	२६४	८	बाबले कुच के काटने की		
बहुते जू पड़जाने का वर्णन	२६७	०	व्याख्या और चिकित्सा	२८६	१२
शिर पर मे मुसी उड़ने की चि०	२६७	१०	चूहे के काटने का वर्णन	२८६	२३
नख रोगों की चिकित्सा	२६७	२१	जाँक के घाँव का वर्णन	२८१	५
ज्वर आदि का वर्णन	२६८	१	बन्दर के काँठ का वर्णन	२८१	८
का गले औषधियों का वर्णन	२६८	११	मच्छर दूर करने का वर्णन	२८१	१०

मौतत्सत्

श्रीपरमात्मनेनमः ।

॥ इलाजुल्ल गुरबा ॥

यह बात जानने योग्य है कि इस पुस्तक में दो खण्ड हैं पहला खण्ड नक्षत्री के प्रकरणमें और इसमें दस अध्याय हैं अध्याय पहला माकृत कावों के प्रकरण में अर्थात् वे कृत्य जो प्रकृति के भग मनुष्यमें प्रवेक्षित हैं और वे गिनती में सात हैं उनमें से एक अरकान अर्थात् तत्त्व है उसको कारसी में अनासर बोलते हैं वे चार हैं एक अग्नि कि प्रकृति जिसकी गरम और खुरक है दूसरी पवन कि वह गरम और खुरक है तीसरी पानी कि वह सर्दतर है चौथी मिट्टी कि वह सर्द खुरक है, दूसरा त्रिविध कृषिसे मिलान और प्रकृति है और उसके नौ भेद हैं चार भेद तो एक वचन अर्थात् गर्म, सर्द, गर और खुरक और चार द्विवचन अर्थात् गर्मखुरक और गर्मतर और सर्दखुरक और सर्दतर और नवां मोतदिल उसके दो भेद हैं मोतदिल सत्य और मोतदिल असत्य मोतदिल सत्यके शरीर नहीं होता तीसरी त्रिविध कृषि अखण्डाव अर्थात् दोष और वह चार हैं एक रुधिर अच्छा होता है और जो इन प्राणों में से कोई भी बदल जाय तो रुधिर बिना तबै है दूसरा पित्त कि जिसकी प्रकृति गर्म और खुरक है जो कि मुख्य रंग सदा मायल स्वाद में वैसा ऐसा पित्त निर्विकार होता है और चार पित्त विकार सहित हैं उनका नाम कारसी में मिरह सफरा सफराय मुही सफराय फिरासी सफराय अंगारी मिरह सफरा वह है जिसमें पतरी तरी मिले सफराय मुही वह है जिस में कि गाढ़ी तरी मिले और सफराय फिरासी वह है जिसके कुछ भाग सलके वाक्का जोड़ों में पित्तनाप उस पित्त का रंग गदने के सदृश होता है उसकी उत्पत्ति उदरमें है और जो पित्त कि सारा जल जाय उसका नाम अंगारी है वह रंग रूप में अंगारके सदृश होता है और प्रकृति उसकी विषके समान होती है और ज्वार

में उत्पन्न होती है तीसरी दोष कफ है उसकी प्रकृति सर्द और तर है निर्विकार
 कफ वह है जिसमें रुधिर घनजाने का पराक्रम होता है और विकारी कफ उस
 के स्वाद से अथवा उसकी चाशनी से जाना जाता है अर्थात् रुधिरके मिलाव
 से मीठा होजावे वह हलु अर्थात् मीठा कफ है और जो जले हुए पित्तसे मिलकर
 नमकीन होजावे वह माल है अर्थात् नौनियां कफ है अर्थात् गरमी से निर्धूलता
 पाकर खटा होजाय वह हाजिम अर्थात् खटा कफ है अर्थात् पनीली वस्तु के
 मिलने से फीका होजाय वह तुफह अर्थात् फीका कफ है अथवा वायुके मिलाप
 से कसैला होजाय वह अफस अर्थात् कसैला कफ है और जो चाशनी के द्वारा
 पतला है उसको पनिला कफ बोलते हैं, अथवा गाढ़ा हो उसको गाढ़ा कफ बोलते
 हैं और जो निर्विशेष गाढ़ा हो और निर्विशेष पतला हो उसे मौतदिल कफ बोलते
 हैं चौथा दोष है जिसकी प्रकृति सर्द और खुरक है निर्विकार वायु रुधिरकी कीच
 है और खटाई लिये हुये स्याहरग है और दोषयुक्त वात हर दोष के जल जाने
 से पैदा होती है कि जो वायु जलजाय और हर दोषका जलन उसकी चाशनी
 गाढ़ा होजाने की कहते हैं और दोषकी कमी और विषमता दोषके जलने से है।

गुण—दोष की उत्पत्ति मदाग्नि से होती है और आग्नि चार प्रकारकी होती
 है विषमाग्नि मदाग्नि समाग्नि और तीक्ष्णाग्नि प्रथम पाचन शक्ति बदरमें उसके
 गाढ़े रुधिर को फारसी में कैल्स कहते हैं दस्त उस की जड़ है दूसरी पाचन
 शक्ति कवद अर्थात् भिगर में उसके पचाव का नाम कैल्स है अर्थात् पतला
 रुधिर उसका मलमूत्र है तीसरी पाचनशक्ति असों में और चौथी पाचन शक्ति
 जोड़ों में और इन दोनों पाचनशक्तियों की उगलत प्रतीना है और मेल होकर
 मसामात और छूब नाफ कानों के द्वारा निकल जाती है तबियती कृतोंमें से चौथे
 जोड़ उनके दो भेद हैं एक बचन और बहुवचन एक बचन जोड़ों में से प्रथम
 हड्डी है दूसरे कुरा तीसरे पट्टे उनके दो रूप हैं एक मस्तक उपजा है उसके सात
 रूप हैं जोड़ों की हरकत और स्पर्श उन्हीं से है दूसरा जरवा हराम मग्ज से उगा
 है वह साढ़े इकतीस अर्थ हैं गर्दन के सिवाय हरकत और स्पर्श सब जोड़ों का
 उन्हीं से है चौथे बजले अर्थात् मांसके लोयड़े वह सब पानसों उन्तीस हैं पांचवे
 वतर अर्थात् तांत इन दोनों के यह गुण हैं कि जोड़ों को हरकत देते हैं छठे खात
 अर्थात् बचन वह भी महीन पट्ट है उनका गुण जोड़ों को बांध देता है सातवें
 शरायीन अर्थात् रुधिर की नली जो कि दिल से उत्पन्न हुई है और बरादी

नामी शिरयान क सिवाय रुधिर की नलियाँ दो पत्ती हैं उनके प्रसाप करके सारे शरीर में रुद्ध हैवानी अर्थात् स्वासा पहुँचती है आठवें अरोद्धह अर्थात् दक्षिण से और वह निगरसे चगी है वहभी सवरी शिरयान बरीदीके सिवाय कुपती है और सारे शरीर में रुधिर फैलाना इसका गुण है नवें वाशा अर्थात् फिस्ली जोड़ों की रसा करना इसका गुण है और इन सब जोड़ों की उत्पत्ति मनी अर्थात् बिन्दस है दसवाँ गोस्त अर्थात् मांस रुधिर के जमाव से पैदा होता है और चवीं रुधिर के पानी से पैदा होती है और मांस और चवीं के प्रताप से मनुष्य मोटा होता है ग्यारहवें स्वाक और बाक और नख हैं बाक इकीम इनको जानते हैं और बाक रोंगटे जानते हैं और असली जोड़ जिनसे मनुष्योंके प्राण बचते हैं वह तीन हैं दिल दिमाग और निगर और जिनसे मनुष्यकी नसल बाकीरहे वे चार हैं अर्थात् दिल दिमाग निगर और इन्द्रो पाँचवें तथियती कुत से स्वांस है रुद्ध अर्थात् स्वांस एक अच्छी पवन है जो कि दोपों के अच्छेपन से पैदा होती है और स्वांस के तीन भेद हैं दिमाग की स्वांस कि जिसका स्थान मस्तक है और दिली स्वांस कि जिसका स्थान दिल है और निगरी स्वांस कि जिसका स्थान निगर है और तथियती कुतों में से छटा पराक्रम है और उसके भी तीन भेद हैं एक मस्तकी पराक्रम कि वह मस्तक में है दूसरा दिली पराक्रम कि वह दिलमें है तीसरा निगरी पराक्रम कि वह निगर में है और जो आदमी के आहार में है निगरी वल खर्च पड़े उसका नाम शाजिमा अर्थात् आहारी वल है और जो तिलकी अर्थात् लुधाव चौड़ाव और गहराव में जो खर्च पड़े उसको नामियाँ अर्थात् नामी कहते हैं और जो बिन्दुमात्र खर्च पड़े उसको सुषलदह अर्थात् उत्पन्न करने वाला कहते हैं और इन पराक्रमों के नीचे वल जाकव अर्थात् आहार खँच लेने वाला वल और मासका अर्थात् रोकने वाला वल और शाजिमा अर्थात् पचाने वाला वल और दाफह अर्थात् निकालने वाला वल और मस्तकके पराक्रम के भी दो भेद हैं । मदरका अर्थात् स्पर्श और मदकहा अर्थात् हिलाने वाला । मदरफह जाहिर अर्थात् अर्थ पाँच प्रकारके हैं । प्रथम शब्द, दूसरा रूप, तीसरा स्पर्श, चौथा रस, पाँचवाँ गन्ध इनको फारसी में शमा, घसर, जौक, और लमस कहते हैं । और मदरफह वातिन अर्थात् भीतरे अर्थ भी पाँच हैं हिस मुरतर्फ, खयाल वदम, सुखीला और हाफिजा और मदरफह के दो भेद हैं वायसा और

में उत्पन्न होती है तीसरी दोष कफ है उसकी प्रकृति सर्द और तर है निर्विकार कफ वह है जिसमें रुधिर घनजाने का पराक्रम होता है और विकारी कफ उस के स्वाद से अथवा उसकी चाशनी से जाना जाता है अर्थात् रुधिरके मिलाव से मीठा होजावे वह हल्ल अर्थात् मीठा कफ है और जो जले हुए पित्तसे मिलकर नमकीन होजावे वह माल है अर्थात् नौनियां कफ है अर्थात् गरमी से निर्बलता पाकर खट्टा होजाय वह हाजिम अर्थात् खट्टा कफ है अर्थात् पनीली वस्तु के मिलने से फीका होजाय वह तुफह अर्थात् फीका कफ है अथवा वायुके मिलाप से कसैला होजाय वह अफस अर्थात् कसैला कफ है और जो चाशनी के द्वारा पतला है उसको पनीला कफ बोलते हैं अथवा गाढ़ा हो उसको गाढ़ा कफ बोलते हैं और जो निर्विशेष गाढ़ा हो और निर्विशेष पतला हो उसे मौतदिल कफ बोलते हैं चौथा दोष है जिसकी प्रकृति सर्द और सूखक है निर्विकार वायु रुधिरकी कीच है और खटाई छिये हुये स्याहरगु है और दोषयुक्त वात हर दोष के जल जाने से पैदा होती है कि जो वायु जलजाय और हर दोषका जलन उसकी चाशनी गाढ़ा होजाने को कहते हैं और दोषकी कमी और विषमता दोषके जलने से है।

गुण—दोष की उत्पत्ति भूमाग्नि से होती है और अग्नि चार प्रकारकी होती है विषमग्नि भूदाग्नि समान्ति और तीक्ष्णाग्नि मध्यम पाचन शक्ति उदरमें उसके गाढ़े रुधिर को फारसी में कैलस कहते हैं दस्त उस की जड़ है दूसरी पाचन शक्ति कवद अर्थात् जिगर में उसके पचाव का नाम कैलस है अर्थात् पतला रुधिर उसका मूलमूत्र है तीसरी पाचनशक्ति असों में और चौथी पाचन शक्ति जोड़ों में और इन दोनों पाचन शक्तियों की सगलन पसीना है और मेल होकर मसामास और कुल नाक कानों के द्वारा निकल जाती है वधियती कृतोंमें से चौथे जोड़ उनके दो भेद हैं एक वचन और बहुवचन एक वचन जोड़ों में से मध्यम हड्डी है दूसरे कुरा तीमरे पट्टे उनके दो रूप हैं एक मस्तक सपजा है उसके सात रूप हैं जोड़ों की हरकत और स्पर्श सन्धी से है दूसरा नरवा हराम मज्जा से सगा है वह साढ़े इकत्तीस अर्थ हैं गर्दन के सिवाय हरकत और स्पर्श सब जोड़ों का सन्धी से है चौथे खजले अर्थात् मामके लोथड़े वह सब पानसौ सन्धीस हैं पांचवें चतर अर्थात् ताँत इन दोनों के यह गुण हैं कि जोड़ों को हरकत देते हैं छटे खात अर्थात् घघन वह भी महीन पट्टे हैं उनका गुण जोड़ों को बांध देता है सातवें मारापीन अर्थात् रुधिर की नली जो कि दिल से उत्पन्न हुई है और वरादी

नामी शिरयान क सिवाय रुधिर की नलियां दो पत्ती हैं उनके मत्ताप करके सारे शरीर में रूढ़ हैवानी अर्थात् स्वासा पहुंचवी है आठवें अरोदह अर्थात् दक्षिण से और वह निगरमे सर्गी है वहभी सवरी शिरयान बरीदीके सिवाय कुपती है और सारे शरीर में रुधिर फैलाना इसका गुण है नवें वाशा अर्थात् भित्ती जोड़ों की रक्षा करना इसका गुण है और इन सब जोड़ों की उत्पत्ति मनी अर्थात् बिन्दुस है दमवा, गोश्व अर्थात् मांस रुधिर के जमाव से पैदा होता है और चर्वी रुधिर के पानी से पैदा होती है और मांस और चर्वी के मत्ताप से मनुष्य मोटा होता है ग्यारहवें खाल और बाल और नख हैं बाज इकीम इनको जानते हैं और बाज रंगदे जानत हैं और असली जोड़ जिनसे मनुष्योंके पाण बचते हैं वह तीन हैं दिख दिमाग और निगर और जिनसे मनुष्यकी नसल बाकीरहे वे चार हैं अर्थात् दिख दिमाग निगर और इन्डो पाचवें तबियती कुत से स्वांस है रूढ़ अर्थात् स्वांस एक अच्छी पवन है जो कि दोपों के अच्छेपन से पैदा होती है और स्वांस के तीन भेद हैं दिमाग की स्वांस कि जिसका स्थान मस्तक है और दिली स्वांस कि जिसका स्थान दिल है और निगरी स्वांस कि जिसका स्थान निगर है और तबियती कुतों में से छटा पराक्रम है और उसके भी तीन भेद हैं एक मस्तकी पराक्रम कि वह मस्तक में है दूसरा दिली पराक्रम कि वह दिलमें है तीसरा निगरी पराक्रम कि वह निगर में है और जो आदमी के आहार में है निगरी बल खर्च पड़े उसका नाम हाजिया अर्थात् आहारी बल है और जो तिलकी अर्थात् लबाव चौड़ाव और गहराव में जो खर्च पड़े उसको नाभियां अर्थात् नामी कहते हैं और जो बिन्दुमात्र खर्च पड़े उसको सुवलदह अर्थात् उत्पन्न करने वाला कहते हैं और इन पराक्रमों के नीचे बल जाजब अर्थात् आहार खैच लेने वाला बल और मांसका अर्थात् सोकने वाला बल और हाजिया अर्थात् पचाने वाला बल और दाफह अर्थात् निशालने वाला बल और मस्तकके पराक्रम के भी दो भेद हैं । मदरका अर्थात् स्पर्श और महकहा अर्थात् दिलाने वाला । मदरकह जाहिर अर्थात् अर्थ पांच प्रकारके हैं । प्रथम शब्द दूसरा रूप, तीसरा स्पर्श, चौथा रस, पांचवां गन्ध इनको फारसी में शमा, घसर, जोक, और लम्स कहते हैं । और मदरकह वातिन अर्थात् भीतरे अर्थ भी पांच हैं जिस मुरतक, खयाल, वहम, मुतखीका और हाफिजा और मदरकह के दो भेद हैं बायसा और

फायला वायसा वह अर्थ है जो नाना प्रकार के रूपसे प्रकट हो और फायला अर्थात् कर्म वह पट्टे में पाई जाती है कि मानसी लोथड़े उसी से बनते और ढीले होते हैं और उस कीचड़से जड़ों को हरकत प्राप्त होती है और फायला वायसा के तावे हैं और तबियती कृत्यों में से अफ्रयाळक अर्थात् कर्म है कर्म के दो भेद हैं कायिक और मानसिक काया में रहे वह कायिक और मनमें रहे वह मानसिक है ।

दूसरा अध्याय अवस्थाके प्रकरण में ।

अवस्था चार हैं एक बाल अवस्था दूसरी तरुण, तीसरी अर्धेड़ और चौथी वृद्धावस्था है इनमें से पहली बीस वर्ष तक रहती है और दूसरी पैंतालीस वर्ष तक रहती है और बाजों की दृष्टि में पैंतीस वर्ष तक इस अवस्था में गरमी प्रबल रहती है और तीसरी साठ वर्ष तक रहती है इस अवस्था में सर्दी प्रबल रहती है चौथी साठ वर्ष उपरान्त उम्र भर रहती है इस अवस्था में सर्दी बहरी तरी लिये ठुप प्रकृति पर रहती है और पुंस्यों की प्रकृति से स्त्री और नपुंसक आदि की ठही रहती है

तीसरा अध्याय

सतह अकरिये अर्थात् सम दर्कारी ज्ञः वस्तुओं के वर्णन में जो प्राणों की रक्षा करती हैं उनमें एक पवन करपी है जिसमें पुआं और अन्धकार न भिळा हो वह सबसे अन्ध्रा पवन है और पवन की प्रकृति हर ऋतुमें बदलती जाती है और ऋतु चार हैं ग्रीष्म वसन्त हिम वर्षा और हकीमों की दृष्टि में वर्षा और वसन्त ढेड़ २ महीना हैं और ग्रीष्म और वसन्त साढ़े २ चार महीना हैं वसन्त ऋतु में पवन की प्रकृति गरम तर है और ग्रीष्म में गरम खुरक है वर्षा में सर्द खुरक और हिम ऋतु में सर्द तर रहती है हिमपुस्तान में तीन ऋतु होती हैं ग्रीष्म वर्षा और हिम अर्थात् गर्मी वर्षा और जाड़ा इम तीनों मौसमों के चार चार महीने होते हैं फागुन चैत वैशाख जेठ ये चारों महीने गर्मी के होते हैं बहुधा करके आदि गरमी फागुन से है परन्तु सायंकाल से लेकर प्रातःकाल पर्यंत सर्दी पड़ती है और मध्याह्न काल में गर्मी रहती है इस महीने में गर्मी और सर्दी से बचा रहना उचित है कि शरीर पीड़ा और रोगों से बचा रहे और गर्मी के दिनों में थोड़ा थोका करना योग्य है कि शरीर पीड़ा और रोगों से बचा रहे

क्योंकि गर्मी के दिनोंमें अधिक प्यास लगने के सबब ठंडा पानी अधिक पीनेमें आता है इसलिये पाचन शक्ति निर्वहता को प्राप्त हो जाती है और शीतल वस्तु धारण करना और ठंडे स्थान में रहना योग्य है और वर्षा काल आपाद आषण भाद्रपद और आश्विन पर्यंत रहता है घरसात का हाल जुदा २ है जब पानी बरसता है तब नृह चलने लगती हैं इस मौसिममें पवन पानी के बदलाव और पीड़ा सर्दी, गर्मी के कारण शरीर में फुसियां निकलने लगती हैं और जाड़े का मौसिम कार्तिक से लेकर अगहन पौषमाघ तक रहता है जाड़े के मौसिम में पाचनशक्ति विशेष रहती है और भीतर गरमी विशेष रहती है इस मौसिममें विशेष भोजन करना अच्छा है और कसरत, क्रूरती करना अत्यन्त गुणदायक है और झुकाके हकमें यह मौसिम सब मौसिमों से श्रेष्ठ है और गर्मी के मौसिम की आदि में विशेष कर रोग पैदा होते हैं जब तक कि गर्मी पूरी न, पढ़ने लगे तब छ वस्तुओं में दूसरी वस्तु खाना पीना है जिस आहार से पतला बघिर पैदा हो उसको पक्का अन्न बोलते हैं और जिससे गाढ़ा उत्पन्न हो उसे कच्चा अन्न बोलते हैं और जिस आहार से निर्विकार बघिर उत्पन्न हो उसको फारसी में शिका महसूख केमूस कहते हैं और जो दोपयुक्त हो उसको रदीयुक्त मूस कहते हैं अर्थात् बुरा आहार और जिस आहार से बहुतसा बघिर उत्पन्न हो उसे अच्छा आहार बोलते हैं और जिससे थोड़ा उत्पन्न हो उसे बुरा कहते हैं अब यह बात जानने योग्य है कि चाहे तो दो दिनोंमें तीन बार भोजन किया करें अर्थात् एक दिन सायंकाल को और प्रातः काल दोनों समय और दूसरे दिन मध्याह्न काळको एक बार भोजन किया करें और कच्ची भूख में कदापि न खांय और आहार देर तक चिगद २ के खांय कि जल्दी पचजावे और जब दो तीन प्रास की भूख रहे तब भोजन छोड़कर खड़ा हो जावे कि पचने के समय उदर में अफरा और मारीपन न होवे और इकीम लोग कहते हैं बहुधा रोग शरीर में पैदा मरा रहनेसे उत्पन्न होते हैं और भोजनादिक पचने से पहिले मैथुन कसरत क्रूरती और दौड़ आदि किसी तरह का बलवान कृत्य न करे कि यह महा बुरा है और जो विशेष कर चिकना भोजन किया हो उसे नमकीन वस्तु से पचाना उचित है और जो खट्टी वस्तु पान की हो उसके ऊपर मिष्टान्न भोजन करे और जो भोजन के समय इलाका भारी भोजन प्राप्त होवे तो प्रथम इलाका भोजन

करे पश्चात् भारी भोजन करे और पक्की भुक्त में भूत्वा न रहे क्योंकि इससे घुरे मवाद पेट में उत्पन्न होते हैं मनुष्य को गेहूँ की रोटी और पकरी के बच्चे का मांस अमृत तुल्य आहार है आहार ही नहीं औषधि है आहार और औषधि दोनों का गुण है।

गुण अन्नादिक वृत्तान्त में

अमृत तुल्य आहार मनुष्य के लिये गेहूँ है उस में मीठापन विशेष है और शीतलता और चण्णता में परावर है इस के पीछे चावक है कि वह भी अच्छापन रखता है जिस चावक में गन्ध विशेष हो और चारीक हो और रांधने के समय लड़ा होजाय वह चावक सब तरह सब से अच्छा है इन में भी सर्दी गरमी समान होती है परन्तु दूसरे दर्जे में खुरक है और हिन्दुओं के मग से सर्द है सब सूच गरम प्रकृति वालों को गर्म है और जिनकी प्रकृति ठंडी है उनको ठंड करता है और सुख गदह चावक अर्थात् सांठी चावक में आहारत्व कम है और अजीर्णाश बहुत है गेहूँ की भूसी के पानी में पकाने से उसकी यह बातें जाती रहती हैं। और दोनों के पीछे मूग है कि फारसी में उसको बन्नामाश बोलते हैं वह खुरकी के लिये सर्द है और तुरन्त पचजाती है और बहुत अफरा नहीं लाती इसी वास्ते वैद्य लोम रोगियों को मूग का दूध देते हैं और फिर चना है उसकी चण्ण प्रकृति है और घूट तर होता है उस में आहारपन विशेष और स्त्री मसग में बलकर्त्ता है परन्तु वायु कर्त्ता है इस के पीछे जौ है कि प्रकृति उस की सर्द खुरक है हल्का आहार है अफरा करने वाला और अमीर्ण है एक वर्ष का पुराना जौ और मसूर और अरहर इन सब में मसूर खुरकी लिये तर है और उसका छिलका अरहर के छिलके से गर्म है अरहर की प्रकृति गर्म खुरक है और बालों की बुद्धि में मसूर के तुल्य है और अफरा मसूर से विशेष है ये दोनों बुरा मवाद पैदा करती हैं और उरद जिसको फारसी में माश कहते हैं उसकी प्रकृति तर है और देर में पचता है उसका जामन सौंठ और हिंग है और मसूर और अरहर से आहारपना विशेष रखता है और इतना अजीर्णपन नहीं रखता और पचजाय तो अपनी रहस्यदारी के प्रताप से धूँध और मनी अर्थात् धीरे पैदा करता है और बाजरे की प्रकृति सर्द और खुरक है अजीर्ण करने वाला हल्का अन्न और घघिर का पैदा करने वाला है और इसी सबब से मूह में छाले पैदा करता है

और खुरकी और प्यास विशेष लगाता है इसी कारण हिन्दू लोग इसे गर्म करते हैं इसका जामन दूध है ज्वार जो सफेद और सुगन्धित हो उसमें अफरा घोड़ा होता है और आहारपन भी अच्छा रखती है परन्तु अनर्था उपजाती है मोठ को हिन्दू लोग गर्म और खुरक बतलाते हैं वह भी सूक्ष्म आहार और अफरा पैदा करती है जोषिया की प्रकृति गर्म है अफरा और गाढ़ा मवाद उपजाता है और देर में पचता है मटर अफरा और गुरा मवाद पैदा करने वाली और दस्तजारी करने वाली है कांगनी मधुआ और अच्छे होते हैं ये तीनों सर्द खुरक हैं अनर्था वाय उपजाने वाले सूक्ष्म अन्न हैं इनका जामन दूध है।

गुण

मावेदार रोटी जो खट्टी न हुई हो बिना मावे की रोटी से अच्छी होती है हल्की और तुल्य पचजाती है और मावेदार देर में पचती है मैदा की रोटी में विशेष आहार पन है और भारी है और चून की रोटी में हलकापन होता है इस से कफ की ग्रन्थी नहीं पड़ती है गरमागरम रोटी भोजन करना चदर की तरी को सोख लेता है और ठंडी रोटी चदर को तर रखती है और जो ठंडी हो न गर्म उसका भोजन करना अच्छा होता है और सूखी रोटी से खुरकी पैदा होती है और देर में पचती है और बाजरे ज्वार की रोटी खुरक है और देर में पचती है कषजियत करती है और चदर को हानि कारक है और बाजरे से नौ की रोटी तुल्य पचजाती है परन्तु सर्द खुरक है और अफरा उपजाती है।

जलपान के प्रकर्ण में

हरिया का पानी सब से अच्छा है इसके पीछे कूप का पानी है तृपा में पानी पीना योग्य है बहुधा भोजन के बीच में हो तथा भोजन के अन्त में हो और भोजन के दो तीन घण्टी पीछे पानी पीना अच्छा होता है भोजन के पीछे तसी समय पानी पीना अथवा बीच में पीना बुरा है परन्तु उस मनुष्य को जिसकी प्रकृति गर्म हो और चदर में लण्णता है पीना आवश्यक है कि भोजन के मध्य में थोड़ा पानी पीलेवे एक सग विशेष पानी न पिये और श्रुवा के समय थोड़ा पानी पिये घूंसने की तरह अथवा पानी के बदले शर्वत या थोड़ा आहार खाके जल पिये कि हानि छोड़ी हो और निहार पानी पीना मना है कि हृद्धता और रोग उत्पन्न करता है और इसी प्रकार मास काल के समय जगते हो पानी पीने से

नज़ला पैदा होता है और व्यायाम मैथुन और स्नान कर और मेवा भोजन करने के अन्त में पानी पीना हानि कारक है जैसे खर्वूज तर्वूज के ऊपर पानी पीना हानि करता है और हर समय विशेष पानी पीना बुरा है और बिना कलह के ताबे के वासन और सीसे के वासन में पानी पीना योग्य नहीं है और जो देशाटनादि कामों में अनेक प्रकार जल पीना पड़ता है उपद्रव नाश करने को थोड़ी प्यास की साधना कर और जो भांग पीता हो तो उससे भी देशान्तर का पानी नहीं लगता है तीसरे बहोंदरकारी वस्तुओं में से सुसुप्त और जाग्रत है चित्त सोना मना है कि उस में नानाप्रकार के स्वप्न आते हैं और मस्तक को हानि करता है जो यह आदत हो तो छोड़ देवे और पट्ट सोना गुण दायक है इस प्रकार से कि मस्तक को तकिये पर इस प्रकार से रखे कि मुंह और दोनों नेत्र दायें हो जायें इस प्रकार सोने से अजीर्ण पचजाते हैं और दाहिं बायीं करवट सोना हानि नहीं करता है और प्रातः काल निहार सोना नज़ला पैदा करता है सूखा सोना शरीर को दुबला करता है और धूप में सोना मना है चांदनी में सोना गुणदायक है विशेष सोना सर्दी और तबीयत का लक्षण है और विशेष जागना गर्मी और खुरकी का लक्षण है और न विशेष सोना न विशेष जागना अच्छा लक्षण है कि विशेष जागना मनुष्य को वृद्ध और तबाह कर देता है और बहुत सोना मादगी और होश हवास उड़ा देता है उन दरकारी वस्तुओं में से चौथी मूत्र पुरीष है अर्थात् अच्छे मल को रोकना और बिगड़े मल को गुदा और इन्दी के द्वारा त्याग करना अच्छा है मनुष्य को एक दिन में दो बार मलका त्याग करना योग्य है और अजीर्ण की हालत में तेजसोये और पालक के साग और फिसलान वस्तु आदि से तबियत को साफ़ करे और अजीर्णकारी वस्तुओं से बचता रहे कि अजीर्ण से जुधा जाती रहती है और जो दो समय से अधिक दस्त की आजत हो और दस्त पतला उत्तरे तो विष्टभी वस्तुओं को काय में लावे हर रूप में जैसा चाहिये वैसा करे ॥

पाँचवें भीतरी रोग हैं एक खन में क्रोध और दूसरी मसन्नता है इन दोनों में स्वांस को बाहर की तरफ़ हरकत होती है शरीर में गर्मी सर्दी के चिन्ह मालूम होते हैं दृष्टि में तो शरीर गर्म और भीतर से ठंडा हो जाता है तीसरे दर चौथे सोच इन दोनों से भीतर हरकत हो बाहर शरीर ठंडा भीतर गर्म होता है पाँचवें

शार्मिन्दगी इस से स्वास प्रथम तो भीतर की तरफ हरकत करता है फिर बाहर की तरफ किसी समय बाहर गर्मी और किसी समय भीतर गर्मी इसी प्रकार खिस्पाने मुह कभी सुख और कभी पीछा होजाता है और उन हरकरी वस्तुओं में से छटा चाल चलन और चुप चापी है मोतदिल शरीर का चाल चलन निस्म का गर्म रोमांचों पचाता है और विशेष हरकत ठण्डा करती है क्योंकि उस में से असली गर्मी जाती रहती है और विशेष चुपसे भोजन नहीं पचता है चलना उदर में से भोजन को नीचे उतार देता है ।

गुण ।

व्यायाम आम अर्थात् वह व्यायाम कि जिस के द्वारा शरीर को हरकत प्राप्त है शरीर की दारू है जोड़ों के आलस्य को दूर करता है और रोगों को दूर करता है गदलेपन को पचाता है और तबियत को बल देता है शरीर के आराम का रक्षक है परन्तु सामान्य हो न विशेष हो न थोड़ा हो और चलना दवाना भी एक प्रकार का व्यायाम है कि फुसलों को पचाता है परन्तु विशेष चलने और दवाने से शरीर कृप होजाता है और मातदिल से मोटा होता है मैथुन की क्रिया वह भी शरीर की हरकतों में से है माफिक का मैथुन जिसना कि दरकार हो बल को बलवाला करता है और उस की विधि यह है कि भीतर से विशेष चाहना हो और इन्द्रों की प्रवृत्तता के समय हो और यह काम बिना तकरबुद्ध के हो और किसी रूपवती स्त्री का ध्यान न हो और कोई ऐसी वस्तु न दीख पड़े कि जिस से मैथुन को मन चलायमान हो और यह काम इन्द्रों की प्रवृत्तता और विन्दु विशेषता से करना योग्य है क्योंकि इकीमों का यह कथन है कि वृद्ध मर्ती की प्राण है कि उस से मनुष्य की उत्पत्ति है इस अमोक्ष मोती का वे समय और निपकल त्याग करना अयोग्य है और अति मैथुन की हानि लिखने में नहीं आसकी जो मनुष्य तरुणता प्रभाव से अति मैथुन करते हैं उसकी अधिकता से तुरंत वृद्धता को प्राप्त होकर अज्ञानत जलत हैं और इतनी स्त्रियों के संग भोग न करे जिम स्त्री का कामदेव जगे नहीं उस स्त्री से, बोखो वृद्ध स्त्री से, रजस्वला से, मलिन से, रोगिणी से, इतनी स्त्रियों के साथ भोग करना अचित नही और जो इम काम में नहीं पड़ते और बार बार मैथुन नहीं करते वह सचमे पुरुष हैं और जो मैथुन के बीच तीन दिन मैथुन न करे और इकीम लोग हर त्याग तीन दिवस छोड़ना अच्छा जानते हैं ॥

प्रथम स्नान विधि

शरीर मनुष्यों को स्नान प्राप्त नहीं इस कारण थोड़ा गुण और गुण स्नान का लिखते हैं घनस्वत ठण्डे पानी के गरम पानी से स्नान करना अच्छा है और इतने रोग घाता मनुष्य स्नान न करे सदैव प्रकृतिवाला, फफ प्रकृतिवाला, नजले वाला, अतिसार वाला, घातक, वृद्धि, भरे पेट वाला और मैथुन के अन्त में तत्काल स्नान करना शरीर को मछीन कर देता है और बहुत दिनों तक स्नान न करने का शरीर को मछीन कर देता है और कान्ति और तेज को घटाता है आहार पचाना के पीछे स्नान करना अच्छा है और गर्मी की ऋतु में थोड़ा स्नान करना अच्छा है और स्नान के पीछे मैथुन में शरीर को मलवाता अच्छा है और स्नान गर्म पानी से हो अथवा शीतल से हो पट्टों को ढीला और निर्बल कर देता है कि गर्म जल से त्वचा और पट्टों को ढीला कर देता है शीतल जल से पट्टों में शीत बढ़ जाता है क्योंकि उनकी प्रकृति सदा है इसी प्रकार से बहुधा हिन्दू लोगों के पट्टे और गुरदों में निर्बलता के लक्षण मिलते हैं कि वह हरदम स्नान करते रहते हैं तरुणता की गर्मी के प्रताप से हानि थोड़ी मालूम पड़ती है परन्तु जब वृद्ध अवस्था होती है तब यह चिन्ह प्रत्यक्ष हो जाता है और कामदेव की चैतन्यता दूर हो जाती है और हिन्दू लोग दिन भर में कितनी ही बार स्नान करते हैं शौच वाधा के पीछे स्नान करते हैं उन के शरीर को यह स्नान बहुत हानि करता है।

चौथा अध्याय नाड़ी के प्रकर्ण में

विद्यार्थियों को नाड़ी का बोध होना बड़ा कठिन है वेधों को तो नाड़ी का बोध है ही नहीं इसलिये जरूरत के समय मन की प्रेरणा से जिक्र करता हूँ।

नाड़ी चलने वाली नसों की चाल है उससे शरीर का कुछ सुख सुस्त प्रगट हो जाता है नाड़ी उस समय देखे जब योगी प्रसन्न मन हो रिस न हो व्यायाम न करता हो दौड़ता न आया हो कोई आदतन त्यागी हो कमसे कम नाड़ी की १२ हरकतों तक नाड़ी पर हाथ रखना योग्य है जो नाड़ी लम्बाव में चार अंगुल से विशेष हो और उसके तड़तड़ाव की चोट लगलियों को मालूम पड़े और जस्दीर चले स्पर्श में भरव हो तो जानले कि नाड़ी गर्मी की है और जो लम्बाव उसका कम हो और तड़तड़ाव न हो और मद्धमति चले और स्पर्श में शीतलता मालूम हो वह नाड़ी सर्दी की है और जो संलियों की चौड़ाई में चाल उस की विशेषता को प्राप्त हो तो वह नाड़ी चौड़ी है और उस की नाटी वह है जिस को लगलियों से दबाने से

स्पर्श में नर्माई मालूम दे और जो इस क खिलकाह हो वह खुरकी की नाड़ी है और निरोग की नाड़ी एक सी चला करती है और जो एक चाल पर न हो तो दोष युक्त नाड़ी है और जो नाड़ी हिरन की छलकनी चाल के समान हो वह शिकाली है जो लहर के मुख्य हो वह मौनी है कामार पुरुष की और भय-भीत की नाड़ी तण्डण चलती है और मन्त्राग्नि वाले और क्षीण धातु वाले पुरुष की नाड़ी महामेद घंटीसी चलती है यह सब भेद बुरी और निर्बलता के हैं और स्त्रियों की नाड़ी से पुरुष की नाड़ी बलवान होती है और बच्चों की नरम चलती है और तरुण पुरुषों की नाड़ी चौड़ाव और लंबाव में विशेष होती है और वृद्ध और चलहीन पुरुषों की नाड़ी सुस्त चलती है ।

पांचवां अध्याय मूत्र परीक्षा के प्रकर्ण में

रोगी का मूत्र शीघ्र में डालकर इस प्रकार परीक्षा करते हैं । याही से इस का नाम कारुरा पड़गया है यह बात जानने के योग्य है कि मूत्र परीक्षा में यह बात होनी चाहिये कि मातः काष्ठ चार घड़ी के तक के रोगी को उठाकर काष्ठ की शीशी में धुतावे और उस घासन को ढककर रखे सूर्य उदय के पीछे वैद्य उस की परीक्षा करे और रोगी ने सोने के पीछे पानी न पीया हो और कोई ऐसी वस्तु न पाई हो, जिसके कारण मूत्र रगीन होनाय और जागने, क्रोध करने, भैषुम और मदिरापान से मूत्र की रगत बदल जाती है और जो मूत्र कि देर तक रुकता रहा वह परीक्षा के योग्य नहीं है । मूत्र पीला हो तो पित्त दोष जानिये लाल हो तो बधिर दोष जाने सफेद होतो कफ दोष जाने हरा हो तो सर्दी मानस के दुर्भा के सदृश हो तो निर्बलता, दूष के समान हो तो जोड़ घुल गये जाने और जो मवाद पकगया हो तो प्रथम पतला अथवा गाढ़ा और फिर इकसार हो जावे और ऊपर में मूत्र सदैव गाढ़ा रहना बुरा है पतला मूत्र सर्दी का लक्षण है गाढ़ापन दोष की वृद्धता का लक्षण है सर्व प्रकृति वाले के मूत्र में दुर्गंधि नहीं होती और जो दोष सङ्ग्राह्य तो दुर्गंधि विशेष हो और जो एकसा मूत्र हो तो नैरोग्यता का लक्षण है जो मूत्र में भाग विभक्त हो और देर तक रहे तो वायु का लक्षण है, और जो सन अथवा छीछड़े या तारे या बाल अथवा चर्बी के सदृश कोई चीज मूत्र में पाई जाय तो असाध्य जानिये चर्बी जोड़ों के घुल जाने और पीप भीतर फोड़े के फूट जाने, बाल मसाने या

गुर्दे में और पयरी होजाने और तर मल की कचाई और छीछड़े जिगर की निर्वलता वा पसाने जरबा और सत्तू वा भूसी पसाने की खुजली का लक्षण है पुरुषों के मूत्र से स्त्रियों का मूत्र सफेद और गाढ़ा होता है और गर्भिणी स्त्री का साफ़ होता है और गर्भ के आदि में पतला होता है और अंत में कछोस लिये कीचड़ सा होता है और हड्डों का मूत्र-तर पूरुति के प्रताप करके गाढ़ा होता है ॥

गुण ।

मिश्राणी वैद्यों में मूत्र परीक्षाकी यह विधि है कि मूत्रको प्याले में भर के एक बुंद तिल के तेल की उस में डालते हैं जो वह बुंद मूत्र पर फैल जाय तो साध्य जानिये और बीमार अच्छा हो जायगा और जो बुंद मूत्र पर न फैले और स्थिर रह जाय तो रोगी को कुछसाध्य जानिये, और जो बुंद मूत्रमें डूब जाय या चक्र की तरह घूमने लगे तो रोगी अवश्य मरजाय । और जिस रोगी के मूत्र में बुंद पड़े ही छिद्र हो जाय तो वह रोगी अवश्यही मरजायगा । और जो बुंद मूत्रमें तात्कायके सदृश हो जाय तो रोगकी वृद्धि जानिये । जो बुंद मूत्र में पूर्व को चले तो नैरोग्यता, दक्षिण पश्चिमको चले तो रोग वृद्धि और जो उत्तर दक्षिण को चले तो कुछ साध्य के लक्षण हैं और जो पीछा साफ़ मूत्र हो तो पित्तके लक्षण हैं और जो पीछा सुर्खी लिये ही तो हृदय के लक्षण जानिये परन्तु पित्त प्रबल है और जो मूत्र की विशेषता हो तो और उस में थोड़ी सफेदी हो तो और बकरी के मूत्र की सी घास आने से अनीर्ण रोग जानिये और पांसके पुआं के सदृश हो तो हृदय और शुरदे का रोग जानिये और जो कुछ गोंद या तेल सदृश मूत्र हो और तेल के से दाने मालूम पड़े तो जानिये कि सोय अर्थात् वरम और क्षरीर की असाध्यता तथा जलधर रोगका मूत्र है और जो मूत्र मिश्री के सदृश हो तो काम और स्वास रोग जानिये और जो मूत्र केसर सा पीछा हो तो रुधिर विकार जानिये और मूत्र अग्नि के समान गर्म हो तो सरसाय अर्थात् मस्तकके सोयका रोग जानिये और जो मूत्र पीला और साफ़ हो तो जिगर रोग जानिये और जो मूत्र स्याही लिये पीला हो तो जिगर में गर्मी जानिये और जिसका कुछके पानी के सदृश मूत्र उत्तरे उस को लिंग रोग जानिये ।

छटा अध्याय मल के अहवाल में

शुद्ध मल वह है जो न तो गाढ़ा हो और न पतला हो और जिसमें घरघराट

न हो अर्थात् जिस में वायु का शब्द न हो और मल त्याग के समय भी शब्द न हो मल का रंग मूत्र के रंग के समान होता है और जिस मलमें आहार से पतलापन और लेस विशेष हो तो मल की अधिकता जानिये अथवा अजीर्ण जानिये । यह ध्वर में कृष्ट साध्य है, जिसमें घास विशेष हो उसे बिगड़ा मल जानिये ।

सातवां अध्याय मुसहिल अर्थात् विरेचन की विधि में

प्रथम पुरुष को विधि पूर्वक मुजिस दे अर्थात् पहिले मल को फुलावे कि मूत्र धराधरी पर आजाय और मुसहिल उसे कहते हैं कि नसों, जोड़ों और रगों से मलको निकाले और जो उदर आंत और उनके इर्द गिर्द के मवाद को निकाले उसका नाम घतैपन है जुल्लाव में पहिले मुजिस देते हैं और तलेपन में नहीं देते एक दिन में दो जुल्लाव न दे और विरेचन की औषधि पीते समय नाक बंद करके कि उसकी बास से मन में ग्लानि न आजाय जिससे बमन होजाय और दोनों घाँहों को फसकर बांधे और सुगन्धादिक सुधावे और इलायची पोदीना और लोंगका चाबना बमन को रोकता है और अच्छे प्रकारसे जुल्लाव न होने पर्यन्त न तो कुछ पान करे और न सोवे और मीठा जुल्लाव न पीवे गुन-गुने पानी से हाथ धोवे और कड़ा जुल्लाव ले और वर पत्रजाय और वावलेपन या अचेतीका रोग होजाय तो तुरन्त बमन करवावे घुरे जुल्लाव से अत्यन्त हानि है जैसे घुरे फस्द से और रोगी निर्मल हो तो एक दो दिन बीच में छोड़कर जुल्लाव दे चाकि दस्तों की विशेषता से रोगी घबरा न जाय और जुल्लाव के दिन ठह से बचा रहे जिस मनुष्य की स्त्रुक् प्रकृति हो उसको और वृद्ध तथा बच्चों को कड़ा जुल्लाव देना योग्य नहीं और जुल्लाव के ऊपर गोखियां फकी पकादिक गुनगुना सोंफ का अक्र और गर्म पानी पीना दस्तों की प्रवृत्तता के लिये अच्छा होता है और काढ़े के जुल्लाव पर सोंफ का उदा अक्र पीना योग्य है जुल्लाव के पीछे गरम प्रकृति वाले को इसय गोल और सदे प्रकृति वाले को रैहा के घीज और कोई घीज पीना योग्य है और जुल्लाव की कोई दवा ऐसी नहीं है जो एक मवाद के सिवाय दूसरे को न निकाले और जो औषधि पित्त अथवा कफ अथवा घाव निकालने के योग्य है यह औषधि उस मवाद से विशेष सवादों को निकाल लेती है जानना चाहिये कि पाजे निरागी मनुष्य की

अपने आराम के लिये हर वर्ष जुल्लाव लेते हैं और बाजे छटे महीना लेते हैं परन्तु यह आदत अच्छी नहीं होती है रोग निवारण के लिये जुल्लाव लेना योग्य है और जो ऐसी आदत पड़ गई हो तो धीरे २ छोड़ देना योग्य है क्योंकि प्रकृति भी दूसरी तथियत है ।

पित्त पकाने की औषधि

कासनी की जड़, नीलोफर, खतमी की जड़, खुन्वाजी के बीज, कालीभाँप, बनफ़णा, गुलाब के फूल, कासनी के बीज, पित्त पापड़ा, गुठ खैरु की मृजिम तीन रोज़ देने से पित्त पकजाता है परन्तु निरा पित्त ही हो और दोष युक्त पित्त पांच दिवस में पकता है ।

कफ़ पकाने की औषधि

सौफ़ की जड़, मुनफ़ा, मकोय, काली भाँप, गावज़वाँ, वलीकोटन, वस-फायज, मुलहटी, गदस, अजमोद, देखकिन्न, अनीस, शुकाई, अस्तखुद्दस इन से ६ दिन में कफ़ पकजाता है । अत्यन्त गाढ़ा कफ़ ११ वा १२ दिन में और पतला ५ दिन में पकता है ।

वाय पकाने की औषधि

वलीकोटन, गावज़वाँ, दिहसोड़े, कासनी की जड़, सौफ़, पित्तपापड़ा, चन्नाव, अस्तखुद्दस, कालीभाँप, मुहल्ली, अजीर, विस्फायज से वाय पट्टर ६ दिन में पकती है और कभी २ पदरह दिन से कम व ज़ियादा दिन भी लगते हैं ।

पित्त के जुल्लाव की औषधि

बड़ी हड़का पक्कल, इमली आलुपुखरा अफसवीन सकूमूनियाँ और गुलाब के फूल मगर वे भुना सकूमूनियाँ न लेव ।

कफ़ के जुल्लाव की औषधि

इन्द्रायन के फलका गुदा साईं जौहरज गारीकून कात्तादाना निसौत और अमलतास ।

वाय के जुल्लाव की औषधि

काधलीहड़ कालीहड़ अमलवेद हिजर लावषर्द गेरु गारीकून कात्तादाना अमलतास और सनाय ।

रुधिर विकार की औषधि

कासनी की जड़ खीरा ककड़ी के बीज चन्नाव अजवार केवड़े की जड़

तर्बुजोंका पानी घनफला इमली खट्टा शङ्खुत ईसब गोले काहू पित्तपापघ्ना और खाकसी हलका जुलाब बाहरी और भीतरी सब रोगों को गुण दायक है और विशेष प्रकृतियों को माफ़कृत और प्रोग्य है यहाँ तक कि गर्मिणी स्त्री पालक और बूढ़ों को भी देते हैं ज्वर और सूजनको भी गुणकारी है वायु पित्त और कफादिक सब दोषों को माफ़िक है जितना चाहे अपक्वतास ले और गुलाब अथवा गर्म पानी वा सौंफ का अर्क वा कासनी का अर्क वा मकोय के अर्क में मले और थोड़ा बादाम रौशन मिला लेवे तो अच्छा, नहीं तो घी डालकर थोड़ा गुलकंद या शीरखिस्त या तुरमबीन से पीठा करे और गुलबनफला मुनक्का चलाव और गावजवां औटाकर थोड़ासा गुलकंद उसी अपक्वतास में मिलावे अच्छा है और दूध पीते बच्चों के लिये बादाम रौशन मिलावना अच्छा नहीं और शुल के रोगों में मुचिस देरकार नहीं है।

आठवां अध्याय फ़स्द के प्रकर्ण में

फ़स्द से सब दोषों का निवरण होता है परन्तु सबों से कधिर अधिक निकलता है चारह वर्ष से कम उम्रवाले का कधिर कढ़ाना अच्छा नहीं इससे वाद बल देखकर कधिर निकलवावे परन्तु बाजों ने साठ वर्षकी उम्र के पीछे फ़स्द की मनाई की है फ़स्द के पीछे लेट रहे पगर सोवे नहीं और फ़स्द के पीछे उस दिन हलका और अच्छा भोजन करे सड़ा भोजन न करे। फ़स्द के पीछे हरीरा पी उठाई न पिये परन्तु गरम प्रकृति वालों को उठाई पिकाना अच्छा है और सर्द प्रकृति वालों को गर्म वस्तु देना अच्छा है परन्तु वे शुषा कुब्ज न दे थोड़ा कधिर निकलने से दोष उपलब्ध होता है और ज्वर आजाता है उस समय कधिर कढ़वाना योग्य है और जिस मनुष्य की फ़स्द के पीछे चैतन्यता जाती रहे तो उस के कण्ठ में घुँगे का पर डालकर घमन करावे और फ़स्द की फ़ाळ अर्थात् सरेह और फ़स्द हल्लजलाके एक नस दें ऊपर को गयी है मस्तक और गले को पाक करती है और बराह की नसकी तरफ़ शरीर की कोठी और नीचे शरीरको गुणदायक है हफ़ू मदाय सब शरीर को पाक करती है। वासलीक को पढ़ी पीरता से खोले कि जिसके नीचे कधिर की नस हैं असली नस कि वासली की शाखें हैं जगर रोगों के लिये दाहिनी तरफ़ से खोले तिल्ली और दिल के रोगों में बाई तरफ़ से खोले परन्तु विशेष कधिर उसमें से न निकाल और लिळाट दसके नसकी फ़स्द मस्तक पीटा और नेत्र रोगोंको गुणदायक है और

दोनों हाठों के नीचे की चारों नसों की फस्द जा हाठों के भीतर खोली जाती है मुँह के घावों को गुणदायक है और जीभ के नीचे की फस्द कठकी फुसियाँ को गुणदायक है और पिंढली की नसकी फस्द, जाँघ के नीचे की नसकी फस्द स्त्रीधर्म जारी करने, बवासीर के रोग टांग और जाँघ की पीड़ा को गुणदायक है और विकारी रुधिर निकालने के वास्ते जो फस्द खोले जब तक काला, बुगी भाँति का रुधिर निकले तब तक रुद्ध नकरे जो फस्द खोले और रुधिर बंद नहो तो मरुड़ी का जाला या गाय की कच्ची खाँठ उसपर बांध और जा सूजन मालूम हो खाल और सफेद चन्दन और रसातका समपर पतका २ लेप करे।

नवां अध्याय हजामत अलक अर्थात् पछने और सींगी के और जोकों के प्रकरण में

जो बालकों को फस्द की बराबर है दो वर्ष से छोटे बालक पछने लगाना योग्य नहीं साठ वर्ष के बाद भी पछने न लगावे, पछने के भेद हैं एक तो अकेली सींगी जो बिना पछनों के दोषको नहीं खींच सकती और निरी जोड़ों के लगाने की है और दूसरी पछने देकर सींगी लगाना यह निरी जोड़ और त्वचा के शुद्ध करने के लिये उत्तम है और पिंढलियों में सींगी लगाना फस्द वास्तकीक और साफन के मुख्य है त्वचा के रोगों में जोकों का लगाना उत्तम है परंतु जैसा दोष देखे वैसी जोक लगावे कम ज़ियादा न लगावे बाजी जोक विष की भरी होती है वह बड़ी और उस पर काली घरी लकीर होती है और जो जोक छुटाने के बाद खून बहे उसपर मुल्लिम महीन कूट जानकर बाधे।

दसवां अध्याय दोषादि की प्रवृत्ति के लक्षणों के प्रकरण में

जिस मनुष्यका मुँह मीठा रहे चहरे नेत्र और मूत्र काल हो मस्तक और शरीर भारी रहे शरीर में फुसियाँ निकलें नाक और मसूहों से रुधिर निकले संसका रुधिर प्रसृत जाने और जिस मनुष्यका मुँह नेत्र और जीभ तथा मूत्रका रक्त पीला पड़ जाय और मुँह में कड़वाहट तथा नाक में खुटकी और खरखराहट पाया जाय निद्रा जाती रहे जलन विक्षेप हो तो पित्त को प्रवृत्त जाने और जिस मनुष्य के चहरे, नेत्र, जीभ और मूत्रका रंग सफेद हो शरीर और त्वचा ढीली पड़ जाय मुँह और नाक ठंडी रहे और नाक से पानी टपका करे तथा जाती रहे निद्रा विशेष आये मुँह फीका रहे तो जानिये इसको कफ की प्रवृत्ति है और जिस

मृत्पुष्प का रंग रूप जाना पड़नाय और मूत्र में स्याही आनाय जलम सरपथ
 ही बदन रुखा और दुबला होनाय मुह खटा रहे जोड़ भारी रहें यकजाय
 चुषा मन्द और मूत्र गाढ़ा होनाय तो जानिये कि वाय प्रवृत्त है । और यह
 भी जानने योग्य है कि शरीर का मोटापन और रग की सफेदी कफका लक्षण
 है, रग पीला पड़नाय और शरीर दुबला होनाय तो पित्त प्रकृति का लक्षण
 जानिये रग लाल और शरीर मोटा हो तो रुधिर प्रकृति जानिये, काला रग
 और दुबलापन वाय प्रकृति का लक्षण है, दुबलापन खुरकी का लक्षण है ।
 मोटापन तराका लक्षण है, घूघरावले घोंस होना गर्मी का चिन्ह है, साधारण
 और थोड़े घावोंका होना मर्दी का लक्षण है, और मल्येक अवस्था का जान
 लेना उस अवस्था की प्रवृत्तता का लक्षण है शुद्धिपानी के माय शीघ्र वात
 करना तेजी का लक्षण है जड़ता तथा लज्जा का होना सर्दी का लक्षण है
 और मूत्रों में विशेष रग होना गर्मी का लक्षण है और इससे पृथक् सर्दी की
 विशेषता का लक्षण है रोमाच की विशेषता सर्दी का लक्षण है और कभी
 गर्मी का लक्षण है ।

ग्यारहवां अध्याय प्राण रक्षा के वर्णन में

रक्षा करना गई हुई आरोग्यता को फेर लाने से उत्तम है । प्राण रक्षक
 को उचित है कि उन हानि कारक वस्तुओं से जो आगे लिखी जाय बचता
 रहे । और प्राणों का भिजवान रहे उस वस्तु पर मन न चलावे जो त्याग के
 योग्य है । उसका त्याग करदे बहुधा रोग और क्षीणता की अवस्था में जो
 वस्तु कि काम में लाने के योग्य है उसका त्याग न करे और किसी वस्तु का
 अभ्यास न ढाळे कि अभ्यास दूसरा मन होता है व्यायाम में भी प्राणों की
 रक्षा होती है और फुजल का पचाव होता है और धुषा लगती है व्यायाम
 करना भी बहुत अच्छा है और घावों से रोग में मारी औषधि न करे और जो
 क्षीणित आहार को चाहे तो आहार कर जहाँ आहार से काम निकले वहाँ
 औषधि न करे और जब तक एक औषधि से काम निकले दूसरी न करे इसी
 प्रकार जब दो औषधि से काम निकले तीसरी का नाम न ल और हल्की
 औषधि शुरू करे ।

गुण

बिकृति तीन प्रकार से होती है एक आहार से दूसरी औषधि से और

तीसरी दस्तकारी यानी चीर फाड़ आदि से उन छ वस्तुओं में से जिनमें आहार भी शामिल है काम में लाना नाम विधि का है। कभी आहार का त्याग करना पड़ता है जैसे वीरान में थोड़ा आहार करना पड़ता है जो थोड़ा बल रखना चाहें तो और बल आहार के द्वारा होता है आहार की तोल में कभी की उस समय जरूरत है जिस समय अजीर्ण हो और आहार की कभी की उस समय जरूरत होगी जिस समय जुधा तो विशेष हो और नसों में दोष भी अत्यन्त हो आहार पराक्रम का मित्र होता है और शत्रु भी है इस प्रकार कि वह रोगों को बल देता है और रोग मनुष्य का शत्रु है और शत्रु का मित्र शत्रु होता है तब रोगों में उतना ही आहार उचित है जितना हानि कारक न हो औषधि से चिकित्सा करने के तीन भेद हैं एक औषधि की मात्रा दूसरी उसकी कैफियत अर्थात् गर्मी सर्दी तरी और खुशकी की पहचान तीसरे रोग का समाधान कि चारों समय में से कौनसा है और चार समय यह है सूजन के बढ़ाव के आदि में और उतार के अन्त में जो सूजन का बढ़ाव हो तो उन औषधियों को काम में लावे जो दोष को रोकें और सूजन पटक जाने के बाद पचाव वाली औषधियों को काम में लावे। और सूजन के बढ़ाव में दोष पचाने वाली औषधि काम में लावे।

छहों ऋतुओं में हड़ खाने की विधि

जो एक वर्ष पर्यन्त इस प्रकार हड़का सेवन करे तो शरीर आरोग्यता को प्राप्त हो और सदैव निरोग रहे चैत्र और वैशाख में शहद के सग ज्येष्ठ आषाढ़ में मुनक्का दाख के साथ भावण भादों में सैष लवण के साथ आश्विन कार्तिक में बराबर की मिश्री के साथ अगहन पौष में बराबरकी सोंठ के साथ और माघ फागुण में तीन नग पीपलों के साथ साढ़े तीन मासे की मात्रा सेवन करे तो उस मनुष्य को ईश्वर कृपा में कभी रोग और अजीर्ण न हो।

दूसरा भिकाला इलाज सुदाम

यानी दर्दसिर के बयान में

अर्थात् दूसरा खण्ड मस्तक पीड़ा के प्रकरण में जो पीड़ा आये मस्तक में हो उसे आंघाभीसी और फारसी में सक्रीम कहते हैं यदि रुधिर कफ वात और पित्त यह चारों मिले हों तो सन्निपात की मस्तक पीड़ा जानना चाहिये इसको फारसी में प्राही कहते हैं। और जो इनमें से कोई न हो तो क्षीणता की मस्तक

पीड़ा है फ़ारसी में उसे साभिज कहते हैं। और जो घृष अथवा गरम व्यार या अग्नि या गरम औषधि की गर्मी के कारण हो उसे फ़ारसी में साभिज हार कहते हैं। जो ठही हवा या ठहा पानी काम में लाने अथवा ठडे मकान में रहने से हो तो उसको फ़ारसी में साभिज बरद कहते हैं।

पित्त की मस्तक पीड़ा का लक्षण

जिस मनुष्यका मस्तक अग्नि के सदृश जले ठही वस्तु से आराम और गर्म से दुःख हो वो जानना चाहिये कि पित्त की मस्तक पीड़ा है।

कफ़ की मस्तक पीड़ा

का लक्षण

जिस मनुष्यका शरीर शिथिल और ठहा रहे और जनल न हो गर्म वस्तुओं से सुख और सर्द से दुःख हो वो जानना चाहिये कि कफ़ की मस्तक पीड़ा है।

वात की मस्तक पीड़ा का लक्षण

एक स्थान से दूसरे स्थान में मस्तक पीड़ा तथा कान में शब्द मालूम हो वो वात की जानिये।

चिकित्सा

जो कठोर प्रवृत्त हो वो फ़स्दे खोले और कफ़ वा पित्त वा वात से हो तो जुस्साब से शुद्ध करें।

अब यहां थोड़े से नुसखे मस्तक पीड़ा और आघासीसी के लिखते हैं।

इतरीफल कशनीजी जो मस्तक पीड़ा भोंएँ और नेत्र रोगों को गुणदायक है

बड़ी इड़का भक्कल, कावली इड़, काखी इड़ और बनिया प्रत्येक एक तोला कूट छान कर घी में अकोरे फिर तिगुन शहद की चाशनी में पिछाकर भाजून अर्थात् पाक बनावे मात्रा दो तोले।

इतरीफल मुलैयन

जो प्रकृति को नर्म करे और बिगड़े मल को निकासे और मस्तक को शुद्ध करे। और मस्तक पीड़ा तथा कानों के भिनभिमाहट और आँखों की अंधेरी को गुणदायक है।

तीसरी दस्तकारी यानी चीर फाड़ आदि से उन छ. वस्तुओं में से जिनमें आहार भी शामिल है काम में लाना नाम विधि का है। कभी आहार का त्याग करना पड़ता है जैसे वीरान में थोड़ा आहार करना पड़ता है जो थोड़ा बल रखना चाह तो और बल आहार के द्वारा होता है आहार की तोल में कभी की उस समय जरूरत है जिस समय अजीर्ण हो और आहार की कभी की उस समय जरूरत होगी जिस समय जुधा तो विशेष हो और नसों में दोष भी अत्यन्त हो आहार पराक्रम का मित्र होता है और शत्रु भी है इस प्रकार कि वह रोगों को बल देता है और रोग मनुष्य का शत्रु है और शत्रु का मित्र शत्रु होता है तब रोगों में उतना ही आहार लक्षित है जितना हानि कारक न हो औषधि से चिकित्सा करने के तीन भेद हैं एक औषधिकी मात्रा दूसरी उसकी कैफियत अर्थात् गर्मी सर्दी तरी और खुशकी की पहचान तीसरे रोग का समाधान कि चारों समय में से कौनसा है और चार. समय यह है सूजन के बढ़ाव के आदि में और चतार के अन्त में जो सूजन का बढ़ाव हो तो उन औषधियों को काम में लावे जो दोष को रोकें और सूजन पटक जाने के बाद पचाव वाली औषधियों को काम में लावे। और सूजन के बढ़ाव में दोष पचाने वाली औषधि काम में लावे।

छहों ऋतुओं में हड़ खाने की विधि

जो एक वर्ष पर्यन्त इस प्रकार हड़का सेवन करे तो शरीर आरोग्यता को प्राप्त हो और सदैव निरोग रहे चैत्र और वैशाख में शहद के सग ज्येष्ठ आपाढ़ में सुनक्का दाख के साथ भावण भादों में सैष लवण के साथ आश्विन का-त्तिक में बराबर की मिश्री के साथ अगहन पौष में धरापरकी सोंठ के साथ और माघ फाल्गुण में तीन नग पीपलों के साथ साढ़े तीन माघे की मात्रा सेवन करे तो उस मनुष्य को ईश्वर कृपा से कभी रोग और अजीर्ण न हो।

दूसरा मिकाला इलाज सुदाअ

यानी दर्दसिर के बयान में

अर्थात् दूसरा खण्ड मस्तक पीड़ा के प्रकरण में जो पीड़ा आये मस्तक में हो उसे आधामीसी और फारसी में सकीम कहते हैं यदि कधिर कफ वात और पित्त यह चारों मिले हों तो सन्निपात की मस्तक पीड़ा जानना चाहिये इसको फारसी में मादी कहते हैं। और जो इनमें से कोई न हो तो क्षीणता की मस्तक

पीड़ा है फ़ारसी में उसे साजिज़ कहते हैं। और जो धूप अथवा गरम व्यार या अग्नि या गरम औषधि की गर्मी के कारण हो उसे फ़ारसी में साजिज़ हार कहते हैं। जो ठंडी हवा या ठंडा पानी काम में लाने अथवा ठंडे मकान में रहने से, हो तो उसको फ़ारसी में साजिज़ बरद कहते हैं।

पित्त की मस्तक पीड़ा का लक्षण

जिस मनुष्य का मस्तक अग्नि के सदृश जले उठी वस्तु से आराम और गर्म से दुःख हो तो जानना चाहिये कि पित्त की मस्तक पीड़ा है।

कफ़ की मस्तक पीड़ा

का लक्षण

जिस मनुष्य का शरीर शिथिल और ठंडा रहे और जनल न हो गर्म वस्तुओं से सुख और सर्द से दुःख हो तो जानना चाहिये कि कफ़ की मस्तक पीड़ा है।

वात की मस्तक पीड़ा का लक्षण

एक स्थान से दूसरे स्थान में मस्तक पीड़ा तथा कान में शब्द मालूम हो तो वात की जानिये।

चिकित्सा

जो बहिर प्रवृत्त हो तो फ़स्द खोले और कफ़ वा पित्त वा वात से हो तो छुल्लाव से शुद्ध करें।

अब यहां थोड़े से नुसखे मस्तक पीड़ों और आघासीसी के लिखते हैं।

इतरीफल कशनीजी जो मस्तक पीड़ा भोंएँ और नेत्र

रोगों को गुणदायक है

बड़ी इड़का पक्कल, काषली इड़, काक्षी इड़ और धनिया मत्थेक एक तोला छूट छान कर घी में अकोरे फिर सिंगुन शहद की आधनी में पिछाकर, पाजून अर्थात् पांक बनावे मात्रा दो तोले।

इतरीफल मुलैयन

जो प्रकृति को नर्म करे और बिगड़े मल को निकाले और मस्तक को शुद्ध करे। और मस्तक पीड़ा तथा कानों के भिनभिनाहट और आँखों की अंधेरी को गुणदायक है।

तीसरी दस्तकारी यानी चीर फाड़ आदिसे उन छ वस्तुओं में से जिनमें आहार भी शामिल है काम में लाना नाम विधि का है। कभी आहार का त्याग करना पड़ता है जैसे वौरान में थोड़ा आहार करना पड़ता है जो थोड़ा बल रखना चाहे तो और बल आहार के द्वारा होता है आहार की तोल में कमी की उस समय जरूरत है जिस समय अजीर्ण हो और आहार की कमी की उस समय जरूरत होगी जिस समय लुधा तो विशेष हो और नसों में दोष भी अत्यन्त हो आहार पराक्रम का मित्र होता है और शत्रु भी है इस प्रकार कि वह रोगों को बल देता है और रोग मनुष्य का शत्रु है और शत्रु का मित्र शत्रु होता है तब रोगों में उतना ही आहार उचित है जितना हानि कारक न हो औषधि से चिकित्सा करने के तीन भेद हैं एक औषधि की मात्रा दूसरी उसकी कैफियत अर्थात् गर्मी सर्दी तरी और खुश्की की पंचान तीसरे-राग का समायान कि चारों समय में से कौनसा है और चार समय यह है सूजन के बढ़ाव के आदि में और चतार क अन्त में जो सूजन का बढ़ाव हो तो उन औषधियों को काम में लावे जो दोष को रोकें और सूजन पटक जाने के बाद पचाव वाली औषधियों को काम में लावे। और सूजन के बढ़ाव में दोष पचाने वाली औषधि काम में लावे।

छहों ऋतुओं में हड्ड खाने की विधि

जो एक वर्ष पर्यन्त इस प्रकार हड्डका सेवन करे तो शरीर आरोग्यता को प्राप्त हो और सदैव निरोग रहे चैत्र और वैशाख में शहद के सग ज्येष्ठ आपाद में मुनक्का दाख के साथ आरण भादों में सेंध खवण के साथ आश्विन का-लिक में बराबर की मिर्ची के साथ अगहन पौष में बराबरकी सोंठ के साथ और माघ फाल्गुण में तीन नग पीपलों के साथ साढ़े तीन माशे की मात्रा सेवन करे तो उस मनुष्य को ईश्वर कृपा से कभी रोग और अजीर्ण न हो।

दूसरा मिकाला हलाज सुदाअ

यानी दर्दसिर के वयान में

अर्थात् दूसरा खण्ड मस्तक पीड़ा के प्रकरण में जो पीड़ा आये मस्तक में हो उसे आंघामीसी और फारसी में सक्तीम कहते हैं यदि कधिर कफ वात और पित्त यह चारों मिले हो तो सन्निपात की मस्तक पीड़ा जानना चाहिये इसकी फारसी में माही कहते हैं। और जो इनमें से कोई न हो तो क्षीणता की मस्तक

पीड़ा है फ़ारसी में उसे साभिज कहते हैं। और जो घूप अथवा गरम व्यार या अग्नि या गरम औषधि की गर्मी के कारण हो उसे फ़ारसी में साभिज हार कहते हैं। जो ठंडी हवा या ठंडा पानी काम में लाने अथवा ठंडे मकान में रहने से हो तो उसको फ़ारसी में साभिज बरद कहते हैं।

पित्त की मस्तक पीड़ा का लक्षण

जिस मनुष्यका मस्तक अग्नि के सदृश जले उठी वस्तु से आराम और गर्म से दुःख हो वो जानना चाहिये कि पित्त की मस्तक पीड़ा है।

कफ़ की मस्तक पीड़ा

का लक्षण

जिस मनुष्यका शरीर शिथिल और ठंडा रहे और बनल न हो गर्म वस्तुओं से सुख और सर्द से दुःख हो वो जानना चाहिये कि कफ़ की मस्तक पीड़ा है।

वात की मस्तक पीड़ा का लक्षण

एक स्थान से दूसरे स्थान में मस्तक पीड़ा तथा कान में शब्द मालूम हो तो वात की जानिये।

चिकित्सा

जो क्षीर भण्ड हो तो फ़स्द खोले और कफ़ वा पित्त वा वात से हो तो जुस्साव से शुद्ध करें।

अब यहाँ थोड़े से नुसखे मस्तक पीड़ा और आघासीसी के लिखते हैं।

इतरीफल कशनीजी जो मस्तक पीड़ा भौंएँ और नेत्र

रोगों को गुणदायक है

बड़ी इड़का भकल, काबली इड़, काबली इड़ और धनिया मत्येक एक तोला कूट छान कर घी में अकौरे फिर सिधुन शहद की चाबनी में पिटाकर पाजून अर्थात् पाक बनावे मात्रा दो तोले।

इतरीफल मुलैयन

जो मरुति को नर्म करे और बिगड़े मल को निकाले और मस्तक को शुद्ध करे। और मस्तक पीड़ा तथा कानों के भिनभिनाहट और आँखों की अपेरी को गुणदायक है।

विधि

काबली हड़ का घक्कल, घड़ी हड़ का घक्कल, आवले का घक्कल, बहेद का घक्कल, काळी हड़, मत्स्यक तीन तोला, गुलाब के फूल, सनाय, निसोत खिला हुआ मत्स्यक चौदह मांश, सौंठ पौने दो मांश कूट छान कर रोगन वादाप में अफोरे और तिगुने शहद या मिथी की चाशनी में मिलावे, मात्रा प्रकृति के अनुसार देवे ।

पाशोया

मस्तक पीड़ा माही हो या साजिज दोनों को बहुत गुणदायक है, खारी नोन दो तोले चार मांश, गैहू की भुसी दो मुट्ठी, घेरकी पत्ती, खतपीके पत्ते, और मकोय के पत्त मत्स्यक आधपाव खतपी के घीज चार तोले आठ मांश, सबको पानी में औटावे जब आधा पानी रहे तब गुनगुना २ पाशोया करे जो सब औपधिवा न मिलें तो जितनी मिलसके वही उत्तम है और जो कोई भी न मिलसके तो गरम पानी और गैहू की भुसी और खारी नमक ही से पाशोया करे और पाव को दवाना मलना और तालुओं को मलना और सहलाना गर्मी और सर्दी को मस्तक पीड़ा को गुणदायक है ।

पाशोया

गरम जल से हाथ पांव और तालुओं का घोना मस्तक पीड़ा को गुण करता है शेख अबूअली कानून में लिखता है कि मस्तक पीड़ा वालों के पैरों पर प्रायः गरम पानी का तरा देता रहे यहाँ तक कि माकूम दे कि कोई वस्तु मस्तक से हाथ पैरों की तरफ चतरती है और मस्तक पीड़ा दूर होती जाती है और अबू माहर ने भी लिखा है कि ठंढे पानी से नहाना गर्मी की मस्तक पीड़ा को शान्ति करता है ।

गुण

मस्तक पीड़ा में आराम से रहना कम भोजन करना पानी कम पीना कम हिठना झुलना बुरा भोजन न करना और अंधखुरे पैदा करने वाली वस्तु न खाना चाहिये ।

बखुर

अर्थात् बफारा मस्तक पीड़ा को गुण करता है एक सेगार में पानी भरकर अपने आगे रखे और अपने शरीर पर चारों ओर से दोहर ओढ़कर एक ३

पिटी का ढेला गरम करके उसमें ढाले और मस्तक को झुकाकर उसके धुपें का बफारा ले तो मस्तक पीड़ा दूर जावेगी ।

बफारा ।

गर्म और सर्द मस्तक पीड़ा को गुण दायक है काक जंगा के टुकड़े २ करके औटाकर बफारा ले पश्चात् दो भाग चन्दन और एक भाग रेंडी पीसकर पसला पसला सेप करें ।

हरिरी

फि मस्तक को बल देता है खिले चने दो तोले आठ मांशे महीन पीसकर तीन तोले आठ मांशे बादाम रौशन में भूने और निशास्ता दो तोले आठ मांशे सफेद पोस्त के दाने दो तोले आठ मांशे, चौदह तोले कद मिलाकर गो के दूध में हरिरी बनाकर दो तोले आठ मांशे घी का बघार देकर गुनगुना २ पान करें ।

दवा पित्त की मस्तक पीड़ा को गुण करे

बनियां और काहू मल्येक साढ़े तीन मांशे पानी में पीसकर छानले थोड़ा मीठा मिलावे और तोले भर ईसफ गोळ छिड़क कर पीवे । अथवा दो तोले शर्बत नीलोफर मिलावे ।

दवा—नज्जले की मस्तक पीड़ा को गुण करे सीप को सिरके में घिसकर कानों की लोभों में लगावा रहे ।

दवा—मर्नीठ को मस्तक पर बांधे

दवा—पुरानी मस्तक पीड़ा को गुण करे । दो चार घतूरे के बीज नित्य निगले महुए के फूलका तेल गर्मी और सर्दी की मस्तक पीड़ा को गुणदायक है ।

क्रिया

सोंठ, वायबिड़ग और बिछी हुई सुतारटी को जो कुट करके मगरा महुए के फूल बराबर तिल का तेल चार भाग महुए के फूलका जीरा निकाछ ढाले और सब दवाओं को मध्यम तेल से देने पानी में औटावे जब पानी तेल की बराबर रहजाय तब छानकर तेलमें मिलाकर औटावे जब पानी जलकर तेल मात्र रहजाय तब छानकर छ घूट कान में टपकावे सब प्रकार की मस्तक पीड़ा जाय ।

सज्जनात अर्थात् कान के टपकाने की औपधियां

सज्जन—मस्तक पीड़ा और मस्तक की गर्मीके सज्जन को बहुत गुणदायक है कपूर और चन्दन को गुलाब में घिसकर नाक में टपकावे ।

विधि

काषली हड़ का घक्कल, चढ़ी हड़ का घक्कल, आवले का घक्कल, घड़े का घक्कल, काळी हड़, मत्स्यक तीन तोला, गुलाब के फूल, सनाय, निसाव खिला हुआ मत्स्यक चौदह मांशे मीठ पौने दो मांशे कूट धान फर रोगन पादाय में अकोरे और तिगुने शहद या मिथी की चाशनी में मिलावे माषा प्रकृति के अनुसार देवे ।

पाशोया

मस्तक पीड़ा माही हो या साजिज दोनों को बहुत गुणदायक है खारी नोन दो तोले चार मांशे, गैहू की भुसी दो मुंठों, घेरफा पत्ती, खतमी के पत्ते, और यकोय के पत्ते मत्स्यक आर्घपाव खतमी के घीन चार तोले आठ मांशे सबको पानी में औटावे जब आधा पानी रहे तब गुनगुना २ पाशोया करे जो सब औषधियां न मिलें तो निसनी मिलासके वही उत्तम है और जो कोई भी न मिलासके तो गरम पानी और गैहू की भुसी और खारी नमक ही से पाशोया करे और पांव को दाना मलना और तालुओं को मलना और सहलाना गर्मी और सर्दी की मस्तक पीड़ा को गुणदायक है ।

पाशोया

गरम जल से हाथ पांव और तालुओं का घोना मस्तक पीड़ा को गुण करता है शेख अबूअली कानून में लिखता है कि मस्तक पीड़ा वालों के पैरों पर पाय गरम पानी का तरा देता रहे यहाँ तक कि मादूम दे कि कोई वस्तु मस्तक से हाथ पैरों की तरफ चरती है और मस्तक पीड़ा दूर होती जाती है और अबू माहर ने भी लिखा है कि ठंडे पानी से नहाना गर्मी की मस्तक पीड़ा को शान्ति करता है ।

गुण

मस्तक पीड़ा में आराम से रहना कम भोजन करना पानी कम पीना कम दिखना झुलना-बुरा भोजन न करना और अवखरे पैदा करने वाली वस्तु न खाना चाहिये ।

बखूर

अर्घात बफारा मस्तक पीड़ा को गुण करता है एक तगार में पानी भरकर अपने आगे रखे और अपने शरीर पर चारों ओर से दोहर ओढ़कर एक २

मिट्टी का डेला गरम करके उसमें हाथ और मस्तक को मूकाकर उसके धुएँ का वफारा ले तो मस्तक पीड़ा दूर जावेगी।

वफारा।

गर्म और सर्द मस्तक पीड़ा को गुण दायक है काक जंगा के टुकड़े २-करके ओटाकर वफारा ले पश्चात् दो भाग चन्दन और एक भाग रेंदी पीसकर पतला पतला छेप करे।

हरीरा

कि मस्तक को बल देता है खिले घने दो तोले आठ मांशे महीन पीसकर तीन तोले आठ मांशे बादाम रौशन में घूने और निशास्ता दो तोले आठ मांशे सक्रेद पोस्त के दाने दो तोले आठ मांशे, चौदह तोले कद मिलाकर गो के दूध में हरीरा बनाकर दो तोले आठ मांशे घी का बघार देकर गुनगुना २ पान करे।

दवा पित्त की मस्तक पीड़ा को गुण करे

घनियाँ और काहू मल्येक साढ़े तीन मांशे पानी में पीसकर छानले थोड़ा मोठा मिलावे और तोले भर ईसक गोल छिड़क कर पीवे। अथवा दो तोले शर्बत नीलोफर मिलावे।

दवा—नज्जे की मस्तक पीड़ा को गुण करे सीप को सिरके में घिसकर कानों की लोओं में लगाता रहे।

दवा—मजीठ को मस्तक पर बांधे।

दवा—पुरानी मस्तक पीड़ा को गुण करे। दो चार घतूरे के बीज नित्य निगले महुए के फूलका तेल गर्मी और सर्दी की मस्तक पीड़ा को गुणदायक है।

क्रिया

सोंठ, बायविड़ग और छिल्ली हुई मूलाहटी को जो कुट करके मगरा महुए के फूल बराबर तिल का तेल चार भाग महुए के फूलका कीरा निकाल दावे और सब दवाओं को प्रथम तेल से देने पानी में ओटावे जब पानी तेल की बराबर रहजाय तब छानकर तेलमें मिलाकर ओटावे जब पानी जलकर तेल मात्र रहजाय तब छानकर छ घुद कान में टपकावे सब प्रकार की मस्तक पीड़ा जाय।

सज्जनात अर्थात् कान के टपकाने की औपधियाँ

सज्जन—मस्तक पीड़ा और मस्तक की गर्मी के सज्जन को बहुत गुणदायक है कपूर और चन्दन को गुलाब में घिसकर नाक में टपकावे।

संज्ञत दूसरा बुद्ध, काहे, हठाधानियाँ, काशनी, ताजा मकोह की पत्तियाँ सबको अथवा एक-२ दो २ जैसे जानों निचोड़ छानकर थोड़ी २ बुद्ध कान में टपकावे।

संज्ञत मस्तक पीड़ा और शीत रोगों को शुण्ण दायक है काली मिरच पीपल लौंग इन सब को अथवा दो एक को जैसा जानो सोंक के अर्क में पीस कर नाम में टपकावे।

संज्ञत सर्दी और कफ की मस्तक पीड़ा को गुण करे जूफा के पत्ते का पानी छानकर कान में टपकावे।

संज्ञत सर्दी की मस्तक पीड़ा को गुण करे। कठल की जड़ को पानी में ओटाकर नाक में टपकावे।

संज्ञत सोंठ, बायबिड़ंग और शुष्क बराबर २ गरम पानी में पीसकर नाक में टपकावे।

संज्ञत मस्तक को भवाद् से साँक कर तीन चमेड़ी के फूल गुल्लरीगान में मिलाकर नाक में टपकावे।

संज्ञत आघासीसी की पीड़ा को गुण करे दुपहरिया के फूल की पंखड़ी मलकर उसका पानी नाक में टपकावे।

अथवा एक काली मिरच और ससकी बराबर मक्खली की बिष्टा पुत्र जनी स्त्री के दूध में पीसकर कान में टपकावे और थोड़ा नेत्रों में भी लगावे।

अथवा सौसन का टाई फूल और आधो काली मिरच पानी में पीसकर जो पीड़ा बायीं ओर हो तो दहने नयने में और जो दहनी ओर हो तो बाँये नयने में टपकावे।

अथवा

रीठे के छिलके को पानी में खूब मछे जब भाग निकलें गरम करके टाई बुद्ध दोनों नयनों में टपकावे।

अथवा सिरस के चीज थोड़े पानी में पीसकर पोटली बाँधकर जिस ओर मस्तक पीड़ा हो टाई बुद्ध उस ओर के नयने में टपकावे।

अथवा नौसादर और स्पाइदाना मल्लेक दो रस्ती पानी में पीसकर गाय के घी में मिलाकर टपकावे।

अथवा प्याक और महुए के चीज थोड़े से चार काली मिरचों के साथ ३ में पीसकर पीड़ा बायीं ओर हो तो बाँये नयने में टपकावे और केवल

काली मिरच को ही घी में पिलाकर टपकाना भी आधासीसी को गुण करता है।

अथवा—समुद्रफल की मिंगी पानी में पीसकर पीड़ा दाहिनी ओर हो तो बाएँ नयने में और बायीं ओर हो तो दाएँ नयने में टपकावे जो स्यादका डर हो तो स्त्री के दूधमें घिसकर टपकावे।

संज्ञित—यस पीड़ा को गुणदायक है जो धारी से हो बिंढाल पानी में भिगोकर पानी को छानकर दो बूँद नाक में टपकावे तो आधासीसी के मवाद को बहाकर दूर करे।

सफूक ।

अर्थात् फली जो मस्तकको ताकत दे बनकशा दो मांशे उत्तखुदूस एक मांशे, घनिर्पा दो मांशे, बालुवम एक मांशे, मुही एक मांशे, गुलाब के फूल दो मांशे, बादाम की मिंगी दो मांशे समझी परस्पर मिश्री कूट छानकर मात्रा सोले भर तक छ ।

शर्बत हड ।

पिस्तकी मस्तक पीड़ा को गुणदायक है और मज्जति को नरम करता है दस नग बड़ी हडों का बककल जोकुल कर तीन दिन चीनी के प्याले में धूपमें रखले, चौथे दिन मलकर छानले और फिर उसी प्रकार प्यारह बड़ी हडों का बककल तीन दिन धूप में रखले चौथे दिन मल छानकर आध सेर घूरे की चाशनी करे और जो घूरे के बदले तुरजवीन हो तो बहुत अच्छा है ।

शर्बत ।

जो मस्तक पीड़ा को गुणदायक है बनकशा नीलोंकर गुलाब के फूल मत्येक चौदह मांशे आजूयुखारा दस दाने पानी में भिगोकर मल छान कर तिगुने घूरे की चाशनी करे मात्रा दो तीन सोला और जो आबु बुखारा न हो वो इसी काम में लोपे ।

शमूम ।

अर्थात् हुलास जो गर्मी की मस्तक पीड़ा को गुणदायक है कपूर या चदन सूये । अथवा सीरा एकही सूये ।

शमूम—आधासीसी का दर्द और मस्तक पीड़ा को गुण कर नौसादर और हल्दी पिला कर सूये ।

गुण समस्त गरम इश्रों को सूंधने से मस्तक को मल माप्त होता है

और इसी प्रकार उही सुगन्धि सूघने से मस्तक में आराम होता है ।

जमाद और तिला अर्थात् गाढ़ा और पतला लेप

जमाद मस्तक पीड़ा और आघासीसी को गुणदायक है सोंठ चन्दन और अरु की जड़ का छिछका कूट छानकर पानी से धोकर साठी चाबलों के साथ महीन पीस कर लेप करे ।

जमाद गर्म मस्तक पीड़ा को गुण करे ईसफगोल का लुआव गुल्मी में मिलाकर तिला करे और पीना भी गुण करता है ।

अथवा चूका और दूध दोनों को बराबर पानी में पीसकर माथेपर लेप करे अथवा ताजा ककड़ी और कद्दू के टुकड़ा कर मस्तक पर रखना गुण करे ।

अथवा खतमी के बीज तथा पच्चे घानिया और गेहू पानी में पीस कर मस्तक या कनपटी पर लेप करे ।

तिला महीनो के फूल पानी में पीसकर मस्तक पर तिला करे तो गर्मी की मस्तक पीड़ा को गुण करे ।

अथवा काहू के बीज पानी में महीन पीस कर कनपटी पर लेप करे ।

अथवा तिलके पेड़की पाचियाँ सिरके वा पानी में पीसकर तिला करे ।

अथवा खुरफे के पत्ते सिरके वा पानी में पीसकर मस्तक पर लेप करे ।

अथवा चन्दन घिसकर लगावे । अथवा कोई मस्तक पर तिला करे ।

अथवा घानिया पीसकर उसमें अंडे की सफेदी मिलाकर लेप करे ।

अथवा जौ का आटा पानी में धोले कर लेप करे ।

अथवा लिमौड़े का लेप गरम मस्तक पीड़ा को गुण करे ।

अथवा अक्रोम गुल रौशन में खरख कर सिर पर तिला करे ।

अथवा कासीनी के बीज गुलाब या पानी में पीस कर तिला करे ।

अथवा महीनो की पत्ती लगाना मस्तक पीड़ा और आघासीसी को गुण करे ।

अथवा धकान के पत्ते पीसकर लगाना मस्तक पीड़ा को गुण करे ।

अथवा सीतलचीनी गुलाब में पीस कर तिला करे ।

अथवा कषावा गुलाब में पीसकर तिला करे ।

अथवा अनार की जड़ पानी में पीस कर लेप करे और सोंठ-रेंदी के में घिसकर गुनगुना २ लेप करे तो सर्दी को मस्तक पीड़ा को गुण करता है ।

अथवा सहजने के पत्ते पानी में पीसकर गर्म २ लेप करना सर्दी और की और खाली मस्तक पीड़ा का गुण करता है ।

अथवा पीपल पानी में पीसकर लेप करे ।

अथवा कछौजी और कार्वाजीरी पानी में पीसकर लेप करे ।

अथवा रेंदी अजवायन सोंठ पानी में पीसकर गरम कर लेप करे ।

अथवा नरकाचूर पानी में पीसकर मेहदी के सहज तल्लों में लगावे ।

अथवा बिनौल की गींगी पानी में पीसकर कनपटी पर लेप करे ।

अथवा चंदन और तम्र दोनों बराबर घिसकर गुनगुना कर लगाना और सर्दी की मस्तक पीड़ा को गुण करे ।

अथवा तर्बूज के बीज और मुचकुंद के फूल दोनों या एक को पानी में र लगाना गुण करे ।

अथवा बकरीका मांसन मस्तक पर लगाना गर्मी और खुरशी की मस्तक को गुण करे ।

अथवा दो लौंग और चार रस्सी अफीम पानी में पीस गुनगुना कर पर लगाना नजले की पीड़ा को गुण करे ।

अथवा हड़ की गुठली पानी में घिसकर तिला करना आघासीसी को

अथवा मुर्गी की बीट और कासीमिर्च पानी में पीसकर जो मस्तक पीड़ा हमली तो बाई तरफ और जो बाई ओर हो तो दाई ओर लेप करे ।

अथवा कवूतर की बीट राई में मिलाकर लेप करना पुरानी आघासीसी करता है ।

अथवा जमाकघोटा पानी में पीसकर जिस ओर पीड़ा न हो तिला करे तो दो गुनगुने पानी से धो दाखे आघासीसी दूर हो जावेगी ।

आघासीसी की चिकित्सा बहुत जल्द करना चाहिये जव यह पुरानी

और इसी प्रकार ठंडी सुगन्धि सूपने से मस्तक में आराम होता है।

जमाद और तिला अर्थात् गाढ़ा और पतला लेप

जमाद मस्तक पीड़ा और आघासीसी को गुणदायक है सो

और भरद की जड़ का छिड़का कूट छानकर पानी से धोकर साठों चाँद के साथ महीन पीस कर लेप करे।

जमाद गर्म मस्तक पीड़ा को गुण करे इसकगोल का छद्माव खत्मी में मिलाकर तिला करे और पीना भी गुण करता है। -

अथवा चूका और दूध दोनों को बराबर पानी में पीसकर लेप करे अथवा ताजा ककड़ी और कड़ू के टुक डीलकर मस्तक पर रखना गुण

अथवा खत्मी के बीज तथा पत्ते धनिया और गेहूँ पानी में पीस कर मस्तक या कनपटी पर लेप करे।

तिला मसंदों के फूल पानी में पीसकर मस्तक पर तिला करे तो की मस्तक पीड़ा को गुण करे।

अथवा काहूँ के बीज पानी में महीन पीस कर कनपटी पर लेप

अथवा तिलके पेड़की पाचिपाँ सिरके वा पानी में पीसकर तिला

अथवा खुरफे के पत्ते सिरके वा पानी में पीसकर मस्तक पर लेप

अथवा चन्दन विमकर लगावे। अथवा कोई मस्तक पर

अथवा धनियाँ पीसकर उसमें अडे की सफेदी मिलाकर लेप करे

अथवा जौ का आटा पानी में धोले कर लेप करे।

अथवा लिहसौंहे का लेप गरम मस्तक पीड़ा को गुण करे।

अथवा अफ्रोम गुल रौशन में खगल कर सिर पर तिला करे

अथवा कासेनी के बीज गुलाब वा पानी में पीस कर तिला

अथवा मसंदों की पत्तों लगाना मस्तक पीड़ा और आघासीसीको

अथवा बकायन के पत्ते पीसकर लगाना मस्तक पीड़ा को गुण

अथवा सीतलचीनी गुलाब में पीस कर तिला करे।

- अथवा कषाधा गुलाब में पीसकर तिला करे ।
- अथवा अनार की जड़ पानी में पीस कर लेप करे और सोंठ रेंदी के में घिसकर गुनगुना २ लेप करे तो सर्दी की मस्तक पीड़ा को गुण करता है ।
- अथवा सड़ने के पत्ते पानी में पीसकर गर्म २ लेप करना सर्दी और की और खाली मस्तक पीड़ा को गुण करता है ।
- अथवा पीपल पानी में पीसकर लेप करे ।
- अथवा कलौजी और कालीजीरी पानी में पीसकर लेप करे ।
- अथवा रेंदी अजवायन सोंठ पानी में पीसकर गरम कर लेप करे ।
- अथवा नरकाचूर पानी में पीसकर मेहदी के सट्टा तलवों में लगावे ।
- अथवा बिनौले की भीगी पानी में पीसकर कनपटी पर लेप करे ।
- अथवा चंदन और तज दोनों बराबर घिसकर गुनगुना कर लगाना और सर्दी की मस्तक पीड़ा को गुण करे ।
- अथवा तर्बूज क बीज और सुचकुद के फूल दोनों या एक को पानी में कर लगाना गुण करे ।
- अथवा बकरीका मांसन मस्तक पर लगाना गर्मी और खुरकी की मस्तक को गुण करे ।
- अथवा दो खोंग और चार रत्ती अफ्रीम पानी में पीस गुनगुना कर क पर लगाना नजले की पीड़ा को गुण करे ।
- अथवा हड़ की गुठली पानी में घिसकर तिला करना आधासीसी को करे ।
- अथवा झुई की बीठ और काछीमिर्च पानी में पीसकर जो मस्तक पीड़ा ओर हो तो बाई तरफ और जो बाई ओर हो तो दाई ओर लेप चाहिये ।
- अथवा कवुनर की बीठ राई में मिछाकर लेप करना पुरानी आधासीसी कर करता है ।
- अथवा जमाछघोटा पानी में पीसकर जिस ओर पीड़ा न हो तिलाकरे तब हो गुनगुने पानी से धो डाले आधासीसी दूर हो जावेगी ।
- उ आधासीसी की चिकित्सा बहुत अद्भुत करना चाहिये जयपुरानी

पड़जाती है तब बड़ी कठिनता से जाती है पुरानी पड़जाय तब जानना चाहिये कि सर्दी से है बिना गर्म औषधियों के कभी न जायगी ।

जमाद मस्तक पीड़ा को गुण करे एक घाटाय की सिंगी सरसों के तेल में पीसकर मस्तक में मले तो पीड़ा दूर होवे ।

अथवा पल्लवा और रेंढी बराबर पानी में पीसकर गुनगुना र ठेप करे ।

कमाद उसे कहते हैं कि कोई वस्तु सूखी या गीली गरम करके जोड़ों पर रखे और जब ठंडी होजाय तब फिर गरम करे ।

कमाद सर्द आघासीसी और मस्तक पीड़ा को गुण करे वावूना के फूल मेथी के छत्राव में मिला कपड़े में बांध कर सेके ।

नफूक वह है दवा महीन पीसकर नाक में फूके ।

नफूक सर्दी की मस्तक पीड़ा को गुण करे पीपल पीसकर नाक में फूके ।

दवा अकरकरहा दांतों में दबावे तो सर्द मस्तक पीड़ा जाय ।

कुसमुसलिम आघासीसी और मस्तक पीड़ा को गुण करे धनियाँ, आवला, काहू के बीज और सौंठ मत्येक दो मांशे अफीम, खुरासानी आजवायन, कतीरा मत्येक एक भाग पीसकर तिखूटी ठिकिया बनाकर रखे जब चाहे तब रगड़ कर पानी में मिला करे ।

कुतूर अर्थात् गीली पतली दवा जो कान में दपकाई जावे ।

कुतूर आघासीसी को गुण करे गाजर की पत्तियों में ऊपर नीचे घी लगाकर तवे पर गरम करके उसका रस निचोड़ कर कान में दपकावे सुनारिवात अकबरी में लिखा है कि दो तीन घूँट नाक में दपकावे और बहुत आवेंगी और आघासीसी दूर होजावेगी ।

तकमीत

गरम तवे पर

को गुण करे नीचू दो फाँक कर के क करे जब ठंडा होजाये

दो भाग कंद में खूब मलकर रखने मात्रा एक तोला ।

लऊक अर्थात् चटनी जो मस्तक को बछ दे महीके बीज साढ़े तीन मांसे पीस शहद में मिलाकर खाटे ।

मतचूखू अर्थात् कथ जो गर्मे और सर्दे मस्तक पीड़ा को गुण करे पांस की जड़ एक तोला चार मांशे पानी में औंटाव के छानके पिये ।

काढ़ा सर्दे और कफ की मस्तक पीड़ा को गुण करे कुचली सौंफ ७ मांशे कुली हुई सौंफ की जड़ १४ मांशे और चूस्तखुद्दस १० मांशे आधसेर पानी में औंटावे जब बिहाई रहे छानकर दो तोले-शहद या 'खरबत घनफ्रशा' मिलाकर पिये ।

मतचूखू हिन्दी मस्तक पीड़ा को हरता है । बड़ी हड़ का बक्कल, सोंठ, धनियां, आवला, बहेड़े का बक्कल, धायबिड़ग मत्येक साढ़े तीन मांशे छूटकर आधसेर पानी में औंटावे जब चौयाई रहे छानकर पिये बाजे सोंठ की जगह चिरायता मिलावे है ।

नतूल अर्थात् तरा । मस्तक पीड़ा को गुण करे बावूना सोया और सौंफ को औंटाकर सिर पर तरा दे ।

दवा बात की मस्त पीड़ा को गुण करे । दो तोला इमली को पानी में भिगोकर थोड़ी शकर डाल कर पिये ।

नतूल गर्मी की मस्तक पीड़ा को दूर करे । छिंके हुए कद्दू के बीज, काहू के बीज, ईसफगोल, घनफ्रशा, खतपी के बीज और नीळोफर पानी में औंटाकर सिर पर तरा दे, तरों की शुद्धि के परचात् अच्छा होता है ।

नफूख मस्तक पीड़ा और आघातीसी को गुण करे, सफेद कनेर की पत्ती छाया में सुखाकर महीन पीसे जिस ओर पीड़ा हो उसी ओर के नथने में दो चाबल फूँके छींके आवेंगी और नाक से बहुत पानी टपकेगा और पीड़ा जाधी रहेगी ।

गुण मायः जायसर होजों की बास तथा चमड़े की सड़ाई से गर्मी को मस्तक पीड़ा उत्पन्न होती है ।

चिकित्सा उसको गुनगुने पानी से स्नान कराना और सिरका मूचना है । माय देखा जाता है कि आजकल यन्त्र इस बात का कुछ ध्यान नहीं

करते इसी कारण उनको नाना प्रकार के रोग समय पाकर ग्रस्त और मरी-
कष्ट देते हैं। घुरी वायु और गन्ध से बचना और सुगन्धित वायु का सेवन करना
आरोग्यता की रक्षा का एक बड़ा भारी उद्देश्य है मनुष्य के शरीर में मस्तक
सब अवयवों से बड़ा है और बुद्धि इसी के आधीन है इसलिये उक्त नियम से
इसकी रक्षा जरूरी है और कभी २ मस्तक में क्रम पड़ जाती है उसका लक्षण
कभी २ कीड़ों का निकलना और नाक से घास आना है।

चिकित्सा उसकी मुलीम को महीन पीसकर नाक में फूके।

तेल अस्पद मस्तक पीड़ा को गुण करे। तोले भर अस्पद तिल के तेल
में औटावे जब सूख जल जाय तब उसी तेल में बारीक पीस डाले उस तेल
को प्रतिदिन कनपटी पर तिला करे और दूर से तेज आंच से तेके पीछे गर्म
पानी से धो डाले।

रौगन शतावर आधासोसी की पीड़ा को गुण करे। शतावर की तजा
जड़ को कूटकर उसका रस निचोड़े उसकी बराबर तिलका तेल मिलाकर
औटावे जब पानी जलकर तेल मात्र रह जाय तब मस्तक पर मले।

क्रतूर शफवाल की पत्तियों के रसमें पलुआ मिलाकर दो तीन बुद नाक
में टपकावे तो मस्तक के सब कीड़े मरजाय।

सज्जत नीम के पत्तों का रस मीठे तेल में मिलाकर टपकावे कभी २ साँप
के काटने के बाद उसका विष दूर करने के पीछे मस्तक पीड़ा शेष रह जाती
है उसकी चिकित्सा यह है कि एक तोला चिनौले की भींगों का शीरा पानी में
निकालकर मस्तक पर लेप करे और जो पीड़ा बहुतसा शोच करने से हो उस
की चिकित्सा यह है अजीर के पेड़ की छाल की मसम सिरका वा पानी में घोल
कर मस्तक पर लेप करे।

फसल सरसाम की औषधियों के बयान में।

सरसाम मस्तक के सोय का नाम है इस रोग में ज्वर और बेहूदा बकना
और मस्तक में भारी पीड़ा तथा भारीपन होता है।

जो सरसाम पित्त से हो तो उसको फारसी में करानीतम खालिस कहते हैं।

कफ के सरसाम को खिसरगस कहते हैं हर दोष को समके लक्षण में जान
है पित्त और बधिर के सरसाम में ज्वर अधिक होता है। और पित्त में

चैतन्नता और कफ में शून्यता तथा रुधिर में तेजी और वात में ढर होता है। वात सरसाम थोड़ा होता है इसमें क्रस्द शीघ्र कराना चाहिये बिशेष करके रुधिर और पित्त के सरसाम में पित्तजनर में बहुधा विना साथ ही घुसारात मस्तक को चढ़ जाते हैं उसमें या ढर और मस्तक पीड़ा होती है, इसको फारसी में सरसाम धगैरह भी कहते हैं। उस समय क्रस्द सरेरु और पिंडलियों में पड़ने देकर सींगी खींचना और रुधिर में विना पड़ने सींगी खींचना और पैरों में पाशोया कराना चाहिये और तररीद पिलाना और स्त्री का दूध टपकाना और मस्तक पर दोहना चाहिये और जो स्त्री का दूध न पिछे तो बकरी का ही दूध मस्तक पर डाले और कद्दू का तेल मस्तक पर मलना गुणदायक है।

कद्दू के तेल की क्रिया

कद्दू का रस निचोड़ छानकर बराबर पीठे तेल में औटावे जब पानी जल जाय तेल काम में लावे कोई वस्तु शीशे में रखकर सूखे उसका नाम लखलखा है।

लखलखा जो सरसाम गर्म को गुणदायक है। काहका पानी हरे धनिये का, पानी खीरे का पानी योंके सिरके में मिलाके शीशी में रखकर सूखे।

लखलखा चंदन घिसकर हरी काशनी के अर्के और तर्बूज के पानीमें थोड़ा कपूर मिलाकर शीशे में रखकर सूखे।

रौग्रन नीलोफर गर्म मस्तक पीड़ा और सरसाम को गुणदायक है गुल नीलोफर लेके गुलरौग्रन की तरह उनका तेल निकाले।

शर्वतऊद मस्तक को मलदायक है। १ माशे अगर, १८ लौंग, बाल-छड़ और दालचीनी प्रत्येक डेढ़ विरम कद पावसेर दवाइयों को जौकुट कर कंपड़े में बांध गुलाब में भिगोकर औटावे जब चौथाई बाकी रहे तब छानके कद मिलाके चाशनी करे फिर चार रची कस्तूरी और अगर पीसकर मिलावे।

सऊत गर्म सरसाम को गुण करे चंदन और कपूर काहके पचों के रस में घिसकर नाक में टपकावे।

पाशोया सरसाम में शकल है गुलसैरु, गुल नीलोफर, कद्दू कादकर प्रत्येक आधपाक, जौ की भूसी तीन मुट्ठी, पानी में औटाकर गुनगुने पानी से पाशोया करे और चंदन रगड़ कर सुंघावे खाने को जौ की घाट दे, बाकी ऊपर मस्तक पीड़ा की चिकित्सा करे।

कसल सरये ।

अर्थात् मिरगी की दवाइयों के बयान में । जो मिरगी बालकों के होती है उसे फ़ारसी में अम्मुस्सिबियों कहते हैं । मिरगी प्रायः कफ़ से उत्पन्न होती है और जिस समय पीड़ा करती है उस समय रोगी पृथ्वी पर गिर पड़ता है हाथ पाँव टेढ़े पड़ जाते हैं बेकरारी विशेष होती है मुँह से भाग निकलते हैं इस रोग में मस्तिष्क भारी रहता है और जीम के नीचे की नसें हरी हो जाती हैं ।

चिकित्सा मिरगी के रोग में बन्दों को असली हाकट पर रखने की दृष्टि रखते सौंठ कालीमिरच पीपल नौसादर इन्द्रायन के फल का गुदा कलोंबी मत्स्यक अकेली अथवा दो २ मिलकर पीसकर नाक में फूँके और निराहार से पीछे मुजिस देकर अयारज की गोली से सफ़ाई करे चौपायों के मांस और तरबेवा दूध प्याज मसूर और खुस्रार पैदा करने वाली वस्तु और मदिरा आदि वस्तुओं से मिरगी रोग वाला बचा रहे दुर्गन्धि सुगन्ध और अति जागने, ठंडा पानी पीने, स्नान करने, भरे पेट पर सोने, धूप और मेह में फिरने और डरावना शब्द सुनने और ठंडी पबने से बचता रहे और जो मिरगी वाले बच्चों को खुर की अधिक भेग हो तो गरम वस्तु विशेष काम में न लावे और बहुत सी ठंडाई भी न दे और सियाफ़े से अजीर्ण को दूर करे इस रोग में थोड़ी सी सहज क्रिया की औषधि जो रोग में गुण करती है कही जाती है ।

गोलियाँ जो मिरगी के नदौरा करने में भाग्य करती हैं । कछुए का खून और जौ का आटा बराबर लेकर शहद के साथ काली मिर्च की बराबर गोलियाँ बनावे साँझ सवेरे एक २ खाए ।

गुग्गुल की गोली मिरगी को गुण करती है । जुरकाब के पीछे मकृति गर्मी सर्दी बदलने के लिये काम आती है । कुछ सौंठ फषाबचीनी और देवदारु मत्स्यक दस मांशे काला भांगरा स्याह मिर्च अफ़रक़रा कजपीपल और सनके बीज मत्स्यक दो तोले आठ मांशे और सब औषधियों के बराबर गुग्गुल लेकर कुछ ज्ञान शहद में मिलाकर गोलियाँ बनावे साँझ साँझ सवेरे गुन गुने पानी के साथ निगले ।

देवा मिरगा रोग को गुण करे । निर्विंसी पुत्र जनी स्त्री के दूध में घिस कर पिलावे ।

दाग अर्थात् दाह बच्चोंकी मिरगी को गुण करे । दोनों भौंओं के बीच में भूगे का दाना गरम कर दाग दे और बकरी की मैगनी से दागना भी अच्छा है ।

दवा दौरे के समय मिरगी को गुण करे । सीताफल के बीजों की मिर्गी पीस कपड़े की बत्ती में रख उसका धुआं नाक में पहुँचावे ।

दवा मिरगी के समय खट्पक के बधिर में कपड़ा भिगोकर जळा के उसका धुआं नाक में पहुँचावे तो मिरगी को गुण करे ।

दवा आक की जड़का बकल बकरी के दूध में घिसकर नाक में टपकावे ।

दवा मिरगी की नौबत के समय टाक की जड़ पानी में रगड़कर नाक में टपकावे ।

दवा गीदड़ का पिछा थोड़ी काली मिर्च डालकर सुघाये ।

दवा मिरगी की नौबत के समय दो काली मिर्च पानी में पीसकर दोनों नथनों में दो तीन बूँदें टपकावे तो मिरगी रोग जाय ।

दवा महुए की आधी गुठली और ढाई काली मिर्च पानी में पीसकर नौबत के समय नाक में टपकावे, तो तुरंत चेत होवे ।

दवा कड़वी तोरई पानी में पीसकर दो तीन बूँद नाक में टपकावे ।

दवा छोटी कटेरी का दूध नौबत के समय नक़्खों में टपकावे ।

दवा हाथी के सिर के पसीने में जो मस्ती के समय निफ़क़ता है अर्थात् मद में कई भिगोकर मिरगी के समय दो तीन बूँद नाक में टपकावे ।

दवा कलौजी दो भाग नौसादर आधा भाग एलुमा चौथाई भाग तिल के तेल में पीसकर एक बूँद नाक में टपकावे ।

दवा कटेरी की जड़, भांग के बीज, बराबर बालक के मूत्र में पीस नाक में टपकावे ।

फकी मिरगी को गुण करती है जैसे के खुर की मसम साढ़े चार मांशे भिगी वाले को फकाना गुण दायक है ।

दवा लाछा के फूलका शर्बत बच्चों की मिरगी को गुणदायक है ।

दवा लाछा के फूल १। तोखे पानी में औटाकर खानखें दुगनी कन्द में चाशनी पनाकर शर्बत बच्चों को एक मांशे और तरुणको सात मांशे पिलावे ।

हुलास-दौरे के समय राई पीसकर मूये ।

हुलास नकछिकनी पीसकर थैली में बांधकर सूखे ।

पाक अकरकरा कुठ्यान बराबर के सिरके में पीसकर तिगुने शब्द में पाक बनावे और जुलाब के पीछे नौबत के समय दे । जालीनूम इस्तीम का आजमूदा है मात्रा ७ मांशे गुनगुने पानी के साथ ले ।

हुलास छोटी कठरी का फूँठ सुखाकर कायफल नकछिकनी प्रत्येक छ मांशे हुलास चार तोले सुबकी महीन पीसकर दो मांशे नित्य सूखे ।

नफूख मिर्गी की नौबत के समय काम आता है घूँघ के पित्त में काली मिर्च भरके छाया में सुखाळे नौबत के समय पीसकर दो चाँचल नाक में फूँके ।

कुतूर रतनजोति पीसकर नाक में टपकावे ।

नफूख नौबत या तार नौबत के समय काम देती है रीठा का झिलका और बीजे मय गुठली के पीसकर नाक में फूँके ।

तथा दूसरा—नौबत के समय में बड़ा घोट (अखफोड़ा) एक जोनवर जो आक के पंख पर रहता है यह रंग परगा होता है चछला है उड़ नहीं सँक्ता उसे सुखाकर उसकी बराबर काली मिर्च ल दोनों को पीसकर नाक में फूँके आजमूदा है खैरचनाख वाले ने मिर्च के पदछे गाय का घी लिखा है ।

तथा—भूते का भेजा सुखाकर पानी में पीसकर आधा मांशा नाक में फूँके तीन दिन में आराम होजायगा ।

दवा—मिर्गी को गुण करता है । तिब्ब फरैदी में लिखा है कि मिर्गी वाले के कंठ में जायफल कुटकाया विशेष गुणदायक है फिर मिर्गी रोग नहीं रहता और इसी प्रकार होंग लटकाना भी समझो ।

दवा—सूअर के सुरकी अगूठी मंगलवार के दिन दाहें हाथ में पहनना भी मिर्गी को दूर करता है । और सूअर के सूअरकी मांटी पास रखने से भी मिर्गी रोग दूर होता है । और जो भेड़नीका दांत बच्चों के गले में बांधे तो मिर्गी रोग नाश हो ।

दवा—भेड़नी की हड्डी और विष्टा पास रखने तो मिर्गी रोग जाय ।

दवा—गाय के बायें सोंग की अगूठी बायें हाथ में पहनना उत्तम है ॥

दवा—भूमे का होठ गले में लटकाना बच्चों को मिर्गी दूर करता है ॥

फसल संक्ता यानी सून्यवाय की औषधियों के प्रकरण में ॥

सक्ता वह रोग है जिसमें शरीर की शक्ति जाती रहती है और रोगी

मुद्दे के समान मालूम होने लगता है उसका पूर्वरूप मस्तक की पोत में कफ का रुक जाना है ।

चिकित्सा—जो रुंधिर मघल हो तो ऊसद सरेख की खोले और कफ मघल हो तो कूक के निकालने वाला शियाफ गुदा में रखे और मस्तक को सेके नाक में टपकावे और फूके, उलटी कराना भी उत्तम है हाथ पावों का घावना और मलना गुण करता है ।

मस्तक में नश्वर दफर पारा मलना गुण करता है कफ के दोष को पका कर निकाल डाल और जब इस रोगमें सांस न चले तो चिकित्सा अविव नहीं और जो सांस चलता मालूम दे ता किञ्चित् चिकित्सा के योग्य है ।

शून्यवाग के रोगी और मुर्दा में यह भेद है कि सफ़ की हाजत में रोगी के नेत्रों में देखने वाले की परछाई मालूम होती है और मुद्दे के नेत्रों में नहीं होती

सज्जत—शून्य को गुण करे नशलिकनी पपड़िया खार एलुमा और चुक-दर की जड़ पानी में पीस छानकर थोड़ीसी जूद नाक में टपकावे ।

वजूर—अर्थात् कठ में टपकाने की औपाधि वजूर कि सक्ते को गुणदायक है थोड़ी हींग सोंफ के अर्क में पीसकर सक्ते वाले के कंठ में टपकावे ।

दवा—रोगी के मस्तक को मुद्दवा पत्रन लगाकर मनुष्य के मूत्र में बज-नाग पीसकर मले तो तुरंत चेत होवे ।

भूल भूल रोग की औपधियों के प्रकरण में

जो हृद्वावस्था में भूलरोग उत्पन्न हो तो कफकी विशेषता जाने जो तरुण में हो तो मस्तक रोग से जाने इसकी उत्तम चिकित्सा कफको पकाकर निकाल डालना है ।

भिलाये का पाक भूल और मस्तक पीडा को गुण दायक है बड़ी हड़ का बमल वहेडे का बकल भावला पालुवद तत्र सेअपात नागरमोया और वस्तुखुम मलेक डेढ़ तोला कांछी मिर्च और नरकाचूर दो २ माश भिलाय का तेज सात माश सर्वा पाव शहद में चाशनी करके पाक बना लेवे ।

कुंदरू गोद का पाक भूल रोगों को गुण करे कुंदरू गोद और नागर-मोया तीन २ तोला सोंठ और कांछी मिर्च डेढ़ २ तोला कूट छान कर घूने सड़द म भिलाव और बाजी गुस्तकों में सब औपाधि घरावर लिखी है मात्रा सात माश की है फकी भूल के रोगों में गुण करे । कुंदरूगोद सोंठ नागरमोया तील में घरावर लेकर कूट छानकर फकी बनाले और मरुति के माफिक लेकर सात नग मुनक्का के शीरे क साथ सात दिन तक लेव ।

बच पाक--भूल को गुण करे तथा पट्टों को गरम करे १०॥ मांशे बच को पीसकर पावसेर सफ़ेद घूरे की चाशनी में मिलाकर, पाक बनावे, मात्रा एक तोले पर्यंत देवे ।

दवा--भूल को गुण करे । काली मिर्च पाँचल इल्दी कूट मीठा और कड़वा मुलहठी कालीजीरी सेंधानोन और अजमोद मल्लेक साढ़े तीन मांशे महीन पीसकर नित्य साढ़े तीन मांशे घी और शहद के संग खाय ।

दवा--भूल और मस्तक रोगोंको दूर करे । डेढ़ तोला मिलाये नित्य खाय

दवा--ब्रह्मदही कूटछानकर तोले भर गाय के दूध के संग फाँके परन्तु इसे फाँककर न तो जागे न ठंडे पानी से स्नान करे न मदिरा पान करे न विशेष पानी पिये ।

सोंठकी सादा जवारिश--जो उदर रोगों और भूल को गुण करे । मालकांगनी का तेल पान में लगाकर और मांशे भर पारा उसमें रखकर खूप मले कि पारा उसमें तुरन्त प्रवेश होजायगा उस समय इस पान के पारे को पोंछ पान की बीड़ी में रखकर स्वाय और इसी प्रकार नित्य खाया करे ।

मालकांगनी का तेल निकालने की विधि ।

मालकांगनी को कूट गजों की थैली में भर उसका मुह मुई से सीकर ताँबे के बासन में रखकर उसके नीचे कोंयले की आग मुलगावे और थैली के ऊपर एक मारीसा पत्थर रखदे तो तेल निकल आवेगा ॥

दवा--कि भूल को गुण करे । साढ़े तीन मांशे कुदरुगोंद सायंकाल की पानी में भिगोकर भात काछ छानकर थोड़ा घूरा मिलाकर पीये ।

फसलदवार और सदर अर्थात् भोर और चक्कर की औषधियों के प्रकर्ण में

दवार मस्तक घूमने को कहते हैं कि हर एक वस्तु फिरती हुई मालूम हो और सदर उस रोग का नाम है जिसमें उठते में चक्कर आजाय और नेत्रों के नीचे अंधेरा आजाय । यह रोग मस्तकों को दोषों की गर्मी जड़ जाने से पैदा होता है रोग का वेग मवल होने के समय दोष को पकाकर मस्तक की सफ़ाई करना उचित है । इतरीफल जो मस्तक पीड़ा में कह आये हैं गुणदायक है । नक्षत्र अर्थात् शीतलपूष गर्मी के भोर और चक्कर को गुणदायक है धनियाँ और आंवला जो कूट करके पानी में भिगोकर भात काछ मल छानकर थोड़ा घूरा मिलाकर पिये ।

काढ़ा—मौर की गुण करे। सरफोका घनिया बड़ी हड़का बचकल मत्येक नौ माशे नौ छुट कर के थोड़े पानी में औटाकर सात दिन पर्यंत पिये।

दवा—मौर की गुण करे। खसखास का अवलेह सात माशे और घनिये का अवलेह सात माशे दोनों को थोड़ा घूरा मिलाकर पिये।

दवा—पटसनके बीज पीसकर गैहूँके धूनमें मिठा रोटी बनाकर खायाकरे
फक्की—मौर और बवकर दोनोंकी गुण करे। सफ़ेद खसखास घनिया बिनौले की मींगी बराबर लेकर 'दूनी' मिथी मिलाय पीस खानकर नित्य गुलाब या पानी के साथ फांके।

फ़सल सवात अर्थात् विशेष निद्रा की औषधियों के प्रकर्ण में
यह रोग बहुधा कर मस्तककी तरी की प्रवृत्तियों से निद्रा हो अथवा दोष युक्त हो पीड़ा कारक होता है।

चिकित्सा—कफ़को पकाकर सफ़ाई करवाके इसके पीछे कालीमिर्च थोड़ी के छुटके भाग में पीसकर नेत्रोंमें छगायें तो निद्राकी प्रवृत्तियों को दूर करे और ठही वस्तु खाया सिरका सुये तो अत्यन्त निद्राको दूर करे और घनियेका अवलेह खाना भी गुण करता है।

फ़सल सहर अर्थात् विशेष जाग्रत की औषधियों के प्रकर्ण में
मस्तककी खुरकी विशेष जागने का पूर्वरूप है दोष रहित हो वा दोष युक्त हो मस्तक की सफ़ाई उचित है।

चिकित्सा—बकरी का दूध हाथ पाशों में मलना गुणदायक है।

दवा खसखास का तेल बल्लभों और ताल पर मलना गुण करता है।
खसखास का तेल बादाम रोगन की तरह निकाले।

दवा अफीम सुवाना तथा पसलियों पर पतला छेप करना निद्रा लाता है।

दवा सोये का साग तकिये के नीचे रखने से निद्रा आती है।

दवा जो जागने को गुण करे। खसखासके दाने सात माशे काहूँके बीज साढ़े तीन माशे कुचलकर थोड़ा घूरा मिलाकर खाए।

रोगन हुबुब खमसा अर्थात् पाँच बीजों का तेल निद्रा लाता है।
खुरकी, मस्तक पीड़ा और पित्त और सरसाम को गुण दायक है।

काहूँ कपड़ और तर्बूजके बीजा की मींगी पोस्त के दाने और तिल परा-
बर लेकर बादाम रोगन की तरह तेल निकालकर मस्तक पर मले।

काहू का तेल मस्तक पर मलना निद्रा लाता है । तब निकालने की विधि यह है कि काहू के पत्तों का रस दो भाग एक भाग मीठे तेल में मिलाकर औटावे । जब रस जलकर तेल मात्र रह जाय, तब छतागले ।

पतलालेप जो निद्रा लाता है । भांग की ताजी, पची बकरी के दूध में पीसकर मसदी की तरह तलुओं में लगावे । अथवा भांग का तेल लगावे । तेल निकालने की विधि । भांग के पत्ते बकरी के दूध में पीसकर टिकिया घनावे और घी में तले जब काळी हो जाय तब छानकर काम में लावे ।

रोगी के हाथ पाव इतने जकड़कर बांधे कि पीड़ा होने लगे और ओषध न खावे और एक दीया रोगी के सम्मुख बाले और मनुष्य इकट्ठे होकर किसी कहानिया कहने लगे रोगी को यकित देख हाथ पाव खोल देख और सब चुपके हो जाय और दिया उठाते तो इस विधि से नींद आजावेगी ।

चक्की का आहट बहते पानी का शब्द और पवन से पत्तों का शब्द भी निद्रा लाता है ।

मस्तक की खुरकी में कदुहू का तेल मस्तक पर मलना गुणकारी है, कदुहू के तेल निकालने की विधि सरसाम रोग में कह चुके हैं ।

लौका दूध नाक में टपकाना मस्तक की खुरकी को दूर करे, और भोजन के पीछे गर्म गुनगुने पानी से स्नान कराना निद्रा लाता है, ज्वर में निद्रा जाती रहे तो पाशोया करे ।

फक्की जो निद्रा लावे मस्तक को आनन्द और बल दे और नज़ाले को खोवे घनाघनिया, काहू के बीज की पींगी और पोस्त के दाने मूने प्रत्येक नौ मांशे, सफेद घुरा तीन छोले आठ मांशे कुट छानकर फक्की बनाले मात्रा सात मांशे की है ।

नतूल अर्थात् सर्रा निद्रा लाता है वनफुश, पोस्त के डोडे, काहू के बीज पोस्त के दाने फकाय, रैहां औटाकर सर्रा दे ।

शमूम इलास जो निद्रा लाती है, पोस्त के दाने, काहू के बीज, घुरा घनिया और सोये के बीज बराबर ले भुनकर ढीले २ कपड़े में बांधकर सूखे ।

सऊत आर्यात नाक में टपकाने की वस्तु जो निद्रा लाती है । ताजे काहू का छना रस खी के दूध में मिलाकर नाक में टपकावे ।

सुर्मा खी की कधी पर काजल पार नेत्रों में लगावे और कंधी को सिर हाने रख सोवे तो निद्रा आजाय ।

फसल फालिज अर्थात् पक्षाघात और लकवा अर्थात् देढ़ा मुंह पड़जाना इन रोगों की औपधियों के प्रकर्ण में।

फालिज आधे शरीर का रहजाना और लकवा एक तरफ का मुह देढ़ा हो जाने को फारसी में कहते हैं।

इन दोनों रोगों का पूर्व रूप कफ की प्रवृत्ति है और इन दोनों रोगों की चिकित्सा एक ही है इस कारण एक ही स्थान में लिखते हैं।

इस रोग के आदि में यह विधि उत्तम है, कि दो तीन लघन कराके पानी के घटले सहत का पानी पिलाना प्रारम्भ करे और जो रोगी प्रवृत्त हो सो सात लघन कराना उचित है। माचल असह अर्थात् सहत के पानी की यह विधि है कि एक माग पानी में दो भाग सहत औटाकर जब तीसरा भाग रहजाय तब उवार कर छानले जो सहत न मिले तो गुड़ और पानी ही औटाकर काम में लावे। और कबूतर खाय अथवा चिड़ियों का शोरवादे अथवा निरी चने की रोटी या भुना घना दे।

रोग पकाने के ४ दिन पीछे दोष पकाना प्रारम्भ करे और नवें या चौदहवें दिन अयारज गोली का शुरुआव दे इस रोग में दो बार शुरुआव देना उचित है। सब प्रकार के दोषों के भुजिज की औपधि पूर्व खंड में लिख चुके हैं।

मत्तबूख मुजिज अर्थात् दोष पकाने का काढ़ा। सौंफ छ मांशे, सौंफ की जड़ एक तोला सोया के बीज अजमायन अजपोद प्रत्येक तीन मांशे बाल-छड़ चार मांशे कासनी की जड़ तोले भर गुलकद दो तोले डेढ़पाव पानी में औठावे जब आध पाव रहे तब छानकर पी लेके और नित्य इसी प्रकार पिया करे तो दोष पकजाय।

अयारज की गोलियों की विधि—अयारिज फैकरा पीने दो तोले बर्दा रहका घकल डेढ़ तोले खिली निसोत चौदह मांशे काला दाना सात मांशे इम्रायन का गूदा साढ़े तीन मांशे और सैधानोन डेढ़ तोले सबको कूट छानकर गोलियां बनालेवे।

तथा दूसरी विधि—जिस प्रकारे पिछले हकीमों ने बनाई है लिखते हैं तगर बालछड़ सज रुमीप्रस्तगी दालचीनी उस्तखवूद सौंफ और गुलाब के फूल प्रत्येक साढ़े तीन मांशे एलुआ साध मांशे कूट छानकर शुरुआवलेने के पीछे इस रोग में काम में लावे।

गंधक की गोली—कम्पनबाय, कफ के रोग, कमरपीड़ा और उदर पीड़ा

को गुण करे शुद्ध गंधक शुद्धपारा मेनसिल शुद्ध सींगियाविष सबको बराबर लेकर कागजी नीचू के रस में आठ पहर घोटकर चढ़ा के प्रमाण गोलिए बनाले मात्रा १ गोली घी के साथ देवे ।

सींगिया विषकी गोली—अर्द्धांग वात और लकवा को गुण करे । इसको जुष्टाव के पीछे गर्मी सर्दी के बदलाव के कारण देते हैं ।

अकरकरा कालीमिर्च पीपल प्रत्येक तीन मांशे पीपलामूल छः मांशे सौंठ और मीठा तेछिया प्रत्येक एक तोले कूटछानकर गुड़ और घी के साथ भूग के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा एक गोली से दो गोली पर्यन्त देवे ।

हिन्दी बैयों की क्रिया की गोलियां जो लकवा को गुण करें । माछका गनी रतनजोषि पीपल प्रत्येक दसमांशे स्याह मूसली ४ तोले ४ मांशे सौंठ ४ तोले ८ मांशे जमालगोटे की पींगी १४ मांशे सब औषधियों को कूट छान पानीमें मिला खरल में कूट कालीमिर्च की बराबर गोली बनावे । मात्रा दो गोली ।

दवा—लकवा को गुण करे । सौंठ और बच बराबर कूट सहत में मिला अखरोट के प्रमाण नित्य सोभं सवेरे खाय और इसके खाने के समय सहत का पानी पीना चिचित है ।

बफ़ारा—पक्षाघात और लेकवाके लिये । लहसन और सौंठ प्रत्येक साढ़े तीन मांशे बकायन और सभाल के पचे पाव २ भर सौंठ को जौकूट करके सबको मिलाकर दो सेर पानी में चढ़ावे जब आँटकर आधारहे तब बंद स्थान में लिहाफ़ ओढ़कर भीतर ही भीतर उसका बफ़ारा ले ।

कुचले की गोली—अर्द्धांगवात और लकवे को गुण करे मस्तक रोग और कमर की पीड़ा को दूरकरे और ठंडी मकृषि को गरम करे । १५ कुचलों को १५ दिन पानी में भिगोवे मगर तीसरे दिन पानी को बदल दिया करे पदरहवें दिन जब नरम होजायें तब छीलकर सुखावे फिर भाँच में उसकी भस्म करले कि धुआँ न रहे ठंडाकर उसकी बराबर कालीमिर्च मिलावे और पीसकर कालीमिर्च के बराबर गोलियां बनावे एक गोली नित्य खाय ।

दूसरा नुसखा—हिंदुस्तानी बैयोंका जो पक्षाघात और कफ़के रोगोंको गुण करता है । कुचला भाँग के बीज और नफ़थिकनी प्रत्येक दो तोले ४ मांशे इनको पावभर दूधमें आधपाव पानी मिलाकर आँटावे जब पीयाई रहे तब कुचला और भाँग के बीजोंका छिलका दूर करके बच पीपल सौंठ और सोंफ़ प्रत्येक डेढ़ दिरम कूट छान के हरी अम्रदंडी के रसमें अथवा सूखी को आँटाकर

उसमें सब दवाओं को खरब करे और चने के प्रमाण गोलिएं बनाकर सप्ताह सप्तेरे एक या दो खाया करे ।

गुण इस रोगमें कच्ची भुख में न खाय और जब तक तृषा न लगे सप्ते का पानी नपिये लकवाके रोगीको अंधेरे स्थानमें बैठना उचित है । जहां पवनका प्रवेश नहो जिस अर्द्धांगघात वाले रोगीके ज्वरका वेग हो तो उसको गर्म दवा नदे और प्रथम ज्वरकी चिकित्सा करे पक्षाघातीको गर्म जलसे स्नान कराना उचित नहीं है ।

हिन्दीवैद्यों की दवा पक्षाघातको गुण दायक है । रांग जस्त सींगियाविष और पारा प्रत्येक दस मांशे काळीमिरच डेढ़ तोला प्रथम रांग और जस्तको पिघलाकर पारेमेंढाके कि गोलीसी बघनाय फिर छ महर घोंटे पीछे योड़ी गूधक उसमें छिड़क कर छ महर घोंटे इसके पीछे चार २ काळीमिरच का पूर्ण छिड़क कर छ महर घोंटे इस प्रकार अठारह महर होजाय । मात्रा एक चावक पान में रखकरदे खाने को पक्षियोंका मांसदे ।

बचपाक लकवाके रोगोंमें अजमाया हुआ है । बच पाच तोले दस मांशे सोंठ और काली जीरी दो २ तोले डेढ़पाव सहद में मिलावे । नित्य साढ़ेतीन मांशे खाय इस दवामें शहत का पानी पीना उचित है ।

दवा दूसरी पक्षाघात लकवा और कफ के सब रोगों को गुणदायक है बच तीन तोले कालीमिर्ष पोदीना स्याहजीरी और कलौजी प्रत्येक दस मांशे पाचभर शहदमें मिलावे मात्रा सात मांशे ।

दूसरी भिलाये की मिर्गी घुरे के साथ सफाई के बाद खाना पक्षाघात लकवा और मिर्गी रोग वाले को गुण करवी है ।

मसलने की औषधि जीभपर मलमेसे अर्द्धांग घात को गुण करे । राई और अकरकरा पीसकर शहदमें मिलाकर जीभ पर मले ।

दवा अर्द्धांग घात वाले की प्रकृति को बदले । एक खीरबड्डी के मस्तक और पांच उखाड़कर पानकी बोड़ीमें नित्य रखकर खा लिया करे ।

दवा पक्षाघातमें उत्तम औषधि भांग है जालीनूस इर्फा कहे हैं कि जो कालीमिर्ष गहीन पीसकर तेकमें मिलाकर पतला २ लेपकरे तो इसके मुन्य कोई औषधि नहीं है ।

दवा लकवा को गुण करे । पाप दिरम सनके बीज सहदमें मिलाकर सफाई के पीछे पंद्रह दिन खाय ।

तेल इसका मलना पचाघात और लकवा को गुण करता है । सफेद फनेर की जड़का छिड़का सफेद चिमिठी की दाल, काले धतूरे के पत्ते, प्रत्येक दो तोले चार मांशे सबको कूट छान टिकिया बनावे और पावसेर तेलमें तले जब टिकिया जल जाय उसी तेलमें घोंटे जव कीचड़ नीचे बैठजाय तब अर्द्धांग घाय घाले रोगी के शरीर में मालिशकरे यह तेल इन्दीको भी घलवान करता है ।

दूसरा तेल पीठातेल पावसेर कूट और फलोंजी दो २ तोले चार २ मांशे दोनों को तेलमें खूब जलाकर काम में लाये ।

पत्तों का तेल जिसका मलना, पचाघात को गुण करे । अही, धतूरा असगंध, आफ, सहदेई, सहजना और संभाल इन सबके पत्ते धराधर ले कूट कर रसनिचोड़े और धराधरके मीठे तेलमें औटावे यहाँतक कि तेलमात्र रहजाय और सब रस जलजाय पीछे उसमें सोंठ और कड़वा कूट मिलाकर मले ।

यह तेल पट्टोंको बलप्राप्त करे अर्द्धाङ्ग और सर्वाङ्ग बातों को गुण करे और वायको पचावे ।

कूट ७ मांशे, बालछट्ट, छशीला, तेजपात, अक्राकरा और सोंठ प्रत्येक साढ़ेतीन मांशे जोकूट करके पानीमें भिगोदे प्रातः काल औटावे जव तिहाई भाग रह जाय मीड़कर छानले पावसेर मीठातेल मिलाकर औटावे जव सब पानी जलजाय तेल मात्र रहजाय चत्तार लेवे ।

दाउदी का तेल बाबूना के तेल के तुल्य है शीत के रोगों को गुण करता है ।

दाउदी के फूलों का तेल और सेरोंकी भांति निकालले मगर फूलों को तीनवार बदले ।

ततली का तेल

इसका मलना सर्वांग घातको गुणकरे । ततलीके पत्तोंको चौगुने तेलमें औटावे जव तेल रहे छटांकर सखी ततली सेर मरे पानीमें औटावे जव आधा रहजाय छानकर दो तोले चार मांशे वही मीठा तेल उसमें डालकर यहाँतक औटावे कि पानी जलकर तेलमात्र रहजाय ।

रौशनबाबूना

मस्तकको मर्दरोगोंको मलने से गुण करता है, बाबूनाके ताजा फूल २ भाग,

मेथी १ भाग तिल का तेल छः भाग शीश्री में भरके चालीस दिन धूप में रखते और पाजे वाघूना और मेथी को दश भाग पानी में औटाते हैं यहा तक कि तेल मात्र रहजाय ।

दूसरा तेल

सतली के ताजा पचे तिल के तेल में मिलाकर शीशी में रख के घप में रखते चालीस दिन पीछे काप में लाय ।

तेल

इस के मलने से पक्षाघात और कंपनबाय दूर होती है । शुद्ध सुर्ख दुग्ध चार तोले आठ मांशे कूट बड़वा दो ताजे चार मांशे कायफल और घतूरे के बीज चार २ रत्ती कूट छानकर पानी से टिकिया बनावे और द्विगुने मीठ तेल में जलाकर मछे परन्तु तेल को छानकर मछे ।

कफ और बात को दूर करने का तेल

कछौजी, अजवायन, अकरकरा इस्पद और खारी नयक बराबर ले जौकट करे और आठ भाग पानी में भिगोकर औटावे जब चौपाई रहजाय तब छान के बराबर का मीठा तेल मिछाकर औटावे पानी जलकर तेल मात्र रहजाय काम में लाय ।

जावची का तेल

पक्ष घ व का गुणदायक है । जावची आधसेर सुर्ख अजवायन तीन तोले कूट छानकर पानी में टिकिया बनावे, घतूरे के पेड़ का रस और आध सेर मीठा तेल मिलाकर छोड़े की कढ़ाही में पकाव जब टिकिया जलजाय तब छानकर मछे ।

तेल

मस्तरक के सर्दी मात्र के रोगों को गुण करे । मालफांगनी, भिलाये, लहर सन बराबर ले कूट छान गोखिया बनाकर तीन दिन सुखा के पातालपत्र में सख खींचे मात्रा एक रत्ती से ४ रत्ती तक पान में रखकर दें ।

तेल

अस्तरखा अर्थात् ओला और वाय और सीव बाध के रोगों को गुण करे । मैनफेख पांच तोला दशमांशे, सोंड, कजा, वाघूना, कूटकड़वा, मस्येक साढ़े तीन तोल कछौजी, पवार के बीज, घतूरे के बीज, अजमोद, अकरकरा, मालफांगनी, अस्पद, पविलामूल, कायफल, खुरासानी अजवायन, दसी बायविडग, मस्येक

एक तोला दो मांशे, तिन्नी का तैल दो सर, रेंदी का तैल आधपाव और अलसी का तैल आधपाव तैल की क्रिया से तैल घनाकर मले और सर्दी के दिनों में ठंडी पवन और सीतल वस्तु से बचे ।

सफूफ

अर्थात् फक्की अर्द्धांगवात और वायुरोगों को गुणकारी है । अनेमोद, वायविद्धग, सैंधानौन, देवदाक, चीता, पीपलामूल, सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, मत्स्यक टाई टंक अर्थात् दस मांशे बड़ी इड़ का बकल साढ़े चार तोले विधारा और सोंठ मत्स्यक एक तोले आठ मांशे कूट छान कर एक से इड़ तोले पुर्यन्त खाना चाहिये ।

लहसनपाक

आधपाव लहसन की बड़ी २ कली छीलकर गाय के डेढपाव दूध में औंठा । जब घुल मिल जायं छानकर और चाशनी करके बाबूने के फूल, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल बड़ी इड़ का बकल, अकरकरा, कपासचीनी, तज, कुलीजन मत्स्यक चौदह मांशे कूट छानकर चाशनी में पाक बनाले ।

नफूख

अर्थात् नाक में फुंकने की औपधि पक्षाघात और लकवे को गुण करे सोंठ और सैंधानौन पीसकर नाक में फुके ।

भिलाये का पाक ।

शीत के रोगों को गुण करे । बावची, सोंठ, तेजपात, बालबद्ध, नागरमोया, काली मिर्च, कूट, अकरकरा, कलौजी, शहद और भिलाये मत्स्यक दो भाग, भांग, राई, और पीपल एक भाग कूट छान कर बादाम रौगन में मरको कर तिगुना शहद मिलाकर रखे छ पंहीने पीछे काम में छावे मात्रा साढ़े तीन मांशे से सात मांशे तक देवे ।

सऊत

लकवा और मिर्गी को गुण करे तथा मस्तिष्क की कफाद्विक से पाक करे । थोड़ी कलौजी और इस्पन्द लेकर लुकन्दर और इन्द्रायन की जड़ों के रस में पीस छानकर थोड़ी धूद नाक में टपकावे ।

शर्वत

लकवा और पक्षाघात वाले के मस्तिष्क, पाक करने में काम आता है ।

सोंठ, घालबद्ध, कुलीजन, मत्पेक साठे तीन माशे, काली मिर्च, पीपल, मत्पेक पोने दो माशे जाँकट करके यैलीमें बांध आधसेर शदह और तीन सेर पानीमें थोड़ावे यैली को बारर पीड़ता रहे कि चाशनी होजाय मात्रा दो तोले।

चटनी पसाघात और कफके रोगों को गुण करे मूच, अकरकरा, कायफल, कुलीजन, कालीमिर्च, पीपल, सोंठ, नरकाचूर और पीपलामूल बराबर लेकर सब के बराबर शदह मिलावे यात्रा वैद्य मुद्दि के अनुसार दे।

फसल माली खोलिया

अर्थात् बावलेपन की चिकित्सा में। जो विशेष बावलाहो तो उसका नाम जुन्नहै। जो बावलेपनमें क्रोध और सोच प्रबलहो तो उसको मानिया कहतेहैं।

जो इसी, खेज, दुख देना प्रबल हो तो उसे दाउरकख कहते हैं।

जो गुस्सा स्वभाव में हो और मनुष्यों से एकान्त रहे उसे कुतूब कहतेहैं।

बावलेपन की चिकित्सा में फुर्ती करना उचित है आदि में क्रुद्ध खोले क्योंकि प्रथम तो इसकी चिकित्सा सहल है और जब रोग जड़ पकड़ जाय तब कठिन पड़जाता है। हर हाल में रोगी को प्रसन्न मन रखने और उत्तम स्थान में जहाँ सर्दा गर्मी विशेष न हों बैठावे। और आहार तर खिलाना, अत्यन्त निद्रा कराना यह उत्तम चिकित्सा है।

बार बार जुरखाव देकर सफाई करना उचित है और दिल को बल प्राप्त कराना जिस कर्म से उसका मन प्रसन्न रहे वह काम करना उचित है। परन्तु एकान्त में बैठाता और हर हालि कारक है।

जो बावले का कामदेव जागे तो उसे मोड़ासा स्त्रीसंग करने दे अत्यन्त मोग न करने दे। क्रुद्ध के पीछे पनीर का पानी पिलावे यह उत्तम विधि है और जिस समय मावलासत्र पिलावे उस समय यथा शक्ति जुल्लाव देता रहे

अमलवेद की शिकजबीन।

बात रोगों को गुण करती है। अमलवेद दो खोले, पित्तपापड़ा और गाव-मुर्षा मत्पेक चौदह माशे तिगुना कद और अत्यन्त खट्टा सिरका कदका तीसरा भाग सब को चाशनी करे और धकरी को दूध जिसका मावलासत्र जुल्लाव अर्थात् पनीर का पानी इसको शिकजबीन से फाड़े बावलेपन के रोगोंमें बहुधा करके मस्तक पर मारना गुण करता है कि उसे शोष होजाता है और दर्द के मारे मुद्दि ठिकाने आजाय और फिर रोग का वेग हो आये तो फिर मारे अलीप खिटावे यह भी उत्तम चिकित्सा है। प्रथम दो दो रची खिलावे

फिर ढेढ़ माशे तक दे परन्तु यह तरुण पुरुषको गुण करे और ढाढ़ लगाकर ढाढ़को छोड़ देना यह भी सचम चिकित्सा है और नित्य नाच देखना और मदिरा पान तिष्ठ यूसुफी में इस रोग की चिकित्सा लिखी है ।

दूमरी अमल वेद की शिकंजी

इस को वादी के रोगों में माल जोषन जुलाष देवे हैं काली इड़, संधानोन मत्येक साढ़ तीन मांशे अमल वेद ढेढ़ ताले सिरके में भिगोकर इस सिरके को सादा शिकंजीन बनावे तीन पाव दूध में मिलाकर पकावे ठंडा करके टपकावे आधपाव से सवपा पर्यन्त जितना चाहे पीवे । (संकट)

मनुष्य के नाक जलाकर गुल रोगन में मिलाकर घोट नाक में टपकावे ॥

एक मनुष्य का बात है कि वह एक कोने में जा बैठा करता था और बावले पने की बातें करता तथा मन ही मन में डरा करता था और अपनी शरीरी के कारण दवा नहीं कर सका था मैंने प्रथम तो उसकी फुस्द खोली पीछे धकरी का दूध और खाकशी अर्थात् खूबकला पिलायी तो विशेष गुण किया ।

और एक भेद पागलपन को मिराक के मिलाने से होता है मिराक चंदरके ऊपरके पर्दे का नाम है रीहकी विशेषता और पेट की पीड़ा, जलन होना, पेट का फूलना यह उसके लक्षण हैं । और जलन के साथ खट्टी ठकारों का आना अन्न न पचना, खिन्न होना यह भी उसी का लक्षण है ।

चिकित्सा इस की हर चिरले में फुस्द खोलना तानखरूस के पत्तों का रस पिलाना गुण करता है ।

और एक भेद पागलपनका इरक यानी चाहत है इसकी चिकित्सा यह है कि रोगी को किसी और काम में लगादे और उसे उसके प्यारेसे मिलादेना सचम चिकित्सा है और ऐसे मनुष्यों को उसके पास रखवे जो उसके प्यारे की खोटी कहा करे और औरों से भाग कराना यह भी इरक को घटाता है । फरेदी नाम कित्ताव में यह लिखा है कि लोहे को युक्ता पानी पीना इरक को दूर करता है । उसकी यह विधि है कि लोहे को गर्म करके बर पानी में युक्ताने लगे तो यह कहे कि जैसे गर्म लोहा पानी में ठंडा होता है उसी प्रकार फलाने के लड़के का मन फलाने के लड़के के इरक से ठंडा करदे । यह तीन बार कहकर लोहा ठंडा करे फिर उस पानी से आशिक का मुह धोवे और उस की छाती पर धिड़के तो तीन दिन के कृत्य से सब भूल जाय । तिब्ब फरेदी और दूसरी पुस्तकों में लिखा है कि जो उस सर्गम रसके ढुङ्के को जिसमें किसी की मौत की विधि लिखी हो लेकर उसे यादास घिसके आशक और माशुक का छुदाई

की नीयत कर दोनों को परोक्ष में खिलावे इस रीति से इस्क दूर होवे और एक पुस्तक में मेरी दृष्टि में यह आया कि जो बीछका डक और कुत्ते का नोह ऊठकी खाऊ में तापीज बनाकर पागल के बूठ में बांधे तो यह रोग जाय तथा भिगी को गुण करे (सज्जत) इमेजी बाबटरी ने पागलपन दूर करनेको लिखा है कि चवल् का येना चार रत्ती और कौड़ी पर कपूर मिलाकर पीसे कि अच्छी तरह गुळ मिलजाय फिर ४ रत्ती फौए का रुधिर मिला दो जौ की बराबर में पौड़ा तुलसी का रस मिला दो चार घूट नाकमें टपकावे तो जनून रोग दूर हो ।

दूसरी दवा कद्दू और काहू का सेल जो जागने और सरसाम के रोगों में कह आये हैं मछना पागलपन के रोगों को गुण करे ।

दूसरी तुहका जोतुलपोपनीन की किताब में लिखा है स्त्री के मस्तक के घाल कोरे शिकोरे में जलाकर उस शिकोरे में आशक को पानी पिलावे तो इस्क रोग दूर हो उससे घिन आजाय

फसल हस्तिलाज

अर्थात् शरीर फड़कने की चिकित्सा में इस रोग का पूर्वरूप वायु है किसी रोगके पूर्वरूप से शरीर विशेष फड़कता है उसकी चिकित्सा यह है ।

जोन और भुसी से मेके और उन सेलों का मर्दन करे जो अर्द्धांगमायु में कह आये हैं और गर्म औपधियों का लेप भी गुण करता है और जो इन वस्तुओं से रोग का नाश नहो तो कफ को निकास दाले ।

फसल राशह

अर्थात् कपनवाय की चिकित्सा में । जो कपनवाय कफ के दोष से हो तो उसके लक्षण पहचान कर उस जोड़ की सफाई करे और अति मैथुन से कपन वायु हो तो मैथुन का त्याग करे और जो अति मदिरा पान से हो तो मदिरा त्याग करे और इस रोग में ताजा दूध पानी और अषकच्चा घुर्घी का अढा खाना गुण करे ।

फसल नेत्र रोगों की चिकित्सा में

नेत्र सारे शरीर में उत्तम वस्तु हैं । जो रोग नेत्र में बीछे कारक हों उन की चिकित्सा में ढील करना अयोग्य है, नेत्रकी, खुलार, खुर्जा और बाहरी कुत्सित पथन से रक्षा करना योग्य है अति रुदन, अति मैथुन, अति नशा और अति गरम वस्तु विशेष खाना नेत्रों को अवगुण करता है और हर यही महीन वस्तु पर निगाह रखना मना है । परन्तु कसरत के तौर पर उचित है और हरी वस्तु देखना नेत्रों की उपयोगिता बढ़ाता है और नेत्रों की बीमारी में तीन दिवस पर्यन्त कोई औपधि न करनी चाहिये ।

फसल रमद में

अर्थात् नेत्रों की उस पीड़ा और सूजन जो कोयों की छुर्छीके साथ होती है उसे रमद कहते हैं।

चिकित्सा उसकी सरेख फसल खोले जो सब प्रकार के रमद को माफिक आती है और गुण करती है और जोक लगाना भी गुण करता है इस रोग में मांस, मिष्ठान, खट्टा, खारा और चरपरा न खाये रमद के रोग की आदि में शीतल जल नेत्रों से न लगावे और हल्दी का रंगाया पीला कपड़ा नेत्रों के आगे लटकाना उचित है अब थोड़ीसी सड़न औपधियाँ रमद रोगकी कहता हूँ।

हुठव

अर्थात् गोली लिखा है कि रमद के लिये इस गोली से बढ़कर और औपधि दूसरी नहीं है। सूनी फिटकरी साढ़े तीन तोले, हल्दी सात माशे, जो कच्ची हो तो उत्तम है अक्रोम पांच माशे, पके कागजी नीबू के रस से छोड़े की कड़ाई में मदी पांच से पकावे और पानी में रगड़ कर नेत्रों के ऊपर पतला २ छेप करे और थोड़ी सी नेत्रों में भी किनारों की तरफ आजि।

शियाफ़ अबीज

अर्थात् सफेद का फाया रमद के रोगों को गुण करे। जो इस को कान में टपकावे तो कान के रोगों को गुण करे। जो दूध में मिलाकर इन्द्री में पिचकारी लगावे तो सूत्र रुकजाने के घावों को गुण करे।

धोया हुआ सफेदा पौने दो तोले, निशास्ता, कतीरा, बबूळ का गौद, मल्लिक सवा पांच माशे, काफूर आठ रत्ती, कुदरु गौद और अक्रोम मल्लिक दो माशे लेकर शियाफ़ बनावे।

दवा

नेत्र पीड़ा को तुरंत ही फायदा करे। लोध, गेहू की मैदा और घी मल्लिक चौदह माशे सब का खोया करके चार गोलिएँ बनावे और एक ठिकरा आंच पर रखके उस में एक गोली रखदे जब थोड़ी गर्म हो तब, नेत्र पर बांधे इसी प्रकार चारों गोली बांधने से दर्द को आराम हो जाता है।

पोटली

इस पोटली के तुरन्त और कोई नहीं है। ग्वारपाठ का गूदा एक माशे अक्रोम एक रत्ती, पीसकर पोटली बांधे पानी में भिगो २ कर नेत्रों पर फेंक एक घूट नेत्रों के भीतर भी टपकावे।

तथा

लोघ और मुनी फिटकरी एक २ माशे, अफीम ४ रत्ती, इमली की पत्तियां चार माशे, सब को पीसकर पोदली बनाकर नेत्रों पर चार २ फेरे ।

तथा

इमली और सिरस की पत्तियां, हल्दी, फिटकरी मल्लेक पौने दो माशे महीन पीस पोदली बनाकर पानी में भिगोकर चार २ नेत्रों पर फेरे और थोड़ा सा पानी उसका नेत्रों में भी जाने दे । तथा टपकावे तो नेत्रों की पीड़ा जाय और फूला को गुण करे ।

तथा

पोस्त का डोड़ा एक, एक रत्ती अफीम, लौंग दो, मुनी बेलगिरी चार माशे, चने बराबर हल्दी, थोड़ी सी इमली की पत्तियां, पोदली बांधकर पानी में भिगोकर नेत्रों पर फेरे और भीतर टपकावे तो रमट को गुण करे ।

अथवा

कपूर तीन भाग, पठानी लोघ एक भाग, पीसकर पोदली बांधे और दो घड़ी पानी में भिगोकर नेत्रों पर फेरे और भीतर भी टपकावे ।

अथवा

लोघ, फिटकरी, मुर्दासग, हल्दी और सफेदजीरा, मल्लेक चार माशे अफीम ४ रत्ती, चना, फाळीमिर्च चार भाग, नीला थोथा चरद प्रमाण, कूट ज्ञानकर पोदली बांध और पानी में भिगोकर नेत्रों पर फेरे ।

अथवा

बड़ी इन्द्रका वक्कल, बड़े का वक्कल, आमला, रसोव, गेरू, इमली की पत्तियां, अफीम, मुनी फिटकरी और सफेदजीरा थोड़ा २ ले कपड़े में पोदली बांधकर गुलाबजल हो तो उत्तम नहीं तो पानी में भिगोकर नेत्रों पर फेरे ।

दवा

किसी प्रकार की नेत्र पीड़ा हो सब को गुण करे । सफेदजीरा, लोघ महीन पीसकर और मुनी फिटकरी पीसकर मल्लेक थोड़ी २ चारपाठे के गूदे में पिछाकर पोदली बांध पानी में भिगोकर नेत्रों पर फेरे ।

दवा

नेत्र पीड़ा को गुण करे । अफीम एक माशे, मुनी फिटकरी दो माशे, इमली की पत्तियां दस माशे सब को महीन पीसकर पोदली बांध और पानी में भिगोकर नेत्रों पर फेरे और भीतर टपकावे ।

दवा

रमद को दूर फरे । फिटकरी एक माशे, असली दो माशे दोनों की पोटकी बांधकर पानी में भिगो २ कर नेत्रों पर फेरे ।

कुतूर

गर्मी की नेत्र पीड़ा को गुण करे । ईसकसोल का लुभाव नेत्रों में लगावे ।

कुतूर

रमद को गुण करे । जिस दिन नेत्र पीड़ा हो उस दिन घतुरे के पत्ते का रस गुनगुना कर कान में टपकावे जो पीड़ा दाहिनी ओर हो तो बायें कान में जो बायीं ओर हो तो दायें कान में टपकावे ।

कुतूर

बच्चों के रमद को गुण करे । नीम की कॉपल पीस कर ऊपर लिखे अनुसार टपकावे और जो पीड़ा दोनों नेत्रों में हो तो दोनों कानों में टपकावे ।

कुतूर

नेत्र रोग को गुण करे । निरा ग्वारपाठे का गूदा पीस कर सोते समय कान में टपकावे ।

दवा

गर्मी की नेत्र पीड़ा को गुण करे । गोंदनी की पत्ती मलकर उसका रस नेत्रों में टपकावे ।

कुतूर

नेत्र पीड़ा को गुण करे । इलदी पानी में पीसकर उसी प्रकार कान में टपकावे ।

दवा

गर्मी के रमद को गुण करे । बीदाने का लुभाव पुत्री की माँ के दूध में धनियाँ के पत्तों का रस मिलाकर खानकर नेत्रों में टपकावे ।

दवा

नेत्र पीड़ा को गुण करे । नींबू छोटे जव काला होजाय तब नेत्रों

लोहे के पतले

लोहे के मूसले से कर ।

लोथ, आपला, गाय के घी में परन्तु नेत्रों के जाने

लेप पतला

नेत्र पीड़ा को गुण करे । घटी रङ्ग का पक्कल, गेरू, रसौत और छोटी रङ्ग घिसकर लेप करे ।

तथा

रमद को गुण करे । सूखी इमली के चीयाँ निकाल कर पानी में भिगो पसल कर दान तीन रत्ती अफीम, पाँच रत्ती फिटकरी, उसी इमली के पानी से छोड़े के घासन में पकावे जब गाढ़ा होजाय तब सीप में रखकर लेप करे । और जो इमली न मिले तो उसके पत्तों का रस लेकर पकाकर पतला लेप कर ।

अथवा

सोंठ, घृतका गोंद प्रत्येक साढ़े तीन माशे कूट दान पानी में पीसकर लेप करे ।

अथवा

अमरूर लादे के तवे पर छोड़े के दस्ते से धोड़े पानी के सग खूब पीस कर पतला लेप करे और नेत्रों में टपकावे ।

दवा

नेत्र पीड़ा को तुरंत आराम करे । रङ्ग का दूध नेत्रों में आज अथवा नीम के पत्ते और सोंठ बराबर लेकर अलग २ पीस दानकर चने के प्रमाण गोक्षियां बांधे पीड़ा के समय पानी में घिसकर लगावे ।

दवा

नेत्रों की लाली और घृतगुग्गुलु का गुण करे । ढाई कालीमिर्च थोड़ीसी चूल्हे की मिट्टी लाल जली हुई दोनों को बांस के चोंगे अथवा चीनी के प्याले में खूब पीस जब फाही होजाय नेत्रों में आज ।

दवा

रमद को गुण करे । अरुमे के पत्तों को घोट कर टिकिया बनाकर तीन दिन नेत्रों पर धाँप अथवा कपास की पत्ती दही में पीसकर नेत्रों पर लगावे ।

दवा

अनार की पत्ती पीसकर टिकिया बना सोने के समय नेत्रों पर बांधे ।

दवा

बच्चों के रमद को गुण करे । लहसुन के मूत्र में रुई भिगोकर नेत्रों पर बांधे ।

दवा

रमद रोग पैदा होने की आदि में जो पीड़ा दाँशों तरफ हो तो बायें पाव के अंगूठे के नोह में और बायीं तरफ हो तो दायें पाव के अंगूठे के नोह में आँक का दूध भरदे ।

दवा

रमद को गुण करे । गोथी पीस कर टिकिया बनाके नेत्र पर बांधे ।

दवा

नेत्र छाती और पेट के जलन को गुण करे । मकोय, आमला, मुलेहटी, नागरमोथा, खस, नीलोफर के बीज प्रत्येक साढ़े घीन मांशे, मिथी दो तोला दश मांशे कूट धानकर मात्रा सात मांशे लेवें ।

दवा कफ के रमद को गुण करे । सेंहजने के पत्तों का थोड़ा रस शहद में मिलाकर नेत्रों पर लगावे तो-तीन दिवस में आराम होवे ।

दवा बच्चों आदि के रमद को गुण करे । शुद्ध चाकसू सात मांशे, लाई, मिथी प्रत्येक साढ़े तीन मांशे महीन कूट धानकर छिड़के, बाजो लाई के बंदले समीरा डालते हैं ।

दवा

रमद को गुण करे । सुली मेथी का छुमाव थोड़े से कवीरे के संग टपकाता विशेष पीड़ा को आराम करता है ।

दवा

बटेरी के पत्ते पीस कर नेत्रों पर बांधे और रस नेत्रों में टपकावे तो नेत्रों को गुण करता है ।

दवा

कैरी अर्थात् कच्चा आप पीस कर नेत्रों पर बांधें आराम होवे ।

दवा नेत्रों की सुखी को दूर करे । छिली मुलेहटी कूट के थोड़े पानी में पीसकर उस में रुई भिगोकर नेत्रों पर रखें ।

दवा

रमद को गुण करे । लोघ पीने दो तोले, वही हड़का चक्कल सात मांशे अनार के पत्तों के रस में पीसकर उसमें रुई भिगोकर तीन रात्रि नेत्रों पर रखें ।

गुसल

अर्थात् जोड़ों के धोने की औषधि । नेत्रों की गर्मों को दूर करे और खुजली को मिटावे और आदिरु रमद रोगों को मिटावे । त्रिफला का बक्कल बौकट करके रात्री को पानी में भिगोकर प्रातःकाल नेत्र धोवे यह औषधि एक दिन करे तो एक वर्ष तक पीड़ा न हो परन्तु नेत्र दूखते नहो । बीस मुद्दी निगल ले तो दो वर्ष नेत्र न दूखें यह आशुमाखी है और यूनानी हकीम यह कहते हैं कि बुद्धि के दिन सूर्योदय के पहले एक अनार की कली जो फूली दो पेड़ पर से मुह से तोड़ निगल जाय तो एक वर्ष तक रमद का रोग न हो और जो दो निगले तो दो वर्ष न हो ॥

फ़सल अशा अर्थात् रतौंद की चिकित्सा में

कालीमिर्च, कषेला पीपल बराबर के महीन पीसकर नेत्रों में आंजे ॥

दवा

काली इड़, सोठ, कालीमिर्च कूटखानकर गोली बनावे पानी में घिसकर नेत्रों में आंजे ।

दवा

शेख बुखारी सेना की आजमायी हुई । बकरी के कलेजा का कबाब बनावे उसका जो पानी टपके नेत्रों में लगावे और पाके साबत पीपल कलेजे में रख आंच पर इतनी देर रखते हैं कि जलजाय फिर पीपल निकाल शहद में मिलाकर नेत्रों में लगाते हैं ।

दवा प्याज का रस नेत्रों में लगावे ।

दवा सिरस के पत्तों का रस नेत्रों में लगावे ।

दवा सेंधेनोन की सलाई नेत्रों में लगावे ।

दवा समुद्रफल की गुठली बकरी के मूत्र में घिसकर नेत्रों में लगावे ।

दवा दही के तोड़ में धूक मिलाकर नेत्रों में आंजे ।

दवा अदरक का रस नखों में टपकावे जो अदरक नहो तो सोठ पानी में घिसकर दो तीन घूट नेत्रों में टपकावे ।

दवा काली मिर्च धूक में घिसकर नेत्रों में लगावे ।

दवा रोह मखली का पिछा नेत्रों में लगावे ।

दवा कसादी के फूलका रस नेत्रों में लगावे ।

दवा सज्जने की नरम र हालियों का रस सात मांशे शहद में मिलाकर नेत्रों में टपकावे ।

दवा

सिरस के घीज चार तोले आठ मांशे खून पीस चून में मिलाकर रोटी पकाकर तीन दिन खाये ।

दवा

हड़ और लाल मिर्च शहद में मिलाकर नेत्रों में आज्ञे ।

दवा काली मिर्च रोहू मल्लकी के पिचे में भिगो कर सुखाले जय सुब पिचे को मिर्च सोखले तब घिसकर नेत्रों में लगावे ।

अथवा गधेका तुर्ब का रुधिर नेत्रों में लगावे तो तीन दिन में रत्नोद जाय ।

अथवा मनुष्य के कानका मैल और चढ़ी इड़का बकल घेरावर पीसकर गोळियां बनावे और पानी में घिसकर शाम को नेत्रों में आज्ञे ।

अथवा सरकड़ा गांठ पर से तोड़कर उसका खोखला जलावे जब चार अंगुल जलने से रहे उसके दो टुक करके वह छाल २ तरी जो उसमें इकट्ठी होगयी हो उसे नेत्रों में लगावे । बहुधा तेजी के कारण पीड़ा और जलन पैदा करेंगी परन्तु दोष औसुओं के संग घटाकर खोदेगी ।

अथवा हुक्के के नैचे की चीकट नेत्रों में आज्ञे ।

फसल जहर

अर्थात् दिनोंधी की चिकित्सा । मस्तक को तर करे—चढ़द करे कि रुधिर गाढ़ा होजाय, ठंडे पानी में डुबकी लगाना रखना शुण करे ।

फसल सलाक

अर्थात् पलकों का मोटा होजाना, खुजाना, खुकी होना गिरजाना इसकी उत्तम चिकित्सा सरस फसदका खोलना है और पीछे पछने लगाना उसके पीछे औषधि काम में जाना है ।

दवा भाफ निगलना शुण करे । कि पलकों को घास की तरह चगाती है आकके दूध में रुई भिगीकर सुखाले और दीये में मोठा तेल भरकर उस बत्ती को जलाकर काजल पाड़के नेत्रों में लगावे और बाजी कितायों में सेल के बदले यी लिखा है अथवा धतूरे और मागरे की पाचियों का रस लेकर उसमें रुई

मिंगो कर छापा में सुन्वाकर माँटे तेल में जलाकर काजल पादे इसे वासे पानी से नेत्रों में लगावे ।

अथवा पुराने ढोल की ताल कोयलों की आच पर जलाकर कोयले पर पीस घुनी हुई लई में रख बची बना सरसों के तेल में जलाकर काजल पादे उसे नेत्रों में लगावे ।

अथवा आक की जड़ जलाकर उसकी राख पानी के साथ नेत्रों के ओर पास पधला २ लेपकर नेत्रों की खुजली और खुशकी और पलकों के फूंसने को दूर करे । बाकी दुस्तकों में लिखा है कि नीम के पत्ते पीसकर उनका रस नेत्रों में लगावे ताँ खुजली को दूर कर और भाफ निगल जाने को गुण करे ।

दूसरी दवा परमाणों और भाफ निगल जाने को और नेत्र के आँसुओं और खुजली तथा लाली को गुण करे । जशदो ताले चार माँगे, लोहे के वासन में कायल की आच पर पिघला कर थोड़ा २ उसपर बघुए का रस टपकावे कि पीली वा सफेद गस्म हो जावे उसे महीन पीसकर नेत्रों में आजे ।

दूसरी दवा बाफ निगल जाने और पलकों की खुशकी को गुण करे चक्रचूंदर की बिष्टा आधी कच्ची आधी पक्की दोनों को पीसकर शहद में मिला कर पतला लेप करे ।

दूसरी दवा बाफ निगल जाने और पलकों की खुजली और पीड़ा को गुण करे । सफेद पिसलपरा की जड़ जोया में सुन्वाकर पानी में घिस के नेत्रों में लगावे ।

अथवा माँखी का मूँह दू कर सुखा के पानी में पीसकर पतला लेप करे ।

अथवा कटेरी का फला पानी में औटाकर उसका बफारा लेवे ।

अथवा सीप जला पीसकर नेत्रों में लगावे ।

अथवा बघुतर की पीठ शहद में मिलाकर पलकों पर लगावे ।

अथवा साँप की काचली जलाकर तिलके तेल में मिला पलकों पर लेप करे ।

दवा यह दवा उस बाफती गलजाने का गुण कर जिसकी पक्षि गिर पड़े

और कितारे लाले पड़ जाय । बघुल की सेबधर-पलियों को पीचसेर पानी में

औटाव जब चौय ई रई छानकर नित्य दोनोपार पलकों पर पतला लेप करे थोड़े

दिनों में धाराम हो जायगा

अथवा गधे की खीद सुखा के पावाख यंत्रकी रीति से तेल खेंच पलक

पर मले । अथवा कदरु को जला पीसकर उसकी राख सुभे की तरह नेत्रों में लगावे ।

अथवा पुराना कपड़ा या कई तीनबार हल्दी में रंगके सुखाकर फिर उसी प्रकार तीनबार बिनौले के गूदे में भिगोकर सुखावे फिर बत्ती बनाकर सरसों के तेल में जलाकार काजल पाँचे चकसो नेत्रों में लगावे ।

अथवा खपरिया नीलाघोथा कपूर मिर्ची बराबर छे कूट छानकर पानी में खरल कर गोतिपा बना और सोते समय पर पानी में घिस के नेत्रों में लगावे ।

अथवा कुदरुगोद को काजलसा महीन पीस के नेत्रों में लगावे तो ज्योति को बढ़ावे नेत्र का घाव, जमा हुआ रुधिर, आँसू बहने बाफनी गलजाने, नेत्रों की सफेदी और सुजली को गुण करे । और घुन्घ को दूर करता है । जो शब्द में मिलाकर लगावे तो कुदरुगोद का काजल भी यही गुण करता है ।

काजल की विधि यह है कि कुदरुगोद को दोघे में रख जलाकर उस पर आँधा बासन रखदे कि उसमें काजल पड़ जाय उसको नेत्रों में आँजे यह दवा पलक भट्ठजाने को गुण करे लुहारे की गुठली दस माशे, बालकड़ सात माशे पानी में पीसकर नेत्रों में लगावे ।

दवा पलकों के बाल जमाने की जो कोढ़की बीमारी से गिरगये हैं गुण करती है जवाइड़ और माजूफल जलाकर उसमें सुर्मा मिलाकर पतला लेपकरे ।

फ़सल नजूल लमाय अर्थात् मोतियाबिंद की चिकित्सा में ।

जिस मनुष्य के नेत्रों के आगे मच्छर या मक्खी से चढ़ते दिखाई दें दिन च दिन विशेषता होतीजाय तो जानिये कि इसके मोतियाबिंद होगा । इस के पीछे पुतली बदलजाय और नेत्रों की ज्योति जाती रहे ।

इसकी आदिमें चिकित्सा यह है कि कनपटियों पर गुललगावे तथा कनपटियों पर जोकें लगाना भी गुण करता है और जब पानी उत्तर आवे उसके पीछे दोष को पकाकर मस्तक की सफाई करे और मोतियाबिंद के आदि में चत्रपाक खिछाना गुण करता है । वह यह है चच, हिंग, सोंफ सोंठ, बराबर छे शब्द में मिलाकर पाक बनाले मात्रा साढ़े तीन माशे की है ।

अथवा निर्मली शब्द में पीसकर नेत्रों में लगावे ।

अथवा हिंगोद की भिंगी दो भाग अफ्रीम एक भाग, कूट छानकर शियाफ बनावे ।

अथवा नोसादर को सुभेसा महीन पीस नेत्रों में लगाना मोतियाबिंद गुण करे ।

अथवा सफ़ेद चिरमिठी का रस नीबू के रस में मिलाकर मात काल नेत्रों में लगावे ।

अथवा यह दवा मोक्षियाबिन्द को उत्तम है इसको बढ़ने नहीं देती इसकी के पत्ते दस तोले फुल (कांसी) के कठोरे में नीम के घोंटे से जिस में पैसा गड़ा हो यहां तक घोंटे कि वह गाढ़ा होजाय पीछे बेटी की मा के दूध में चालीस महर खरल कर काम में लावे ।

अथवा सोंफ़ का काजल लगावे । यह यह है कि सोंफ़ का हरा पेड़ लेकर शीशे तथा चीनी के बर्तन में रखे जब सूख जाय तब पीसकर सुर्पा लगावे ।

अथवा सेवती के फुल और कुदरुगोंद बराबर लेकर पीस के रुई में छपेट बत्ती बनावे और मोठे तेल में डाल काजल पाड़के लगावे ।

अथवा बहुत चोखा भीमसेनी कपूर लड़के की मा के दूधमें पीसकर लगावे ।

अथवा कौए का पिच्छा आधे तोले शहदमें खुरगड़के नेत्रोंमें लगावे रोग दूर हो ।

अथवा निर्मली, हींग, फिटकरी, सफ़ेदा, खपरियानी लायोया, मल्लिक औदह मांशे खूब महीन पीसकर दही में घोंटे कि आठसेर दही उसमें समाजाय पीछे उसकी गोखियां बनावे और सोते समय पर स्त्री के दूध में घिसकर लगावे ।

अथवा आदि में इस दवा को काम में लावे जो मोक्षियाबिन्द को होने न देवे । इडकी मिंगी चीस महर निर्मल पानी में घोंटे और गोखियां बना नेत्रों में आंजे ।

अथवा जो रोग के आदि में लगावे तो बढ़ने न पावे दो काशजी नीबू का रस चार तोले गऊ के माखन में खूब मछ के माखन में थोड़ा पानी डाल कर दो रात्रि दिन रखदे फिर मखन को पानी से भोकर उसी प्रकार दो नीबू के रस में घोटकर पानी डालकर दो रात्रि दिन रखकर घोंब इसी प्रकार पछोस बार करके चीनी तथा शीशे के घासन में रखे और खस के दो दाने की बराबर लगाया करे ।

अथवा नील के बीजों का सुर्पा लगाना मोक्षियाबिन्द नहीं होने देता ।

अथवा मधुष्प के कान का मैल और हींग बराबर ले शहद में पीस के नेत्रों में लगाया करे और दूध, मधुली इस रोग में खाना योग्य नहीं है ।

फ़सल नेत्र और पलकों की खुजली की चिकित्सा में

आदि में फ़सद सरेरु खोलें उसके पीछे खुजली की औपाधि काम में लावे ।

पर मले । अथवा कदू को जला पीसकर उसकी राख सुभे की तरह नेत्रों में लगावे ।

अथवा पुराना कपड़ा या कई तीनचार हल्दी में रगके सुखाकर फिर उसी प्रकार तीनचार विनौते के गूदे में भिगोकर सुखावे फिर बत्ती बनाकर सरसों के तेल में जलाकर काजल पावे उसको नेत्रों में लगावे ।

अथवा खपरिया नीलायोया कपूर मिर्ची बराबर ले कूट छानकर पानी में खरल कर गोतिपा बना और सोते समय पर पानी में घिस के नेत्रों में लगावे ।

अथवा कुदरूगोद को काजलसा महीन पीस के नेत्रों में लगावे सो क्योति को बढ़ावे नेत्र का घाव, जमा हुआ रुधिर, आंसू बहने वाफनी गलजाने, नेत्रों की सफेदी और खुजली को गुण करे । और घुन्घ को दूर करता है । जो शहद में मिलाकर लगावे तो कुदरूगोद को काजल भी यही गुण करता है ।

काजल की विधि यह है कि कुदरूगोद को दीये में रख जलाकर उस पर औंधा घासन रखदे कि उसमें काजल पड़ जाय उसको नेत्रों में आने यह दवा पलक झड़जाने को गुण करे छुहारे की गुठली दस मांशे, वालुछड़ सात मांशे पानी में पीसकर नेत्रों में लगावे ।

दवा पलकों के चाल जमाने की जो कोढ़की बीमारी से गिरगये हों गुण करती है जवाहर और याजूफल जलाकर उसमें सुर्मा मिलाकर पतला लेपकरे ।

फ़सल नजूल लमाय अर्थात् मोतियाबिंद की चिकित्सा में ।

जिस मनुष्य के नेत्रों के आगे मच्छर या मक्खी से चढ़वे दिखाई दे दिन ब दिन विशेषता होतीजाय तो जानिये कि इसके मोतियाबिंद होगा । इस के पीछे पुतली बदलजाय और नेत्रों की क्योति जाती रहे ।

इसकी आदिमें चिकित्सा यह है कि कनपटियों पर गुललगावे तथा कनपटियों पर जोके लगाना भी गुण करता है और जब पानी चर आवे उसके पीछे दोष को पकाकर मस्त्क की सफाई करे और मोतियाबिंद के आदि में बचपाक खिलाना गुण करता है । वह यह है बच, हाँग, सोंफ, सोंठ, बराबर ले शहद में मिलाकर पाक बनाले मात्रा साढ़े तीन मांशे की है ।

अथवा निर्मली शहद में पीसकर नेत्रों में लगावे ।

अथवा शिंगोद की भिगी दो याग अफ्रीम एक भाग, कूट छानकर शियाफ बनावे ।

अथवा नोसादर को सुभेसा महीन पीस नेत्रों में लगाना मोतियाबिंद गुण करे ।

चमेली की गोली नेत्र की कम जोति को गुण करती है चमेली के फूलों की डदी में घराघर का घृग भिखाकर खरल कर नेत्रों में लगावे ।

दवा खपरिया छः पाख को डुगड़े २ कर दो तीन नीबू के रसमें भिगोवे और मिट्टी क चासन में रख कपरोटी कर आरने कढों में रख आंच दे फिर निकाल पीसकर नेत्रों में आंजे ।

अथवा पसी इड़ की १२ गुठली, ५ पीपल, ५ कालीमिर्च आमलेके रसमें घारके जब कि घाटवे २ काछा पड़ जाय तब गोछिया बनाकर पानी में घिस के नेत्रों में लगावे ।

अथवा रीठाकी गोली की भिंगी नीबू के रसमें घोट कर गोछि य बनावे और नित्य मात काल धूक में घिसके नेत्रों में आंजे ।

अथवा यह गोली नेत्रों की कमजोति और लाली को गुण करे । जवा-इड़ और मिर्ची घराघर पीसकर गोछिया बनाके नेत्र से लगावे ।

सलाई इसको भिसरानी बैद्य काम में लाते हैं सोसे को आंच में गलाकर त्रिफला के पानों में घुम्काव फिर गलाकर मेह के पानी में घुम्कावे इसी प्रकार भांगरे के रस, घी और शहत में घुम्का २ कर सलाई बना नित्य मात काछ नेत्रों में करे नेत्रों के सप प्रकार के रोगों को गुण दायक है और नेत्रों की जोति बढ़ाती है यह सलाई बहुधा नेत्र के मात्र रोगों को गुण करती है इसके नित्यमाति लगाने से नेत्रों को चैन रहे । जब सोते से उठे तब अपना धूक नेत्रों में आंजे तो नेत्र रोग दूरी नहीं ।

दवा दिगोट की भिंगी पानी में पीसकर नेत्रों में लगावे ।

अथवा निर्मली पानी में घिसकर लगावे तो नेत्र की जोति बढ़ावे ।

सिर्सेका काजल नेत्रों की जोति को बढ़ावे । सिर्सेके पत्तों के रस में गली भिगोकर सुखावे इसी प्रकार चीन सार करके बची बना चमेली के तेल में काणल पाड़के रख और ससेका अमन आखों में लगाया करे ।

लेप पतला लेप करना आखों की गर्मी, सुखी और ज्योति घटमाने को गुण करता है परन्तु बहुत दिन पर्यन्त लगाने से बहुत छोटी जवाइड़ तीन, शुद्ध अफीम चार रत्ती, आधी लौंग फूल की तरफ से कृष्ण के पानी में भिगोकर रख और नेत्रों पर लगाया करे बढ़ाविष नेत्रों में चली भी जाय तो हानि नहीं ।

दवा कि बहुधा नेत्र रोगों को और नेत्र की जोति घटमाने तथा नज्द

चिकित्सा गांजूफल और जवाहड़ पीसकर नेत्रों पर लेप करे वालों का काजल नेत्र की खुजली को दूर करे। मनुष्य के मस्तक के घात जला मशीन पीस नेत्रों में लगावे। अथवा धंध का जिला जला मशीन पीसकर लगावे।

नीम का काजल बहुधांकर नेत्र रोगों को गुण करे। नीम के पत्तों को कुल्हड़े में रख कपरोटी कर इतनी दूर आग पर रखे कि जलकर भस्म हो जाय उस भस्म को नीबू के रस में खरल कर लगावे।

दवा नेत्रों की खुजली और जलन को गुण करे। सीसे का मैल नेत्रों में लगावे सीसे का मैल उस कलौंस से मतलब है कि सीसे के टुक को जूते के तूले तथा घांस की चाँगली पर रगड़ने से दृष्टि में आवे उस चूगली में लग नेत्रों में लगावे।

फसल नेत्र ज्योति घटजाने की चिकित्सा में

पूर्व रूप इसके विक्षेप है बहुधां नेत्रों की ज्योति बूझावस्था में घटजाती है मस्तक क्षीण और निर्धल पढ़जाने के कारण इस में आगम नहीं होता परन्तु चिकित्सा करना उचित है क्योंकि वढ़ने जाय। इसकी चिकित्सा मस्तक की सफाई और बल प्राप्त कराना उचित है। कच्ची, पकी शकजम खाना नेत्रों की ज्योति बढ़ाता है और पालों में कच्ची करना छड़ों के नेत्रों की ज्योति घटजाने की गुण करता है। नित्य कंधी की दिन में पांच चार बार मस्तक पर फेरने नेत्रों की गर्मी सोख लेता है और शख रईस का यह वयान है कि साफ पानी में वैरना उसमें नेत्रों को खोले रखना भी गुण करता है। थोड़ीसी उलटी करना और पाँच दवाना और मसलवाना कर्म जोति को गुण करता है और विशेष रोना गळे के पीछे पड़ने लगवाना अत्यन्त भूखा रहना और ज्ञाति मैयुन करना तथा सोया मधूर और जो २ अजीर्ण करने वाली वस्तु है यह सब को गुण करता है।

नुसखा शर्वत गुलमुदी नेत्रों की ज्योति घट जाने और मस्तक की चरी को गुण करती है और ऊपर को गर्मी नहीं बढ़ने देती। मुदी के पावसेर फूल तीन पाव घूरा सफेद गुलमुदी को डेढ़सेर पानी में रात को भिगाकर प्रातः काल ओटावे जब तीसरा भाग रहे छान कर घूरा मिला शर्वत की चाशनी करले मात्रा चार बाले देवे और मुदी का अर्क भी नेत्रों की बलदायक है।

सोंफ की फली नेत्र की कम जोति को गुण करती है। तिब्ब द्वारा शिकोहस लिखा गया है हर रात को सात मांशे सोंफ छूट छानकर सात मांशे सफेद मिलाके फाक के सो रहे इसी प्रकार नित्य खाकर सोरहा करे और सोंफ का फाक के अर्क में से निकालकर नेत्रों में लगावे विशेष गुण करता है।

चमेली की गोली नेत्र की कम जोति को गुण करती है चमेली के फूलों की हड्डी में बराबर का घृण मिलाकर खरल कर नेत्रों में लगावे ।

दवा खुरिया छः माशे को टुकड़े २ कर दो तीन नीबू के रसमें भिगोवे और मिट्टी के घासन में रख कपरोटी कर धारने कटों में रख आव दे फिर निकाल पीसकर नेत्रों में आंजे ।

अथवा पशु हड्डी की १२ गुठली, ५ पीपल, ५ कालीमिर्च आमलेके रसमें घोरके जष कि घोटवे २ दाला पड़ जाय तब गोखिया बनाकर पानी में घिस के नेत्रों में लगावे ।

अथवा रीटाकी गोली की मिर्गी नीबू के रसमें घोट कर गोखि य बनावे और नित्य प्रात काल धूक गें घिसके नेत्रों में आंजे ।

अथवा यह गोली नेत्रों की कमजोति और लाली को गुण करे । जवा-हड़ और मिर्ची बराबर पीसकर गोखिया बनाके नेत्र से लगावे ।

सलाई इसको मिसरानी वैद्य काम में लाते हैं सीसे को आंच में गलाकर थिकता के पानी में बुझावे फिर गलाकर मेह के पानी में बुझावे इसी प्रकार भांगरे के रस, घी और अदत में बुझा २ कर सलाई बना नित्य प्रात काल नेत्रों में फेरे नेत्रों के सब प्रकार के रोगों को गुण दायक है और नेत्रों की जोति बढ़ाती है यह सलाई बहुधा नेत्र के मात्र रोगों को गुण करती है इसके नित्यमार्ति लगाने से नेत्रों को चैत रहे । जब सोते से घटे तब अपना धूक नेत्रों में आंजे तो नेत्र रोग कभी नहीं ।

दवा हिंगोट की मिर्गी पानी में पीसकर नेत्रों में लगावे ।

अथवा निर्मली पानी में घिसकर लगावे तो नेत्र की जोति बढ़ावे ।

सिर्सेका काजल नेत्रों की जोति को बढ़ावे । सिर्सेके पत्तों के रस में गजी, भिगोकर सुखावे इसी प्रकार तीन बार करके बची घना चमेली के तेल में काजल पाड़के रत्ने और उसका अमन आंखों में लगाया करे ।

लेप पतला लेप करना आंखों की गर्मी, सुखी और ज्योति घटमाने को गुण करता है परंतु बहुत दिन पर्यन्त लगाने से बहुत छोटी जवाहड़ तीन, भुद अर्द्ध म चार रत्नी, आधी लौंग फूल की तरफ से कुण के पानी में भिगोकर रख और नेत्रों पर लगाया करे दवाविष नेत्रों में चली भी जाय तो हानि नहीं ।

दवा कि बहुधा नेत्र रोगों को और नेत्र की जोति घटमाने तथा नजसे

चिकित्सा गाजूफल और जवाइसू पीसकर नेत्रों पर लेप करे वालों का काजल नेत्र की खुजली को दूर करे। मनुष्य के मस्तिष्क के चालू पला महीन पीस नेत्रों में लगावे। अथवा धातु का झिलका जला महीन पीसकर धातु।

नीम का काजल पड़ुपाकर नेत्र रोगों को गुण करे। नीम के पत्रों को कुल्हड़े में रख कपरोटी कर इतनी देर भाग पर रखे कि जल गरम हो जाय उस भस्म को नीम के रस में खरल कर लगावे।

दवा नेत्रों की खुजली और जलन को गुण करे। सीसे का मैल नेत्रों में लगावे सीसे का मैल उस कलौस से गतल है कि सीसे के टुक को जूते के तले तथा घास की चौंगली पर रगड़ने से दृष्टि में आवे उसे पंगली में लगा नेत्रों में लगावे।

फसल नेत्र ज्योति घटजाने की चिकित्सा में

पूर्व रूप इसके विशेष है चढ़ा नेत्रों की ज्योति घटावस्था में बटजाती है मस्तिष्क कीण और निर्धल पड़जाने के कारण इसमें आराम नहीं होता परन्तु चिकित्सा करना उचित है क्योंकि घट न जाय। इसकी चिकित्सा मस्तिष्क को सपाई और बल प्राप्त कराना उचित है। कच्ची, पकी या कम खाना नेत्रों की ज्योति बढ़ाता है और घालों में कधी करना दृष्टों के नेत्रों की ज्योति घटजाने को गुण करता है। नित्य कधी को दिन में पांच चार बार मस्तिष्क पर फेरना नेत्रों की गर्मी सोख लेता है और सुख रहस का यह बयान है कि माफ पानी में धरना उसमें नेत्रों को खोले रखना भी गुण करता है। थोड़ीसी बलती फरन्त और पाँव टपाना और मसलवाना कम जोति को गुण करता है और विशेष रीना गले के पीछे पछमें लगवाना अत्यन्त भूखा रहना और अति मैथुन करना क्या सोया मसूर और जोर अजीर्ण करने वाली वस्तु हैं यह सब को गुण करता है।

नुसखा शर्वत गुनगुड़ी नेत्रों की ज्योति घट जाने और मस्तिष्क की तरी को गुण करती है और ऊपर को गर्मी नहीं बढ़ने देती। गुड़ी के पाँचसेर फूल तीन पाँच घूरा सफेद गुलगुंडों को बेंदसेर पानी में रात को भिगाकर भात काज ओटावे जब तीसरा भाग रहे खान कर घूरा मिला शर्वत की चाशनी करले पात्रा चार सोले देवे और गुंडी का अर्क भी नेत्रों को बलदायक है।

सोफकी फकी नेत्रों की कम जोति को गुण करती है। तिब्ब द्वारा शिकोइसे लिख गया है हर रात को सात मांशे सोफ कूट खानकर सात मांशे सफेद मिठाई फाफ के सो रहे इसी प्रकार नित्य खाकर सो रहा करे और सोफ का एक अर्क में से निकालकर नेत्रों में लगावे विशेष गुण करत

चमेली की गोली नेत्र की कम जोति को गुण करती है चमेली के फूलों की हड्डी में परावर का दूध मिलाकर खरल कर नेत्रों में लगावे ।

दवा खपरिया लः माछे को टुकड़े २ कर दो तीन नीबू के रसमें भिगोवे और मिट्टी के पासन में रख कपंगोटी कर धारने कटों में रख आंच दे फिर निकाल पीसकर नेत्रों में धाजे ।

अथवा बड़ी हड्डी की १२ गुठली, ५ पीपल, ५ कालीमिर्च आमलेके रसमें घोरके जब कि घाटते २ फाछा पड़ जाय तब गोखिया बनाकर पानी में घिस के नेत्रों में लगावे ।

अथवा रीठाकी गोली की मिर्गी नीबू के रसमें घोट कर गोखिय बनावे और नित्य प्रातः काल धूक में घिसके नेत्रों में आजे ।

अथवा यह गोली नेत्रों की कमजोति और लाली को गुण करे । जवा-हड्डी और मिर्ची बराबर पीसकर गोखिया बनाके नेत्र से लगावे ।

सलाई इसको भिसरानी वैद्य काम में लाते हैं सीसे को आंच में गलाकर त्रिफला के पानी में बुझावे फिर गलाकर मेह के पानी में बुझावे इसी प्रकार भांगरे के रस, घी और अदक में बुझा २ कर सलाई बना नित्य प्रातः काल नेत्रों में फरे नेत्रों के मध्य प्रकारके रोगों को गुण दायक है और नेत्रों की जोति बढ़ाती है यह सलाई पड़्या नेत्र के माध्य रोगों को गुण करती है इसके नित्यप्राति लगाने से नेत्रों को चैन रहे । जय सोते से घटे तब अपना धूक नेत्रों में आजे तो नेत्र रोग कभी नहीं ।

दवा हिंगोटे की मिर्गी पानी में पीसकर नेत्रों में लगावे ।

अथवा निर्मली पानी में घिसकर लगावे तो नेत्र की जोति बढ़ावे ।

सिर्सका काजल नेत्रों की जोति को बढ़ावे । सिर्सके पत्तों के रस में गजी भिगोकर सुखावे इसी प्रकार छीन पार करके घची बना चमेली के सेल में काजल पाड़के रखे और उसका अमन आँखों में लगाया करे ।

लेप पतला खेप करना आँखों की गर्मी, मुखों और व्योति घटनाने को गुण करता है परन्तु बहुत दिन पर्यन्त लगाने से बहुत छोटी जवाहड्डी तीन, भुद अर्धम चार रत्ती, व्याधी यांग फूल की तरफ से कुण्ड के पानी में भिगोकर रख और नेत्रों पर लगाया करे घटाविष नेत्रों में चली भी जाय तो हानि नहीं ।

दवा कि पड़्या नेत्र रोगों को और नेत्र की जोति घटनाने तथा नज़र

की आदि को गुण करे । प्याज का पानी शहद में मिलाकर नेत्रों में लगावे ।

सुर्मा ज्योति की कमी को गुण करे । सोलह काळीमिर्च, सौंठ पाँचल, पचास चमेछी की कली, अस्सी विठ के फूल सबको खरल कर सुर्मा बनावे ।

अथवा काळीमिर्च एक मांशे, बड़ी इड़का बफ़ल दो मांशे, छिली इड़दी तीन मांशे, गुलाबजल वा पानी में घोटकर सुर्मा बनाकर आँखों में लगावे ।

अथवा दो अखरोट और तीन इड़की गुठलियों को जलाकर पीसे और चार काळीमिर्च मिलाकर खरल कर सुर्मा बनाके लगावे ।

अथवा रसौत को सुर्मे की तरह नित्य लगाना विशेष गुण करता है ।

काजल कि जोतिको बलवान करे । नीम के फूल छाया में सुखाकर उन की बराबर कलपीशोरा छेके सुर्मासा करके आँखों में लगावे तो फुली और नेत्रों की सुखी को गुण करे ।

दवा धुनीरू आक के दूध में भिगोके छाया में सुखा चत्ती बना के सरसों के तेल में जळा के धीरे २ काजल पाद के नीम के सोटे में जिस में पैसा जड़ा हो फूक कासी के बरतन में गुलाब जल के साथ घोटें और सजाई से नेत्रों में आज ।

फ़सल सवल

अर्थात् मांडा और फुली जफ़रा अर्थात् नाखूना और प्याज अर्थात् जाला, फुली एक पर्दा है जो आँख में पड़ा भर जाने से उत्पन्न होता है और नाखूना नेत्र के पेदे कोष की तरफ़ उत्पन्न होता है और जाळा सकेदी है जो नेत्र की स्पाही पर उत्पन्न होती है ।

चिकित्सा प्रथम फ़स्द सरेक ललाट देश की नस की खोले पीछे नेत्रों की जोवि बढ़ाने वाली औषधि काम में लावे ।

गोली जो नेत्र पीड़ो नाखूना और आँसुओं को गुण करे । अरहर के पत्तों का रस १४ मांशे छानकर नीम के सोटे से जिसमें पैसा जड़ा हो दस काँगाजी नीधु के रस में खरल करके गोळियाँ बनावे और समय पर नेत्रों में लगावे ।

गोली मांडा और नेत्रों को गुण करे । सिरस के बीजों की भिंगी खिरनी के बीजों की भिंगी के रस में मिलाकर खरल करके और गोली बनावे ।

गोली फू

दध में घिसकर लगावे ।

एक भाग सुधानात्र विनाकर सब पीसके छुपा सा फावले और नो म जगावे
सात दिन म पीसियविषु गण ।

देवा कि फुलो का गुण कर । कर्पूर या गुली की धीरे कान्ता नीचे क
म गुल करके रात्र के सावन म रख सपय पर नो म जगावे ।

अथवा अथवाजि की धीरे गुल म पिताकर नो म जगावे विष
दी पाउ म मन्त्र लिख है ।

अथवा मारुती का सीर दे म पिताकर जगावे ।
अथवा सुधानात्र की सवाइ पताकर यात्रे दिन पड़ पाय आवा म को

प्राप्तना और जगा गण ।
अथवा कर्पूर या विट्ठल की धीरे पीसकर नो म जगावे ।

अथवा आक की गड़ पाती म पिताकर नो म जगावे नो मन्त्र गण ।
अथवा कटो की गड़ नीप के रात्र म पिताकर नो म जगावे नो धूप

म और जगा दे है ।
अथवा मारुती गड़ पिताकर नो म जगावे नो फुलो दे है ।

अथवा सुगन्दी गड़ पाती म पिता कर नो म जगावे नो जगा दे है ।
अथवा कर्पूरी गोल के पाती की सिमी पाठ । वेद म पिता कर जगावे

फुलो दे है ।
अथवा पड़ का दे म नो म दे नो जगा दे है ।

अथवा सप्तर्षन पीसकर जगावे । पावे सप्तर्षन की पिता के वेद
पीसकर जगावे है ।

अथवा जाल के फल यात्र म पीसकर जगावे नो जगा गण ।
अथवा गुल के सीर दे म पिता पिताकर जगावे नो पवा की

अथवा सीर फल फल और सुधानात्र यात्र म पीस अथवा पीस अथवा
अथवा म पीस नो म जगावे नो जगा दे है ।

अथवा म पीस का सीर जगा पीस पीसकर जगावे नो जगा दे है ।
अथवा पवा की फुलो की जगावे नो जगा की जगावे पायन क

अथवा म वलन कर जगा दे जगा दे है ।
अथवा जाल जगा कर म पीस म जगावे नो जगा दे है ।

में एक भाग सेंधानोन मिलाकर खूब पीसकर सुर्या सा करले और नेत्रों में लगावे तो सात दिन में मोतियाबिन्दु जाय ।

अथवा फूलों की गुण करे । कथुनर या गुर्गी की बीट कागजी नीबू के रस में खरल करके ताबे के वासन में रख समय पर नेत्रों में लगावे ।

अथवा अवाबील की बीट शहद में मिलाकर नेत्रों में लगावे तब क्रोधी बाछे ने अच्छा लिखा है ।

अथवा धारहसांगे का सींग दूध में घिसकर लगावे ।

अथवा सेंधानोन की सलाई बनाकर प्रति दिन कई बार आँखों में फेर तो नाखूना और जाला जाय ।

अथवा कवूर या चिड़िया की बीट पीसकर नेत्रों में लगावे ।

अथवा आक की जड़ पानी में घिसकर नेत्रों में लगावे तो नाखूना जाय ।

अथवा कटेरी की जड़ नीबू के रस में घिसकर नेत्रों में लगावे तो घुंघ जाय और जाला दूर होवे ।

अथवा अरहर की जड़ घिसके नेत्रों में लगावे तो फूली दूर होवे ।

अथवा बैंगन की जड़ पानी में घिस के नेत्रों में लगावे तो जाला दूर होवे ।

अथवा कड़वी खोरे के बीजों की भिंगी मोठे सेल में घिस के लगावे तो फूली दूर होवे ।

अथवा बड़ का दूध नेत्र में भर दें तो जाला दूर होवे ।

अथवा समुद्रफेन पीसकर लगावे । बाजे समुद्रफेन को बिनौले के तेल में पीसकर लगावे हैं ।

अथवा लाले के फूल शहद में पीसकर लगावे तो जाला जाय ।

अथवा पुत्रवती स्त्री के दूध में मिथी घिसकर लगावे तो बच्चों की फूली दूर हो ।

अथवा सोंठ, फिटकरी और सेंधानोन बराबर महीन पीस छानकर नित्य प्रति नेत्रों में लगावे तो जाला दूर हो ।

अथवा गंधी का खुर जाला महीन पीसकर लगावे तो जाला दूर होवे ।

अथवा चमेडी के फूलों की गोली जो नेत्रों की जोति घटाने के विषय में वर्णन कर आये हैं जाले को दूर करती हैं ।

अथवा लाल प्याज का रस नेत्रों में लगावे तो नाखूना दूर होवे ।

[illegible]

में एक भाग सेंधानोन मिलाकर खूब पीसके मुर्पा सा करले और नेत्रों में लगावे तो सात दिन में मोतियाबिन्दु जाय ।

दवा फि फूली को गुण करे । कवूतर या मुर्गी की बीट कागजी नीबू के रस में खरल करके ताँचे के वासन में रखे समय पर नेत्रों में लगावे ।

अथवा अवाषील की बीट शहद में मिलाकर नेत्रों में लगावे तब क्रोदी वाले ने अच्छा लिखा है ।

अथवा बारहसाँगे का सींग दूध में घिसकर लगावे ।

अथवा सेंधानोन की सलाई बनाकर प्रति दिन कई बार आँखों में फेरे तो नाखूना और जाला जाय ।

अथवा कवूतर या चिड़िया की बीट पीसकर नेत्रों में लगावे ।

अथवा आक की जड़ पानी में घिसकर नेत्रों में लगावे तो नाखूना जाय ।

अथवा फटेरी की जड़ नीबू के रस में घिसकर नेत्रों में लगावे तो धुप जाय और जाला दूर होवे ।

अथवा अरहर की जड़ घिसके नेत्रों में लगावे तो फूली दूर होवे ।

अथवा बैंगन की जड़ पानी में घिस के नेत्रों में लगावे तो जाला दूर होवे ।

अथवा कड़वी तोरई के बीजों की भिगी मोठे तेल में घिस के लगावे तो फूली दूर होवे ।

अथवा बड़ का दूध नेत्र में भर दें तो जाला दूर होवे ।

अथवा समुद्रफेन पीसकर लगावे । वाले समुद्रफेन को बिनाले के तेल में पीसकर लगाते हैं ।

अथवा लाले के फूल शहद में पीसकर लगावे तो जाला जाय ।

अथवा पुत्रवती स्त्री के दूध में मिथी घिसकर लगावे तो पक्षों की फूली दूर हो ।

अथवा सोंठ फिटकरी और सेंधानोन बराबर महीन पीस छानकर नित्य प्रति नेत्रों में लगावे तो जाला दूर हो ।

अथवा गभी का खुर जाला महीन पीसकर लगावे तो जाला दूर होवे ।

अथवा चमेडी के फूलों की गोली जो नेत्रों की जोति घटमाने के विषय में घण्टन कर आये हैं जाले को दूर करती हैं ।

अथवा लाल प्याज की रस नेत्रों में लगावे तो नाखूना दूर होवे ।

अथवा तेजपात महीन पीसकर नेत्रों में लगावे तो नेत्रों की स्याही नाखूना आगल और सपलक दूर होवे ।

दवा अत्यन्त सफेद कलमी शोरा महीन पीसकर थोड़ी सी इलदी मिलावे कि जिससे रगत आनाय फिर उसको नेत्रों में लगावे तो नेत्रों की जोति बदे, नाखूना जाले आदि बहुत से रोगों को गुण करे ।

अथवा बिसखपरे की जड़ और सफेदा पानी में पीसकर लगावे तो नाखूना दूर हो ।

अथवा एकरेंडी, साढ़े तीन माशे मिर्ची और शुद्ध चाकस पांच माशे पीसकर नेत्रों में लगावे तो फुली फटे ।

अथवा जगल, बबूरा का गोंद, सफेदा काशमरी सष बराबर के पीसकर पानी में चिपाफ बना सुखा रखलै और समय पर पानी में घोलकर लगावे तो फुली नाखूना और सुनखी दूर होवे ।

कुतूर दो तोले चार माशे आपले जौड़ करके दो घन्टे पानी में भौटावे फिर छानकर नित्य तीन बार नेत्रों में टपकावे तो जाला दूर होवे ।

सुर्मा फुली जाले और नाखूने को दूर करे हरी चूड़ी चौदह माशे महीन पीसकर नीबू के रस में खूब घोंटे जब सुखनाय तब नेत्रों में लगावे ।

अथवा नौसादर और फिटकरी खूब बारीक पीसकर और खूब खरक करके लगावे तो जाला और फुली, रतौदी, दलका और नेत्रों की कमजोति को गुण करे ।

अथवा आषसेर प्याज के रस में फण्डा भिगोकर, धूल मिट्टी से बचा कर सुखावे पीछे बची बना पाष सेर मीठे तेल में मलाकर कानल पादके नेत्रों में लगावे तो जाला जाय ।

काढा

मिसरानी बैद्यों का बनाया हुआ । जो इसे पंद्रह दिवस काम में लावे तो फुली दूर हो । जायफल का बकक, नीमकी छाल, गिलोय, बड़वा चिरायता, लाल चन्दन, पिचपापड़ा, खस और गुलमृदी प्रत्येक एक तोले पानी में भौटा छानकर चौदह माशे साफ शुद्ध मिलाकर पीवे ।

अथवा लालचन्दन, देवर, नीम की छाल, आषाहलदी, त्रिफले का घृतल और अहसा प्रत्येक दो तोले चार माशे, कुटकी साढ़े तीन तोले, अगलतासका

गूदा चार तोले आठमांश, कड़वा चिरायता पौने दो तोले, सोंठ, गिलोय, नागर-
मोथा प्रत्येक चौदह मांशे सब को कुटकर नित्य दो तोले चार मांशे लेकर तीन
पाव पानी में औंटावे जब औषपाष रहे छानकर दो तोले चार मांशे साफ
सह मिलाकर पीवे इस प्रकार चौदह दिन पीवे ।

मुंठी पाक

नेत्र रोगों को गुण करे । त्रिफला का पकळ, जवाहर, कावली हड़का पकळ,
घनिया, पिप्पलापट्टा, मुकहटी प्रत्येक एक तोले, सब की बराबर गुच्छुंटी और
विगुना कंद, हड़ आदि को घी में तलकर कंद की चाशनी में मिलादे मात्रा दो तोले ।

फसल ढलका

ढलकावे अयोजन आंसू बहने को कहते हैं, हर समय नेत्र तर ही रहते हैं ।
चिकित्सा प्रथम प्रवाद, पकाकर सफाई करे, पीछे औषधि करनी चाहिये ।
गोली नेत्र की खुजली और ढलके को गुण करे । बड़ी हड़की गुठली
की भिंगी दो भाग, बड़े की गुठली की भिंगी तीन भाग, आंवले की गुठली
की भिंगी तीन भाग पीसकर गोली बनावे समयपर पानी में घिसकर लगावे ।

अथवा सिरस के बीज, कालीभिर्च, बनफशा, प्रत्येक २ कूट छानकर,
शरद में मिलाकर गोलियां बनाकर नेत्रों में लगाया करे तो ढलका जाय ।

अथवा जवाहर, पाजूफल, बालहड़, बड़ीहड़का पकळ बराबर ले
पानीमें पीसके गोलियां बना नेत्रों में लगावे तो ढलका दूर होवे ।

शियाफ अर्थात् रगड़ा कोयोंकी सुर्खी और ढलका नेत्रों की सुर्खी
और खुजली को गुण करे । समुद्रफेन, कत्या सफेद, मुनी फिटकरी, बड़ी
हड़का पकळ, रसात, अफीम, नीलायोंया सबको बराबर ले साफ नल में
घोटकर रगड़ा बनावे ।

सुर्मा ढलके को गुण करे । बड़ी हड़की गुठली की मसम दश मांशे
पाजूफल, सेंधानोंन प्रत्येक पांच मांशे पीस छान काममें लावे और पाकोंने
बड़ी हड़ की जगह छोटी की मसम लिखी है ।

अथवा कालानोंन, कालीभिर्च प्रत्येक एक भाग, पीपल २ भाग समुद्रफेन
आधा भाग सुर्मा सबसे विगुना लेकर महीन पीसकर नेत्रों में लगावे तो ढलका दूर होवे
दवा ।

योड़ेका ऊपरका दांत पानी में घिसकर नेत्रों में लगाना नज़रको गुणदायक है ।
दवा ढलके की विशेषता को गुणकरे । मुनी रुई की तीन बची बनाकर

दो चोले घटूरे के रसमें दो बार भिगो रे कर सुखावे और फिर दो बार आक के दूध में भिगो भिगोकर छाया में सुखाके रेंडी के तेलमें घिरावा भरके; उन्हीं घटियों को जलाकर काजल पाड़े उसमें योड़ी भुनी फिटकरी मिछाके योड़ा नीलायोया मिलावे और नेत्रों में लगावे ।

अथवा ।

कुदरुगोद गुलाबमें मिलाकर नेत्रों को धोवे यदि गुलाब न मिले तो पानीही हो ।

अथवा आवनूस की लकड़ी घिसकर नेत्रों में लगावे ।

अथवा बड़ी इड़ का पक्कल और चारु सू परावर पीसकर घूरके ।

फ़सल ज़र्का अर्थात् कंज

उत्पत्ति से हो तो उसकी चिकित्सा नहीं परन्तु लिखा है कि जो लड़का कंजा उत्पन्नहो तो अत्यन्त काली स्त्रीका दूध पिलाना उचित है । और शेखरईस ने क्रानूनमें लिखाहै कि इन्द्रायनके राजाफलमें सलाई चुभोकर नेत्रों में फेरे इसी प्रकार गाजरका छिलका महीन पीसकर लगाना अत्यन्त गुण करता है ।

फ़सल गर्भ अर्थात् नासूर

जो नाक की ओर के कोये में होता है अब उसे दबावे तो उसमें से राख लोह निकलता है ।

चिकित्सा

उसकी यह है कि उसका राख लोह पोंछकर गरम लगावे ।

दवा सेछखड़ी के दो ठुकड़े रेंडी के तेल में घिस अब गाढ़ा होजाय तब उसमें पच्ची छयेइकर नासूर में रखले ।

अथवा दीये की चीकट कपड़े पर लगाकर नासूर पर रखले ।

अथवा नथवे के पत्ते का तवाकूका फूल घी में घोटकर नासूरपर लगावे ।

अथवा हुक्के की कीट और अफीम परावरले पीसकर पच्ची बना नासूर में रखले ।

अथवा समुद्रसोख नरम पीस पानी मिला पच्ची बनाकर रखले ।

अथवा नीम और पैवदी घेर के पत्ते पीसकर कपड़े में लपेटके नासूर पर लगावे ।

अथवा कत्या एछभा परावर पीसकर लगावे ।

अथवा कुत्तेकी जीम काटकर अलावे और शुकमें छपेटकर पतलार लेपकरे ।

तेल गिलोय हल्दी कूटकर मीठे तेलमें ओटा छानके नासूर पर टपकावे ।
 दवा खालिस श्रावद ओटावे जब गाढ़ा होजाय उस में थोड़ा समुद्रफेन
 मिलाकर उत्तारके उसमें प्रती दधोकर नासूर में भरे ।

अथवा मसूर सुनी और अनार का छिलका कूट छानकर लगावे ।

अथवा रसोव, गेरू, जवाहर, पोस्त के डोढ़े पीसकर लेप करे ।

अथवा लोंग और हल्दी पीसकर लेप करे ।

अथवा हॉग सिरके में घोटकर गुनगुना २ लेपकरे ।

अथवा पुरानी कच्ची मीठका कोयला गर्म पानी में घिस के लगावे ।

फ़सल शरह वोहसूज

वोहसूज वह है कि पलक पर जोके आकार का होता है ।

चिकित्सा मक्खी का सिर अलगकर उस स्थानमें मलकर गरम मोम से सके ।

फ़सल शअरजायद

अर्थात् परवाक की चिकित्सा में भीतर से बालों को उखाड़कर खटपल
 का रुधिर लगावे ।

दवा मयम बालों को उखाड़ के नौसादर बकरी के पित्त में मिलाकर
 पतला लेप करे ।

फकी कि नेत्रों के बहुत से रोगों को गुणकरे । मुंही की जड़ छाया में
 सुखा उसकी बराबर घुरा मिला सात मांशे प्रति दिन पंदरह दिवस पर्यन्त फांके ।

फ़सल कणरीगों की चिकित्सा में

हकीम लोगों का यह मत है कि जो लोग कानके रोगों से बचना चाहे वह
 सोते समय कानों में कई रखकर सोया करें और कानों में जो वस्तु टपकावे गुन-
 गुनी करके टपकावे । अब यहां कानके रोगों की औषधि वर्णन करता हूँ ।

चफारा कि कान की पीड़ा को गुण करे । बकरी की मँगनी अजवायन
 मत्तुण्य के मूत्र में ओटाकर चफारा दे ।

अथवा नीम के पत्ते ओटाकर चफारा दे तो कान की पीड़ा जाय और
 घाव को मल से शुद्ध करता है ।

मूली का तेल मूली के पत्तों का रस तीन भाग एक भाग मीठे तेल
 औरावे जब रस जलकर तेल मात्र रहजाय कान में टपकावे ।

अथवा इस्पंद, मालकांगनी, अजवायन सब को इन के बराबर मीठे तेल में औटा छानकर कानमें टपकावे तो सर्दी मात्रके कानों के रोग को गुण करे।

अथवा खट्टा इस्पंद और सौंठ बराबर पीसकर ठिकिया बनाके सरसों के तेल में पकावे जब जलजाय छानकर तेल की घूद कान में टपकावे।

अथवा कूट, धिरायता, पायपिदंग, असंगंध, बिघारा हल्दी, संभानू के पत्ते, अजीरकी जड़, इस्पंद, सुहागा, सौंठ, आंवाहल्दी, कालीमिर्च मस्येक साढ़े चीन मांशे, तेल दो सेर दवा कूटकर रात को आध सेर पानी में भिगोके प्रातःकाल औटा छानकर तेल में पिछा आंच पर रखे जब पानी जलकर तेल मात्र रहजाय तब कानमें लगावे तो सर्दी की मस्तक पीड़ा तथा कानकी पीड़ाओं को गुणकरे।

अथवा सुदर्शन के पत्तों का रस कानमें निचोड़े तो कानकी पीड़ा जाय।

अथवा भांगकी पत्तियोंका रस गुनगुना कर कान में टपकावे तो सर्दी गर्मी की कर्ण पीड़ाको गुण करे।

अथवा भांगकी पत्ती के रसमें बत्ती भिगोकर कानमें रखे।

अथवा भांग को पीसकर तिखी के तेल में जलाकर जाने वसे कान में टपकावे तो पीड़ा जाय।

अथवा रात्रि के समय महावर पानी में भिगोके प्रातःकाल छानके गुनगुना कर कानमें टपकावे तो पीड़ा दूर होवे और कान धरने को बंद करे।

अथवा नीमकी हार्ई पत्ती पीछी, थोड़ी अजवायन और चनेकी बराबर हल्दी लड़के के सूत्रमें पीसकर दो तीन घूद गुनगुनी २ कानमें टपकावे तो सर्दी की कर्ण पीड़ा को गुणकरे।

अथवा सिसं तथा आमकी पत्ती का रस गुनगुनाकर कानमें टपकावे।

अथवा थोड़ीसी गरखी की बीठ पानीमें पीस गुनगुनी कर कानमें टपकावे तो कर्ण पीड़ाजाय।

अथवा फाल्गुन मूत्र में पीसकर गुनगुना कर कानमें टपकावे तो सर्दी की कर्ण पीड़ा दूर हो।

अथवा दूध पीते वधे का सूत्र गुनगुना कर कानमें टपकावे।

अथवा मनुष्यके सिरके बालोंकी मस गुल्लराशनमें पीसकर कानमें टपकावे।

अथवा गवारपाठे के पत्तों का रस गरम कर दूसरे कानमें टपकावे और

जो पीड़ा सर्दी से हो तो मुरमुकी गायके मूत्रमें मिला गुनगुनाकर कानमें टपकावे ।
 अथवा नाजबूके पत्तों का रस गुनगुना कर कानमें टपकावे तो पीड़ा जाय ।
 अथवा चुकंदर कानमें निचोड़े ।
 अथवा एक रत्ती अफीम, जलाकर उसकी चार चावल मसम गुलरोपन में घोटकर कान में टपकावे ।

अथवा करमेलला के पत्तों का रस, सिरका वा गदनाके रस में मिला गुनगुना कर कान में टपकावे तो जमा हुआ रुधिर घोलकर निकास डाले ।

अथवा गायका पित्ता गुनगुना कर कानमें टपकावे तो बादी और कफ की कण पीड़ा को गुण करे ।

अथवा मुराई के अंडे की सफेदी कान में टपकाना गर्मी की सूजन को गुण करे ।

अथवा पके इंद्रायन के फलका छिलका पीठे तेलमें मिलाकर कान में टपकाना बहरेपन को दूर करे ।

अथवा राईका तेल कानमें गाठ पड़जाने को खोलता है और पुराने बहरेपनको दूर करता है ।

अथवा पपरियाखार गुनगुने पानी में मिलाकर कानमें टपकाना अत्यंत पीड़ा को गुण करता है ।

अथवा खट्टे अनार का रस शरद में मिलाकर कान में टपकाना गरम पीड़ा को गुण करता है ।

अथवा खुरफे के पत्तों का रस तेलमें मिलाकर कान में टपकाना गरम पीड़ा को हरता है ।

अथवा प्यास के रस में अंडे की सफेदी मिलाकर कान में टपकाना गुण करता है ।

अथवा पपरिया खार और खतमी पीसकर लेप करे तो कान के कड़े पन को जो गर्मी से हो गुण करता है ।

फसल तुर्श गोश ।

अर्थात् बहरेपन जो आदि में हो सफाई करे और जब विशेष दिन का हो जाता है नहीं जाता तब यह उचित है कि इस रोग में तुर्श अथवा राज की गोलीसे

जिसे मयम कह आये हैं मस्तक की सफाई करे ।

कुतूर कि कानके बहरेपन को गुण करे आक के पीछे पत्ते कि जिन में छेद नहीं आंच पर गरम कर उसका रस कान में टपकावे, इसी प्रकार पदरह दिन तक करे ।

अथवा लहसन में बकरी का बिचा मिलाकर थोड़े तेल में गुनगुना कर कान में टपकावे तो कानका बहरापन दूर हो ।

अथवा ऊव का मूत्र गुनगुना कर कान में टपकावे तो बहरापन दूर हो ।

अथवा पिना ब्याई गाय का सवासेर मूत्र मंदाग्नि से औटावे जब पांच गोले दस आंग्रे रहजाय ज्ञानकर शीशे में रखे प्रतिदिन ढाई घूद कान में टपकावे तो कान के भारीपन और भिन भिनाइट को दूर करे । पीड़ा और बहाव को गुण करे ।

तेल इन्द्रायन कान के भारीपन और भिन भिनाइट को दूर करे इद्रायन के वाक्का फल पीठे तेल में औटा ज्ञानकर रखे दो तीन घूद कान में टपकावे ।

दवा फूकने की कि कानके बहरेपन को गुण करे कात्ती मिर्च दो नग पीसकर चमचे में रखकर प्रति दिन एकवार कान में फूके और चिरकाने का शब्द नकारे शहनाई और घोष आदि के शब्द सुनाना कान के भारीपन को गुण करता है यह कान का भारीपन पचाने का व्यायाम है ।

अथवा पपरिया खोर सिरके में घोटछानकर गुनगुना कर कानमें टपकावे ।

फसल कुर. गोश

अर्थात् कान के घाव से जिस समय राख छोड़ निकले उस समय सूखी दवा डालना उचित है कि उससे पीड़ा बढ़ होजाती है तब मयम यह दवा करे पीछे सूखी दवा डाले शब्द कान में टपकाना तथा शब्द की मक्खी कान में डालना कान के मवाद को पाक करती है और पीड़ा को आराम देती है और नीम के पत्तों का भफारा भी कान के मलको शुद्ध करता है ।

अथवा प्याज का रस सुर्मा के अडे की सफेदी में मिलाकर कान में टपकावे तो घाव को अच्छा करे ।

दवा नीमका तेल शब्द मिलाकर उसमें बत्ती भिगोकर कान में रखे ।

अथवा एलुआ, समुद्रफेन, गेरू, कुदरु गोंद मल्लक योड़ा २ गुल रौघनमें पीसकर उस में सुर्मा मिलाकर कान में टपकावे ।

अथवा धकरी का दूध कान में टपकावे ।

अथवा अनारका छिलका लड़के के मूत्रमें औटा छानके कानमें टपकावे ।

अथवा सुनी फिटकरी धीजाबोल घराघर ले शहद में मिला उसमें असी भिगोकर कान में रखे ।

जरूर अर्थात् बुकी जो मवाद को निकाले और घाव को पूरतावे बहुधा फर बच्चों को विशेष गुण करती है कागनी की घूल कान में बुके ।

अथवा मेयी दूध में पीस गुनगुना करे और छानकर कान में टपकावे तो कानके पीप बहने और खुनली को गुण करे ।

अथवा स्त्री के दूधको धार कानमें लगावे तो इससे उत्तम कोई दवा नहीं ।

अथवा गिलोय पानी में घिस गुनगुनी कर कान में टपकावे तो कानके मल को दूर करे ।

बुकी कि कानके घावको गुण करे । पीला कौड़ी जलाकर कानमें बुके ।

अथवा महीन लोद पीसकर कानमें डाले ।

अथवा काष्ठ साग का रस निचाड़ कर कान में टपकावे तो कान के कीड़े मरजाय और घाव को आराम हो ।

अथवा एक जुगनु गुलरौशन में पीसकर कान में टपकावे तो घाव अच्छे हो ।

अथवा कानके नासूर को गुण करे । पावपर छोटी चींटी महीन खरक करके उनकी बराबर सरसों पीस के मिलावे और दो सेर पानीमें आग पर उड़ावे जब पानी जलकर तेल मात्र रहजावे तब नित्य कानमें टपकावे और जो घोंघ तेल में भूनकर कानमें टपकावे तो उसमें भी यही गुण है जहां सरसों का तेल न मिले वहां भीठा तेल लेवे ।

अथवा पावपर कड़वा तेल आंवले और सोंठ एक २ तोले नीम के पत्ते दस कवेली और कालीमिर्च तीन २ मांशे नीलायोया मांशे भर प्रथम तेल गरमकर कवेलों के सिचाय सब औषधि उसमें डालकर जलावे फिर निकालकर पीसे और कवेली पीसकर उस में मिलावे और कान में टपकाया करे तो नासूर और कानकी फुसी को दूर करे यह दवा उस घावको गुण करती है जो बड़या करके घावकों के कानके नीचे होते हैं शोली को लड़के के मूत्र या पानीमें पीस कर लगावे पथपि थोड़ी जलन होगी परन्तु विशेष गुण करती है ।

फसल धनक जारुल अजून

अर्थात् कान का बहना और उसमें स मलका निकलना जो घोरान अर्थात् मकृति बिगड़ जाने के कारण से हो। मज्जूफल नौकुटकर, सिरके में ओटा, मलछान कर कान में टपकावे।

फसल वर्म गोश

अर्थात् कानकी सूजन इसका अत्यन्त दूर है। इसमें फरद सरेक खोले। लेप कि सूजन को गुण करे। जो कान के पीछे हो चाकमूनी की नई पत्तियाँ और सेंधानोन पीसकर लेप करे।

अथवा सुपारी चिस्मारी की जड़ करेले के बीज गेरू स्याह तीरा कुचला पानी में पीस गुणगुना पर लेप करे तो पिछाड़ी की सूजन को आराम करे।

अथवा यह पतला लेप उसी सूजन को गुणकरे लहसन की जड़ पीसकर गुणगुना २ पतला लेप करे।

दवा कानकी सूजन को गुण करे। और तुर्त मलको पड़ाकर निवाला ढाले हुलहुल की पत्तियों का रस कान में टपकावे।

अथवा प्याज का रस मेथी तथा अलसी तथा ईमफ्रगोल के छुआघ में पकाकर टपकाना यही गुण रखता है।

फसल कुम गोश ।

अर्थात् कानमें कीड़े पड़ना। जो गर्मी के कारण कीड़े पड़गये हों तो उसकी चिकित्सा यह है। एलुआ पानी में पीसकर उसको कानमें भरे दे और देर तक बरा रहने दें तो कीड़े मरजाय फिर कान को हव प्रकार सुकाने कि पानी निकल जाय।

दवा मुलीम एक लकड़ी होती है। उसे महीन पीस कानमें ढाले तो कीड़े दूर हों।

अथवा सधान के पत्तों का रस कान में टपकावे।

अथवा एक गाँठ दलदी सात मांशे सइस नीम के पत्तों का रस तिरसों के तेल में ढाल कर खूब ओटावे कि औषधि जलकर तेलमात्र रह जाय तब दो घूट कान में टपकावे ता तुरन्त आराम पावे।

अथवा दो मांशे तिष्ठ का तेल कानमें टपकावे तो बालों की वृद्धि और बढ़ छोटी लोटी कुम जो कान में पड़गयी हों मरजाती हैं। इसी प्रकार प्याज का

रस और वह मक्खी जो धोड़े और कुत्ते पर बैठती है कान में घुसजाय तो मक्करा के पत्ते हिन्दू जिसे चन्दन के तुल्य मानते हैं कान में टपकाते हैं उससे भी अत्यन्त फायदा होता है ।

अथवा तेज मदिरा टपकाना पीड़ा और गल बहने को दूर करता है ।

फसल खारिश मोश ।

अर्थात् कान की खुनखी में तेज और सिरका कात में औटोकर डालें ।

अथवा चमेली के तेल में थोड़ा एलुआ पीस गुनगुना कर कान में डालें ।

फसल कान में पानी रहजाना ।

छीकने और खांसने को दूर करता है मांय को उस तरफ झुका रखना जिस ओर के कान में पानी है तथा सोंफ की लकड़ी कान में लगाकर चूसे और तिक का तेल गुनगुना कर कान में टपकाना गुण करता है ।

अथवा हपेली जिस कान में पानी है उस पर रख उसी ओर के पाँव से खड़ा हो और उसी ओर मस्तक झुकाकर कुदे ।

फसल नाक के रोगों की चिकित्सा में

नाक में दो द्वार हैं एक मस्त्वक की ओर दूसरा मुँह की ओर है नाक के रोगों में से एक रसाफ अर्थात् नकसीर है जो ज्वर तथा सरसाम या बौहरान के दिन जो चौथा सातवां ग्यारहवां चौदहवां दिन है नकसीर फूटे तो बंद करे क्योंकि बौहरान में नकसीर दोषयुक्त प्रकृति को इस तरफ नहीं लगने देती है परन्तु विशेषता के समय तुल्य बंद करें जो दोनों जाँघें और दोनों पाँव और दोनों अङ्गुली को जकड़कर बाँधें तो नकसीर बन्द हो, उदा पानी मस्त्वक पर डालना और उससे कुल्ले करना गुण करे ।

लेप नकसीर को गुण करे सरस मुखतानी मिट्टी घराघर पीसकर गुनगुना कर कनपटी और नाक पर पतला लेप करे ।

अथवा मोजूफल खूब महीन पीसकर नाक में फूके अथवा रसौत की राख नाक में फूके अथवा चाकी भी धूल नाक में फूके ।

लेप चड़दका घून नर्म गूंदकर तालु पर लेप लगावे ।

अथवा घेर के पत्ते पीसकर कनपटी पर लेप करें ।

अथवा छोटी गटेरी पानी में पीसकर तालु पर लगावे और उसके पत्ते तथा जड़ का रस निचोड़ कर नाक में टपकावे ।

हुलास बेल के पेड़ का रस सुड़कना नकसीर को गुण करता है अंडी का बिलका खूब जलावे कि वह काछा पड़जाय उसे पीस चमचे में रख जिस ओर के नकूप में नकसीर फूटी हो फूके ।

अथवा योंधा, गाय का सींग और बकरी का सींग जला महीन पीस नाक में फूके ।

दवा आमले भिगोवे जब नरम होजाय टिकिया बनाकर तालुए पर बांधे ।

अथवा गधे की छीद निचोड़ के नाक में टपकावे ।

अथवा गाय का सूखा गोबर पीसकर नाक में फूँके और ताजे गोबर का कनपटी पर छेप करना गुण करता है ।

लेप नीम के पत्ते और अजवायन पीसकर कनपटी पर लगावे ।

अथवा कलमी शोरा सिरके में पीसकर कनपटी पर छेप करे ।

दवा सुर्ती के अडे की सफेदी में बासी भिगो थोड़ा कपूर उस पर बुरक नाक में रखे ।

अथवा गधे की लीद जला उसकी राख नाक में फूके ।

अथवा आरने कडे की राख महीन पीसकर नाक में फूँके ।

दवा गूलर के पेड़ की छाल पानी में पीसकर तालुए पर लगावें ।

अथवा नीमके पत्ते और खोलाई पीसकर कनपटी पर लगावें ।

अथवा पुरानी बघ पानी में पीसकर कनपटी पर लगावें ।

अथवा जौका धून मुलतानी मिट्टी धनियाँ ईसबगोल आवले और गेरु परापर छेकर पीसके कनपटी पर लगावें ।

अथवा कूट के बाल जलाकर उनकी राख घी में पिलाकर मूये ।

दवा डाँक के फूल ४ सेर पानीमें छीटावें जब आध सेर रहे ठंडा करके दश मांस सहाय मिलाकर पियें तो नकसीर और अतुका रुधिर बन्द करे ।

अथवा कुदरु गोख महीन पीस कर नाक में फूँके ।

अथवा इरी दूध कूट निचोड़ कर उसका नितरा पानी मूये ।

दवा छाल चदन थोड़े कपूर के साथ घोट कर कुछ दिन पीये तो नकसीर जाती रहे ।

अथवा निशास्था सिरके में मिलाकर मसमक पर आगे की तरफ रखें

प्रमाण गोलियाँ बनावे मात्रा दो गोली की है ।

अथवा जोंग पीसकर ताज़ू पर लगावे तो सर्दी के नज़ले को दूर करे ।

अथवा गेहूँ की सुसी पानी में भिगोकर उसका पानी ले सिरके में मिलाकर औंटावे और माथे को उसकी गरमाई पर रखे तो जुकाम जाय ।

अथवा सोंठ, धायके फूत डेढ़ २ माशे और एक पोस्त का ढोड़ा तीन पाव पानी में औंटावे जब चार तोले आठ माशे रहे तब उसको कढ़वा की तरह पीवे और जो मीठा करले तो कफ का जुकाम जाय ।

नास कि पुरानी आघाशीशी को गुण करे और बंद नज़ले को खोले । हड़की गुठली छ. माशे सफ़ेद चिरमिठी की मींगी चार माशे, कालीमिर्च दो माशे, नौसादर एक माशे, कूट छानकर नास ले तो नाक से पानी टपके परन्तु अत्यन्त तेज़ हो ।

अथवा सिरस के बीज महीन पीसकर नास ले ।

फ़सल नेनुलअनफ़ अर्थात् नाक की नास की चिकित्सा में ।

जो दुर्गंध मस्त्वकके दोष से हो तो मस्त्वक को पाक करे और जो नाक के घाव के कारण हो तो घाव पर मरहम लगावे ।

दवा नाक की दुर्गंध को गुण करे कड़वे तुषका रस एक घुँद नाक में टपकावे और जो ताज़ा तूबा न मिले तो सूखे को पानी में भिगोकर ओस में रखदे मात काल उसमें से एक घुँद नाक में टपकावे अथवा गधे का मूत्र नाक में टपकावे ।

फ़सल अतसह, मुफ़रत ।

अर्थात् विशेष छींक आना यह आराम का लक्षण है लेकिन बहुत मनुष्य इसे रोग जानते हैं ।

विधि जो छींक को रोके छंगुलियाको उसी हाथकी छंगली और अगूदे से पकड़कर जोर से दबावे और खूब मले घानिये की पत्ती और चदन संघना भी छींक को गुण करता है ।

दवा कुलीजन की पोखरी बांधकर संघना छींक को गुण करे जो लड़कों को छींक आवे तो बकरी का कुत्ला आँचपर भूने उसमें से जो पानी टपके लड़के की नाक में टपकावे ।

पीनस इस रोग का रोगी नाक में धोलता है और बहुधा कर अन्न पानी नाक की राह से निकलता है ।

गोली पीनस को गुण करे सोंठ, पीपल, छेटी इत्यादी के दाने प्रत्येक साढ़े तीन माशे, पुराना गुड़ सात तोले, कूटकर गोलियाँ बनावे और दो माशे रात को खाया करे विशेष मुफीद है ।

॥ इति ॥

फसल अमराज दहान बतलान जोक

अर्थात् किसी वस्तु का स्वाद जुवान पर न मान्य हो और कभी ऐसा हो जाता है कि रोगी को खटाई मिठाई का भेद नहीं मान्य होता इसका पूर्वरूप तरी की विशेषता है ।

चिकित्सा मध्यम मस्तक की सफाई करे मषाद पकजाने के पश्चात् अजवायन और तेज वस्तुओं का चावना जैसे मिर्च राई सिरका लहसुन और प्याज गुण करे ।

फसल दांत के रोगों की चिकित्सा में ।

दांतों के रक्त को कड़ी वस्तु तोड़ना उचित नहीं और जिस वस्तु से दांत कुद होनाचें उसे न खावे और जो वस्तु भोजन के समय दांतों में रह जाय तो तिनके से कुरेद के निकाल दे कि कुर्गंध न आवे परन्तु विशेष न कुरेदे कि दांतों की जड़ ढीली पड़जाती है और जिस की प्रकृति ठंडी हो अति गरम वस्तु न खाय इसी प्रकार जिस वस्तु की तासीर गर्म हो उसे अति ठंडी न खाय फसल वजास्नान अर्थात् दांतों की पीड़ा की चिकित्सा में ।

जो दांतों के हिलने से पीड़ा हो और दांत थोड़े हिलते हों और वृद्धावस्था न हो तो चिकित्सा करे और जो विशेष हिलते हों तो सखदवा डाले और जो थोड़ा नरकाधूर दांतों में रक्खा करे तो सदैव दांतों की रक्षा रहती है जो मसूड़ों में सूजन पीड़ायुक्त हो तो सस की चिकित्सा उन वस्तुओं से कृष्ण करे जो सूजन को दूर करें और एक पार गर्मजल से और एक पार ठंड जल से कृष्ण करे और यह ध्यान रखे कि कौन से पानी से आराम पाव्य होता है । जो गर्म पानी से आराम हो तो जाने पीड़ा सर्दी से है और जो ठंडे से हो तो जाने कि पीड़ा गर्मी से है अब यहाँ थोड़ीसी सखत औषधि जिन स दांतों की पीड़ा दूर हो लिखते हैं ।

अथवा अरहर और मसूर की दालों को औटा, छानके और कपूर मिलाके कुल्ले करे ।

अथवा मधदी भिगोकर उस के पानी से कुल्ले करे ।

अथवा त्रिफला, मोचरस और पोस्त के ढोड़े औटाकर थोड़ा सोंरदी का तेल मिलाकर कुल्ले करे तो पारे और रसकपूर के खाने के कारण मुँह धाये को गुण करे ।

अथवा लिहसोड़े मुँह में रखना और ईसफगोल के लुआव से कुल्ले करना और कत्या मुँह में रखना जीम के फटजाने को गुण करता है ।

फसल मुँह से लार बहने की चिकित्सा में

बहुधा करके उदर की तरी से सोते समय मुँह से राख बहा करती है उस की चिकित्सा उदर को पाक करे और इसरीफल सगीर अर्थात् अबलेह खाये ।

अथवा राई पीस के उसमें घूरा मिला के फांकना गुण करता है ।

अथवा देर तक दावन किया करे ।

अथवा कासनी जौकुव करके थोड़ा नोन मिलाके फवकी बना कई दिन फाँके । जवारिश मस्तगी अर्थात् मस्तगी पाक राख बहने को गुण करता है । आव पाव सफेद घूरे की चाशनी करके सात माशे मस्तगी पीसकर उसमें ढाल कर मिलावे मात्रा बच्चों को दो माशे और तरुण को नौ माशे देना योग्य है ।

फसल शकाकलव

अर्थात् होठों का फटजाना उसका पूर्व रूप खुरकी है । चिकित्सा उसव घी में नोन मिलाकर नित्य तीनवार हंडी पर मले तो गुण करे ।

अथवा पीठे घीया और तर्बूज की भिगी पानी में घोटकर पतला लेप करे तो होठों और जीम के फटजाने को गुण करे ।

अथवा कतीरा और ईसफगोल का लुआव होठों पर मले ।

अथवा बायबिदग का फेन निकालकर होठों पर मले ।

फसल अमराज हल्क

अर्थात् कठ के रोगों में खनाक अर्थात् कठ की सूजन यह सूजन कठ के नल में तथा मल के अदले में तथा चीनी हड्डियों में पैदा होता है और नल वह है जिसमें से शब्द निकलता है और चीनी हड्डी वह है जिनमें होकर भोजन पानी जाता है जो नल में सूजन हो तो स्वास रुकजाय और जो अन्न

पानी कठ में न, उत्तरे और कठिन से उत्तरे तो जाने कि इसकी चीना हाडियों में सूजन है।

चिकित्सा उसकी सरैक और जीम के नीचे की नस को फट स्त्रोले और अपलतास गृह में रखना, विशेष गुण करता है। इस रोग वाला जो पानी में जिसमें मसूर और पोस्त के दाने पकाये हों आदार करे जो दो भाग, पोस्त के दाने और मसूर बराबर।

शर्षप शटतूत कठ गले, भार काक की सूजनों को (काक वह है कि जो तालु में लटकता है) और जीम की सूजन को गुण करे खट्ट शटतूत के रस में बराबर का घूरा मिला क चाशनी करे।

सरसारा गले की सूजन और पीड़ा को गुण करे नीम की पत्तियां थोड़े शहद और सूखी मकोय म औटाकर छान के गुणगुने २ गरमारे करे।

अथवा अपलतास, मसूर मकोय की पत्तियों के रस म औटाकर गुण गुने २ गरमारे करे।

अथवा शहद का रस, पत्तियां, मसूर भिगोकर उसका पानी मिलाकर गुणगुने २ से गरमारे करे।

अथवा जी कूटकर भिगोकर उसका पानी नितार के गुणगुने से गरमारे करे तो गर्मी और सर्दी की सूजन को और कठ की पीड़ा को गुण करता है और इसी प्रकार गुण गुने पानी से गरमारे करना कठ की सूजन को गुण करता है।

अथवा मसूर की पत्तियां औटाकर गरमारे करे।

अथवा अरहर की पत्तियों का रस निकाल गुणगुना करके गरमारे करे जो पत्तियां न मिलें तो अरहर की दाल पानी में भिगोकर गुणगुना करके गरमारे करे।

अथवा तुल की जड़, पत्तियां और नरम २ टाकियां पानी में औटाकर गरमारे करे।

अथवा धनिया बषाना गले की पीड़ा को गुण करता है।

अथवा मकोय, कालीमिर्ध, कालीजीरी, मूड़िया मिष्टी, बराबर पानी में पीसकर लगावे तो गले और कंठ की सूजनों को गुण करता है।

अथवा निर्भिषां रेवद चीनी मलेक तीन भांश अक्रोण तीन रची गुणगुने पानी में मिलाकर लेपकरे।

अथवा अरहर और मसूर की दालों को औंटा, हानके और कपूर मिलाके कुल्ले करे ।

अथवा सफ़दी भिगोकर उस के पानी से कुल्ले करे ।

अथवा त्रिफला, मोचरस और पोस्त के ढोड़े औंटाकर थोड़ा सा रेहो का तेल मिलाकर कुल्ले करे तो पारे और रसकपूर के खाने के कारण मुख भाये को गुण करे ।

अथवा बिहसोड़े मुंह में रखना और ईसफ़गोल के लुआव से कुल्ले करना और कत्या मुंह में रखना जीम के फटजाने को गुण करता है ।

फसल मुंह से लार बहने की चिकित्सा में

बहुधा करके सदर की तरी से सोते समय मुंह से राख बहा करती है उस की चिकित्सा सदर को पाक करे और इतरीफ़ल सगीर अर्थात् अबलेह खाय ।

अथवा राई पीस के उसमें घूरा मिला के फांकना गुण करता है ।

अथवा देर तक दावत किया करे ।

अथवा कासनी जौकूठ करके थोड़ा नोन मिलाके फक्की बना कई दिन फाँके । जवारिश मस्तगी अर्थात् मस्तगी पाक राख बहने को गुण करता है । आब पाव सफ़ेद घूरे की घावानी करके सात माशे मस्तगी पीसकर उसमें ढाल कर मिलावे मात्रा बच्चों को दो माशे और तरुण को नौ माशे देना योग्य है ।

फसल शकाकिलव

अर्थात् होठों का फटजाना उसका पूर्व रूप खुरशी है । चिकित्सा उसकी घी में नोन मिलाकर नित्य तीनवार हंडी पर मले तो गुण करे ।

अथवा मीठे घीया और तर्बूज की भिंगी पानी में घोटकर पतला लेप करे तो होठों और जीम के फटजाने को गुण करे ।

अथवा कतीरा और ईसफ़गोल का लुआव होठों पर मले ।

अथवा चायबिंदग का फेन निकालकर होठों पर मले ।

फसल अमराज हलक

अर्थात् फट के रोगों में खनाक अर्थात् कंठ की सूजन यह सूजन फट के नल में तथा नल के अंदले में तथा चीनी हड्डियों में पैदा होता है और नल पर है जिसमें से शब्द निकलता है और चीनी हड्डी वह है जिनमें होकर भोजन और पानी जाता है जो नल में सूजन हो तो स्वास रुकजाय और जो अंग

पानी कठ में न उतरे और कठिन से उतरे ता जाने कि इसकी घना रहियों में सूजन है ।

त्रिकित्सा उसकी सरैरु और जीम के नीचे की नस को फट्ट खोले और अपसत्तास मुह में रखना विशेष गुण करता है । इस रोग वाला जो पानी में जिसमें मसूर और पोस्त के दाने पकाये हों आहार करे जो दो भाग, पोस्त के दाने और मसूर बराबर ।

शर्षप शद्वतुत कठ गले और काक की सूजनों को (काक वह है कि जो ताल्ल में लटकता है) और जीम की सूजन को गुण करे खट्ट शद्वतुन के रस में बराबर का घूरा मिला के चाशनी करे ।

गरवोरा गले की सूजन और पीड़ा को गुण करे नीम की पत्तियां थोड़े शद्व और सूखी मकोय म औटाकर छान के गुनगुने २ गरारे करे ।

अथवा अपसत्तास, मसूर मकोय की पत्तियों के रस में औटाकर छान गुने २ गरारे करे ।

अथवा शद्वतुन का रस, पत्तियां, मसूर भिगोकर उसका पानी मिलाकर गुनगुने २ से गरारे करे ।

अथवा जो कूटकर भिगोकर उसका पानी नितार के गुनगुने से गरारा करे तो गर्मी और सर्दी की सूजन को और कठ की पीड़ा को गुण करता है और इसी प्रकार गुनगुने पानी से प्रसार करना कठ की सूजन को गुण करता है ।

अथवा मसूर की पत्तियां औटाकर गरारे करे ।

अथवा अरहर की पत्तियों का रस निकाल गुनगुना करके गरारे करे जो पत्तियां न मिलें तो अरहर की दाल पानी में भिगोकर गुनगुना करके गरारे करे ।

अथवा तून की जड़, पत्तियां और नरम २ टालियां पानी में औटाकर गरारे करे ।

अथवा धनियां चवाना गले की पीड़ा को गुण करता है ।

अथवा मकोय, कालीभिर्घ, कालीजोरी, खड़िया भिट्टी, बराबर पानी में पीसकर लगावे तो गले और कठ की सूजनों को गुण करता है ।

अथवा निषिर्षा रेवड चीनी मत्स्यक तीन भाग अकोप तीन रसी गुनगुने पानी में मिलाकर लेपकरे ।

अथवा अरहर और मसूर की दालों को औटा, छानके और कपूर मिलाके कुल्ले करे ।

अथवा मसूरी भिगोकर उस के पानी से कुल्ले करे ।

अथवा त्रिफला, मोचरस और पोस्त के ढोड़े औटाकर थोड़ा सा खैरी का तेल मिलाकर कुल्ले करे तो पारे और रसकपूर के खाने के कारण मुर आये को गुण करे ।

अथवा चिहसोड़े मुंह में रखना और ईसफगोल के लुआव से कुल्ले करना और कत्या मुंह में रखना जीम के फटजाने को गुण करता है ।

फसल मुंह से लार बहने की चिकित्सा में

बहुधा करके उदर की तरी से सोते समय मुंह से राल बहा करती है उस की चिकित्सा उदर को पाक करे और इतरीफल संगीर अर्थात् अवलेह खाये ।

अथवा राई पीस के उसमें घृता मिला के फांकना गुण करता है ।

अथवा देर तक दांतन किया करे ।

अथवा कासनी जौकुट करके थोड़ा नोन मिलाके फक्की बना कई दिन फांके । जवारिश्च मस्तगी अर्थात् मस्तगी पाक राल बहने को गुण करता है ।

आध पाध सक्रेद बूरे की चाशनी करके सात माशे मस्तगी पीसकर उसमें ढाल कर मिलावे मात्रा षष्ठों को दो माशे और तरुण को नौ माशे देना योग्य है ।

फसल शकाकलव

अर्थात् होठों का फटजाना उसका पूर्व रूप सूरकी है । चिकित्सा उसकी ही में नोन मिलाकर नित्य तीनवार हूँदी पर मले तो गुण करे ।

अथवा मीठे घीया और तर्बूज की भिगी पानी में घोडकर पतला लेप तरे तो होठों और जीम के फटजाने को गुण करे ।

अथवा कवीरा और ईसफगोल का लुआव होठों पर मले ।

अथवा धायपिडंग का फेन निकालकर होठों पर मले ।

फसल अमराज हलक

अर्थात् फट के रोगों में खनाफ अर्थात् कंठ की सूजन यह सूजन फट के नल में तथा नल के अदले में तथा चीनी हड्डियों में पैदा होता है और नल पर है जिसमें से शब्द निकलता है और चीनी हड्डी बह है जिनमें होकर भोजन पानी जाता है जो नल में सूजन हो तो स्वास रुकजाय और जो अन्न

पानी कंठ में न चढ़े और कठिन से चढ़े तो जाने कि इसकी चीना-हाडिपों में सूजन है ।

त्रिकित्सा चसकी सरैरु और जीम के नीचे की नस को फस्द खोले और अमलतास मूत्र में रखना विशेष गुण करता है । इस रोग वाला जो पानी में जिसमें मसूर और पोस्त के दाने पकाये हों आहार करे जो दो भाग, पोस्त के दाने और मसूर बराबर ।

शर्षप शङ्खुत कठ गले और काक की सूजनों को (काक यह है कि जो तालु में लटकता है) और जीम की सूजन को गुण करे खट्ट शङ्खुत के रस में बराबर का घूरा मिला क चाशनी करे ।

शरशरा गले की सूजन और पीड़ा को गुण करे नीम की पत्तियाँ थोड़े शङ्ख और सूखी मकोय में औटाकर छान के गुणगुने २ शरशरे करे ।

अथवा अमलतास, मसूर मकोय की पत्तियों के रस में औटाकर गुणगुने २ शरशरे करे ।

अथवा शङ्खुत का रस, घनियाँ, मसूर भिगोकर उसका पानी मिलाकर गुणगुने २ से शरशरे करे ।

अथवा कौकूटकर भिगोकर उसका पानी निवार के गुणगुने से शरशरे करे तो गर्मी और सर्दी की सूजन को और कठ की पीड़ा को गुण करता है और इसी प्रकार गुणगुने पानी से शरशर करना कठ की सूजन को गुण करता है ।

अथवा मसूर की पत्तियाँ औटाकर शरशरे करे ।

अथवा अरहर की पत्तियों का रस निकाल गुणगुना करके शरशरे करे जो पत्तियाँ न मिलें तो अरहर की दाल पानी में भिगोकर गुणगुना करके शरशरे करे ।

अथवा तुलसी की जड़, पत्तियाँ और नरम २ दालियाँ पानी में औटाकर शरशरे करे ।

अथवा घनिया घबाना गले की पीड़ा को गुण करता है ।

अथवा मकोय, कालीभिर्ध, कालीजीरी, खड्गिया मिट्टी, बराबर पानी में पीसकर लगावे तो गले और कठ की सूजनों को गुण करता है ।

अथवा निभिर्ध, रेवद चीनी प्रत्येक तीन भागों अक्रोय तीन रत्ती गुणगुने पानी में मिलाकर लेपकरे ।

अथवा सूखा करेला सिरके में पीसकर गुनगुनी करके पतला लेप करे
अथवा हीस की जड़ पानी में घिसकर गुनगुनी कर पतला लेप करे
तो गले की पीड़ा जाय ।

अथवा नौसादर का लेप कंठ की सूजन को गुण करता है ।

अथवा मुर्री की पीठ सिरके में मिलाकर कंठ पर लगावे तो सूजन
को गुण करे ।

अथवा तोया के बीज, गेरू, जालचंदन, काला जीरा, सिरस की छाछ,
मसूर, काली मिर्च, काली जीरी, सूखा करेला, सोया के बीज, सष बराबर
के पीस के सिरके में मिलाकर गुनगुना पतला लेप करे ।

अथवा मोरिया की मैले रंग की एक हिन्दी जड़ है पीस के लगावे तो
गले की पीड़ा को गुण करे ।

अथवा रेबदबीनी, गेरू, कालीजीरी, कालीहट्ट, हल्दी, आमले, मुरतानी
मिट्टी, बराबर कूटछान कर गुनगुने पानी में मिलाकर पतला लेप करे ।

अथवा बच्चों का काग लटक आया हो तो उसको गुण करे । मुरतानी
मिट्टी सिरके में मिलाकर गाल पर रखे ।

अथवा पाजूफल सिरके में घिस के चंगली पर लगा के लटके हुए काग
को उससे चढावे ।

अथवा चूरे की लाल मिट्टी में एक काली मिर्च पीसकर काग को उस
से चढावे ।

अथवा गले की सूजन को गुण करे । सभाळ की छाछ जलाकर तिर
के तेल में पीसकर पतला लेप करे ।

अथवा मेयी और जौ का चून बराबर सिरके में मिलाकर पतला लेप करे

अथवा यह नुस्खा उन्नीखा का आजमाया हुआ है कराष की सूजन
को गुण करे । कड़ुए को लेकर उसका मुह रोगी के मुह की बराबर रखे ।
कड़ुए के मुह का साँस रोगी के कंठ में जाय तो उसकी सूजन हटती पड़े
और गले के पीछे पड़ने लगाया सूजन को गुण करता है ।

फ़सल बहेतुस्सूत यानी गला पड़जाने की

चिकित्सा में ।

जो नशला गले की तरफ पड़े और उसके कारण गला पड़जाय तो यो

सी अफ्रीम खाय और पोस्त के टाड़ और अजवायन दोनों को औटा कर गारगारा करे तो गुण करे और जो पूर्व रूप उसका कफ हो तो तीन वर्ष की पुरानी गौदनी की जड़ जो पृथ्वी के नीचे गड़ी होती है थोड़ी २ मुह म रख और इस्पद से गारगारा करना आवाज को साफ करे ।

अथवा अद्रक को भीतर से खाती करके थोड़ी हींग और नोन उसमें भरे और उस पर कपड़ा लपेट कर चूनका पुर्त लगाके भूमल में गाढ़वे जब सीज जाय और सुगन्धि आने लगे तब धाँच में से निकाल खोलकर खाय तो आवाज खुलजाय ।

अथवा मुजरिबात अकबरी में लिखा है कि चाँवल गुड़ में पकाकर सोवे समय खाय फिर एक घंटे पीछे दो चमचे गुनगुना पानी पिये तो तीन दिन में आवाज खुल जाये ।

अथवा थोड़ी सी हींग गर्म पानी से निगले ।

अथवा मूली के बीज कूटकर गर्मपानी में मिलाकर खाय ।

अथवा हड़की गुठली की पिंजी, पीपल, सेंधा नोन बराबर शहद में मिलाकर गोछियां बनाके खाय नित्य १ ठोके पंद्रह दिन तक खाय ।

अथवा मालकंगनी, बब, खुरासानी अजवायन, कुलीजन, पीपल पीस के शहद में मिलाके चौदह माशे दोनों समय चाटे तो गला खुलजाय ।

अथवा दीपे का गुल पान में रखकर खाय यह मुजरिबात अकबरी में लिखा है और जो सिंदूर खाने से गला पड़गया हो तो उसको भी गुण करे ।

अथवा गांढा भूमल में गुनना कर कतरके खाय तो गला खुले ।

अथवा कबाबचीनी मुह में रखे तो गला खुले और मोमी की चटनी भी आवाज खोलती है । गोभी के पत्ते और दही पानी में चबालकर कपड़े में छान थोड़ा शहद डाल चाशमी कर काम में लाये ।

फसल खनाजीर अर्थात् कण्ठ माला की ओषधियों के प्रकर्ण में ।

कंठमाळा एक सूजन होती है जो गले में पैदा होती है चिकित्सा उस की कफ को पकाकर उसकी सफाई करे ।

दवा कठ माला को गुण करे मूली के बीज बकरी के दूध में पीसकर खेपकरे

अथवा लिहसोई की नर्प २ पत्तियां भूमल में गर्म कर दस दिन कठ-

माला पर बांध ।

अथवा पसोंदी की पत्तियाँ और चार काळी मिर्च पीसकर लेप करे ।

अथवा सरसों पीसकर रगया करे यह लिखा है कि सफ़ाई के पीछे जब तक रोग दूर नहीं तब तक चार माँशे जवाहर कूट छानकर सायकाल के समय नित्य खाया करे यह मगध लगावे, सोलेपर गुगलु, तीन माँशे, काळी मिर्च सिरके में पीस और पकाकर लगाया करे ।

अथवा सोंठ साढ़े तीन माँशे, कुलपी के बीज दस माँशे, गाय के पेशाब में खदकाकर ठही कर के लेप करे ।

अथवा कतीरा पाँच भाग, अनघायन दो भाग, कूट छानकर घनिष्ठ की पत्ती का रस निचोड़ कर खूब मिला के लेप करे यह कगवादीन सफ़ाई में लिखा है ।

अथवा बकरी के फंघे का हाड़ जलाकर पंद्रह दिन तक खाय ।

अथवा मेरिया की लयड़ी और मदनमस्त कूट छान गुनगुना कर लेप करे और ऊपर से पुरानी रुई गर्म कर बांधे ।

अथवा गाय के खुर और सींग जलाकर तेल में मिलाकर कंठ माला पर लेप करे ।

अथवा पीछ की पत्तियाँ कूट तथा गाय के पेशाब में पीसकर लगावे घस पर पान बांध ।

अथवा दो तोले गुलगुली रात को पानी में भिगो भात काल छान के पिये इस प्रकार एक महीने पर्यन्त पिये ।

अथवा एक भाग सिरम के बीज कूट छानके, दो भाग मह में मिला कर हाड़ी में रख ऊपर से परिपा रख के चबुद के घूनका वहेसा लगा सात दिन धूप में रखे बाद को खालकर एक तोले प्रति दिन खाय और खटा खारा न खाय तो कठ माला के पचाद को चखाइ यह मुमरिबात, अकपरी में लिख है हा यह जुमला दुर्गाधि युक्त तो है परंतु कठ माला का दाप दूर करने में उत्तम है

अथवा चूरा की जड़ बांधना कठमाला को गुण करता है ।

अथवा बकरी के सींग की भिगी आरने पंढों की आग में ऐसी जलाए कि मफ़ेद हो जाय तब फकी बनाकर चौदह दिन तक नित्य साँधे माँशे भात फाँके और खिचड़ी खाय ।

अथवा जौका आटा, अलसी, कपूर की पीट, सिरके में पीसकर लगावे तो कठमाळा जाय ।

अथवा घनियाँ और जौका ससुरमेषा लगाना कठमाला को गुणकरे ।

अथवा सिरस की छाल, दूरा, कालीमिर्च, कालीजीरी, बराबर पीसकर लगाया करे और बड़का दूध कठमाला पर लगाना गुणकरता है ।

गुण, सरेरु की फ्रसद खोजना सूक्ष्म भोजन करना उत्तम चिकित्सा है ।

फ्रसल कण्ठ में जोंक चिमिटजाने की चिकित्सा में ।

नोन तथा नौसादर सिरके में पीस मिलाकर गरारा करे और गधक का घुआ कंठ में पहुचाना जोंक को कंठ से गिरा देता है । घुआ पहुचाने की विधि यह है । कि मरसल के एक मुह पर गधक रखे और उस पर आम रख दूसरी तरफ से हुक्के की तरह खींचे और जो कंठ से छूटकर जोंक सदर में गिरनाय तो तुरंत धमन करा देव और जो न निकली हो तो जुझाव देवे ।

अथवा काली मिट्टी कपड़े में बांध कर रोगी के मुह में रखे तो मिट्टी की सुगंध से तुरंत जोंक निकल आवेगी ।

अथवा राई की भाग पीसकर आठ भाग सिरका मिलाके गरारे करे ।

अथवा राई कलोंजी मिलाकर पीसके नाक में फूके गुणकरे ।

अथवा नागरमोषा मुह में रखे तो उसके कारण जोंक निकल आवे ।

फ्रसल छाती के रोगों की चिकित्सा में ।

कीकृष्णफस अर्थात् स्वास में यह रोग वृद्धावस्था में कफ की प्रबलता से होता है और अत्यन्त वृद्धको होता है इसकी चिकित्सा तुरतही करे कमी र कफ पकवाने के पीछे जुल्लाव से सफाई करते हैं ।

गोली स्वास को गुणकरे । कजाकी मिर्गी और पीपल पीस के अदरक के रस में मिर्च के प्रमाण गोखियाँ बनाके तीन गोली तड़के के समय खाया करे ।

अथवा हल्दी राई और लोदन सखी प्रत्येक चार भाग गुह अठारह भाग कूटछान के जगली बेर के प्रमाण गोखियाँ बनाफ सुबह छाप खावे इस प्रकार सात्तीस दिन सफ़, खाय ।

अथवा शीप बलाके अदरक के रस में घोट चने के प्रमाण गोखियाँ बनाके खाय ।

अथवा मुह मुदी आक की कला दो भाग, पीपल एक भाग, सेंडा नोन एक भाग, महीन पीसकर भाड़ी घेर के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा एक गोली

अथवा आक का पचा एक, काळी मिर्च २५, कूटछान कर काली मिर्च के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा तक्षण को एक और पचों को आधी गोली देवे।

अथवा पीपल, काली मिर्च मत्पेक साढ़े तीन माशे, काकड़ासिंगी दो माशे, सफेद सज्जी १ माशे, अक्रोम चार रत्ती, कूटछान कर अदरक के रस में घेर के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा एक गोली और जो अदरक न मिले वो डेढ़ तोले सोंठ मिठाकर गोलियां बनावे।

अथवा एलुआ, सफेद सज्जी, कालीमिर्च, इट्दी, कूटछान कर ग्वारपाठे के रस में घोटकर भाड़ीघेर के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा एक गोली गुनगुने पानी के साथ लेनी चाहिये।

अथवा नीळ, चूके की छकड़ी मत्पेक सात माशे, पाळकांगनी एक माशे कूटछान पानी में घोट चने के प्रमाण गोलियां बनावे सांझ सवेरे एक १ गोली खाया करे और खट्टा खारा न खाये चिकनाई युक्त भोजन करे।

अथवा अकरकरा, काली मिर्च, अनार की छाल, अजमोद, अहूसे के पत्ते, छोटी कटेरी की जड़ ववुलकी छाल, सफेद सज्जी, सेंधानोन, सांमरनोन मत्पेक एक माशे अक्रोम दो माशे कूटछान कर अदरक के रस में चने के प्रमाण गोलियां बनावे और मुह में रखके चूसे तो सांस और कफकी खांसी को गुणकरे।

अथवा एलुआ, मुहागा, बीजापाल, कूट छानकर चनेके प्रमाण गोलियां बनावे सांझ सवेर दो २ खाया करे तो स्वांस जाय।

अथवा मींगे कपड़े में एक तोले पीपल बांध भूमल में गाढ़दे घटेमर बाद निकालके सुना कुलीजन, कालीमिर्च मत्पेक साढ़ेतीन माशे, पीपल, अकरकरा डेढ़ भाग, महीन पीसकर ग्वारपाठे के रस में खूब घोटकर चनेके, प्रमाण गोलियां बनाकर एक गोली नित्य खाया करे।

अथवा अहूसे के फल, पोश्करमूल, काकड़ासिंगी, कालीमिर्च, कछोजी पीपल, भारंगी, कटेरी की जड़ सबको बराबर के अदरक के रस में गोलियां पांच मात्रा साढ़ेतीन माशे।

अथवा कसौदी के ताजाफल भूनकर खाये।

अथवा रेंदी की पिंगी खाय तो स्वांस जाय ।

अथवा राँसाके बीज, नकछिकनी और पान सबको भून पीसकर ४ रत्ती ममाण पान में रख के खाय, अति उत्तम नुस्खा है ।

अथवा आक के पत्ते, बीजाबोल, सफेद कत्या, पानी में पीस के पतला लेप करे और मुरमुकी घी मिट्टी के वासन में रख उसका मुह बंदकर जलते हुए चूबे तथा तबूर में रखे जब भळकर राख होजाय तब पीस नित्य पान में रखकर खाया करे, मात्रा एक रत्ती ।

अथवा सेरभर आक के पाँछे पत्ते जो भूंदकर गिर गये हों चूना और नोन प्रत्येक सात माशे, दोनों को पानी में पीसकर पत्तों पर लेपकर मुखावे और मिट्टी के वासन में रख आरने कंठों की आग से एक महर जलावे जब राख होजाय एक रत्ती नित्य खाय । दूध दही खटाई न खाय तो स्वांस खाँसी दूर होवे ।

अथवा आक की कौपल पान में रखकर जाड़े के दिनोंमें तीन दिन तक नित्य एक कौपल खाय चौथे दिन डेढ़ और पाँचवें दिन दो इसी प्रकार चालीस दिन तक प्रति दिन आधी कौपल बढ़ाकर खाय ।

अथवा आक की मुरमुदीकली चाहे जिसनी लेकर हर एक में एक २ कालीमिर्च रखके भाँटी की हाँडी में रखे और घन पर खारी नमक बिछाकर हाँडी का मुह बंद करके तबूर में रखे जब स्वांस शीतल होजाय तब निकाख कर चार रत्ती नित्य खाया करे ।

अथवा इलायची के दामे, मालकांगनी लेकर दो माशे रोज निगले तो कफ का स्वांस जाय ।

अथवा अदरक और ग्वारपाठे के रस और अइद सय बराबर ले चीनी या झींशे के वासनमें रख भरती में गाढ़ दे तीन दिन बाद निकाले और एक कौड़ी की बराबर रोज खाय ।

अथवा विप्रस्त्रिपरा की जड़ थोड़ी नित्य पान में घरकर खाय ।

अथवा तम्बाकू का गुल आग में सफेद जलाके पीसे दो रत्ती पान में रखकर खाया करे और खट्टी तथा वासक वस्तु न खाय ।

अथवा तम्बाकू का गुल इकट्ठा करके जलावे जब सफेद होजाय उसे

पानी में रगड़कर एक दिन रात रहने दे और हर घड़ी हिलाता रह फिर छानकर पानी को हडिया में छोड़ावे जब नोन होजाय तब दो रत्ती पान में रखकर खाया करे ।

अथवा थूहर की लकड़ी पोलौकर १४ माशे फिटकरी उसमें रख कर रोटी कर कढ़ी की भाव से फूके जब शीतल होजाय फिटकरी निकाल के दो रत्ती क प्रमाण पान में रख के खाया करे ।

अथवा हथेली भर इसमगोल के तीन बार नित्य सांभ सवेरे एक महीने फांके तो सर्दी गर्मी के स्वांम रोग को आराम हो ।

अथवा मुह की बराबर सरो के पत्त पान में रखकर खाया करे ।

अथवा दो समुद्रफल और चार पीपल जला पीसकर कौड़ी भर पान में रखकर खाया करे ।

अथवा मकड़ी का जाला पोंछकर गुड़ में लपेट के खाय यद्यपि गर्मी विशेष करेगा परन्तु गुणदायक है ।

अथवा रौसा के पत्तों का रस स्वांस को गुण करे ।

अथवा चार तोले गेहू आक के दूध में तीन दिन भिगो मांटी के घासन में रख मुह बंदकर आरने कढ़ी में जलावे जब शीतल होजाय तब पीसकर चार तोले गुड़ मिलाके एक तोले दो माशे के प्रमाण गोली बांधे एक गोली मात्र काक खाय परन्तु खट्टी और बादी वस्तु न खाय ।

अथवा चिड़चिड़ का नोन थोड़ा २ खाया करे तो छाती के कफ को दूर करे और स्वांस को खोवे और थूहर का नोन भी यही गुण करता है और आक का नोन भी यही गुण करे और इनका नोन बनाने की यह विधि है कि आक के पत्ते सुखा जलाकर रात को पानी में भिगोकर मात्राकाल छानके पानी को जलावे कि सब पानी जलकर नोन हो जायगा और नोन भी इसी प्रकार बनते हैं ।

अथवा थूद जमालगोटा दिये में जलावे जब राख होजाय तब पीसकर चार भाग करे प्रतिदिन एक भाग पान में रखके खाय तो स्वांस को अति गुण करे ।

अथवा अनी फिटकरी और मिश्री दोनों को बराबर ले छूटकर फवकी ना मात्रा एक माश से छ माश तक है ।

अथवा थोड़े से गेहूँ लो फारे शिकारे में रख जलाकर कोछे करे और इन्हीं की परापर हल्दी लेकर जलावे फिर दोनों को महीन पीसकर मिलावे प्रथम दिन साढ़े पाँच माशे शीतल या गर्मजल के साथ लेवे इसी प्रकार मित्य कौड़ी भर बढ़ाता जाय एक गहीना इक्कीस दिन तक पानी परमेश्वर की कृपा से सात दिन पीछे ही आराम मालूम पड़े ।

अथवा आक की कालीजड़ डेढ़ भाग, अजवायन एक भाग, कुट्टखान कर गुड़ मिलाके गोलिएँ बनावे एक तोले नित्य सवेरे खाया करे ।

अथवा फरील की लकड़ी की राख एक माशे नित्य खायाकरे ।

अथवा आमलासार गंधक सात माशे मिर्ची चौदह माशे शहदमें मिला कर दो माशे पान में रखकर खाय ।

अथवा अहमा का छोटा पेड़ जड़ पत्तों सहित छाया में सुखो के कुट्ट खान फकी बनाके एक इयेली भर नित्य खाय ।

अथवा पारइसींगे का सींग जलाके शहदमें मिला प्रथम दिन एक माशे खाय फिर एक २ माशे नित्य बढ़ाकर एक तोले तक खाय जो इस बीच में गर्मी विशेष मालूम पड़े तो छत्रनी ही बहुत है ।

अथवा आककी छाल सहेजने की छाल दस २ माशे, जवाहार साँड़ेवीन माशे, पीपल दो तोले, नीलायोया माशे भर, गुनकर फकी बनाके दो माशे खाय ।

अथवा इंद्रायनकी जड़, पीपल, सण्जी, परापर कुट्ट खान कर एक २ माशे सुबह खायाकरे ।

अथवा सेबानोंन पीसकर पहले दिन दो माशे सोवे वक्त चाँटे और नित्य ओषधोक्षि बढ़ाता जाय कि छः माशे तक पहुँचावे और इसके ऊपर पानी न पीवे जो तृषा बहुत लगे तो गुनगुना पानी पीवे ।

अथवा टाईपाव आककी पत्ती और महदीकी डाली सप्तासर, दुकड़े २ करके अजवायन, आमलासार गंधक, जौहट सवासोऊँह तोले, पलाना चार तोले, सप्त दवाइ हाँटी में भरकर ऊपर परिया रख माटी से मुँह बंदकरे इस के ऊपर और एक कपरोटी कर बहुतसी छकड़ियों में रखके जलावे जब राख होजाय पीसकर खायाकरे और थोड़ी २ बढ़ाताजाय कि एक इयेली भर होजाय परन्तु इस दवा से कथिर आनेका भय है विशेष न खाय ।

फफू की कि इसे हिन्दुस्तानी लोग खाते हैं। पौहकरमूल, भारंगी, काली मिर्च, पीपल, कटेरी की जड़, काकड़ासींगी, संधानोन, सज्जी, बिलालोदन रसायन कूट छानकर फफू की बनावे एक २ मासे सायं, प्रात खाया करे और भोजन में घृत विशेष खाय ।

तम्बाकू का शर्वत तम्बाकू की हरी पत्तियों का रस और गुड़ बराबर लेकर शर्वत बना छानकर रनखे चौदह से अठ्ठाईस मासे तक देवे और निमल को थोड़ी दे ताकि लछटी न होवे और दस्त न होजाय, यह स्वांस के रोगी को अति गुणदायक है पांच दिनेमें बिलकुल आराम होजाय ।

चटनी फफू की खांसी और स्वांस को आराम करे । अलसी और अस्पंद बराबर पीसकर दूने शहद में मिलाकर नित्य एक तोले चाटे और पाजाने लिखा है कि सुना अलसी आधपाय, कालीमिर्च तीन तोले, तिगने शहद में मिलाकर चाटे पाजाने मिर्च के बदले पोदीना मिलाया है और कोई २ निरी अलसी तिगुने शहद में मिलाते हैं ।

अथवा तीन तोले सुना सुहागा, चार तोले शहद में मिलाकर रनखे उसमें से तीज चंगुली लेकर सोते समय चाटे तो स्वांस रोग जाय ।

अथवा कायफल, सोंठ, पौहकरमूल, काकड़ासींगी, भारंगी, पीपल बराबर लेके कूटछानकर शहद में मिला के साढ़े तीन मासे नित्य खाया करे तो फफू के रोगों को निश्चय दूर करे ।

अथवा बाधवी, हल्दी, पीपल, दाकरस्टी, कालीमिर्च, कालानोन, बीता, सुना, सुहागा, चौदह २ मासे, सज्जी सात मासे, कूट छानकर साढ़े तीन मासे नित्य गरम पानी के साथ फांके ।

अथवा काकड़ासींगी, पौहकरमूल, भारंगी और कायफल बराबर कूट छानकर सोंठ भिगोकर उसके पानी में भिगोवे सक्ता सवेरे एक २ दांक की बराबर खाये ।

अथवा हड़, बहेड़ा एक २ भाग कूट छानकर सक्ता सवेरे चार २ मासे की मात्रा खाये तो स्वांस और खांसी जाय ।

अथवा सात मासे रीठा नित्य खाये तो स्वांस को गुण करे ।

अथवा कड़वा कूट दो भाग शहद में मिलाकर चाटे तो स्वांस और खांसी को गुण करे ।

अथवा अलसी और मेथी सात २ मासे, सुनबुद्धा, तोले भर पानी में औटाकर और छानकर पिये ।

अथवा बड़ी कटरी की जड़ टुकड़े २ कर पाव भर पानी में औटावे जब छायांक भर रहे तब पीये ।

अथवा जगली प्याज, चीता, सोंठ, मारगी, कटेरी की जड़ और पत्ती सरित रांसा और घबूल की छाता मल्येक दो तोले चार माशे जो कूट करके दो भाग करे एक भाग आध सेर पानी में औटावे जब आधपाव रहे छानकर पिये तो कफ की खांसी जाय ।

अथवा छोटी कटेरी की जड़, गिछोय, पोहकरमूल, पीपल, मारगी, काकड़ासींगी, और नरकाचूर मल्येक तीन माशे एक सेर पानी में औटावे जब आधपाव रहे तब छानकर पिये तो स्वांस और खांसी दूर होय ।

अथवा मीवे घिया की मिंगी, खीरा, ककड़ी की मिंगी, खसखास, निशास्ता सब बराबर लेके शीरा निकाल कर सफेद फ़द या तुरंजबान या श्रीरस्मिश्च या शर्बत बनफ़शा मिलाकर पीये तो रुधिर थूकने और सूखी खांसी को गुण करे ।

अथवा पानी में निशास्ता औटाकर घूरा मिलाके घाशनी करे फिर पोस्त के दान और घिया के बीजों की मिंगी का शीरा मिलाके इलावा बनाके खाय तो छाती के रोग और रुधिर थूकने तथा खांसी आदि और आँतों के घाव को गुण करे और मस्तक को ठर करने वाला और बल देने वाला है ।

फ़सल सिल अर्थात् रुधिर थूकने के रोगों की चिकित्सा में ।

सिल फ़ेफ़ड़े के घाव को कहते हैं इस रोग में ऊपर और खांसी होती है कभी खांसी से रुधिर भी निकलता है और रोगी प्रतिदिन सूखता जाता है हरबन्द यह रोग असाम्य है परन्तु रोगी शीघ्र काल को मास न हो जाय इस कारण प्रथम वासलीक नसकी फ़स्द खोलें पीछे ऊपर और खांसीकी चिकित्सा करें ।

गोली जो रुधिर थूकने को गुण करे । सजखड़ी, जहरमोहरा, सफ़ेद कल्या, कतीरा, घबूल का गोद, निशास्ता, पोस्त के दाने सफ़ेद, खतमी के बीज और गेरू मल्येक साढ़े तीन माशे, अफ़ीम माशेभर कूट छानकर गोलिए घनावे और कभी ऊपर की विशेषता में थोड़ासा कपूर मिलाते हैं ।

फ़ुर्स अर्थात् टिकिया फ़ेफ़ड़ा जलाकर तीन तोले निशास्ता, सफ़ेद पोस्त के दाने और काले पोस्त के दाने मल्येक तीन तोले कुलफ़ा के बीज बिनेधुने, द्विती छलहटी, खतमी के बीज शुद्ध मल्येक दस माशे घबूल का गोद और कतीरा मल्येक साढ़े तीन माशे, ईसबगोल के लुआव में गोलिए घनावे मामा

सात माशे की देनी योग्य है ।

खसखास की चटनी

यह नुमखा हकीम इस्माईलखाने ने आजपा लिया है बहुत सहल किया है । यह रुधिर थूकने के रोग को गुण करता है । सफ़ेद खसखास तीन तोले लेकर दस माशे इसघगोल लेकर आधसेर पानी में औटावे जब आधा बाकी रहे तब आधसेर कद की चाशनी करे ऊपर से सफ़ेद खसखास, घबूक का गोंद प्रत्येक सात माशे पीसकर मिलावे मात्रा तोले भर ।

दवा रुधिर थूकने को गुण करे सात माशे मुलतानी मिट्टी पीसकर पिसे ।

फसल डब्वह अतफाल अर्थात् बच्चों की पसली के रोग की चिकित्सा में

इस रोग में ज्वर और खांसी का होना सदा पसली का दमना उत्पन्न होता है इसके दो भेद हैं एक तो यह जिसके दोप में गर्मी पाई जाय इसमें ज्वर भी होता है इस कारण बहुत दूर नहीं होता इसमें सात दिन तक गर्म वस्तु न दे कि जिससे भीतर के जोड़ छिल जाय जैसे नीलायोंथा और जमालगोटा आदि सबसे उत्तम यह है कि माँ को नरम करे अपलतास, चलाव, मुनका, वनफशा इनसे नरम करे और पकाव की बात न देखे और दूसरा वर है जो कफ के दोष से हो इस में ज्वर और स्वांस का चलना भी होता है प्रथम इस रोग में दूर है ।

गोली पसली के रोगों को गुण करे । कबूका, चूना, नीलायोंथा, बड़ी हड़, बड़े का चक्कल और सफ़ेद कत्था, बराबर लेक महीन पीस के गोलियाँ बनावे समय पर थोड़े घी में मिलाके पतला लेप करे ।

अथवा केंचुआ, पीछ के बीज, लोग सब बराबर लेके गोलियाँ बनावे एक गोली नित्य दे तो दो तीन दिन में रोग जाय ।

अथवा कना के बीजों की मिर्गी एक, नीलायोंथा कच्चा एक रशी महीन पीसकर सरसों की बराबर गोलियाँ बनाके एक गोली नित्य खाय ।

अथवा एलुमा, जमालगोटा सन्जी दूर किया हुआ बराबर लेकर लोहे के खरख में पछियाँ का पेशाब डालकर लोहे के दस्त से घोटकर मृग के ममाण गोलियाँ बनाके सज्ज की दस्तकर मात्रा मा के घूँस में देनी चाहिये ।

अथवा कबूका आठ माशे, हींग एक माश, कूट छानकर दही के सोड़ में फाकीमिर्च के ममाण गोलियाँ बनावे मात्रा घूँस पीस घबूक का एक गोली गरम के सग देनी औ

अथवा चूकाकी लकड़ी, कालीमिर्च, बड़ी इड़का बकल पीली निसोत;
सब बराबर पीसकर कालीमिर्चके ममाण गोलियां बनावे मात्रा एक गोली देवे
तो पसली का रोग दूर होवे ।

बजूर अर्थात् कंठ में टपकाने की दवा

" पसली के रोग को गुण करे " सुखे केंचुए पानी में पीसकर एक बूंद
घच्चे के कंठ में टपकावे अति गुण दायक है ।

दवा बकायन की पत्ती सेंक कर मध्यम रेंडी का तेल पेट पर मलें फिर
उस पर पचा बांधे ।

अथवा यह काढ़ा दे । कसूम के फूल मांशे भर सात मांशे छड़के के
पेशाब में औटावे जब आधा या चौथाई रहे पिलावे ।

अथवा जवासे की दो मांशे जड़ पानीमें औटाकर घच्चे को पिलावे बजूर
का गोद एक तोले, एलुआ छः मांशे, कूट ज्ञानकर ग्वारपाठ के रसमें मिला-
कर लगावे तो पसली का रोग जाय ।

गुण पिसरानी बैद्यों के मत में घुड़चढ़ी की गोली अति उत्तम है और
यह औषधि योगियों की बताई हुई है यह गोली गरीबनबाज है नुसखे तो
इस के बहुत हैं परन्तु दो एक सड़क से छिस्वा हूँ बहुधा रोगियों का गुण
करते हैं और घच्चों की पसलियों के रोग दूर करने को अति उत्तम हैं ।

गोली घुड़चढ़ी पारा, गंधक, हरताल, सोंठ, कालीमिर्च पीपल त्रिफला
का बकल सुहागा, तर्बूज के बीजों की मिर्गी, रेहां के पत्तों का रस, सब बरा-
बर छेके मध्यम पारे और गंधक की कजली करे फिर सब औषधियों को खरल
में ढाळ के भगरे का रस ढाळ दस्ते से तीन दिन घोट और भूग के ममाण
गोलियां बनाके एक गोली नित्य खाय ।

घुड़चढ़ी की गोली का दूसरा नुसखा

पारा साढ़े तीन मांशे, गंधक और सफेद निसोत सात २ मांशे, कालीमिर्च
दस मांशे, सुहागा चौदह मांशे, बड़ी इड़का बकल दो तोले चार मांशे, रेंडी
दो तोले, ममाळगोटा शुद्ध दो तोले चार मांशे, इलायची मांशे भर, कूट ज्ञान
कर गोलियां बनावे ।

गुण यह गोली स्पांस रोगमें त्रिफला के सग संधी में घुरेके साथ सूखी
खासी में मगरे के रसमें और अजर दूर करने को चिंदचिंदे के रसमें बाध

दूर करने को सहद में और बायशूक क दर्द को सोंफ के अर्क में खाय ।

बकरी के पेशाब में रगड़ कर समुद्र दाग पर लगावे और खी के दूध में घिसकर नेत्रों में अजि तो जाता दूर हो और फोड़ा दूर करने को नीबू के रस में, और रोगों में अदरक के रस में एक गोली निगल जाय तो गुण करे ।

फसल जातुलज्वर

अर्थात् पहलू की पीड़ा की चिकित्सा में । जो इस पहलू की पीड़ा में ज्वर और खांसी भी हो तो वासलीक नसकी फसल खोलें और बाकी जो पुस्तकों में चिकित्सा लिखी हो सो करे ।

जो पहलू में दर्द वादी और सर्दी से हो, तो पीड़ा कभी यहाँ और कभी वहाँ होवे और इसमें ज्वर नहीं होता ।

दवा पहलू के दर्दको जो बह बाड़ी और सर्दी से हो गुण करे थोड़ी रसी सोंठ और अडकी जड़ जो कूट करके पानी में औटा के पिखावे ।

अथवा / काकरी जड़ लड्डके के पेशाब में घिसकर पीड़ा के स्थान पर लेप करके धूप में बैठे और आरने कहे से सके ।

अथवा / बारहसिंगे का सींग और पाँच कोली मिर्च पीसकर गुनगुना करके जमाद अर्थात् गाढ़ा लेप करे ।

दवा / छापी की पीड़ा को गुण करे । देवदारु डार्ई माशे पीसकर पाँच माशे गुड़ में मिला के खाय और वाजे ससमें बराबर की सोंठ बढ़ाते हैं ।

अथवा / सहजमे की पत्तियाँ भिंगोकर खाय ।

अथवा / मैयी और शहद मिलाकर औटाके पीने तो छाती के पुराने दर्द और स्वांस को गुण करे ।

फसल सआल अर्थात् खांसी की चिकित्सा में ।

जो खांसी पहलू तथा सदर जो / के छाती के समीप एक स्थान है या छाती वा फफड़े की पीड़ा तथा कलेजे की सूजन के कारण हो अथवा रुधिर के थुकने से हो तो उसकी चिकित्सा इस राग का दूर करना है । और खांसीका हाल यह है कि कभी सूखी होती है, कि कोई वस्तु ससमें से नहीं निकलती है और कभी तर होती है कि ससमें कफ निकलता है और छाती में घुरघुराट होता है ।

कफकी खांसी की चिकित्सा में

कफ को पका के सफाई कर डाले और सूखी खांसी में तर दवा देवे ।

गोली कफ की खांसी को गुण करे। काकड़ासींगी कूट छानकर काली मिर्च की बराबर गोलियां बनाकर मुह में रखे।

अथवा छिछी मुलहठी, कलीरा, बबूच का गोंद, निशास्ता और मिर्ची बराबर लेके कूट छानकर चने के प्रमाण गोलियां बना के मुख में राखे तो सूखी और घर दोनों प्रकार की खांसी दूर होवे।

अथवा पिस्ता के फूट और बड़ी हड़ दोनों बराबर लेके अदरक के रस में सून के प्रमाण गोलियां बनाके मुह में रखे तो खांसी जाय।

अथवा कालीमिर्च, सज्जी और खिल्ले चने बराबर लेके अदरक के रस में गोलियां बनावे।

अथवा हस्दी साढ़े तीन माशे, सफेद सज्जी एक माशे, कूट छान कर पानी में पीस के छोटे बेर की बराबर गोलियां बना के सांझ सबेरे एक २ गोली खायाकरे तो सात दिन में खांसी जाय।

अथवा कालीमिर्च, मुहागा, काकड़ासींगी, लौंग, फिटकरी मारगी, हड़का, बककल, पीपल, सेंधानोन, चने २ बराबर लेके और सब की बराबर सोंठ मिलाके कूट छान नीबू के रस में घोटकर बेर के प्रमाण गोलियां बनाके सोते समय एक दो गोली खाया करे।

अथवा भाषा केवा आषा पक्का सुरंगा, चंसकी बराबर काली मिर्च लेके ग्वारपाठे के रस में घोटकर चने के प्रमाण गोलियां बना के काम में लावे तो बच्चों की खांसी जाय।

अथवा छोटी कटेरी की मड़, मुलहठी, काकड़ासींगी, कुलीजन, हड़का बककल पानी में भौंटाके बबूच की छात मिलाके चने के प्रमाण गोलियां बनाके मुह में रखे।

अथवा काली मिर्च, पीपल, कजा की मिर्गी, कटेरी के बीज, सुना मुहागा और सफेद कत्था प्रत्येक साढ़े तीन माशे, अफीम दो माशे, कूट छान कर एक महर अदरक के रस में घोटके काली मिर्च के बराबर गोलियां बनाके मुह में राखे तो खांसी और स्वास जाय।

अथवा हड़ का बककल, कोंच के बीजों की मिर्गी, काकड़ासींगी, काली मिर्च और मुलहठी बराबर लेके कूट छानकर चने के प्रमाण गोलियां बना मुह में रखे

अथवा थोड़ेसे पोस्त के दाने भून पीस कर थोड़ासा सेंधानोंन और कालीमिर्च मिलाके एक माशे दिन में दो तीन बार छेके खाया करे ।

दवा बलजम पर कपरोटी करके तंदूर में पकाके उसका गुनगुना २ पानी निचोड़ कर मिथी मिलाकर पिये ।

अथवा मुल्हटी, कालीमिर्च भूनकर उनको बराबर मिथी मिलाके कूट छानकर घने के प्रमाण गोलिएया बनावे रातको दो गोली मुह में रखे तो कफ की खांसी जाय ।

अथवा इड़ और बहेड़े के बकल, काकड़ासींगी, भारंगी, पीपल, फिटकरी, सुहांगा, चीसा, लोंग, सेंधानोंन और सोंठ सब बराबर लेके सुहांगा भूनकर ढाले और छोटे बर के प्रमाण गोलिएया बनावे मात्रा एक २ गोली सांभ सधरे खाय ।

दवा पवार के बीज पीसकर प्रतिदिन चार माशे के प्रमाण इक्कीस दिन तक फांके तो कफ की खांसी जाय ।

अथवा फेले के पत्ते जलाके उनको राख थोड़े नोन में मिलाके नित्य दो तीन बार खाया करे ।

तंदहीन अर्थात् तेल मलना गुदा के ऊपर खांसी को आराम देता है ।

अथवा पीपल विलम में रखकर सबाकु की तरह पिये तो पुरानी खांसी दूर होवे ।

अथवा रियाऊ आठमगरी में लिखा है कि कौए की बीठ पैली में बांधके छड़के के गले में लटकावे तो खांसी जाय ।

अथवा कुबड़ा घों में भून पीसकर रखे और मात काल दो रची खाय तो कफ की खांसी जाय । गेहू की सुसी पानी में पीड़कर उसका अर्क लेके बादाम की मिर्गी का शीरा, निशास्ता और कद मिलाके हरीरा बनाके गुन गुना २ पीवे ।

अथवा सांभर, सेंधा और काळा तीनों नोन अमवाधने सुहांगा और जवाहार सब बराबर लेके मिट्टी के कुलहड़े में रखे ऊपर से कपरोटी करके आध गल गरूर गढेले में आरने कडे भर उसमें कुलहड़ा रख फूक दें जब शीतल होजाय पीसके उसके बराबर बघूळ का गोद मिला के एक माशे खाया करे ।

अथवा पर फफकी फांके तो खांसी जाय । त्रिफला सेंधानोंन अनार का छिलका कोंच के बीजों की मिर्गी अइसे के पत्तों की मरमजवासे की राख

मत्येक एक भाग पीपल काली मिर्च मत्येक आधा भाग कूट छान, फक्की बना, मांशे भर छाक सवरे फाँके तो तीन दिन में आराम हो ।

अथवा बिलायती अनार का छिलका हो तो उत्तम है नहीं तो देसी ही का होवे पीपल, काकड़ा सींगी छै २ मांशे, सेंधा और काला नोन एक २ तोले हड़का बक्कल दो तोले कूट छानकर फक्की बना के नित्य दो तीन बार फाँके ।

अथवा काकड़ा सींगी बिली मुलहटी बभूल का गोंद पोस्त के ढोड़े पीपल समुद्रफल की मींगी बराबर छे कूट छान सफूफ यानी फक्की बना के तीन मांशे खाय ।

जूफा का शर्वत

कफ की खांसीको गुण करे । बिली मुलहटी सोंफ खतमी के बीज काली भाँप मत्येक सात मांशे जूफा और मेथी मत्येक साढ़े तीन मांशे बिरसोड़े आठ तोले नौ मांशे पोस्त के ढोड़े दानों सहित ग्यारह पाव सेर घूरेका शर्वत बनावे ।

अथवा अमलतास का गुलकंद, खांसी की मकृति के नरम करने में गुण-दायक है अपलतास एक भाग कढ़ दो भाग का गुलकंद की तरह से गुलकंद बनावे मात्रा एक तोले की दें ।

अमलतास की चटनी

वशिष्य को नर्म करे और छाती पर से कफ को दूर करे और खांसी को गुण करे । अमलतास पानी में घोटकर तिगुने घूरे की चाखनी में भित्ता के चटनी बनावे मात्रा दो तोले सोंफ के अर्क या उसी के रसके संग दें ।

अथवा हाळम की चटनी कफ की खांसी को गुण करे और मवाद को छाती पर गिरने नहीं देती अर्थात् दूर करती है और पहर की पीड़ा को खो देती है । हाँसो कूट शरद में भिछाकर चाटे ।

अथवा सरसों पीस के शरद में भिछाकर चाटे तो कफ की खांसी जाय ।

अथवा मुनक्का सात मांशे शरद दस मांशे कालीमिर्च, अड़सा, मारगी, नागरमोया काकड़ा सींगी, मत्येक छ मांशे अतीस, खुरासानोषध, मत्येक चार मांशे कूट छानकर शरद में भित्ता के बबों की उम्र देख के सनकी मा के दूध में भिछा के दें तो खांसी खांसि दम चढ़ाना और घरघराह को गुण करे ।

अथवा खसखास की चटनी नमले की खांसी को गुण करे । दाने समेत पोस्त के ढोड़े तीस बिरसोड़े तीस सोंफ, खतमी के बीज तोले २ भर आधसेर

पानी में झोटावे जब आधा रहे छानकर पाव सेर घूरे की चाशनी करे उस चाशनी में छिल्ली मुलहटी सात माशे बबूल का गोद साढ़े तीन माशे और कतीरा दो माशे पीसकर मिलावे सोते समय और प्रातःकाल एक २ तोले चाटे ।

अथवा गोदनी की चटनी खासी को गुण करे । गोदी का लुभोव निकाल के परापर का बूरा मिठाके चाशनी बनाके पीछे थोड़ासा बबूल का गोद पीसकर मिलाके काम में लावे ।

अथवा काकड़ासींगी, पीपल, अवीस, मुलहटी और बबूल का गोद सब परापर छेक कूट छानकर शहद में मिलावे और चाटे तो खासी जाय और बच्चों की खासी तथा चछरी बंद होवे ।

अथवा बबूल का गोद डेढ़ तोले कतीरा निशास्ता सोले, २ भर छिल्ली मुलहटी व मांसे सफेद कद चौदह तोले और कमी गर्मी के समय तबूज की पींगी एक तोला बढ़ावे हैं खांस तो खांसी दूर होवे ।

अथवा काकड़ासींगी पीस के शहद में मिलाकर बच्चों को चटावे मात्रा चम्र देखकर दें तो बच्चों की कफ की खांसी और घरघराट को बंद करे और सदैव खाना बच्चों को मोटा और बलवान करता है ।

अथवा मुनक्का के बीज निकालकर उन में काकड़ासींगी को मिलाकर चाटे तो खांसी दूर होवे और यह पहली दवा से पराक्रम में विशेष है ।

अथवा नागरमीया और मुकहटी कूटछान कर शहद में मिलाके उसमें से थोड़ीसी मा. के दूध में मिठाके बच्चों को दें ।

अथवा मुशळिक अर्थात् ग्रन्थकारकी बनाई हुई चटनी खांसी को गुण करे । छिल्ली मुकहटी और मुनक्का प्रत्येक चौदह माशे पोस्व के दोड़े दानों सहित सात सिहसौके सात अठसी सात माशे अजीर सादा दस माशे सोंफ की जड़ और जुफ्रा प्रत्येक साढ़े तीन माशे सब को तीन पाव पानी में झोटावे जब पाव सेर रहे छानकर पाव सेर कद में चाशनी करे फिर बादामकी मिंगी निशास्ता बिलगोले की मिंगी प्रत्येक चौदह माशे काकड़ासींगी मुलहटी बबूरका गोद प्रत्येक साढ़े तीन माशे पीपल दो माशे बीजाबोल एक माशे पीसकर मिलावे मात्रा साढ़े तीन माशे से सात माशे तक दें ।

अथवा गाबड़ुवां साढ़े तीन माशे सोंफ साढ़े तीन माशे मुलहटी चौदह माशे पोस्वका छोड़ा एक बबूल का गोद दो माशे सिहसौके सत्रह दाने खटपी

के बीज साढ़े तीन माशे मुनक्का ग्यारह दाने औटाकर मिथी मिलाकर पिये तो खांसी जाय ।

अथवा—गेहू चौदह माशे पाषाण पानी में औटाकर दो माशे सेंधानोंन ढाके जब तीसरा भाग रहे तब छानकर पीये तो खांसी दूर होवे ।

अथवा पोस्त के दोठे ढही तोड़कर बारह नग और सेंधा नोन दो माशे ढाई पाव जल में औटावे जब तीसरा भाग रहे छानकर सोवे समय पीवे तो नसके की खांसी जाय ।

फ़सल नफ़सदम अर्थात् रुधिर

थूकने की चिकित्सा में

जो खस्यार के साथ रुधिर आवे तो जाने कि गर्मी है और जो मे खस्यार आवे तो जाने कि मस्तक से है और जो खांसी में आवे तो जाने कि चिनी हड्डों और मुह और कलेजे से है ।

चिकित्सा जो मस्तक से रुधिर आवे तो सरेख नसकी फ़सद खोलें और जो छाती से रुधिर आवे तो पासलीक नसकी फ़सद खोलें और जो मुँह के जोड़ों से रुधिर आवे तो चार नसकी फ़सद खोलें ।

कुर्स कहरुवा

अर्थात् कहरुवा की टिकिया रुधिर थूकने और स्त्री धर्म की विशेषता तथा मूत्र में रुधिर आने को गुण करे । कहरुवा सात माशे कुलफ़ा के बीज मुने गेहू धुले भुना घनिया निशास्ता गिला अरपनी कीकर कतीरा प्रत्येक चौदह माशे लेकर टिकिया बनावे मात्रा सात माशे ।

अथवा अनार के फूल की टिकिया रुधिर थूकने को गुण करे । अनार के फूल चार तोले आठ माशे थूका के बीज और घनिया सात २ माशे कतीरा पशूत का गोद सहजना भाजूफल प्रत्येक साढ़े तीन माशे लेकर टिकिया बनावे मात्रा सात माशे और जो विशय विष्ट भी चाहे तो चार रबी अक्रीम पड़ावे ।

दवा बभूर का गोद मुलतानी मिट्टी और कतीरे का सफ़क अपात् फकी बनाके सात माशे खसख़ास के शीरा और अदरक के रस में मिला के पीवे ।

अथवा गेरु कुदरु गोद अनार के फूल और पशूत का गोद सव घरावर केके पीसकर आमले के शर्बत में मिलाके खाय ।

अथवा अति उत्तम देवा रुधिर थूकने तथा रुधिर की चूल्ही को गुण करे। नील की कोंपल अनार की पत्तियां और आमले प्रत्येक चार माशे धनियां दो माशे रात को पानी में भिगो कर, प्रातः काल छानकर थोड़ी मिश्री या बूरा मिलाकर पीवें।

अथवा यह काढ़ा दे तो रुधिर थूकने बंद होवे, गिलोय अदुसा की पत्तियां प्रत्येक एक २ तोले औंदा छान कर, सात माशे बबूर का गोद पीसकर मिलाकर पीवें।

अथवा यह थूप दे गुलखैर तोले भर रात को पानी में भिगोकर प्रातः काल पच छान के पीवें।

शर्वत हब्बुलास

रुधिर के थूकने को जो हौलदिली और अतीसार के सग हो गुण करे। हब्बुलास चार तोले आठ माशे बदनचूरा आपले की गुठली निकालकर अनार के फूल प्रत्येक सात माशे सफेद बूर पावसेर की चाशनी करे जब ठंडी होजाय तब बबूर का गोद घून पीसकर ढाछे।

देवा रुधिर थूकने को गुण करे। अदुसे की सूखी पत्तियां चार माशे और जो गीली हों तो तोले भर पीस के शहस में मिलाकर खाय।

अथवा कुकफा का रस सात माशे पीना रुधिर थूकने को गुण करे।

अथवा चौदह माशे गोभी पानी में पीसकर खाय तो रुधिर थूकने और रुधिर की चूल्ही को गुण करे।

अथवा खतमी के बीज छोटी माई-कूट छान पानी में मिलाके पीवें।

अथवा अफ्रीम खाना रुधिर थूकने को गुण करे इस रोग वाला मनुष्य सोरई बीया पालक का साग लाल साग कुलफा बिनी मसूर कचनार और उसकी कोंपल का रस यह सब खाय तो रुधिर थूकने को गुण करे।

फसल कल्प के अमराज के इलाज में

अर्थात् हृदय के रोगों की चिकित्सा में। खफकान अर्थात् हौलदिली इस के दो भेद हैं, एक का पूर्व रूप हृदय में होता है और दूसरा किसी और जगह के मिलने से होता है। जैसे च्चदर फलेजा मस्तक आत्मा इन्दी आदि के मिलने से जो हौलदिली किसी जोड़ के मिलाव से हो तो प्रथम उस मिश्रित जोड़ की चिकित्सा करे और ये मिश्रित की सफाई करे और सादा हौलदिल में प्रकृति का बदल ही बस है।

खमीरा, संदल

गर्मी के हौलदिल को गुण करे। आधपाव चन्दनधूनरा गुलाबजलमें या गुलाबजल न मिलै तो पानी में रात के बक्त भिगोकर भात काल औटाके छान के उस में आधसेर घूरे की चाशनी करे और जो चाशनी पतली हो उसको चन्दन का शर्बत कहवै और जो खटा करना चाहो तो नीयूका रस मिलावो।

शर्बत गावजुवां

जोकि दिलको बलवान करे और हौलदिल को गुण करे। पावभर गावजुवां और सेर पर क्रद लेके शर्बत बनावे।

शर्बत आवरेशम कच्चा रेशम सवा ग्यारह तोले तीन दिन पानी में भिगोकर औटावे जब तिहाई रहे तब तेजपात बालछड़ आठ २ माशे चंदन चूरा इलायची के दाने सोछड़ २ माशे चैली में बांधकर ढाखे फिर तुरन्त मल दान आध सेर क्रद की चाशनी कर शर्बत बनावे।

बिनौले का शर्बत बिनौले गुलाबजल में गुलाबजल न हो तो पानी में भिगोके औटावे जब आधा पानी रहे देने क्रदकी चाशनी कर शर्बत बनावे मात्र। द्वांतोले तक ले तो दिल को अति बलवान करे और मन मसख रखे वहम जखन और हौलदिल होते ही दूर करता है।

शर्बत नारंगी

दिल की गर्मी को दूर करता है। नारंगी का लीरा फांकों में से निकाल कर बीज दूर कर निचोड़ ले उसका निरा रस लेके बराबर का क्रद ढाल चाशनी करके शर्बत बनावे और चाशनी होनाने के बाद थोड़ा गुलाबजल मिलावे।

शर्बत अनन्नास

अनन्नास का रस एक आग और क्रद दो माग लेके शर्बत बनावे और थोड़ा गुलाब और कस्तूरी बड़ावे तो उत्तम और बलवान होगा।

शर्बत वर्गंतबोल

अर्थात् पान का शर्बत—सर्द दिल को बलवान करता है। शूल, कफ और पदाम्नि को दूर करता है। पके पान सौ पीछे फूटकर पानी में औटा छानकर आधसेर घूरे की चाशनी करे यदि थोड़ा गुलाब मिलावे तो अति उत्तम है।

दवाउल्मिस्क वारद

अर्थात् दिवाळमुरक—सर्दी गर्मी के हौल दिल को गुण करे । और दिल को प्रबल करे । जहरमुहरा घिसकर साढ़े तीन माशे, गुलाब के फूल, सूखा धनिया बिना हुआ कुलफा चदन गुलाब में पीसकर मल्येक सात माशे, कस्तूरी पौने दो माशे, गावजुवा और बसकोचन मल्येक साढ़े तीन माशे शहद बराबर ।

अथवा दीवाळमुरक सर्दी गर्मी के हौलदिल को गुण करे । नरकाधुर, बालबड़, छबीला, सोंठ और पीपल मल्येक साढ़े तीन माशे तेजपात बड़ी इलायची मल्येक सात माशे लोंग और कस्तूरी दो २ माशे तिण्णा शहद ।

जवारिश साजज़हिन्दी

अर्थात् तेजपात की बर्फी—सर्दी के हौलदिल को दूर करे और रुह की रसा करे हवास उदर और तिछी को मलदे तथा पसीने की दुर्गन्धि को दूर करे, और आँवों की घाय को पचावे, शरीर को आनंद दे मुह की दुर्गन्धि को दूर करे मस्तक के कीड़े विगड़े मल, जनने के कष्ट और जलंधर रोग को गुण करता है । सवा ग्यारह तोले तेजपात पीस कर पाव सेर सफ़ेद बूरा की चाशनी में ढालके कवरी जमावे मात्रा चौदह माशे तक ।

जवाहर मोहरा

यह नुसखा अत्यन्त सहज है दिल की ताकत को बढ़ाता है । लाख जहर मोहरा घिसा हुआ संम यशव, बिसद मूंगा मल्येक दो भाग गुलाब जल में घिस कर दर्यापी नारियल निर्विषी और बसकोचन मल्येक एक भाग गुलाब में घिस कर सब दवाओं को मिलाकर घोंटे और गोली बनावे और पत्थर पर चिकना कर उनपर सोने का तबक लगावे और चार रसी गुलाब जल में घिस कर पिये ।

चांदनी का गुलकंद

गर्मी के हौलदिल को गुण करे । सौ चांदनी के फूल सवापा सफ़ेद कद में मथकर गुलकंद बनावे और थोड़ासा गुलाब मिलाके चात्तीस रात चांदनी में रखे मात्रा १ तोले ।

सेवती का गुलकंद

पहले सिसानी वैद्योंका आजमाया है यह हौलदिली को गुण करे तथा तपि यस को नर्म करे । सेवती के फूलों की हरी पत्तियाँ दूर करके जीरा निकाल के दूध में मिलावे और राशे में भर के चात्तीस रात चांदनी में रखे और जो द

तीन नग सेवती के फूलों की हरी पल्लवी और जीरा दूर कर के चपाकर खाया तो होतदिल जाय ।

गुडहल के फूलका गुलकन्द

दिल, वरम और बुद्धि को बल प्रदान करे आनन्द को बढ़ावे और होतदिल को निश्चय दूर करे । गुडहल की हरियाली दूर करके दूने क्रद में मलकर रखे ।

हारसिंगार का गुलकन्द

दिल को बल प्रदान करे और गर्मी के होतदिल को दूर करे । हारसिंगार के फूलों की हंड़ी दूर कर के सक्रेद २ ले दूने घरे में मलके शीशे में भर के चालीस रात चांदनी में रखके प्रातः काल एक तोले खाया करे ।

दवा गर्मी के होतदिल को । लालचन्दन छःमाशे, आवले और धनिया पांच पांच माशे, आमपाव पानी में भिगोकर प्रातः काल ज्ञानके दो तोले चार माशे, सक्रेद घूरा ढाककर पिये ।

काढ़ा सदी के होतदिल को गुण करे । गावजुवां सातमाशे, चार लोंग औटाकर थोड़ासा घूरा मिला के पीवे ।

माजून मुक्तवी दिल

आमलोका मुरब्बा, हड़का मुरब्बा दोर नग, गावजुवां सात माशे, घिसा चन्दन साढ़े तीन माशे, गुलाब के फूल सात माशे, बनतुलसी गावजुवां के फूल साढ़े तीन माशे, सेवती का गुलकन्द चार तोले, किशमिश चार माशे, तिगुने क्रद में बनाले

दवा तुर्ष के दूटे चपा के फूल चार नग दो तोले चार माशे शहद में मिलाकर खाय ।

अथवा छोटी कपी के साथ पत्तों का रस पानी में निचोड़ कर क्रद मिला के पीवे तो गर्मी का होतदिल दूर हो ।

अथवा नाजश के तोले भर बीज रात को पानी में भिगो कर हवा में रख प्रातःकाल दो तोले चार माशे घूरा मिलाके चपचा से निगल जाय ।

अथवा तोले भर ईसबगोल का लुभाष निकाल के थोड़ासा घूरा मिला के पीवे ।

अथवा शमी पानी में भिगो कर उसका पानी लेके थोड़ासा सक्रेद घूरा मिला के पीवे तो गर्मी के होतदिल और तबियत के नय करने को गुण दायक है ।

अथवा पान का खाना सर्दी के हौलदिल को गुण करे और अफ्रीमी खाना गर्मी के हौलदिल को दूर करता है ।

विजोरेकी सादा जवारिश

बादी के हौलदिल को गुण करे । उदरके रोगों तथा चलादी आदि को भी गुण करे ।

अथवा चने की दाल चार तोले आठ मासे रात को पांच सात तोले पानी में भिगोकर मातःकाल खूब मलके बूरा मिछा के पीये और खट्टी तथा घातल वस्तु न खाये ।

अथवा रेबद पीनी पानी में पीसकर दोनों कघों के बीच में मले ।

अथवा खुलास्तुलमार बावले ने अपनी मुनरिषात में लिखा है कि जुकन्दर को भूमर में गाढ़ कर थोड़ी देर बाद निकाले उसका दिलका दूर करके गरम २ पत्र उतारे और मिछी पीसकर सब पत्रों पर धुके उनमें से जो मीठा पानी निकले उसे पीये इसी प्रकार कई बार करे ।

अर्क खस

खसका रस निकाल के काम में लावे और जो इसमें सफेद बूरा मिछा के बखर बना के थोड़ा खसका इत्र उसमें मिछा के काम में लावे तो हौलदिल को गुण करे और उदर की गर्मी को शान्ति करे ।

अर्क धनिया

दिलको बलवात करे । मिना हुआ धनिया और गावजुवां दो २ दोले, इलायची के दाने, चमेली के फूल, गावजुवां के फूल, गुलाब के फूल और चन्दन घूरा मलके पांच तोले, अगर तोले भर, कस्तूरी एक मासे, गामका दूध पाव सेर, पांच सेर पानी में भितमा चारे उतना अर्क खींचे ।

खमीरा अब्बासी

अब्बासी के लाल फूल सेर भर लेके अर्क खींचे फिर गुलाब जल और बूरा मिछा के चाशनी करे अब चाशनी हो चुके तब थोड़ा जहरमोहरा और बसलोचन पीसकर मिछा के खमीरा बनावे ।

फसल यशी अर्थात् अचेतनता की चिकित्सा में ।

यश शरीर के शुन्य पड़ जाने को कहते हैं इसके पूर्वरूप को विशेष है । जैसे दिल की निर्बलता पित्त के मुखारों की प्राप्ति और दुर्गन्धि आदि दिल की

तरफ । बहुधा कर अचेतनता में मुरपर उड़ा पानी छिड़के और सुगंधि सुधाव । और जो प्रकृति की गर्मी से अचेतनता हो तो गुलाब जल या पानी में मिट्टी भिगा कर सुधाव और जो सर्दी से हो तो कस्तूरी सुधावे और कोवान का धुआं दे और पांव मलना तथा चलती कराना अचेतनता को गुण करे और आराम करने के समय उसके पूर्व रूप का निदान करके चिकित्सा करे । शेख रईसीने लिखा है कि खीरा सुंधाना अचेतनता को दूर करता है ।

गुण कभी सुपारी खाने से बेहोशी प्राप्त होती है तो तुरंत थोड़ा पानी पीवे और छींक ले और ठंडे पानी से दोनों हाथों की जगलियों के पोछण धोवे क्योंकि सुपारी का फोक खाने से छाती, झिलनाती है परन्तु सुपारी मुर में रखकर उसका रस निगले और फोक थूक दे तो दिलको बलवान करे ।

फ़सल पिस्ता अर्थात् स्तन के रोगों की चिकित्सा में

लेप कि लटके हुए स्तनों को कड़ा करे बड़ी और छोटी कटेरियों की जड़ अनार का झिलका कदरी की जड़ कच्ची मौलसरी पराबर ले महीन पीस कर लेप करे ।

अथवा जो यह पक्का लेप स्तन लटकने के पहले काम में आवे तो स्तनों को लटकने न देवे । कदरु गोंद और फ्रीड़ी जलाकर पीसकर हर महीने में तीन बार लगाया करे ।

अथवा कभी २ चमगीदड़ का कथिर लगाया करे ।

अथवा गिनाई जो चौमासे में होती है चाबीस नग लेके नोन में डाले जब भिलजाय तब सुखतानी मिट्टी मिठाके लगावे, स्तन कड़े हों ।

अथवा बड़की बाड़ी जो जमीन तक लटकती हों उनकी नर्म २ पीली और लाल टहनी लेकर सुखाले और पानी में पीसकर लगावे ।

अथवा लंजाळ और असगद की जड़ नित्य पीसकर लगावे ।

अथवा यह लेप जो दूध की गर्मी और खुरकी के मवाप से जमगया हो उसे बहा देता है । मूग और साठी चावल दोनों को पीसकर गुनगुना कर लगाया करे ।

अथवा मकोय गुलजैक निर्भिषी अक्रोप और गेरु मत्येक एक माशे पीसकर गुनगुना करके लेप करे तो स्तनों की सूजन दूर हो ।

अथवा अनार के छिलकों का तेल मलना स्तनों को बड़ा करना और योनि को सिकोड़ता है। अनार के छिलकों से भर और छोटा माजूफत आघवाव दोनों को जो कुट कर के चौगुने मोठे पानी में औटावे जब चौपा जलप्राय तब उसकी घराघर चिलका तेल मिलाकर औटावे जब जब पान जलकर तेल मात्र रहजाय तब काम में लावे।

अथवा अनार का छिलका और फाऊ महीन पीसकर दूध में मिलावे दिनमें दो बार निर्धिन्न लग वे।

अथवा अरंड की पत्ती सिरके में पीसकर लेप करे।

दवा शीशप की पत्तियां पानी में पीसकर औटाकर सूजन को थोड़ा और उसके पत्ते गरम कर धाँपे।

अथवा यह फक्की दूध को बढ़ाती है सोफ और सतावर बराबर कूट छान फक्की बनावे और चने भिगोकर उनके पानी के संग फाँके तो दूध बढ़ जायगा।

और बाजों ने लिखा है कि चनों को दूध में भिगो कर इनका लेप करे तो दूध सूख जाय काहू के बीज मसूर और जीरा सिरके में पीसकर लेपकरे तो दूध सूख जाय।

फसल मेदे अर्थात् उदर के रोगों की चिकित्सा में

जो उदर की पीड़ा भोजन की गिरानी यानी न पचने के कारण हो तो उसकी चिकित्सा—पानी में नोन डाल गरम करके पिला चलादी करावे। और जब तक लूधा न लगे भोजन न करे और लूधा के समय नर्म और तुर्त पचने वाले भोजन करे।

और जो बाँटी से पीड़ा हो और तबियत फिर तो गेहू की सुसी, खारी नोन तथा बाजरा और काँगरी कपड़े में बाँप के गर्म सूवे पर गरम करार के सेके या गरम रेत से सेके और सादा अजवायन का अर्क पीना गुण करता है।

जवारिशात

अर्थात् वरक्रिया। पीपल की कतरियां बाय रोग को दूर करे और भोजन को पचावे और उदर तथा पैयुन की रुचि को बल देवे और उदर की तरिकों सोखे। पीपल दड़ तोके पीसकर पावसेर बूरे की चाशनी में मिलाकर खावे।

अथवा मोठ की कतरी जमावे तो बादी और उदर की सर्दी की पीड़ा को गुण करे और अज जो पचावे तथा भूत रोग को खोवे और उदर तथा

कलेजे की सर्दी को दूर करती है। डेढ़ तोले सोंठ पीस छान के पावसर घूरे की चाशनी में मिला के कतरी जमावे। घाजे लोग सोंठ को तीन दिन नीबू के रस में भिगो सुखा के पीस छान के चाशनी में ढाल के जमाते हैं और घाजे छः तोले अदरक पीस कर पाव सेर घूरे की चाशनी में जमावे हैं।

अथवा अगर की मीठी और खटी कतरी जमाते हैं वह उदर को पराक्रम देती है और पाचन शक्ति को बढ़ाती है सात माशे खोबान पीस के पावसेर कद की चाशनी कर कतरी जमावे और खट्टी करनी हो तो नीबू का रस मितना चाहे ढाले।

अथवा कुदरुगोंद की कतरी कफ के दस्तों को गुण करे। भोजन को पचावे, उदर की सर्दी को दूर करे। कुदरुगोंद बड़ी इलायची सात २ माशे सोंठ, कुलीजन, अजवायन, घालछड़, कलौजी, छोटी इलायची के दाने, काली मिर्च प्रत्येक साढ़े तीन माशे तिगुने घूरे की चाशनी में जमावे।

अथवा आंवले की कतरी सादा। उदर को बलवान करती है आमले का शीरा सात तोले, गुलाब जल हो दो उत्तम, नहीं तो पानी में निकाछ कर आप सेर घूरे की चाशनी कर डेढ़ तोले मस्तगी मिलावे।

अथवा सादा अजवायन की कतरी भोजन को पचावे तथा क्षुधा को बढ़ावे और पाक्षी को दूर करे अजवायन को नीबू के रस में भिगो कर सुखावे और तीन तोले पीस कर आपपाव घूरे की चाशनी में ढाल कर कतरी जमावे।

अथवा कुलीजन की कतरी सादा बादी को दूर करती है और भोजन को पचाती है और उदर तथा कलेजे को गुण करती है उदर की चरी और खट्टी रुकार और गुरदे की सर्दी की पीड़ा दूर करती है। पावसेर घूरे की चाशनी करके डेढ़ तोले कुलीजन पीस कर मिला के कतरी जमावे।

अथवा कलौजी की कतरी कफ को दूर करती है और उदर की बादी तथा अफरे को पचाती है और जानवरों के विष तथा बावले कुत्ते के काँठ को गुण करे और उदर के कीड़ों को मारती है और स्त्री धर्म तथा, पेगान को खोला देती है और गुरदे तथा ममाने की पयरी को गुण करे और योनि तथा गुरदे की पीड़ा को गुण करती है। घाय और फफ के विषमज्वर को गुण दायक है। डढ़ तोले कलौजी एक रात सिर के या पानी में भिगो के सुखा धू कर पीस छान आपसेर घूरे की चाशनी में ढाल के कतरी जमावे।

जवारिश कपोनी

उदर की पीड़ा को गुण करे। कलौजी और बीन के सात तोले पाल

बड़ काली मिर्च तीन तीन तोले, पपड़िया खार नौमाशे और सध दवाओं का तिगुना शहद लेकर बनालेवे ।

तथा दूसरी बनावे तो उदर की वादी और सर्द प्रकृति को गुण करे, उदर को बलवान करे और भोजन को तुर्ब पचावे । आधपाव स्याहजीरा बिना हुआ, सोंठ तीन तोले, चार माशे, अजवायन, पीपल, घालछड़, तज और पपरिया खार प्रत्येक आठ माशे तिगुने शहद की चाशनी में तयार करे ।

जवारिश मस्तगी

उदर की सर्दी को गुण करे और बल देवे और तुर्ब पचाने वाली है । इसका जुसखा तार वहने में लिख आये हैं ।

जवारिश बच्च उदर की वादी को गुण करती है इसकी विधि स्तन रोग में कह चुके हैं ।

जवारिश पोदीना उदर पीड़ा को गुण करे । पोदीना की पत्तियां पौने दो तोले, सोंठ, अजवायन, काला जीरा दस २ माशे, बड़ी इलायची के दाने, सोंफ, काली मिर्च प्रत्येक साठ माशे तिगुने शहद में कतरी बनावे ।

जवारिश अनीसू उदर को ताकत देती और पचाव करती है और जुवा तथा कफ के दस्तों को गुण करे और उदर की पीड़ा और अफरा और वादी को दूर करे है । इनीसू सिरके में भिगो कर व्याप में सुखावे फिर थोड़ी सी भूनकर तीन तोले कूट जान कर आध सेर शहद में चाशनी करे ।

खवेसल हदीदी अर्थात् लोह के मेलकी कतली जुवा बढ़ाती है और उदर को गुण दायक है और स्त्री प्रसव को प्रबल करती है और क्रांति को बढ़ाती है । और बवासीर को खोती है । काबली हड़का बक्कल, बहेड़े का बक्कल, आमले, सुलहटी, सोंठ, इलायची के दाने, घालछड़, गुलाब के फूल सब बराबर लोहे का मेल, त्रिफला को कूट छान कर घी में तर कर के सध दवा की बराबर कूट तथा शहद में मिलावे मात्रा साढ़े तीन माशे से आठ माश तक ।

इत्रीफल कवीर अर्थात् बड़ा अवलेह उदर को प्रबल करता है अफरा को दूर करता है और क्रांति बढ़ाता है । बड़ी हड़ का बक्कल, काली हड़ का बक्कल, आमरे कूट छानकर घी में मकरो कर पीपल कासी मिर्च प्रत्येक एक तोल नौ माशे, सोंठ, चीता, इन्द्रमौ, गीठे तिल धुवे, पोस्वके दाने सफ़ेद मिर्ची प्रत्येक साठ साठ माशे तिगुने शहद में मिलावे ।

नोज़दारू भोजन को पचाती है और जुधा लगाती है । गुल्ताप के फूल एक तोले नौ माशे, नागर मोया डेढ़ तोले, पड़ी इलायची के दाने चौदह माशे, बालछड़, तगर, कुडीभन, तेजपात मत्येक दस दस माशे, तज, खसमी, मस्तगी बिगौर के छिलका, नरका चूर मत्येक सात २ माशे आमले का रस आधसेर कद सेर भर माजून की विधि से माजून बनावै ।

नोनकी गोली उदर की बादी को गुण करे और उदर को बल प्राप्त करे और हुचकी को दूर करे और भोजन को पचावे है सांभरनोन, सेंधानोन, कालानोन मत्येक तोले तोले भर, पोदोना, नरकाचूर डेढ़ डेढ़ तोला, बड़ी इड़का बकल, बड़ेड़े का बकल, आपरे, पीपल, काली मिर्च, सोंठ, बच, काळा जीरा, सफ़ेद जीरा, लाल नोन मत्येक तीन तीन तोला, बनियां दो तोले चार माशे सोंफ, अमवायन मत्येक छै छै तोले सब कूट छानकर नीबू के रस में भिगा के सुखावे फिर सर तथा सूखे आमले के रसमें पिछा के सुन्दा के कूट छान के नीबू के रस में बेर के प्रमाण गोलियां बंधे ।

अथवा यह गोली तपित को नरम करती है और अग्नि को प्रज्वलित करती है । बड़ी इड़ का बकल, सोंठ, पीपल, अनारदाने, सनाय छेदोदार निसोत मुनक्का मत्येक एक एक भाग कद छै भाग लेके गोलियां बनावै ।

अथवा सनाय की गोली अजीर्ण और अफरा और मंदाग्नि को दूर करती है । सनाय, बड़ी इड़का बकल, कालीमिर्च मत्येक साढ़े तीन २ माशे मुनक्का तीन तोले कूट छानकर पानी में गोलियां बंधे मात्रा आठ माशे की मात्रा काल के समय और जो विशेष चाहे तो दोनों समय ले ।

अथवा सुहागे की गोली जुधा लगाती है और उदर की पीड़ा को दूर करती है सुहागा सात माशे अमवायन तीन तोले काली मिर्च साढ़े तीन तोले पल्लभा चार तोले आठ माशे कूट छान कर ग्वारपाठे के रसमें घोट के गोलियां घना के प्रमाण बनाव मात्रा बादी में तीन गोली और अजीर्ण दूर करने में दो गोली और जिस पुरुष का पेट बढ़ाव उसको गुण करे है ।

अथवा पाचन की गोली, काली जीरी, राई, गुड़ घराघर छेके बेर के प्रमाण गोलियां बनाकर एक गोली पानी के संग निगल जाय ।

अथवा बड़ी इड़ का बकल, सनाय चौदह २ माशे, सोंठ साढ़े तीन माशे, मुनक्का नौ माशे घुरा-डेढ़ तोले कूट छानकर जायफल के प्रमाण गोलियां बंधे मात्रा एक गोली सोते समय ले ।

अथवा हाँस की गोली भोजन को पचाती है और बादी तापतिछी और

चदर के अफरा को दूर करती है । और छुवा लगाती है सोंठ दा भाग, सुना सुहागा, बड़ी हड़का बककल सेंधा नोन हींग प्रत्येक एक भाग सहजने की जड़ को रस तथा ससके पचों के रस में भाड़ी घेर के प्रमाण गोलिया बना कर नित्य एक गोली खाय ।

अथवा बड़ी हड़ का बककल, बहेड़ा, आमला, कालानोन, सनाय बरोबर कूट छान के नीबू के रस में गोलियां बनावे मात्रा दोले भर तथा थोड़ी विशेष जिवनी चाहे बतनी लैनी सोते समय खाय तो छुवा लगे और बिच प्रसन्न रहे ।

अथवा एलुआ की गोली अनीरु को दूर करती है और पेट और पखल की पीड़ा को खोवे । एलुआ, शातरा सात २ मांशे, काली मिर्च, दिगोटा के फल की मिंगी चौदह चौदह मांशे कूट छान कर नीबू के रस में बना के प्रमाण गोली बनावे मात्रा चार गोली गरम पानी के संग लैनी ।

अथवा यह गोली छुवा लगाती है बड़ी हड़ का बककल, सोंफ, पोदीना, सेंधा नोन, खट्टा चूका प्रत्येक एक २ तोले सोंठ, मिर्च, पीपल, चीता अनवायन प्रत्येक सारे तीन मांशे दो जग नीबू के रस में पीस कर गोलियां बनावे ।

अथवा पाचक गोली, काला नोन, खट्टाचूक दो दो तोले, अनवायन दो मांशे लोंग काली मिर्च प्रत्येक मांशे भर सबको कूट छानकर चूके में मिला के गोलियां बनावे मात्रा मांशे भर भोजन के पिछाड़ी लैनी ।

अथवा अमलबेद की गोली भोजन को पचाती है छुवा लगाती है और वायसूल और जलघर के रोगों को गुणदायक है और वाय को पचाती है पीपल, हड़, पांचों नोन आदि को नीबू के रस में तथा खट्टे की खटाई में भावा करके एक खट्टा को भीतर से खाळी करके उसमें यह दवा भरे और खट्टे के दो भेद हैं एक तो हरा खट्टा कि जिसमें सुई घरे तो गल जाय और दूसरे में खटाई और तेजी कम होती है ।

गोली अनीरु और बक और वाय और चदर की सर्दी को गुण करे है और बहुधा करके दूध पीने वाले बच्चों को गुणदायक है काली हड़ चार तोले आठ मांशे नरकाचूर सोंफ प्रत्येक दो दो तोले चार चार मांशे सुना सुहागा चौदह मांशे कूट छान कर बना के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा एक गोली ।

अथवा नोन की गोली घादी को खाती है और भोजन पचाती है और विस्त्रुचिका को गुण करती है। सेंधा, नोन, नमक, इद्रायनी, सांभर नोन कालानोन, पोदीना, बड़ी हड़ का बक्कल, बहेड़ का बक्कल, आमले, सोंफ, अजवायन प्रत्येक साढ़े तीन माशे, स्याहजीरा, सफेदजीरा, चीता, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, सुहागा, नोसादर, सनाय, मक्की प्रत्येक छैः छैः माशे मुनी हींग एक माशे सबको महीन पीस कर चौबीस नग नीबू के रस में घोट कर के भाईं घेर की बराबर गोलियां बनाके एक गोली नित्य खाया करे।

अथवा यह गोली उदर की घादी को दूर करती है। बड़ी हड़ का बक्कल, सोंठ, कालानोन बायबिड़ग, चीता, हींग सब बराबर लेकर कूट छान कर तिगुने गुड़ पुराने में मिलाके छ छः माशे की गोलियां बनाके मात'काल के समय गुनगुने पानी के संग खाये।

अथवा कालानोन की फली पचाव करती है और जुधा लगाती है अजवायन, चीता प्रत्येक दो दो तोले पीपल सात माशे बड़ी हड़का बक्कल सात माशे सोंठ साढ़े तीन तोले, कालानोन पौन पाव कूट छान कर नीबू के रस में तीन बार घोट के सुखावे मात्रा सात माशे।

हरीरा कि उदर की पीड़ा को गुण करे कसूयों के बीजों की मिर्गी एक तोले पानी में शीरा निकालकर दो तोले बूरा मिलाकर हरीरा पकाकर गुन-गुना २ पीवे।

अथवा यह दवाई भूख को अति उत्तम है लालमिर्च नीबू के रस में चालीस दिन तक घाटे और दो रत्ती के प्रमाण पान में रखकर खाये।

अथवा दो तोले चार माशे सोंठ, चौदह माशे सोंफ, साढ़े तीन तोले कूट, छानकर नीबू के रस में टिकिया बनावे तब को फोले की आग पर गरम करके टिकिया को उस पर रखे जब छाल होनाय पीसकर जितनी चाहे जतनी खाये।

अथवा सिरस की पत्तिया, काली मिर्च बारह नग पीस कर पीवे दो उदर की पीड़ा जाय।

अथवा अजवायन, कालानोन, भांगरे के रस में मिला के खाये।

अथवा राम पत्रों कि रूप और स्वाद में जायित्री क तुल्य होती है ताने भर लेके खरल में घारीफ पीसकर उस में पारा मिला के फिर दो परर तक घाटे जब रूप मिलजाय तब मात'काल के समय एक दो चौबल के प्रमाण पान

उदर के अफरा को दूर करती है । और छुषा लगाती है सोठ दू भाग, सुना मुहागा, बड़ी इड़का बक्कल सेंधा नोन हींग प्रत्येक एक भाग सहजने की जड़का रस तथा लसके पत्तों के रस में झाड़ी घेर के प्रमाण गोखिया बना कर नित्य एक गोली खाय ।

अथवा बड़ी इड़ का बक्कल, घहेड़ा, आमला, कालानोन, सनाय परावर कूट छान के नीबू के रस में गोखिया बनावे मात्रा तोले भर तथा थोड़ी विशेष जितनी चाहे उतनी जैनी सोसे समय खाय तो छुषा लगे और चिच प्रसन्न रहे ।

अथवा एलुमा की गोली अजीर्ण को दूर करती है और पेट और पहलू की पीड़ा को खोवे । एलुमा, शातरा साध, २ माशे, काली मिर्च, हिंगोटा के फल की भिगी चौदह चौदह माशे कूट छान कर नीबू के रस में चना के प्रमाण गोली बनावे मात्रा चार गोली गरम पानी के संग जैनी ।

अथवा यह गोली छुषा लगाती है बड़ी इड़ का बक्कल, सोंफ, पोदीना, सेंधा नोन, खट्टा चूका प्रत्येक एक २ तोले सोंठ, मिर्च, पीपल, चीता अजवायन प्रत्येक साढ़ तीन माशे दो नग नीबू के रस में पीस कर गोखिया बनावे ।

अथवा पाचक गोली, काला नोन, खट्टाचूक दो दो तोले, अजवायन दो माशे कोंग काळी मिर्च प्रत्येक माशे भर सबको कूट छानकर चूके में मिला के गोखिया बनावे मात्रा माशे भर भोजन के पिछाड़ी जैनी ।

अथवा अमलबेद की गोली भोजन को पचाती है छुषा लगाती है और वापसूल और जलंधर के रोगों को गुणदायक है और वाय को पचाती है पीपल, इड़, पाँचों नोन आदि को नीबू के रस में तथा खट्टे की खटाई में मावा करके एक खट्टा को भीतर से खाली करके उसमें यह दवा भरे और खट्टे के दो भेद हैं एक तो हरा खट्टा कि जिसमें सुई घरे तो गल जाय और दूसरे में खटाई और सेजी कम होती है ।

गोली अजीर्ण और कफ और वाय और उदर की सर्दी को गुण करे है और बहुत धार के दूध पीने वाले बच्चों को गुणदायक है काली इड़ चार तोले आठ माशे नरकाचूर सोंफ प्रत्येक दो दो तोले चार चार माशे सुना मुहागा चौदह माशे कूट छान कर चना के प्रमाण गोखिया बनावे मात्रा एक गोली ।

अथवा नोन की गोली घादी को खोती है और भोजन पचाती है और विमूचिका को गुण करती है। सेंधा नोन, नमक, इद्रायनी, सांभर नोन कालानोन, पोदीना, बड़ी इड़ का बक्कल, बहेड़ का बक्कल, आमले, सोंफ, अजवायन प्रत्येक साढ़े तीन माशे, स्याहजीरा, सफेदजीरा, चीता, सोंठ, काळी मिर्च, पीपल, मुहागा, नोसादर, सनाय, मक्की प्रत्येक छैः छैः माशे छुनी हींग एक माशे सबको महीन पीस कर चौबीस नग नीबू के रस में घोट कर के भाँड़ों बेर की घरावर गोखियाँ बनाके एक गोली नित्य खाया करे।

अथवा यह गोली उदर की घादी को दूर करती है। बड़ी इड़ का बक्कल, सोंठ, कालानोन बायबिड़ग, चीता, हींग सब घरावर लेकर कूट छान कर तिगुने गुड़ पुराने में मिलाके छ छः माशे की गोखियाँ बनाके मात काल के समय गुनगुने पानी के संग खाय।

अथवा कालानोन की फली पचाव करती है और जुधा खगाती है अजवायन, चीता प्रत्येक दो दो तोले पीपल सात माशे बड़ी इड़का बक्कल सात माशे सोंठ साढ़े तीन तोले, कालानोन पौन पाष कूट छान कर नीबू के रस में तीन बार घोट के सुखावे मात्रा सात माशे।

हरीरा कि उदर की पीड़ा को गुण करे कसूरों के बीजों की मिर्गी एक तोले पानी में शीरा निकालकर दो तोले बूरा मिलाकर हरीरा पकाकर गुन-गुना २ पीवे।

अथवा यह दवाई भूख को अति उत्तम है लालमिर्च नीबू के रस में चालीस दिन तक घाटे और दो रत्नी के प्रमाण पान में रखकर खाय।

अथवा दो तोल चार माशे सोंठ, चौदह माशे सोंफ, साढ़े तीन तोले कूट, छानकर नीबू के रस में टिकिया बनावे सबे को कौँले की आँच पर गरम करके टिकिया को उस पर रख जब छाल होजाय पीसकर जितनी चाहे उतनी खाय।

अथवा सिरस की पचिया, काली मिर्च बारह ११ पीस कर पीवे तो उदर की पीड़ा जाय।

अथवा अजवायन, कालानोन, भांगरे के रस में मिला के खाय।

अथवा राम पत्रो कि रूप और स्वाद में जामुनो के तुल्य होती है घाले गर लेके खरल में मारीफ पीसकर उस में पारा मिला के फिर दो पहर तक घोटे जब रूप मिलजाय तब मात काल के समय पच दो चानल के प्रमाण पान

में घर कर खाया करे और जाड़ों की श्रुत में चालीस दिवस पर्यंत खाये सब रस का गुण मालूम पड़े और कच्चा पारा भी औगुन नहीं करेगा यह औषधी क्षुधा को बहुत बढ़ाती है ।

अथवा

अज्रघायन प्रथम ग्वारपाठे के रस में भिजो कर सुखाले पश्चात् नीबू के रसमें सात बार भिगोकर सुखाव जितनी चाहे चतुर्मी खाये ।

अथवा त्रिकुश कूट छान कर खाये तो वादी जाय और भोजन पचै ।

अथवा चित्र चातक अर्थात् चार औषधी तन, त्रेप्रपात, नोग केसर, इच्छायची सब घराघर कूट छान के चूरन बना के उसकी घराघर कद मिलाके फाँके तो उदर को गुण करे और वाय को दूर करे है ।

अथवा नागरस क्षुधा लोभावे है और स्त्रो मसग को बल करती है और स्वांस कांस को दूर करे है एक तोले नौ माशे शीशा गूँठा कर उसमें थोड़ी थोड़ी पिमी हरताल बुके और लोहे के दस्ता से चलावे जाय फिर चत्तार कर ठंडा कर पीछे फिर गूँठा के चौदह माशे हरताल की चुटकी बुके इसी प्रकार चार बार गला कर चार तोले आठ माशे हरताल की चुटकी दे उसके पीछे दो तोले चार माशे पारा और चौदह माशे शुद्ध तावा रिसा हुआ मिला के तुलसी के रस में चार पहर घोंटे और दो सफोरों में रख कर कपरोटी बड़ा कर गजपुट की आँच में फूँक जब स्वांग सीधक होजाय तब निकाल कर गुआर पाठे के रस में चार पहर खरक करके फिर आँच दे फिर मांगरे के रस में घोंटे चार पहर गजपुट में फूँके फिर आँच रची पान में रखकर खाये और गजपुट एक गज ओंठे गजपर गदेला को कहते हैं ।

अथवा पचकोल अर्थात् पाच दवा पीपल, बहेड़ा, मूलचात, चीता, सौंठ, कूट छान कर फक्की बनावे तो क्षुधा पैदा करे और वाय कफ को दूर करे ।

अथवा अड़ो के पत्तों का तेल वाय की उदर पीड़ा को गुण करे और के पत्तों का रस निकालकर घराघर के तेल में औंटावे जब रस जलजाय और तेल मात्रा रह जाय तब चत्तार कर पेट पर मले ।

अथवा सोया के पत्तों का तेल सरदी की पीड़ा को दूर करता है और वादी को गुण करे है सोया के पत्तों का रस और उस का आधा तेल तिखी का लेके औंटावे और घाँगे चौया भाग का तेल डालते हैं ।

अथवा नकदिकनी का तेल भुख को गुण करे है सूखी नकदिकनी चार

सेर पीसकर छानकर दस सेर अदरक के रसमें घोटके टिकिया कर दस सेर घी में भून कर जब टिकिया जल जाय घी को छानकर रख और चसमें से दो माशे खाया करे ।

अथवा यह फक्की पेट की पीड़ा को गुण करे त्रिफला त्रिकुटा हींग सेंधा नोन पीपलामूल, नाखूना, चीता, चाव, बराबर कूट छानकर फक्की बनावे मात्रा साढ़े तीन माशे स सात माशे तक देनी ।

अथवा सोंठ का चूरन चदर की तरी को दूर करता है और सुधा लगाता है । सोंठ तीन तोले, सोंक डेढ़ तोले, मस्तगी दस माशे बराबर की मिथी मिलाकर चूरन बनावे ।

अथवा सनाय की फक्की पेट की पीड़ा और पायसूज के दरद को गुण करे है और पाय पित्त कफ तीनों दोषों को निकाले है सनाय, यक्की, बड़ी इड़का बक्कल, काला नोन बराबर कूट छानकर चूरण बनावे मात्रा दो तोले की गरम जल के सग लेनी ।

अथवा यह चूरन खाय तो भूख लगे काला नोन, काली मिर्च, पीपल मत्येक दो तोले चार माशे भुना सुहागा चौदह माशे, नीधू के रसमें बारह पहर घोट के मात्रा चार रत्ती से एक माश तक भोजन के पिछाड़ी लेनी ।

अथवा आमले, काबली इड़ मत्येक डेढ़ तोले, पीपल, चीता सेंधा नोन बराबर कूट छानकर साढ़े तीन माशे की मात्रा लेनी ।

अथवा काली मिर्च, अजवायन, चीता, पीपल मत्येक दो २ तोले चार २ माशे बड़ी इड़ का बक्कल तीन तोले, काला नोन पोनपाव, कूट छानकर तीन बार नीधू के रस में घोटकर सुखाले मात्रा साढ़े तीन माशे ।

अथवा बड़ी इड़का बक्कल तीन नग, दो माशे सेंधा नोन, कूट छान कर चूरन बनावे एक तोले भर मुनक्का के सग खाय तो अमीर्ण दूर होय ।

अथवा लोंग, काला नोन, पीपल, काली मिर्च, सोंठ गुच्छा के फूल, भुना नौसादर बराबर कूट छान कर खाय मात्रा साढ़े तीन माशे ।

अथवा अनारदाने का चूरन सुधा लगाता है और चदर को बलवान करता है और दस्तों को रोकता है अनार दाने, पावसेर, सोंठ, कीरा सफ़ेद मत्येक चौदह २ माशे सेंधानोन तीन तोले, सबको कूट छानकर तोले भर से न्यूनाधिक खाय और औषधी को बहुत महीन न करे ।

अथवा यह चूरन भोजन को पचावे और तविषय को नरम करे। पोस्त, हलेलाजर्ट घड़ेका घक्कल, आपरे, सुफेद ज़ीरा, सोंफ, काला नोन, सनाय प्रत्येक तोले तोले भर सोंठ छैः माशे चूरन बनावे मात्रा छै माशे सोते समय खाये।

अथवा नोन भूनकर दो माग सोंफ लेकर पोदीना सातरा और योड़ी सोंठ और हींग और काली मिर्च मिलावे।

अथवा पानका अर्क उदर की पीड़ा को गुण करे और अग्नि को दीपन करे है। पान दो सौ नग, तेजपात आपपाव, बाळछड़, अजवायन, सोंफ छटांक ३ भर इलायची के दाने आपपाव पोदीना की पत्ती कुलीजन नरकाचूर प्रत्येक दो २ तोले चार २ माशे इलायची के दाने कुलीजन नरकाचूर तीनों जैकूट करके रातको पानसेर पानी में सब दवाइयों के संग में भिजोवे प्रात काल पान मिला के अर्क खींचे।

अथवा यह टिकिया उदर को पल प्राप्ति करे है। लोहपान चौदह माशे, बिजौरै का छिलका दस माशे, छोंग, मंस्तगी, बाळछड़, इलायची, जावित्री, प्रत्येक मात सात माशे कूट छानकर गुलाब के जल में टिकिया बनावे मात्रा सात माशे बहुधा यह टिकिया गरीबों के योग्य नहीं हैं परन्तु किताब वाले ने जो एक गरीब की मन्दोग्नि दूर करने के वास्ते बनाई थी सो गुण किया इस कारण लिखी है।

शरवत संवलताय अर्थात् बालछड़ का शरवत।

सरदी के रोगों और जिगर के रोगों को गुण करे है। बालछड़ छैः तोले देढ़ सेर पानी में औंटावे जब आपसेर पानी रहे तब सेर भर सहद की चाशनी करे।

अथवा यह लेप पेट की पीड़ा और इन्द्री की पीड़ा को गुण करे है मुसे की मेंगानियां जो पसारी की दुकान से मिलें, वो उत्तम हैं नहीं तो जिस स्थान में मिलें वहां से छैनी और उसकी बराबर सोंफ लेके पानी में पीस कर गुनगुना २ लेप करे।

अथवा निर्मली पानी में पीस कर लेप करे। निर्मली के लगावे तो पेट की पीड़ा जाय।

अथवा कालेतिल अमवायन बड़ी हड़ का बषकल खारीनोन सिरके में मिला के सेक करे ।

अथवा यह घूरन सदर की सरदी और पन्दागिन और कलेमे की निर्बलता को गुण करे है ढाई सेर शरबत रैहां आधसेर शहत, मिर्ची, घालवड़, आठ माशे लौंग आठ माशे बड़ी छोटी इलायची के दान प्रत्येक छै छै माशे जोहवान सोले भर दाखचीनी सोले भर, सौंठ काळीमिर्च प्रत्येक आठ आठ माशे केसर दो तोले, कस्तूरी माशे भर, अगर डेढ़ तोले सब को जौकुट कर क पैली में बाध कर रैहां क शरबत में दो दिन तक चांदी तथा चाँचे के कलई-दार वासन में भिजोवे फिर शहत में सफ़द बूरा मिलाकर चाशनी पकावे और पैली को बार बार मसलते रहें फिर केसर और कस्तूरी और अगर उसमें मिलावे और बाजो मनुष्य काळीमिर्च के बदले पीपल मिलावे हैं ।

अथवा गुलकंद बूरा कि सदर को बल बढ़ाता है और मानन को पचाता है और तबियत को नरम करे एक भाग गुलाब के फूल, दो भाग बूरा मिला के चालीस दिन तक घूप में बरे और घूरे के बदले शहत मिलावे उसको गुलकंद असली कहते हैं ।

फ़सल हैजे के इलाज अर्थात् विसूचिका

की चिकित्सा में

जब कि आहार सदर में सड़नाय तब उसको चलाटी और दस्तों क द्वारा निकाले और जब तक वह सड़ा भोजन सब न निकल जाय तब तक बंद न करे और जिस मनुष्य को अत्यन्त तृषा लगे और गरमी विशेष मालूम हो और हरे हरे पित्त पटके तो उसे कदापि गरम औषधी देना उचित नहीं है और पानी के बदले गुलाब जल सोंफ़ का अर्क तथा मकोय का अर्क पिलावे और इस रोग में बहुत और भोजन न करे ।

अथ हैजा की गोली

आक की लड़ घराबर के अदरक के रस में घोट के काळी मिर्च के ममाण गोळियाँ बनावे एक गोली विसूचिका वाले को देनी जो असाध्य भी दा ता भी गुण करे ।

अथवा यह फादा द'तो विसूचिका जाय सोंफ़ दस माशे पोदीना साठ माशे लौंग चार नग गुलकंद दो तोले आटाकर पीसे या चाँच हयात घिसकर पीवे ।

अथवा नरकाचूर औटाकर पीना हैजे को गुण करता है।

अथवा छोटी इलायची का छिलका एक तोले या दो तोले जो गुच्छा जड़ हो तो उत्तम है नहीं तो आधसेर पानी में औटाकर जब आधा रहे तब पीवे तो हैजा जाय।

अथवा पेठे के फूल छै माशे पीसकर विसृचिका घाले को पिछावे तो तुरंत आराम हो जाय।

अथवा सरफोका की जड़ दो माशे पानी में घिसकर पीये।

अथवा कीला कपड़ा जलाकर मनुष्य के मूत्र में मिलाकर पीवे और यह वर्णन हो चुका है कि जब मनुष्य को विसृचिका होती मादूम पड़े तो उसी समय अपना मूत्र पीले तो विसृचिका का रोग न हो और बहुत से मनुष्य ऐसा ही कर्म करते हैं।

अथवा पांच माशे खरहटी की जड़ पानी में घिसकर पीवे तो विसृचिका जाय जो लालमिर्च का बीज एक नग मोम में गोली बनाकर खपावे तो विसृचिका जाय।

अथवा तवली थोड़े पानी में पांच नग काली मिरच के सग पीसकर पिछावे जो चरटी हो जाय तो अति उत्तम है।

फसल चकही की चिकित्सा में

जो भोजन के पीछे बराबर हुचकियां आवें तो चलाटी करडाछे और हाथ पांव का बांधना गुस्सा डर और खुशी तुरंत धिच में ले आना और अचानक मुंह पर ठंडा पानी छिड़कना और छींकना और हरकत मालूम करना और स्वास रोकना और उदर और कंधों पर बिना पछने के सींगी लगाना हुचकी को दूर करता है।

अथवा यह दवा हुचकी को उत्तम है कलौंजी तीन माशे, पीसकर साढ़े तीन माशे माखन में मिलाकर खाय।

अथवा काळे उर्द हुचका में धरकर तमाखू के प्रकार पीवे या चने पीवे।

तथा अरहर की भुसी तमाखू के प्रकार हुचका में पीवे।

अथवा भूक हुचका में पीना हुचकी दूर करता है।

अथवा नारियल की डाढ़ी जला के उसकी राख पानी में मिलावे जब

राख पानी क नीचे बैठजाय तब उसका मितरा पानी लेके पीवे ।

अथवा गोर के पर जला के तीन माशे शरद में मिला के चाटे ।

अथवा धुशारी का जोरा औटाके पीवे ।

अथवा छप्पर की पुरानी रस्सी हुक्का में धरकर पीवे ।

अथवा बधूर के सूखे कटि वा गाँले आघसेर पानी में औटाके जब आघ पाव पानी रहे तब ज्ञान के घोड़ासा शरद मिलाके पीवे और जो शरद न होय तो भी उत्तम है ।

अथवा टाट जला के उस की राख चार माशे पानी में मिला के फिर उस पानी को ज्ञान के पीवे ।

अथवा जमालगोटा हुक्का में धरके पीवे तो बादी की हुचकी जाय ।

अथवा दो तीन माशे हींग, चार नग चादाम की पींगी मिलाके पीस के पीवे ।

अथवा जोरा सिरकमे औटाकर पानी त्रया और हुचकी को दूर करता है और आम की सूखी पत्ती चिलम में धरकर पीवे ।

अथवा पोदीना धूरे में मिलाके चाबें अथवा यह दवा ड्वर की हुचकी को दूर करे है सिकंजवी पानी में घोल के पिछावे तो दोष उलटी करने से दूर हो जायगा, पच जायगा ।

अथवा कोयल के बीज पीसकर पीना हुचकी को दूर करता है ।

अथवा कासनी के बीज उर्द के चून में सड़ा चमड़ा मिलाके हुक्का में धर के पीवे ।

अथवा कुंदरु गोंद की टिकिया बादी की हुचकी और पेचवाँ और अफरा तथा जोखों के फूलजाने, भीषर से इन रोगों को गुण करे है । कुंदरु गोंद साढ़े तीन माशे, तम्र, पोदीना, भजवायन, नागरमोया, छोटी इलायची के दाने, सोंफ मल्लेक साढ़े तीन माशे लोके पानी में टिकिया बनावे ।

अथवा गिरी धूरे में पीसकर दें और यह भी कहा है कि जो दूध पिलाने वाली के ऊपड़ों का एक टुक लोके पानी में भिजोके बच्चे की कनपरी पर लगावे तो हुचकी बंद होजाय अथवा रीठा बच्चे के कंठ में छटकावे ।

फसल अतः अर्थात् विशेष त्रपा की चिकित्सा में।

बहुधा करके त्रपा गरमी से लगती है उसकी चिकित्सा कुलफा के बीजों का शीरा तथा सिकजवीन सादा पीवे।

अथवा इसवगोल का लुआब नीलोफर के शरबत में मिलाकर दे और नीबू का शरबत और उसका रस त्रपा को बुझाता है।

दवा त्रपा और वमन को दूर करे पीपल की छाल जला के पानी में डालें जब गाढ़ बैठजाय उसका नितरा पानी लोके पीवे।

अथवा कमलगट्टा, जो कुठ करके जिस बर्तन में लड़का पानी पीता होय हाछे दे और वही पानी बच्चे को पिलावे और वह हरी पींगी जो कमलगट्टा में होती है पीसकर बच्चे को पिलावे तो गरमी की त्रपा जाय।

अथवा नीबू की पचिया पिंडोला की माटी में मिलाके गोला बना के आंच में डालें जब खूब गरम होजाय तब पानीमें उड़ा करके वह पानी पिलावे और जो त्योंस हो ता आरने कड़ा जलाकर उसकी राख कांसी के बासन में डालें फिर उसमें पानी मिलाके उस बर्तन को प्यासे की दूदी पर घेर तो उस समय जलन और गरमी और त्रपा दूर होजायगी।

अथवा आमले और कत्या मुह में रखे तो त्रपा जाय।

फसल दूध और रुधिर उदर में जमजाने की चिकित्सा में।

जो पेट फूलजाय और अचेतन्ता होय और शीतल पसीना होय तो यह उसके लक्षण जानने और कभी जाड़े का उबर हो और कभी खाली उबर हो आवे और जिसने रोग से प्रथम दूध पीया हो तो चिकित्सा उसकी इस भाँति से करे।

अजीर की लकड़ी की राख करके ताजे पानी में मिलावे जब गाढ़ नीबू बैठ जाय तब उस पानी को नितारले फिर उसमें राख मिलावे इसी प्रकार सात घेर करके उसको निर्मल पानी पिलावे और जो वमन करेगा तो अति उत्तम है।

अथवा पोदीना के अर्क में घूरा मिला के वा पोदीना सूखा ही पीस के खाय तो रुधिर जमना दूर होय।

अथवा खुरकदाना पानी में पीसकर खिलावे।

अथवा दो थोले चार माशे राई पानी में पीस के पीवे तो रुधिर को न जमने दे।

अथवा धन भून क खारी, नौन पिलाके काम में छावें तो गुण करै और
फपूतर के बच्चे की हड्डो भूनकर चावना गुण करै

**फसल फिसाद राहवत अर्थात् माटी, कोइला खाने
को मन चले तो इसकी चिकित्सा में**

उदर की सफाई करै और जो साढ़ तीन माश अजमायन नित्य खाय तो
यह राग जाय ।

फसल गिसियान और तिहके हलाज में

अर्थात् जी मचलाने और उषाकी खाने की चिकित्सा ॥ जी मचलाना तो
वमन की आदि है और उषाकी इस प्रकार होती है कि चित्त वमन करने को
चले पर कोई वस्तु न निकल और वमन यह है कि उदर में स कोई वस्तु मुंह
के द्वारा निकलै ।

जिस समय वमन विशेष हाय और बदन होय तो मल्लेक के पूर्वरूप
और लक्षण और चिकित्सा उसकी इस पुस्तक में लिखी है और क्रिया सहज
से उसकी यह है कि थोड़ासा गरु लेक आग में गरम करके दा तीन बेर पानी
में बुझावें और वह पानी पिलावें ।

गोली भित्ती और वमन को गुण करे फपूर कचरी छूट छानकर मूग
के ममाण गोली बनाकर दो तीन गोशियां खाय ।

अथवा रीठा की मिमी तीन चार घड़ी पानी में भिगोवें जब नरम हो
जाय तब थोड़ा २ चाय ठा भित्ती जाय ।

अथवा माव का पुराना दीया आंच में जलावें जब तौ उसकी बुझ
जाय तब पानी में उड़ा करके उस पानी में से थोड़ासा पीवें तो अत्यन्त वमन
और उषाकी बन्द होय ।

अथवा इस गोली से पुरानी भित्ती दूर होय भूरबेरी की गुठली की
मिमी तुलसी की पत्तियां मिमी मल्लेक साढ़ तीन माशे कालीमिर्च पौन दो पाशे
छूटछान कर पानी में जगला घर क ममाण गोशियां बनाकर एक गोली खाय ।

अथवा यादो माखी की पीट गुह में मिला के खाय तो वमन बंद होय ।

अथवा साठो चावल पानी में भिगोवें वह पानी लकर पीवें तो मदिरा
के पान करने की वपन की विशेषता दूर होय ।

अथवा सादाप का शीरा पानी में निकाल कर पीवें तो वमन बंद राय ।

पह कानून में लिखा है।

अथवा नीम की ढाली कि उसमें पत्ता भी होय भूमल में गाढ़े कि जब गरम होजाय पीसकर छानकर पीवें तो वमन और मितली दूर होय।

अथवा टाट जलाकर उसकी राख पानी में ढालें जब राख नीचे बैठ जाय तब वह पानी नितारकर पीवें।

अथवा इमली मुह में रखें तो घाय की मितली और वमन दूर होय।

अथवा अनारदाना मुनक्का मत्येक सात २ मासे कालाजीरा एक मासे पीसकर थोड़ा २ दें।

अथवा पीपल की लकड़ी तथा सूखी झाड़ जला के इसकी राख एक तोले लेके माटी के वासन में सद पानी में मिला के जब गाढ़ उसकी नीचे बैठ जाय तब उसको नितार पानी लेके पीवें तो वमन बंद होय।

अथवा दो बत्ताशों को घी गरम करके उसमें ढालें फिर निकाल ठंडा करके एक बत्ताश एक घड़ी ठहर कर स्वाय तो कफकी वमन को गुण करे है।

अथवा बड़ही ढाढ़ी जलाकर उसकी थोड़ी राख स्वाय तो वमन बंद होय।

अथवा इलायची की जवारण वमनको बंद करती है और पाचक है और चर्दर को बलवान करती है अगर इलायची छोटी होय तो उत्तम है नहीं तो बड़ी लेय। साढ़े छे थोके पीसकर पावसेर घूरे की चाशनी करे और जो उसमें गुलाबजल मिलावें तो अति उत्तम है।

अथवा खट्टे नींबू का सादा शरबत वमन को आराम करे है। बहुधा करके वायु के वमन को खट्टा नींबू का रस सवा तीन छटाक सेर भर घूरे की चाशनी करे।

अथवा इमली का शरबत वाय की वमन को गुण करे, और चर्दर को बल प्राप्त करे है और गरमी के ज्वर को गुण करे इमली के चीया निकाल के उस से आधा घूरा मिला के पानी में भिजोव फिर छान के उसका पानी लेके दूने घूरे की चाशनी करे।

अथवा अनार का शरबत वमन को बंद करे भीठे अनार का रस और परापर के घूरे में चाशनी करे।

अथवा शरबत कालसा बादी के वमन और उबाकी को गुण करे है और चर्दर को बलवान करे है अनार के शरबत के तुल्य है गरमी ज्वर और

घबिर के किसाद को गुण करे है और स्वाद का है भोजन के सग मी खाप काले रंग का मीठा फालसा का रस पानी तथा गुलाब में मिलाकर खानकर दूने क्रद में चाशनी करै ।

अथवा साढ़े तीन माशे बालछद पानी में पीसकर काम में लाना कफ की वमन को गुण करै है ।

अथवा नागरमोथा खाना वमन को गुण करै है ।

अथवा पोदीना हरा आपसेर देड़ सेर पानी में औंठाकर जब आघार है एक सेर क्रद की, चाशनी करै, और साढ़े तीन माशे मस्वर्गी पीसकर मिलावे तो मितली बराकी और हुचकी को गुण करै है ।

अथवा मिर्च की गोली कि हिन्दू मनुष्य उस को मिर्चा और गुटका कहते हैं वमन और मितली को दूर करै है और पाचक धुवा लगावे है कालीमिर्च साढ़े तीन तोले पीपल पोने दो तोले अनारदाने साढ़े तीन तोले जवाखार साढ़े चार माशे कूट खान कर गुड़ में गोली बनावे मात्रा साढ़े तीन माशे

फसल जिगर की बीमारियों का इलाज

इस्तसका अर्थात् जलघर और इसकी आदि को स्यूलकीना कहते हैं और उसका पूर्व रूप यह है ऊपरी सरदी के सब दाप जोड़ों में आनाते हैं और जलघर के तीन भद हैं लहमी, जकी, तबली । छहमीमें सब जोड़ोंपर सूजन आ जाती है फलेजे की निर्भलता उसका पूर्व रूप है और जकी में पेट बढ़नाता है त्वचा भारी हो जाती है जिस समय स्पर्श करें तो भारी पश्कक तुरन्त मालूम होय और तबली में पेट बढ़ जाता है और टूही निकल आती है और जब पेट पर हाथ मारे तो तबल सदृश शब्द मालूम होय लहमी अर्थात् बातोदर असाध्य है यूनानी कित्ताबों में इसकी चिकित्सा में लिखा है कि पानी न पीव पानी के बदले सोंफ तथा मकाय का अर्क पीवें जो पानी पर विशय चित्त चले तो गरम करके पीवें पर थोड़ा २ पीवें और आहार शोर्वा और जो रोगी को कठ तक गरम बारू रस में गाड़ दे तो गुण शरे है और सूर्य की तरफ पीठ करके धूप में बैठ तो गुण करे और इतना व्यायाम करे कि जिसमें पसीना निकल आवे यह भी गुण दायक है ।

अथवा रेवतचीनी का शरबत बातोदर को गुण करे है । रेवतचीनी देड़ तोल, कासनी के बीज दो तोले, कासनी की जड़ तीन तोले, सोंफ, शुद्ध लाख मत्पेक सात २ माशे, कूट पाष सेर लेकर शर्वत बनावे मात्रा दो तोला ।

अथवा यह दवा दे पुराना लोहे का मैल सत्रह तोल तीन बर वछिया के पेशाब में भिजोवे और तीस बर मठा में और तीन बर कड़व तेल में घुसा कर कूट छान कर दस सर वछिया के पेशाब में मिलाकर लोह की कड़ाही में डाल कर चूल्ह पर बरे जब पेशाब जल जाय और नोन सा जप जाय जब पौने दो माशे उस में से लेकर खावा करै ।

अथवा यह काढ़ा द अजपायन, सोंफ औटाकर पिलावे तो बिना इरारत के वह पित्तोदर को गुण करे ।

अथवा साढ़ तीन तोल बना पाब सेर पानी में औटा कर जब आभा रहे छानकर पीव तो जलघर की आदि को गुण करे है ।

अथवा यह गोली जलघर को गुण करे आक के पचा हरे हरे पाब सेर, चौदह माशे इलदी, दोनों पीस कर उर्द ममाण गोली बनावे नित्य चार गोली सदै पानी फ सग खाय और नित्य एक गोली बढ़ात जाय कि सात गोली तक पहुचावे और बाकी किताबों में इस प्रकार लिखा है व्यालीस नग आक के पचा दो माशे इलदी बरकी लकड़ी का कोयला पांच माशे खूब महीन पीसकर घोट के खूब गरम करके उसमें मिलाकर उर्द के ममाण गोळियां बनावे सुपेद दाग लिये एक गोली मात काल खाय और कफ प्वर में चार गोली, गठियावाय में दार गोली और मकृति के बदल के लिये और अर्द्धांग वाय दोष के लिये एक गोली मात काल चार दिन तक द और जलघर में चार गोली से सात गोली तक काम में लावे ।

गुण जलघर बाळ का चित्त स्नान करने को चले तो पानी में खारी नोन डालकर उस पानी को धूप में घर के गरम करके उस जल से स्नान करै तो गुण दायक होय और जा खारी समुद्र के पानी से स्नान करे तो विशेष गुण दायक है ।

और रेवतचीनी की टिकिया घातोदर को गुण करै है रेवतचीनी चौदह माशे घुली लाख मजीठ सोंफ कासनी क बीज बालछड़ मत्येक सात २ माश लेकर टिकिया बनावे मात्रा सात माशे की सिकजबी और मकोष के अर्क संग छेनी ।

एलुआ का गोली जलघर को गुण करे है । एलुआ चौदह माश, बड़ी इट का चपकळ अजपायन कालीमिष विधारा मत्येक सात माश कूट छानकर घने के ममाण गोळियां बनावे मात्रा साढ़ तीन माशे की ।

दवा सिस की छात औटाकर पीवे अकबरनाम में लिखा है कि एक

किले में विशेष दिन व्यतीत हाजाने के कारण धान अति पुराना होगया था उस अन्न को किले वाले मनुष्यों ने खाया तो उससे सूजन पैदा हुई फिर त्रिम मनुष्य ने सिस के छात पान कीनी उसको आराम होगया और अन्न को यहां तक हुआ कि भिर्भ की छात सुवर्ण के मोल मङ्गी बिकी ।

दवाई जलघर की । अत्यन्त सड़ा हुआ इसके का पानी पीवे तो जलघर को गुण करे है ।

अथवा गाय का गोबर नौने मिलाके लोप करें तो जलघर दूर होय ।

अथवा गोबर जलाके साढ़े तीन माशे राख उसकी नित्य खाप ।

अथवा इन्द्रायन की जड़ भौटा के पीना दोष को दस्तों के द्वारा पचाकर दूर करता है ।

अथवा ऊट का पेशाब पीना गुण करता है और उसके पीने की यह क्रिया है कि पांच छै तोले पेशाब तीन माशे बड़ी इडका बकल भिछाके प्रातः काल पीवे और जो पानी के बदले ऊटनी का दूध पीवे तो विशेष गुण करे और आजनयी यही समझे तो इसके तुरन्त कोई चिकित्सा नहीं है ।

अथवा मूली के पत्तों का रस पीना गुण करे है ।

अथवा छात बकरी का पेशाब और चौदह माशे बालबद्ध उसमें मिला के पीवे तो जलघर दूर होय ।

अथवा यह दवा करें तो भी जलघर दूर होय इसे करेला का रस पीने दो तोले निबोड़कर छानकर पीवे और जो उसमें थोड़ा सा शहब मिलावे तो दो तीन दस्त लाकर दोष को दूर करता है ।

अथवा ककरोंद का रस तोले भर प्रातः काल पीवे नित्य बढ़ाकर दस तोले तक पहुँचावे ।

अथवा केसर पाक जलघर और कड़ेपन और फलेजे और तापविरली और चदर को गुण करे है केसर, तम, कूट, तगर बालबद्ध, अजमोद, रदनी, गुलाब के फूल, कासनी के बीज, प्रत्येक दो भाग बीजाबोल, रेवतपीनी एक २ भाग शरद तिगुना भिछाके माफ़ बनाव मात्रा चार माशे तक सोंफ़ के अर्क के संग लेना ।

अथवा यह गोखी जलघर को गुण करे ॥ शुद्ध गमक और पारा, इड बरेड़ा, आमला, सख्जी, जवाखार, फालानोन, सैपानोन, साँपरनोन, सोठ, कालीपिर्घ, सुना सुहागा, सब बराबर लेकर और जमाछगोटा दो भाग दवाई

कूटछान कर नीबू के रसमें इक्कीस घेर घाट के सुखा के कालीमिर्च के प्रमाण गोलिएा घनावे मात्रा एक गोली ऊटनी के दूध के संग लेनी ।

अथवा यह चूरन के तो बातोंदर और पिचोदर दोनों दूर होय सोंठ नागरमोथा, चीठा, सुपेद जीरा, कटेरी, इलदी, गजपीपल, पीपलामूल, बराबर कूट छानकर चूरन घनावे मात्रा तीन टक गरम जल के संग ।

अथवा अजमोद, पायविड्ग, चीठा, कालीमिर्च, पीपल, पीपलामूल, सोंफ, काकानोंन प्रत्येक साढ़े तीन माशे पांच नग इड्का बकल, सोंठ तीन पीले कूट छानकर चूरन घनावे मात्रा सात माशे सोंफ के अर्क के संग लेय ।

अथवा अजमोद, सोंफ, रदनी, तगर, कड़वी कूट रैवद चीनी प्रत्येक सात २ माशे नागरमोथा, बालछह प्रत्येक पांच २ माशे, कालाजीरा दस माशे कूट छानकर सात माशे लें तो बातोंदर जाय ।

अथवा मुठी को चूरन कचनार के रस में गूष के रोटी पकाकर नोन के संग खाय और पानी की जगह कचनार के पत्ता औटाकर पीवे या चसका रस निकालकर पीवे और कचनार के पत्तों के काढ़े के सिवाय खाने पीने हाथ पांव धोने नहाने में और दूसरा पानी काम में न लावे तो ईश्वर की कृपा से सात दिन के बीच में गुण मालूम होय यह गुर्जरघात अकषरी में लिखा है ।

अथवा धोंधीफलों माशे भर नित्य खाया करै और भोजन में भूगकी खिचड़ी खाय ।

अथवा यह दवा जलधर को गुण करै सुपेद जीरा कूट के तीन भाग कधी जौकूट नो भाग चस में से तोले भर रात्री के समय एक प्याले भर पानी में भिजोवे प्रातःकाल औटावे जब आधापानी रहे तब छान के गुनगुना २ पीवे तो जलधर दूर होय ।

अथवा जो पेट बड़जाय तो यह दवा करै दो तोले चार माशे शहद देने पानी में मिलाके औटा के कई दिन पर्यंत इसी प्रकार पीवे और बड़ुचा करके यह रोग बच्चों के बहुत होता है ।

गुण जो जलधर बाल गेहू की रोटी न खाय और जौ की रोटी खाय तो सत्तम है और जो जिरे जौ की रोटी न खाई जाय तो गेहू के चून में जौ का चून मिलाके चसकी रोटी खाय ।

अथवा यह गोली चस स्त्री को गुण करै है भिसका जन्मे के पीछे पेट

बड़ गूया होय मिर्च, पीपल, पीपलामूक, वच, चीता, छवीळा, नागरमोथा, वायबिड़ग, देवदारु, त्रिफळा, कूट, बीजाषोल, सोंफ, गजपीपल, इद्रजौ, प्रत्येक साढ़े तीन २ माशे निसोत दस माशे, कूट छान कर सब के बराबर पुराना गुड़ मिलाके दो माशे के प्रमाण गोलियाँ बना के प्रात कास के समय नित्य पंद्रह दिवस पर्यंत एक गोली खाय ।

अथवा यह लेप करे तो जख क पीछे जिस स्त्री का पेट बड़ गया होय उसको गुण करे इद्रायन को पानी में पीस के लेप करे ।

अथवा लाख की माजून जलधर और चंदर की सरदी और कछेजे की सरदी को गुण करे धोई हुई लाख चार भाग, बालछड़, रेवतचीनी प्रत्येक तीन २ भाग, तगर, अजमोद प्रत्येक दो २ भाग, कड़वा कूट कड़वे बादाम की भींगी, मिर्च, सोंठ, जीरा, तेजपात, मस्तगी प्रत्येक-एक २ भाग सिंगुने शहत में माजून बनावे ।

अथवा यह दवा जखपर दूर करे चारह नग टीढ़ियों के हाथ पाँव दूर करके पीस कर चौदह माशे इन्बुल्लास के सग खाय ।

अथवा नील, अमलतास, कूट छानकर बच्चों को चार जी भर और तरुण को दस माशे तक देनी ।

अथवा लाख की टिकिया बनाकर दे तो जलधर दूर होय लाख चार भाग, रेवतचीनी, कासनी के बीज, खरबूजा के बीज, खीरा ककड़ी के बीज प्रत्येक तीन भाग, मजीठ, सोंफ, मकोय, अजमोद, बालछड़, तम प्रत्येक दो दो भाग, अजवायन, कूट, प्रत्येक एक २ भाग लेके टिकिया बनावे मात्रा सात, तीन माशे से साय माशे तक शरबत बिजुरी के सग लेना ।

अथवा एकरी की मैगनियाँ, गाय का गोबर, गोखरू सिरके में मिलाकर लेप करे ।

अथवा नोन बालछड़ सिरके में मिलाकर लगावे ।

फसल ररक्तान के इलाज अर्थात् कमल बाय की चिकित्सा में

यह त्वचा की तरफ बाय पित्त की दुर्गन्धि जारी होने के कारण से पैदा होती है । जो पित्त से पैदा हो उसे पित्त की कमल बाय कहते हैं । और जो बाय से हो उसे बाय की कमल बाय कहते हैं । और जिस में दुर्गन्धि

कूटछान कर नीबू के रसमें डक्कीस घेर घोंट के सुखा के कालीमिर्च के प्रमाण गोलीया बनावे मात्रा एक गोली छंटनी के दूध के संग लैनी ।

अथवा यह घूरन के तो घातोंदर और पित्तोदर दोनों दूर होय सोठ नागरमोया, चीता, सुपेद जीरा, कटेरी, हलदी, गजपीपल, पीपलामूल, बराबर कूट छानकर घूरन बनावे मात्रा तीन टक गरम जल के संग ।

अथवा अजमोद, धायविड़ग, चीता, कालीमिर्च, पीपल, पीपलामूल, सोंफ, कालानोन प्रत्येक साढ़े तीन माशे पांच नग हड़का बकल, सोठ तीन तोल कूट छानकर घूरन बनावे मात्रा सात माशे सोंफ के अर्क के संग लेय ।

अथवा अजमोद, सोंफ, रदनी, तगर, कड़वी कूट, रैवद चीनी प्रत्येक सात २ माशे नागरमोया, चालछड़ प्रत्येक पांच २ माशे, कालाजीरा दस माशे कूट छानकर सात माशे लें तो घातोंदर जाय ।

अथवा मुड़ी को घूरन कचनार के रस में गूध के रोटी पकाकर नोन के संग खाय और पानी की जगह कचनार के पत्ता औटाकर पीवे या उसका रस निकालकर पीवे और कचनार के पत्तों के काढ़े के सिवाय खाने पीने हाथ पाँव धोने नहाने में और दूसरा पानी काम में न लावे तो ईश्वर की कृपा से सात दिन के बीच में गुण मालूम होय यह मूजरबात अकषरी में लिखा है ।

अथवा धोधीफली माशे भर नित्य खाया करै और भोजन में मूंगकी खिचड़ी खाय ।

अथवा यह दवा जलधर को गुण करै सुपेद जीरा कूट के तीन भाग कघी जौकूट नो भाग चम में से चोखे भर रात्री के समय एक प्याले भर पानी में भिजोवे प्रातःकाल औटावे जब आधापानी रहे तब छान के गुनगुना २ पीवे तो जलधर दूर होय ।

अथवा जो पेट बढ़ावै तो यह दवा करै दो चोखे चार माशे शहद दूने पानी में मिलाके औटा के कई दिन पर्यंत इसी प्रकार पीवे और बहुधा करके यह रोग बच्चों के बहुत होता है ।

गुण जो जलधर माले गेहूँ की रोटी न खाये और जौ की रोटी खाय तो उत्तम है और जो निरे जौ की रोटी न खाई जाय तो गेहूँ के चून में जौ का चून पिलाके उसकी रोटी खाय ।

अथवा यह गोली चस स्त्री को गुण करै है जिसका जन्मे के पीछे पेट

भद्र गंधा होय मिर्च, पीपल, पीपलामूल, वध, चीता, छधीला, नागरमोथा, वायविद्धग, देवदारु, त्रिफला, कूट, पीपाबोल, सोंफ, गजपीपल, इद्रजौ, प्रत्येक साढ़े तीन २ माशे निसोष दस माशे, कूट छान कर सब के बराबर पुराना गुड़ मिलाके दो माशे के ममाण गोक्षिरा बना के प्रातः काल के समय नित्य पंद्रह दिवस पर्यंत एक गोली खाय ।

अथवा यह लेप करे तो जख के पीछे जिस स्त्री का पेट बड़ गया होय उसको गुण करे इद्रायन को पानी में पीस के लेप करे ।

अथवा लाख की माजून जलधर और चंदर की सरदी और कलेमे की सरदी को गुण करे धोई हुई लाख चार भाग, बालछद्द, रेवतचीनी प्रत्येक तीन २ भाग, तगर, अजमोद प्रत्येक दो २ भाग, कड़वा कूट कड़वे बादाम की मींगी, मिर्च, सोंठ, जीरा, तेजपात, मस्तगी प्रत्येक एक २ भाग तिगुने शहत में माजून बनावे ।

अथवा यह दवा जलधर दूर करे बारह नग टीक्षिणों के हाथ पांव दूर करके पीस कर चौदह माशे इन्चुल्लास के सग खाय ।

अथवा नील, अमलतास, कूट छानकर पन्नों को चार जौ भर और चक्कन को दस माशे तक देनी ।

अथवा लाख की टिकिया बनाकर दे तो जलधर दूर होय लाख चार भाग, रेवतचीनी, कासनी के बीज, खरबूजा के बीज, खीरा ककड़ी के बीज प्रत्येक तीन भाग, मजीठ, सोंफ, मकोय, अजमोद, बालछद्द, तगर प्रत्येक दो दो भाग, अजवायन, कूट, प्रत्येक एक २ भाग लेके टिकिया बनावे मात्रा सात, तीन माशे से साय माशे तक घरघर धिजूरी के सग लेना ।

अथवा धकरी की मैगनियां, गाय का गोबर, गोखरू सिरके में मिलाकर लेप करे ।

अथवा नोन बालछद्द सिरके में मिलाकर लगावे ।

फसल यरकान के इलाज अर्थात् कमल बाय

की चिकित्सा में

यह रक्ता की सरफ बाय पित्त की दुर्गन्धि बारी होने के कारण से पैदा होती है । जो पित्त से पैदा हो उसे पित्त की कमल बाय कहते हैं । और जो बाय से हो उसे बाय की कमल बाय कहते हैं । और जिस में दुर्गन्धि

होप उसका मल बाय में ज्वर आजाता है उसकी सहज चिकित्सा यह है कि इमली का पानी और कासनी का शीरा और सिकंजवीन सादा मिलाके काम में लावे सिकंजवीन सिरका दो भाग क्रम तीन भाग की चाशनी करे ।

अथवा मलियागिर चन्दन गुलाबजल दो तो उत्तम है नहीं तो पानी में पांच माशे आधा इलदी पीस कर सात माशे शहत मिठा के खाय और सात दिन तक दाढ भात का भोजन करे ।

अथवा बंदाल रात को पानी में भिजो कर प्रातः काल उसका निचरा पानी लेके दो तीन घूट नाक में टपकाना कपल बायको दूर करता है ।

अथवा बाजी २ दवा के सग बकरी की मैंगनी खाना कमल बाय की दूर करता है यह तिब्ब फरैदी में लिखा है लोग हरी तीन पाव, रात को पानी में भिजो कर रखे प्रातः काल उसका निर्मल पानी पीवे और दाढ भात का भोजन करे तो कमल बाय जाय ।

अथवा चमूर की फली सकाहुली आमले मल्लेक सात माशे जो कु करके सेर भर घरे के सग औटावे जब चौथाई भाग रहे थोड़ासा बुरा मिला के दान के पीवे तो कमल बाय जाय ।

अथवा कड़वी तुमड़ी पानी में पीसकर नाक में टपकावे तो कमल बाय जाय ।

अथवा सात माशे कंधी पीसकर शहत में मिला के चाटे और दाढ भात खाय तो कमल बाय जाय ।

अथवा सात माशे विनौले रात को पानी में भिजो के प्रातः काल पीस के उनका पानी दान के सेधा नोन मिलाके पीवे और खटाई और बादी का परहेज करे ।

अथवा रीठा, गावजुवा दो तोले चार माशे पाव सेर पानी में रात के समय भिजोवे और प्रातः उसका निर्मल पानी पीवे तो ईश्वर की सहायता से सात दिन में आराम होय ।

अथवा दो तीन कसौदी की पत्ती दो तीन काली भिच के सग पीस के पीवे ।

अथवा यह शरभत कलेजे की गरमी और कमल बाय को गुण करे चंदन बुरा मुनक्का दो तोले जरिरक कासनी के बीज खीरा ककड़ी के बीज

मल्लेक दो तोले भर सेंधानोंन, इलायची के दाने प्रत्येक सात २ माशे कद पाव सेर लोके शरधत बनावे मात्रा तोले भर मृनासिष आष शीरी के सग ।

हिन्दी दसा कमल बाय को गुण करे सख्या यन्त्रप्य को तीन माशे चूना पकी फले की फली के टुकड़े में धर कर खिलावे ऊपर से बाकी फली को खिछावे और बच्चों को माशे भर चूना चौपाई फली बहुत है ।

अथवा यह चूरन दे तो कमल बाय जाय बघूर के फूल मिर्ची बराबर लोके पीस के तोले भर खाय ।

अथवा सात दाने कलौजी के छी के दूध में पीसके नाक में टपकावे तो कमल बाय की जरदी जो पीछे रहजाती है दूर होय ।

अथवा नीबू का रस नेत्र में टपकाव ।

अथवा सिरके में ढाली मूली का अचार खाना गुण करता है ।

अथवा कहरवा लटकाना और पीले कपड़ा पहनना कमलबाय को गुण करे है ।

अथवा

महदी के पत्ता सात माशे जो कुट करके रात को पानी में भिजोवे प्रात काल उसको निवरा पानी पीवे तो सात दिन में कमलबाय जाय ।

अथवा कलौजी का काढ़ा पीवे कमलबाय जाय ।

फसल अमराज तहाल के इलाज में

अर्थात् तापतिरली की चिकित्सा में उसका कड़ा होने का पूर्व रूप वादी से रुधिर का गाढ़ा होना है और प्वर में वे सदबीरी से पानी पीना यह भी उसका पूर्व रूप है इस रोग में कठिन से आराम होता है ।

चिकित्सा जेमने हाथ की फस्द खोलना गुण करे है ।

गुण जो तिरली वाले रोगी के दहने हाथकी नस कपड़ा की बाती जला के दाग दें और बहुत दिनों तक उसको बहने दें तो बहुत गुण करे ।

विधि

चूने की बल्ली थोड़ी पीठे की मींगी में कुटकर केलाफी पकी फली के टुक में धर के दहने हाथ के पङ्ख के नीचे की तरफ जोड़ पर पीच की सगली के सामने एक पहर तक मोटे कपड़ा से बंधा-रहने दे कि चूने की तेजी से बहा पर फफोला पड़नाय फिर खोल ढाके तो निश्चय आराम होगा ।

अथवा सरसों का तेज गुनगुना २ तिख्खी पर मलें ।

अथवा अजवायन जितनी खासके दोनों समय खाया करे ।

अथवा मुना सुहागा एक भाग राई तीन भाग दोनों को महीन पीस

कर एक २ माशे सभा सघेरे खाया करे वा नींबू का रस एक तोले आठ माशे प्याज का रस एक तोले आठ माशे परस्पर मिलाकर चौदह दिन पर्यन्त पीवे और सिवाय नये वस्तु खिचड़ी जैसी कि दाल भात के और कुछ न खाये या नौसादर पौने दो माशे मूली के जल में भिजाकर पीवे और मूली तथा तिख्खी बराबर पीम के तिख्खी पर बांध ॥

अथवा घूने की कली महीन पीसकर शहद में मिलाकर तिख्खी पर मलें और लेप करे ॥ और उस पर अजीर के पत्ते बांधे ॥

अथवा शीतरज सिरके में पीसकर लगावे तिख्खी के शोथ को घुलाता है

अथवा मूली के बीज पीसकर सिरके वा सिकेजबोन में मिलाकर खाना तिख्खी को दूर करता है ॥

अथवा करीले की सूखी कोपल एक तोले पौने चार माशे कालीभिच पौने आठ माशे कूट छान कर मासःकाल पानी के संग पिये तिछी की सख्खी को दूर करता है ।

अथवा गेंहूँ की भुसी और लहसन की पीसी जलाकर आर उस की राख सिरके में मिलाकर गुनगुना लेप करे और प्याज तिख्खी के रागी के गळे में लटकाने से गुण करती है जो तिछी वाला अपना वा बालक का मूत्र तीन तुल्ल भर पिय और मास दिन ऐसा ही करे तो तिछी दूर होय ॥

अथवा मनुष्य जो तरुण हो छ माशे सज्जी और जो बालक हो दो माशे गुड़ में भिजाकर यदि ज्वर न होय तो खाये और स्वदाई तथा बादी वस्तुओं में बचा रहै ।

चूर्ण कि तिख्खी और बापशूळ और तावियत नरम करने के लिये गुण दायक है अजवायन आघसेरे, गुआर पाठा ताजा पीस नग, त्रिफला त्रिकुटा पांचो निमक, सफेद सज्जी, कटेरी, त्रिषी, कालाजीरा, अजमोद, सौफ, बिधारा, मत्पेक, सादे तीन माशे घी गुआर पाठ के रस में भिगाकर छाया में सुखावे और कूट छानकर रखे, मात्रा तीन माशे तक ठंडे पानी के संग दे ।

अथवा भाऊ की पत्तिपा सादे तीन माशे सुखा कूट छानकर सादे तीन

मांश घूरा मिठाकर खाय तथा कटु का मूत्र पीना तिरछी को गुण करता है और भाऊ की पत्तियों का अर्क तथा उसका पानी शहद मिठाकर पीना तिरछी को गुण करता है।

अथवा नमदे का टुकड़ा सिरफेमें भिगोकर तिरछी पर बांधे गुण करता है माजून कि तिरछी के लिये परीक्षित है। क्रिमकी जड़ का छिलका इफ्तीमून बराबर शहद में मिठाकर माजून बनावे और प्रति दिन साढ़े दस मांशे खाय।

दवा तिरछी की सख्ती को दूर करती है कषाया, पुष्करमूल, कषास्त्रा, काबलीइड़, ईंग, सेंधानोन, सोंचरनोन, काबलीविदग, शीवरज, समुद्रफैत अजवायन बराबर कूट छानकर दोनों समय एक २-तोले खाय।

फ़रास के पत्तों का शरबत कि तिरछी को गुण करे फ़रास की पत्तिया पावसेर दो दिन दो सेर जल में भिगोकर औटावे जब तीसरा भाग रहे छानकर पाव सेर घूरे में चाबनी करे मात्रा दो तोले।

फ़सल इलाज अमराज अमआ अर्थात् आंतों की बीमारियों की चिकित्सा में

इसहाल अर्थात् दस्तों का आना यह कई प्रकार से होता है जो दस्त उदर के हो तो फ़ारसी में उसे खलफ़ा और हिन्दी में समग्रणी कहते हैं और जो कलेजे से हो ज़सन्तारिया कहते हैं और यह कथिर का दस्त है मांस के घोलन जैसे दस्त आते हैं या कलेजे की स्थिति है उससे पीव निकलता और जो आंतों से हो तो उसको सहज जलकुल अम और ज़हीर अर्थात् पेचशवा पेचक कहते हैं इसका विशेष हाल पृष्ठ २ पुस्तकों में लिखा है इस स्थान पर कई एक सहज औषधि जो दस्तों को गुणदायक हैं लिखी जाती हैं।

नरकाचूर की जवारश अर्थात् पाक कि घाय को दूर करता है और समग्रणी को गुणदायक है सफ़ेद घूरा-पावसेर, नरकाचूर पौंस के एक तोले साढ़े पांच मांशे पाक बनाय मात्रा दो तोले।

आमले का सादा पाक जो उदर रोग में वर्णन हुआ है गुण करता है।

आमले की गोली कि दस्तों को रोकती है समग्रणी और पेचक को गुणदायी है एक तोले आमले थोड़े पानी में भिगोदे जब नर्म होजाय पीसकर और कालानोन मिठाकर गगली बेर के समान गोलियां बनावे और दोनों समय एक २ गोली खाया करें।

गोली कि दस्तों को गुण करे राख, पापाणवेद, बेलोगिरी, नरकाचूर, आवळे, अफ्रीम, धवूर का गोंद, मुनी हुआ, मुनी हई, माई, मुनेत्रका, मुनी हुई, अजवायन, गेरू, गुल अनार, सब कूट छानकर बराबर और चने के बराबर गोळियां बना के एक एक गोली दोनों समय खाया करे ।

अनार की गोली कच्चा अनार मिट्टी में छपेटकर भूमल में रखें जब पकजाय मिट्टी उतारकर अनार को कूटपीस कर आवळा, धवूर का गोंद बेल गिरी की मुनी सींगी, अजवायन मत्येक दो माशे, अफ्रीम, नरकाचूर एक माशे पीसकर उसमें पिलावे और मूग की बराबर गोळियां बनाकर सभा सवरे खाया करे ।

जायफल की जवारिश काबिज अर्थात् बिष्टभी और संग्रहणी तथा चदर की सखती को गुण दायक है और पाचन शक्ति को मजबूत करती है षालछड़, अजवायन, मुनी सौफ, मुनी सौठ, नागरमोया मत्येक एक तोले पांच माशे गुलनार, माई, बड़ी इलायची के दाने मत्येक एक तोले साढ़े पांच माशे अमलतास एक तोला नौ माशे शहद धवूर में चाशनी करे ।

शिगरफ की गोली कि दस्तों को रोके सुहागा एक माशे, शिगरफ दो माशे अफ्रीम चार माशे कूट छान कर कालीमिर्च के प्रमाण गोळियां बनावे ॥

लिखा है कि जो रात्रि के समय दस्त अधिक आवें तो यह गोली शहद में मिलाकर खाये और जो दिन में दस्त अधिक आवें तो नींबू के रस में मिलाकर सेवन करे ॥

अथवा शिगरफ, लौंग, अफ्रीम तीनों बराबर मिथी कूट छान कर चार माशे के प्रमाण गोळियां बनावे मात्रा एक गोली की ॥

गोली कि बधिर और पित्त के दस्तों को गुण करे तवरी के दाने साव माशे, माजु, अनारका छिलका मत्येक पौने दो माशे, अमलतास दो ताते ग्यारह माशे, मुनेत्रका साढ़े दश माशे, धवूर का गोंद कूट छान कर गोळियां बनावे मात्रा दो गोली तक देवे ॥

विष्टम्भी गोली

कि फफू के दस्तों को दूर करती है और पाचक है कालीमिर्च पीपळ, सौठ, लौंग, अकरकरा मत्येक साढ़े तीन माशे, अफ्रीम सात माशे, अदरक के जल में पीसकर चने के प्रमाण गोळियां बनावे मात्रा एक गोली ॥

अथवा रसौव, गेरू मत्स्येक ढड़ सोले, मुर्दासग तीन सोले, पीसकर चने के समान गोळियां बना के दोनों समय एक २ गोली खावे ॥

गोली कि बालकों के दस्तों को गुण करे ॥ यदि तपन हो तो भी गुण करती है सफ़ेद कत्था, गुलनार मत्स्येक तीन माशे अहरमोहरा पीस के आमला, धूप का गोंद, बेलगिरी की पींगी भुनी हुई, मत्स्येक दो माशे, अफ्रीम, माजू, सौंफ भुनी, सफ़ेद कीरा मत्स्येक एक माशे कपूर एक रघी, कालीमिर्च के बराबर गोळियां बनाकर प्रकृत के अनुसार दें और कभी अहरमोहरा के बदले धम-लोचन मिलावे और कभी बसलोचन बढ़ाते हैं और जो मय हो तो कपूर न मिलाव ॥

गोली कि अतीव विष्टम्भी है मुनक्का बीजों सहित सात नग, आम की गुठली एक नग, अफ्रीम चार रघी, कूट ज्ञान कर परस्पर मिलाकर सात गोळियां बनावे और प्रतिदिन एक गोली खाव ॥

माजू की गोली कि दस्तों के रोकने में शीघ्र गुण करती है और आंतों के घाव को भी गुणदायक है ॥ माजू चौदह माशे, अफ्रीम दो दिरम, अर्थात् सात माशे, अजवायन साढ़े चार माशे चने के बराबर गोळियां बनावे मात्रा एक गोली ।

नकछिकनी की गोली उन दस्तों को गुण करती है जो नाभी के सरक जाने से हों । नकछिकनी जछाकर अजवायन, सौंठ बराबर कूट ज्ञान कर एक माशे गुड़ मिलाकर गोळियां बनावे और घृत के सग खाव ।

लेप कि नाभी के सरक जाने को गुण करे फिटकरी साढ़े दस माशे, माजू तीन नग कूट ज्ञान कर सिरके में मिलाकर लगावे ऊपर से पट्टी ढक कर बांधे ॥

गोली कि दस्तों को रोकती है भुनी सौंठ, मर्ई, पठानीछोद, सफ़ेद राख, पाय के फूल, मोठे इन्द्रनी, बेलगिरी की पींगी, मोघरस, आम की गुठली, भुना छुहारा, कालीमिर्च कूट ज्ञान कर गोळियां बनावे ।

अथवा भुनी भग, बेर की पत्तियां, नकाधूर, बराबर कूट पीस कर चने के प्रमाण गोळियां बनाकर दोनों समय खाव ॥

गोली कि आंतों के छिनजाने और कथिर के दस्तों को जो घिना आम के हों गुण करे गेरू, कत्था, राख, कतीरे का गोंद, कोंच के छिले बीज, मेछ-

गिरी की भीगी कूट छान कर जगल्लो घेर के प्रमाण गोलियां बनाकर दोनों समय एक २ गोली खाया करें।

गोली कि लटकों के दस्तों को गुण करे गुलनार, एक नग, इलायची, अफीम मल्येक एक माशे चाँकसू, रमौत, नरकाचूर, सफेद जीरा, इल्दी, नीम की छात, बक्रायन की कौपल, बचूर की कौपल, मल्येक दो माशे कूट छानकर मूंग की बराबर गोलियां बनाकर मात्रा दो गोली तक दे सके हैं।

गोली कि बघों के हरे दस्त को गुण करे। बचूर की पत्तियां, जौंग, मुदासंग, गुलनार, केसर, नीम की कौपल, सौफ, काळाजीरा, सफेद जीरा, सौंघर नोन, तज, अजवाय, फावल्ली बिंदंग मल्येक सात माशे महीन पीस कर चने के प्रमाण गोलियां बनाकर दोनों समय एक २ गोली दें और कभी मुदासंग के बदले जहरमोहरा या बंसलोचन और कभी तज के बदले भुनी कौड़ी मिलाते हैं।

इलायची का चूर्ण
विष्टमी और पाचक है भुनी मौठ, सौफ भुनी हुई, बड़ी इलायची का छिलका बराबर पीस कर फक्की बनावे और एक हथेली भर खाया करे।

कौड़ी का चूर्ण
संग्रहणी को गुण करता है। कौड़ी मिट्टी की छोटी घड़िया में रखकर कपरमिट्टी करके गरम तनूर में रखे जब ठंडा हो निकालकर पीसे चूस में से साढ़े तीन सांशे सात माशे शहत में थोड़ासा नोन मिला कर खाए साठी चावल का भात दूध के संग भोजन करे।

गोली हिन्दी
कि दस्त और खूनी बवासीर को तथा पेशक और रग के पीले पन को दूर करे। मस्तगी, कालीभिर्भ, बंसलोचन, अनारदाना, आम की गुठलें की भीगी पीसकर मुलहट्टी माईघवा के फूल, माजू सब बराबर पोस्त के ढोरे के बल में गोलियां बनावे मात्रा एक टांक साठी चावल के संग खाए तथा भात और मूंग की दाल भोजन करे।

काली हडका चूर्ण
कि संग्रहणी और पेशक सत्य के लिये गुणदायक है इस घुवोवा रोगन पादाम में भूनकर दो तोल पोस्त के ढोरे घी में भूनकर एक तोले कूट छानकर फक्की बनाकर परावर का खूंम मिलावे मात्रा एक तोले मासकाल और सात

माशे सायकाळ को खाया करे अन्य कर्त्ता ने घबूर का मुना गोंद मिछाया या अत्यन्त गुण किया ।

तज का चूर्ण

कि दस्तों को रोकता है । तज, गुलनार, सुपारी के फूल सब बराबर कूट छानकर माछवि के अनुसार पानी के साथ फाँके ।

सौंफ का चूर्ण

कफ के दस्तों को गुण करे और उदर को बल देने वाला तथा धाय को दूर करने वाला है सौंफ को धीमे इतना भूने कि छाल होजाय फिर कूट छान के पूरा मिछाके साथ माशे ठंडे जल के साथ खाया करें ।

अनार का चूर्ण

कि पित्त के दस्तों को गुण करता है खट्ट अनार के दाने, मुना स्याह जीरा मत्येक एक तोला साढ़े पाँच माशे, गुगल, पिमा हुआ घनियाँ चौदह माशे, अनार का फूल, घबूर का गोंद मत्येक साढ़े तीन माशे फक्की बनावे मात्रा सात माशे तक है ।

घनिये का चूर्ण

कि कथिर के दस्त रोकने में सौंफिना, आप के हों परीक्षित है जामन की गुठली जलाई हुई, बेर की गुठली जलाई हुई, बारह सींगे का सींग जलाया हुआ, मुनी हींग, मुने पोस्त के दाने, मुनी मुनकका मत्येक साढ़े तीन माशे, काळी इड़, सौंफ, अनारदाना, घनिया, चूका के बीज, घबूर का गोंद, निशास्ता, सियाह जीरा, सफ़ेद जीरा, कुलफा के बीज, सोंठ, ईमषगोल, बाळगा, नासबू मत्येक सात माशे छेके भूनकर कुलफा के बीज, ईसबगोल और बाळगा को साबित रखें और अठ्ठीस घावा क फूल, माई, आंवला, बेलगिरी की मींगी राख, सफ़ेद कत्था, कतीरा, फोंच के बीजों की मींगी, बड़ी इलायची का छिलका, नैकाँधूर अनारक फूल मत्येक पौने दो माशे कूट छानकर फक्की बनाव मात्रा प्रकृति के अनुसार नौ माशे तक पानी के संग देवे ।

अथवा सोंठ, सौंफ, राख, मुना छुरासा, काळीइड़ धीमे मुनी हुई पेख-गिरी की मींगी, सब बराबर लेकर फक्की बनाव ॥

अथवा अनार की कली, घबूर की पत्तियाँ, मुनी सौंफ मत्येक थोड़ा जलाया हुआ पोस्त के टोड़ा सब औषधियों के बराबर कूट छान कर फक्की

दवा कि दस्त और पेचक को गुण करे। आम की छाल लेकर काछा बिलका सतार कर भीतर का जो कि पीलाइट लिये होता है छकुर पानी में घिसकर और थोड़ा जल उसमें मिलाकर शीघ्र पीले, क्योंकि यदि एक पल की देर होगी तो जम जायगा फिर पिया न जायगा इस दवा के सेवन करने से तीन दिवस में आराम होता है।

दवा कि उस पेचक को गुण करती है कि जो गरमी के साथ में श्रुना इस वृणोत्त सात माशे, बघूर का गोद, गेरु मत्येक साढ़े तीन माशे, अजवायन पौन माशे, और जो गरमी नहीं किन्तु अफरा हो तो भुनी हाथों सात माशे, भुनी अलसी, बघूर का गोद, गेरु मत्येक साढ़े तीन माशे ककाल पौने दो माशे अजवायन पौन माशे।

द्वितीया दवा

सत्य पेचक के वास्ते रैहा के बीज, बघूर का गोद दोनों धूने बराबर पीस कर और रैहा के बीजों को साबित रखकर एक तोला सफेद जीरे के शीरे में मिलाकर पिये।

अथवा घेर की पत्तियाँ साढ़े तीन माशे, सफेद जीरा पौने दो माशे पीस के पिये।

अथवा राल, कट्या, बेलगिरी की मींगी, कोंच के बीज, बराबर छूटे छानकर सात माशे तक खाय।

चूर्ण

कि आँतों के घाव और रुधिर के दस्तों को गुण करे कतीरा, चारहसींग का सोंग, जलाकर बराबर पीसकर कक्की बनावे यात्रा साढ़े चार माशे।

अथवा अजवायन पाँच माशे, सफेद जीरा चार माशे, अक्रिम दो रत्ती महीन फूटेछान कर तीन पात्रा कर और साठी चार्बखों के संग खाय और खिचड़ी भोजन करे।

काढा कि पेचक सत्य को गुण करे भोवा के फूल, समर का गोद, बरो, घर पानी में छोटाकर छानकर पिये और गुनगुन पीठ तल से हुकना अर्थात् बस्तिर्कर्म करना पेचक दूर करने में परीक्षित है।

दवा

कि पेचक तथा रुधिर और कफ के दस्तों को गुण करे मरोरफली एक

तोले आठ माश जल में भिगोकर हाथ से मछे फिर छानकर पिय और खिचड़ी भोजन करे खटाई और सलौनी वस्तुओं से बचे ।

अथवा सांकर की फली पकाकर भात के सग खाय ।

अथवा सफेद राज, घूरा मत्स्य एक तोले आठ माशे, पोस्त का ढोड़ा एक नग भुना हुआ कूट छानकर एक हथेली भर खाय ।

मुल्लेयन चूर्ण ।

कि सत्य पेचक को गुण करै । गेरू रैदा के बीज भुने हुए दोनों साबित रखकर चूका के बीज मत्स्य सात माशे, अनार का फूल, बघूर का गोद, निशास्ता मत्स्य साढ़े तीन माशे कूट छानकर फक्की बनावे ।

हड़ का चूर्ण । कि विष्टपी पेचक को गुण करे और वृद्ध की पीड़ा को गुण करै, काषली हड़ घी में भूने जब फूट जाय बराबर पीसकर टिकिया बनावे मात्रा साढ़े चार माश । मर्दन । आंव की छाल दही के जल में पीसकर नाभि के आसपास मछे और बाकों ने सिरके में पीसकर मर्दन करना लिखा है ।

अथवा आंवले घी में पीसकर नाभि के गिर्द मंडल बनावे और मंडल का बिनारा ऊंचा रखे फिर उसमें अदरक का रस भर दें और इसी भांति थोड़ी देर रहने दें यदि पानी के दस्त आवे हों तो बंद होमांय सुगारिवात अर्करपी में लिखा है कि यह औषधि सब दवाइयों की राजा है ।

दवा

कि सग्रहणी को गुण करे हरी बेलगिरी भूनकर और थोड़ी शक्कर मिला कर एक तोले खाय ।

गुण

दस्तों में घमन कराना दस्त को रोकता है और कैयी के बीज भूनकर नौ माशे नीम के शहद में पिछाकर खाना और गुग्गल की काँपछ एक तोले पानी में पीसकर पीना दस्तों को गुण करता है ।

अथवा

अविला घी में भूनकर पानी में पीसकर नाभि के आसपास लगावे और थोड़ीसी अक्कीम अदरक के रस में पीसकर दो तीन बूंद नाभि में टपकावे ।

अथवा गुग्गर के पेड़ का दूध माशे के प्रमाण खाय ।

दवा कि टम्भ और पंचक को गुण करे)। आम की छाल लेकर पाक
छिलका उतार कर भीतर का जो कि पीलाइट लिये होता है छेक कर पानी में
घिसकर और घोड़ा जल उसमें मिलाकर शीघ्र पीले क्योंकि यदि एक पल को
दर होगी तो जम जायगा फिर पिया न जायगा इस दवा के सेवन करने से
तीन दिवस में आराम होता है ।

दवा कि उस पंचक को गुण करती है कि जो गरमी के साथ में
भुना डंस बगोल सात माशे, धूप का गोद, गेरू मल्लिक साढ़े तीन माशे, अजवायन
पाँच माशे, और जो गरमी न हो किन्तु अफरा हो तो भुनी, हाथों सात माशे
भुनी अलसी, धूप का गोद, गेरू मल्लिक साढ़े तीन माशे कंकाल पाँच माशे
अजवायन पाँच माशे ।

द्वितीया दवा

सत्य पंचक के वास्ते रेशों के बीज, धूप का गोद दोनों भूने बराबर पीस
कर और रेशों के बीजों को साबित रखकर एक तोला सफेद जीरे के शीरे में
मिलाकर पिये ।

अथवा घेर की पत्तियाँ साढ़े तीन माशे, सफेद जीरा पाँच माशे,
पीस के पिये ।

अथवा रालों, कत्था, बेलगिरी की पींगी, कोंच के बीज, बराबर कुट
छानकर सात माशे, तफ, स्वाय ।

चूर्ण

कि आँवों के घाव और रुधिर के दस्तों को गुण करे कवीरा, धारइसींगे का
सींग, जलाकर बराबर पीसकर फक्की बनावे मात्रा साढ़े चार माशे ।

अथवा अजवायन पाँच माशे, सफेद जीरा चार माशे, अक्रोय दो रत्तो
महीन कूटछान कर तीन मात्रा करे और साठी चाँपड़ों के संग स्वाय और
खिचड़ी भोजन करे ।

काढ़ा कि पंचक सत्य को गुण करे घावों के फूल, समर का गोद, घरा
धूर पानी में औटाकर छानकर पिये और गुनेगुने मोठे तल से हुकना अर्थात्
वस्त्र कर्म करना पंचक दूर करने में परीक्षित है ।

दवा

कि पंचक तथा रुधिर और कफ के दस्तों को गुण करे मसूर फली एक

तोड़े आठ माशे जल में भिगोकर हाथ से गले फिर छानकर पिय और खिचड़ी गोजन करे खटाई और सखौनी वस्तुओं से बचे ।

अथवा साँकर की फली पकाकर भात के सग खाप ।

अथवा सफ़ेद राल, पूरा मत्स्य एक तोले आठ माशे, पोस्त का डोढ़ा एक नग मुना हुआ कूट छानकर एक दयेली भर खाय ।

मुलैयन चूर्ण ।

कि सत्य पेचक को गुण करै । गेरू रैहा के बीज भुने हुए दोनों साधित रखकर घूका के बीज मत्स्य सात माशे, अनार का फूल, बभूर का गोद, निशास्ता मत्स्य साढ़े तीन माशे कूट छानकर फक्की बनावै ।

हड़ का चूर्ण । कि बिष्टमी पेचक को गुण करे और बदर की पंढा को गुण करै, काबली हड़ घी में भूने सब फून्नाय बराबर पीसकर टिकिया बनावे मात्रा साढ़े चार माश । मर्दन । आंव की छाल दही के जल में पीसकर नाभि के आसपास पछें और बाकों ने सिरके में पीसकर मर्दन करना लिखा है ।

अथवा आंवले घी में पीसकर नाभि के गिर्दे मंडल बनावे और मडल का बिनारा ऊँचा रखे फिर उसमें अदरक का रस भरवें और इसी भांति थोड़ी देर रहने दें यदि पानी के दस्त आते हों तो बद होनाप मुगरिनास अर्करपी में लिखा है कि यह औषधि सब दवाइयों की राजा है ।

दवा

कि सग्रहणी को गुण करे हरी पेलगिरी भूनकर और थोड़ी शक्कर मिला कर एक तोड़े खाप ।

गुण

दस्तों में बमन कराना दस्त को रोकता है और कैयी के बीज भूनकर नौ माशे नीप के गहद में भित्ताकर खाना और गूगल की कोंपळ एक तोले पानी में पीसकर पीना दस्तों को गुण करता है ।

अथवा

आंवले घी में भूनकर पानी में पीसकर नाभि के आसपास लगावे और थोड़ीसी अफीम अदरक के रस में पीसकर दो तीन बूंद नाभि में टपकावें ।

अथवा गुल्लर के पेड़ का दूध माशे के ममाण खाप ।

गुण घेर के सच्चे अमीर्ण और दस्तों को खोते हैं और उदर को तथा पित्त के दस्तों को गुण करते हैं और चावलों की पीच पीनी भी दस्तों को घट करती है।
दवा हरी बुधी पीसकर एक प्याला पीवे।

अथवा पुराना पनीर लेकर पानी में इतना धोवे कि नोन का लेश शेष न रहे फिर उसको भूनकर खाय।

अथवा- मसूर चिनी छिली भूनकर खाय या जो जमालगाटे के खाने से दस्त हों तो फतीरा पीस कर दही में मिलाकर खाय।

फसल इलाज जहीर अर्थात् पेचश वा पेचक की चिकित्सा में।

प्रति दिन सप्ता सवेरे खाया करें भात और मसूर की दाल भोजन करें।

अथवा बेलागिरी एक तोले, करा की जाल दो तोले, सोंफ, कालीहड़ मत्स्य एक २ तोला ईसबगोल छः माशे, मिथी तीन तोले, हडको घी में भून कर सिवाय ईसबगोल के सबको कूट छानकर सबको मिलावे मात्रा सात माशे से एक तोले तक।

अथवा यह सत्य पेचक को गुण करे काली हड़, घी में भुनी हुई सोंठ, सोंफ भुनी हुई मत्स्य एक तोला बराबर घूरा मिलाकर दें।

द्वितीय कि आँवों के छिल जाने को गुण करे बेलागिरी, कट्या, बराबर लोके फक्की बनावे।

अथवा

बबूर का गोंद प्रतिदिन एक तोला डेढ़ माशा तीन या ग्यारह दिवस पीस कर खाए और जो दस्तों की विशेषता होवे तो पोस्त का डोड़ा महीन पीसकर साढ़े चार माशे से नौ माशे तक पीना अत्युत्तम है यदि बबूर का गोंद मिलावे तो अधिक गुण दायी होगा।

गोली कि दस्त और पेचक की बीमारी का नाश करे सोंठ, सोंफ पोस्त के दाने, तीनों को भूनकर सात माशे कूट छानकर गुड़ और घृत में गोळियाँ बनाकर खाए।

अथवा माई, कट्या, अफीम बराबर लेकर कालीमिर्च के समान गोळियाँ बनाकर और एक गोली साठी चावल के जल के साथ खायें करें।

अथवा अफीम थुद्ध चुना, लोकर या मसूर के समान गोळियाँ बनाकर मकल्यानुसार सप्ता

पेषक को गुण करे ।

अथवा माजु, माई, मत्स्येक सात माशे, घबूर का गोंद साढ़े तीन माशे, अफीम दस माशे, स्याह मिर्च के ममाण गोलियाँ बनावे मात्रा तरुण के लिये एक गोली और बालक के लिये आधी ।

अथवा माजु चार भाग, अफीम दो भाग, अजपायन एक भाग, कूट छान कर चने वा भूग के ममाण गोलियाँ बनावे और मात्राकाल एक गोली खाँय ।

दवाई कि सत्प पेषक और दस्तों को दूर करे गहुँ के नवीन पेड़ की छाल लेकर उसका रस छै तोले आठ माशे के ममाण निकाल कर भोजन में रख अग्नि पर रखें और तीन माशे सोंठ पीस कर उसमें मिलावें जब दो तीन उफान आवें उतार कर गुनगुना २ पियें सट्टे और चादी भोजन का निषेध है ।

अथवा खजूर साढ़े तीन माशे पीसकर थोड़े से दही में मिलाकर खाँय ।

अथवा अनार की पत्तियाँ एक प्याले पानी में पीसकर पियें ।

अथवा रातको कतीरा पानीमें भिगोकर मात्रा काल घूरा मिलाकर पियें ।

अथवा शिसौड़े की कोपेलें पीसकर और गोलियाँ बनाकर खाँय ।

अथवा सुपारी जलाकर और दही में मिलाकर खाँय ।

अथवा रेशों के बीज मिट्टी के पात्र में रखकर ऊपर से दो तीन घूँद सेल की ढालें और आँच पर जाल करके खाँय ।

अथवा मुलतानी मिट्टी पीसकर बीहदाने वा ईसबगोल के लुआघ में मिलाकर खाँय ।

अथवा सफ़ेद जीरा दही के सग खाँवें ।

अथवा घबूर का गोंद चौदह माशे ठंडे जलमें मिलाकर पान करे तो आँवों की खरखराहट आदि को गुण करे ।

फ़सल इलाज कुलज अर्थात् वायशूल की पीड़ा की चिकित्सा में ।

यह रोग आँतों के मध्य में गाँठ पड़ने से होता है और इस में अघो-वायु और पुरीष का विकास अत्यन्त फटिन पीड़ा के सग होता है ।

त्रिकित्सा यदि वायशूल वायु से होष तो सेक करे जिस भांति चदर पीड़ा में उसका वर्णन हुआ है और जो फोक वा कफ के कारण स हो तो मुलैयन देकर विरेचक पिलावे और मुलैयन काढ़ा जो पैनक रोग में कहा गया है वायशूल रोग को भी गुण दायक है और रेंडी के तेल से जो चदर पीड़ा में कहा गया है, मर्दन करे ॥

गुण बाजौ रहे कि मुलैयन उस दवा को कहते हैं कि जिससे कम दस्त आवें और मुसहिल वा विरेचक उसको जिससे अधिक आवें मुलैयन में मुजिस अर्थात् दोष पकाने वाली औषधि की आवश्यकता नहीं और मुसहिल में अवश्य है ॥

गोली कि वायशूल को गुण करे भारतवर्षीय लोग इसे काम में लाते हैं भुनी फिटकरी, अजवायन, पीपलामूल, स्याहमिर्च, कजा के बीजों की मिर्गी, वायविड़ग, एलुआ, काला नोन बराबर कूट छान कर अदरक के रस में चार माशे के प्रमाण गोलियाँ बनाकर साठे समय एक गोली खाँप ।

आवजन कि वायशूल को गुण करती है रेंडी, सोये के बीज, मकोय, खतमी के बीज, बावूना मत्स्यक थोड़ा लेकर जल में औटावे जब आधा रहे छानकर उसको पीये । -

मुनक्का का पाक कि तथियत अर्थात् पकृति को नरम करे और कफ वा विरेचक तथा चदर को प्रबल करने वाला और वायशूल को दूर करने वाला है ।

मुनक्का पावपर, मस्तगी दो तोले, सफेद चदन दो तोले दस माशे, कूट छान कर मुनक्का के बीज निकाल कर गुलाब में पीस कर औषधियों में मिलावे मात्रा सात माशे और जो सदैव सेवन करे वो दस माशे तक है ।

गोली भारतवर्षियों की बनाई हुई कि वायशूल को गुण करती है कजा के बीजों की मिर्गी, नकछिड़नी, हींग, सौंठ बराबर पीस कर बेर के समान गोलियाँ बनावे मात्रा एक गोली गरम जल के सग खाँप और चदर पीड़ा तथा विमूषिका को सौंफ के शीरे के सग दो गोली और पेट की गिरानी को एक गोली अर्जुनी दूर करने के लिये पाप गोली ठंडे जल के सग और दस्त लाने के लिये दस गोली चण्ण जल के सग अत्यन्त गुण करती हैं और जो गर्मी माछप हो तो मिर्ची गुच्छा में पीसकर पीये । जिसका गोलियों का यह है शुद्ध

जमातागोटा साढ़े तीन माशे, रेंडीके बीजों की पींगी दा तोले ग्यारह माशे काबली इड़का बक्कल सात माशे, पारा, शुना सुहागा, जवाखार, इल्दी, काळीमिर्च, मत्थेक साढ़े तीन माशे स्याह मिच के ममाण गाळिया बनावे ।

गोली—कि उदर की पीड़ा को दूर करे पीपल की पत्ती ढाई नग पीसकर गुड़ में मिलाकर गोळिया बनाकर खाय ।

गोली कि वायगोला को गुणदाई है समन्दरफल के बीजों की पींगी, समुद्रकाग, सेंधा नोन, काला नोन, सफ़द सज्जी, जवाखार, सुहागा, काबली इड़का बक्कल, पीपल, सोंठ, रींग, काबली बिदग, मत्थेक दस माशे अमलबेद तीन तोले चार माशे कूट छानकर गाळिया बनावे मात्रा चार माशे ।

अथवा एलुआ, सुहागा, सेंधा नोन, जवाखार, गुआरपाठे के रस में बेर के ममाण गोळिया बनाकर खाय ।

माजून विरेचक

सनाय सात तोले साढ़े तीन माशे, बनफ़शा, शीरखिस्त व तुरजबीन गुळाब के फूल, काबली इड़का बक्कल, पित्तपापड़ा मत्थेक एक तोले साढ़े पांच माशे गुनकका पावभर, अहद तिगुना मात्रा एक तोले इड़ माशे ।

चूर्ण पाचक

कि दस्त लाता है कायली इड़का बक्कल, काली इड़, सेंधा नोन, सनाय, बराबर पीसकर नौ माशे के ममाण सोते समय खाय और ऊपर से गरम जल पिये ।

शियाफ़ अर्थात् यही कि दस्त लाती है गुड़ तांबे के पात्र में आग्नि पर रखें जब धुलजाय नोन पीसकर मिलावे जम जाय बची बनाकर नित्य काम में लावे और केवल नोन क पानी में कपड़ा भिगो कर गुदा में रखे अच्छी प्रकार दस्त छाती है ।

बची कि वायसूल खोने के बास्ते अद्भुत है मछुने के बीजों की पींगी पानी में पीस कर बची बनाकर काम में लावे ।

अथवा मोम सात माशे, उसमें पौने दो माशे नोन पिछाकर घृतसे जुगड़ बची करे और जब गुश्म में से बची निकल आवे फिर रखें ।

अथवा आफकी जड़ खरछ करे और गुदा में रखे तो खुसकर दस्त आवे । और पानी में पीसकर गुनगुना पेठ पर लेप करे ।

अथवा चूरेकी मेंगनियाँ, सांभरनो, शक्कर, बराबर नर्म आंव पर लमावे

फिर छुहारे की गुठलीके समान बत्तिर्पा बनाकर घी से चुपड़कर गुदामें रखें।
अथवा साबुन का टुकड़ा छुहारे की गुठलीसी बनाकर घृत से चुपड़
कर गुदा में रखें ।

काढ़ा कि बायशूल को गुण करे । सोये के बीज, मेथी, मत्पेक दो तोले
वा न्यूनाधिक मकृत्यानुसार लेवें औटाकर और दो तोले घृत मिलाकर पिये।

अथवा यह कि बायशूल और उदर की पीड़ा को गुण करे सोंठ, अरंड
की जड़ मत्पेक साढ़े तीन माशे हींग सोंचरनोन मत्पेक एक माशे सोंठ और अरंड
की जड़ तीन पांच पानी में औटावें जब आधपाव रहे छानकर पहिले हींग और
नोन को चारीक पीस कर गोली बनाकर खावें फिर ऊपर से काढ़ा पीवें ।

दवाई अरंड की लकड़ी जलाकर उसकी राख हथेली मर खाया बाय
और पेट की पीड़ा दूर होजाती है मुहम्मद जक्रिया ने कहा है कि मैंने देखा कि
बहुत मनुष्यों के बायशूल उठा करता था उन्होंने भेड़िये का चर्म ही अपने
बर्तन में रखा पहा तक कि जसी पर बैठना और सोना तथा घोड़े पर डाल
कर सवार होना बस बायशूल उठना बंद होगया और तितली का तेज मर्दन
करना कि नुसखा उसका पहले लिखा गया है बायशूल की पीड़ा को अत्यन्त
गुण करता है ॥

काढ़ा कि इस बायशूल और अजीर्ण को दूर करे कि जो मकृति की
सर्दी के साथ होवे अरंडकी जड़ तीन तोले चार माशे जो हरी हो तो छ तोले
आठ माशे लेकर आधसेर जल में औटावें जब चतुर्थांश शेष रहे छानकर रेंडी
का तेज दो तोले हींग तीनमाशे परस्पर मिलाकर गुनगुना पियें ।

अथवा हाव्यों के बीज एक तोले साढ़े पांच माशे पानी में औटाकर
शकर और थोड़ा तिली का तेज मिलाकर पियें ।

दवा कि अवश्यमेव बायशूल को गुण करती है महदी के बीज
माशे सोंफ के अर्क वा उसके शीरे में पिछाकर खाया ।

अथवा जो मनुष्य बारह सींगे का सींग जलाकर एक चमचे
पानी में मिलाकर पियें तो फिर बायशूल कभी नहीं और पीड़ा जात
रियाज में लिखा है और पौने दो माशे तेज शकर में मिलाकर पीना
को दूर करता है तथा गर्म जल पीना उस बायशूल को जो निर्बलता
है दूर करता है ।

अथवा बकरी की भेगनी बालक क मूत्र में औटावे फिर पीसकर कपड़े पर लगाकर गुनगुना २ छेपकर मर्दन करे ।

अथवा साख की पत्तियों का रस निचोड़कर उस में पारा पीसकर नामि के आस पास मले ।

अथवा चमेली का तल गरम कर रुई उस में मिगोकर नामि पर रखें ।

अथवा साधन पानी में घिस कर पेट पर और उसके आस पास लगावे और हुक्का पीना बायशूल को गुण करता है ।

अथवा जब लड़का पैदा हो नामि उसके काठ कर अपने पास रखें बायशूल उत्पन्न न हो ।

अथवा रेंडी की भींगी, पलुआ, महुवे के बीजों की भींगी सब को कूट छान कर सिरके में औटा कर मर्दन करे ।

अथवा लहसन खाना बायशूल की पीड़ा के लिये अव्युत्त औषधि है ।

अथवा बकरी का पिचा अर्द्धोष्ण नामि के नीचे मलना दस्त खाता है और विशेष करके बालकों के अजीर्ण को बहुत गुण करता है ।

लेप भारतवर्षीय वैद्यों का बनाया हुआ कि दस्त खाता और बच्चों की पसली चकने को गुण करता है सुरागा, तेलिया, नीलाधोया जमातगोडे की भींगी प्रत्येक साढ़े तीन मासे थुरर के दूध में पीस कर नामि के आस पास लेप करे ।

कुदर की टिकिया

कि आंवों की पीड़ा और पेशक को गुण दायक है कुदर, सोंफ, सोये के बीज प्रत्येक एक तोले साढ़े पांच मासे अजवायन पौने नौ मासे कूट छान कर पानी में टिकिया बनावे मात्रा साढ़े चार मासे ।

एक मनुष्य के पेट में कीड़े पड़ गये थे उसको मैंने भिरेचक दिया कीड़े दूर हो गये फिर पाचन शक्ति कम हुई और अफरे तथा ओछन के पयोचित न पचने से कभी २ कीड़े उत्पन्न होते थे जब मैंने यह माजून उसके लिये उचित समझी गुण दायक है ।

पोदीना, सोंफ, सातर, अनीस, जीरा, अतरता का धिलका, दालचीनी सोंठ प्रत्येक साढ़े तीन मासे अजवायन पौने दो मासे, इलायची, पानिया, चन्दन गुलाब में पीसकर प्रत्येक सात मासे आंवों का सुरक्षा गुठली निकाल कर

चार जग तिगुन शहद में पाजून घनावे ।

फसल दंदान शिकम अर्थात् पेट में कीड़े

पड़ जाने की चिकित्सा में

वे आंतों में उत्पन्न होते हैं और उनके कई भेद होते हैं एक लघि सर्पिक
सदृश होते हैं दूसरे चौड़े कि जिनको हव्बुल फिरह और कबूद दाने कहते
तीसरे छोटे कि सिरके के कीड़ों के समान आंतों के मध्य में उत्पन्न होते हैं और
यह केवल भोजन की बुराई और गुदा के न घोने के कारण बालकों की आंवा
में उत्पन्न होनाया करते हैं ।

चिकित्सा एक दो दिवस दुग्ध पीकर यह गोली खाय सनाय, गुण
प्रत्येक पाच तोले काबली इड़का बक्कल काली इड़ प्रत्येक दो तोले, सोंठ सुनकी
प्रत्येक एक तोले शहद में गोली बनावें मात्रा एक तोले । और धनिया के पाक
खाना कि जिसका चंदर रोग में वर्णन हुआ है गुण करता है ।

इतरीफल

अर्थात् अवलेह कि कीड़ों को निकालता है काबली इड़ का बक्कल, पुरा
का बक्कल, आवळा, काबली बिड़ंग प्रत्येक दो तोले ग्यारह माशे, कालादीना
पौने दो माशे, कवेला, कड़वा कूट, सेंधानोंन प्रत्येक साढ़े दस माशे कूट खाने
कर तिगुने शहद में पिळावे मात्रा चौदह माशे तक ।

चूर्ण कि पेट के कीड़ों को मारता है और दूर करता है तथा भोजन
को पचाने वाला है अजपोद, काबली बिड़ंग, सेंधानोंन, जवाखार, काबली
इड़का बक्कल, पीपल, सोंठ सब औषधि बराबर और हींग सुनी हुई एक भाग
की आधी कूट छानकर फक्की बनावे मात्रा सात माशे ।

कवेले की गोली कि पेट के कीड़े दूर करने में अद्भुत गुण रखती
है हींग, पोदीना, बायबिड़ंग सेंधानोंन, काबली इड़का बक्कल, कबली बराबर
कूट छान कर गोलियां बनावें मात्रा तीन गोली और कभी इस में निसोत भी
सदाते हैं ।

अथवा काबली बिड़ंग, सेंधानोंन प्रत्येक सात माशे कूट बराबर कर
गोलियां बनावें मात्रा नौ माशे गरम जल के साथ ।

चूर्ण कि सब प्रकार के कीड़ों को दूर करता है काबली बिड़ंग, सेंधानोंन
काबली इड़का बक्कल बराबर कूट छान कर दस माशे गोली दामि

सग खाय और खिचड़ा भोजन करें ।

गोली कि दस्त जाता है और कीड़ों को निकालती है स्याह जीरा तीन मासे, काबची बिड़ग, तुर्की दरमना प्रत्येक दो मासे सूखी निसात, अफ-तीमून, सोंठ, कठीरा, एलुभा प्रत्येक एक मासे कूट छान कर गोलिया बनाकर खाय यह सब एक मात्रा है ।

काढ़ा भारत वर्षीय घैयों का बनाया हुआ कि कीड़ों को दूर करता है खट्ट अनार का छिलका तूत की छाल प्रत्येक दो ठोले जौ कुट कर के पानी में औटा छान के पिये ।

द्वितीय काढ़ा

कि बड़े कीड़ों और कटू दानों को दूर करता है वकायन की छाल दो ठोले आठ सकोरे पानी में औटावे जब एक सकोरा जल रहे थोड़ा गुड़ मिला कर खाकर सो रहे और इसी भांति तीन दिवस पर्यन्त करे ।

गोली कि उदर के कीड़ों को गुण करती है कजा की धींगी, पलास पापड़े के बीज, अजवायन, कवेळा बायबिडग गुड़ बराबर लेकर गोळिया बनावे मात्रा पौने दो मासे ।

अथवा यह छोटे कीड़ों को जो बालकों की गुदा में पड़ जाते हैं दूर करे रसौव चाकस, हींग प्रत्येक दो मासे, एलुभा एक मासे कालीपिच, आष मासे, नीम की पत्ती दो नग, ककरोदे के रस में पीस कर ज्वार के प्रमाण गोलिया बनावे मात्रा एक गोली ।

अथवा मुलीम सफेद कत्या, अफ्रीम, बेर की पत्ती, पुराना खोपरा बराबर लेकर मूंग के समान गोळिया बनाकर एक गोली खाय ।

अथवा मुनक्का में उसके बीज की बराबर काबची बिड़ग भरदें तरुण को बीस नग और बालक को पाच नग से दस नग तक दें और बचम तो यह है कि मुनक्का निगल जाय ।

अथवा बेल का खुर जलाकर उसकी राख शहद वा गुड़ में मिलाकर खाना कीड़ों को दूर करती है ।

अथवा शफतालू जलाकर कड़वे तेज में मिला कर गुदा पर पत्ते दो वक्चों की गुदा के बड़े कीड़े दूर होजाय ।

अथवा स्याह गदूरे के पत्तों का अर्ध प्रति दिन दो बार चगकी में टागाकर

गुदा के भीतर फेरे वा कपड़े की पत्ती बनाकर दवा में भिगो कर गुदा में फेरे तो सब कीड़े मरनाय ।

और नोन से पत्ती करना बच्चों की गुदा के कीड़ों को मारता है ।
अथवा पहिली राति को दो मुट्ठी तिल गूदे में मिलाकर खाय और उस के प्रातःकाल कवेछा साढ़े तीन पाशे सावन मिलाकर गोली बनावे और गरम जल के सग निगल जाय सब कद्दू दाने दस्त की राह निकल जावेगे ।

अथवा तुर्की घुर्पना अनारदाने के साथ जोकट करके प्रति दिन प्रातःकाल के समय बादाम के बराबर खाय । खुलासतुल जाख वाले ने इस औषधि को परीक्षित लिखा है ।

अथवा

अरंड के पत्तों वा आंगरे के पत्तों वा घतूरे के पत्तों का रस दो तीन बार प्रति दिवस गुदा में मला करे ।

फ़सल खरबुल मिर्कद अर्थात् कांच निकलने की चिकित्सा में

प्रायः यह रोग बालकों को दस्त के पश्चात् होता है ।

बुकी कि बच्चों की कांच निकलने को गुण करे पुरानी चालनी का चमड़ा जलाकर उसकी राख गुदापर छिड़के ।

अथवा मध्यम गुदा को घी से चुपड़ ले फिर लिसौड़ा जलाकर और पीसकर उसपर डुके ।

दवा कि बालकों की कांच निकलने को गुणदायक है रोगी अपना मूत्र बासन में लेकर जब पोखाना फिर चुके उस मूत्र से पहिले गुदा को घोंवे फिर पानी से शुद्ध कर दो तीन दिवस में आराम होता है ।

अथवा बघूर की फली तांबूल घावा के फूल औंटाकर उसके काड़े में बैठे वा गुदा को घोंवे ।

अथवा

आम की पत्तियां जामन की पत्तियां और उसकी छाल जोकट कुटवाकर औंटावे फिर उस जल से गुदा को घोंवे और जब गुदा सोचके कारण भीतर न जावे कई बार गरम पानी में बैठना और गुलाब के फूलों का तेल उसपर

मर्दन करना गुण करता है ।

बुर्की कि काँच को निकलने से रोके । बकरी का खुर जलाकर पाज्जु, अनार का फूल, अनार का छिलका, खुनी फिटकरी बराबर कूट दानकर धुके ।

मर्दन कि काँच निकलने को गुण करै सुर्पी के सहे की सफेदी गुदा पर बाहर और भीतर से लगावे तो पीड़ा तथा सूजन दूर हो वासलीक नस को फस्द खोखना सूजन और पीड़ा को गुणदायक है मात्रा ७ माशे ।

लेप जौ का आटा मसूर अडेकी सफेदी गुलाब के फूलों के तेल में मिला के लेप करै ।

चूर्ण ।

कि काँच निकलने और रस की पीड़ा को गुण करै सोंठ, आवला मल्लेक साढ़े तीन पाशे धनियाँ सेंधानोंन कालानोंन मल्लेक साठ पाशे कालीमिर्च चौदह पाशे पीपलामूल साढ़ेतीन सोंठे कूट दानकर फकी बनावै ।

फसल बवासीर की चिकित्सा में

वह दो प्रकार की होती है एक वह कि गुदा के किनारे के मससे फूलजावे और रस से बधिर निकले उसको खुनी बवासीर कहते हैं ।

दूसरी वह कि गुदा में मससे नहीं और पेट में कुराकुर अर्थात् शरशराहट हो और जो गुदा पर मससों की अधिकता हो तो फूल जाय और बधिर न निकले उसको बवासीर बादी कहते हैं ।

चिकित्सा घूतक की हड्डी पर सींगी लगावे और आदि ही में बवासीर का खून पन्द न करे परन्तु जब विशेष निकले और रोगी निर्वृत्त हो जावे बंद कर दे ।

वैद्यों ने लिखा है कि अनामिका और कनिष्ठका के मध्य में दाह देना बवासीर को गुण करता है और हंसली पर भी दाह देने से बवासीर नहीं रहती और दाह देने के पश्चात् रुई जल में भिगोकर उस पर रखें कि वह तर रहे ।

गोली शरसिगार के बीजों की सींगी बवासीर को अतिगुणदायक है । शरसिगार के बीज घीन छीलकर एक सोंठे कालीमिर्च तीन पाशे कूट दानकर गोलीयाँ बनावे मात्रा तीन पाशे शीतल जल के साथ दवे ।

गोली कि बवासीर बादी को गुण करे और अज्ञात नहीं करती किन्तु

मकृति को नग्न करता है सोफ कावली दूध का बकल बहेद का बकल आवला प्रत्येक मात माशे गुगल रसौत प्रत्येक चौदह माशे गदना के पीज सादे तीन माशे अजीर चार नग हडों को प्रथम पा में मकरोय दो भाग किशमिश अथवा द्राक्षा वा दाख कूट कर इम में मिलाकर गोलिए बनावे मात्रा यथोचित ।

दवाई गौ का दुग्ध आध सेर पिये जय दूध का कटोरा मुंह से लगावे कागजी नीबू का रस उसमें ढाळकर तुरन्त ही पिये तीन दिवसमें गुण प्रकट होगा ।

गोली ककरोदे की, कि भारतवर्षिय वैद्यों की परीक्षित है एक सेर ककरोदे का अर्क मदाग्नि पर छौटावे जब गाढा होजाय सादे तीन माशे काली मिर्च पीस कर मिलावे फिर खरत्त करके जंगली बेर के समान गोलिए बनाकर एक एक गोली दोनों समय खाय ।

कंधी के पत्तों की गोली कि बवासीर बादी और खुनी को गुण करती है कंधी की पत्तियां कालीमिर्च प्रत्येक २१ नग जल में पीस कर सात गोलिए बनाकर एक २ गोली सन्ध्या सवेरे खाय ।

गोली कि बवासीर को दूर करे ककमी और रसौत बराबर पीस कर जंगली बेर के समान गोलिए बनाकर दोनों समय एक २ गोली खाये और लेप के लिये भी यह गोली अत्युत्तम है ।

अथवा नीम की गुठली की मींगी बकायन के बीजों की मींगी गुगल रसौत एलुआ स्याह मिर्च गेरू सब बराबर मकरोय के पत्तों के रस में जंगली बेर के समान गोलिए बनावे दोनों समय एक २ गोली खाय ।

अथवा रसौत सात माशे मुनक्का बीजों सहित चौदह माशे कतीरा सात माशे सबको कूट छानकर जंगली बेर के समान गोलिए बना कर मात्र काली एक गोली खाकर ऊपर से घी के सग दो ग्रास रोटी के खाये तो बवासीर का खून बंद हो ।

अथवा

रसौत दो भाग अनार का छिलका चार भाग गुड़ आठ भाग कूटछान कर गोलिए बनावे मात्रा चौदह माशे तक खाय तो खुनी और बादी बवासीर को गुण करे ।

अथवा

सफेद सख्नी सफेद घूना घुने चने मत्येक दो तोले चार माशे कूट छानकर नौ तोले चार माशे गुड़ में मिलाकर द्वासीस नग गोखियां बनावे एक २ गोली दोनों समय खाय ।

अथवा

साढ़े तीन माशे इड़ और पौने दो माशे स्याह जीरा दोनों को घून कूट छानकर गदना के जलमें गोखियां बनावे मात्रा एक गोली ।

गोली गूगल की, कि बवासीर खूनी और बादी को गुणदायक है काबली इड़ का बककल बड़े का बककल आवला मत्येक दो तोले ग्यारह माशे सीप जलाकर चारहसिंगे का सींग जलाकर मत्येक साढ़े तीन माशे अजवायन साढ़े दस माशे गूगल सय औषधियों के बराबर लेकर पानी में गोखियां बनावे ।

अथवा स्याह इड़ बड़े का आवला मत्येक एक भाग कद बराबर गुलाब वा पानी में पीसकर गोखियां बनावे मात्रा सात माशे ।

अथवा बकायन के पत्ते पावसेर खारीनोन एक तोले आठ माशे पीसकर जगली घैर के समान गोखियां बनावे ।

गोली कि बवासीर खूनी को गुण करती है । मुर्गी के अण्डे का छिलका जला कर सदरुस चीता मत्येक पांच माशे लाल नौसादर कूट छान कर रीठ के बराबर गोखियां बनावे मात्रा छः गोली ।

हलवा कि बवासीर के खून बहने को गुणदायक है मुचकुद के फूल महीन कूट छानकर घूरे और घी में हलवा बनावे मात्रा एक ताते ।

अबलेह कि बवासीर खूनी और बादी को गुण करे । काबली इड़ का बककल, बड़े का बककल, आवला, धनियां मत्येक एक भाग गूगल गदना के जल में पीस कर त्रिगुण शहद में बनावे ।

चूर्ण कि बवासीर का खून बंद करे एक नग नारियल के ऊपर का छिलका लेकर जलावे और उस के बराबर घूरा मिलावे और तीन मात्रा करें धीरे धीरे हो और एक वर्ष पर्यन्त बंद रहे ।

अथवा बकायन क बीजों की भीगी, सौंफ साढ़े तीन माशे कूट छान कर उसकी बराबर घूरा मिलाकर फक्की बनावे मात्रा पौने दो माशे ।

अथवा अरपद जला कर गैहू बछाकर बराबर पीसे तीन माशे तक

दो तोल घी के सग देवें बवासीर का खून बढ हावै ।

अथवा कंठवे इन्द्रजौ कि सभ काम में मीठों से उत्तम है बवासीर के दस्त के लिये परीक्षित हैं प्रति दिन छे माशे ठंडे जल के सग सेवन करें ।

अथवा अंकोळ की जड़ एक माशे कालीमिर्च बराबर लेकर फक्की बनाकर खाय और उसकी धूनी लेना भी बवासीर को गुण करती है ।

अथवा कसूम के फूल तीन माशे पानी में पीस कर दही में मिलाकर खाय ।

अथवा मूली के पत्ते काट कर छाया में सुखामें फिर कूट छान कर एक हथेली भर बराबर घूरा मिलाकर फक्की बनावें और चालीस दिवस पर्यंत फांकें ।

चूर्ण कालीजीरी का, बवासीर खूनी और वादी को गुणदायक है कालीजारी साढ़े दस माशे आधी मुनी आधी कषी प्रति दिन साठो चावलों के पानी सग साढ़े तीन माशे खाय ।

अथवा कालीइंद्र घी में मून कर घूरा मिलावें और प्रति दिन एक तोले खाय करें ।

चूर्ण अखरोट कि बवासीर के खून को बढ करता है अखरोट का जिल्ला नला करके पिसी विष्टम्मी रुख के सग खाय ।

चूर्ण हुलहुल का कि बवासीर खूनी और वादी को गुण करता है हुलहुल के बीज एक भाग घूरा दो भाग मिलाकर खाय मात्रा दो माशे ।

अथवा निर्मली नला कर थोड़ासा घूरा मिला कर खाय ।

अथवा इमली के बीजों की राख एक माशे से दो माशे तक दही के सग खाय ।

अथवा पाच सेर कंड़ा जलाकर सनकी राख घड़े में रखकर आधा घड़ा पानी उसमें ढालकर आठ दिन रखवें और प्रति दिन घड़े को मिलावा रहे आठवें दिन पानी को ढिलाकर कपड़े में छान कर मिट्टी के सगार में रखवें और उसको कपड़े में छान करके छाया में सुखावें फिर प्रति दिन छ माशे उसमें से लेकर सात दिवस पर्यंत खाय और इस काल में भात और मूग की दात अथवा खिचड़ी भोजन करें और सात दिवस पश्चात फिर खाय और पथ्य न करें चौदह दिन में बवासीर दूर हो और फिर नहो ।

अथवा एक नग कजा के बीज की मींगी महीन पीसकर पूरा मिलाकर खाया करें और सेवन समय चिकना भोजन खाय ।

अथवा जंगली कपूर की धीठ धूर के फूल की जर्दी बराबर लेके महीन पीस कर एक माशे मात्र काल थोड़ासा गुलाब मिलाकर खाय खटाई और वादी से बचते रहें तीन दिन में आराम हो ।

अथवा धूर के फूल छेकर और कूट छान कर बराबर का चूरा मिलाकर मात्र काल एक हथेली भर खाया करें ।

अथवा अवाहली छाया में सुखा कर महीन पीसे और अर्द्धभाग काळी मिर्च पीस कर मिलावें दस माशे ताजा जल के सग खाय ।

अथवा गेरु खरिया मिट्टी बराबर कूट छान कर दस माशे दधि और मात्र के सग तीन दिवस पर्यन्त मात्र काल खाया करें तो बवासीर का बधिर बंद होवे ।

अथवा जमीकंद के टुकड़े २ करके छाया में सुखावें फिर कूट छानकर दस माशे मात्र काल ही खाय ।

अथवा करील की छाछ, रक्त चंदन, नागकेशर, रसीत, बराबर फली बनाकर नित्य सात माशे खाया करें ।

चूर्ण कि बवासीर की पीड़ा को शान्ति करता है कापली हड़ का बककल, घृत में भून के सौंफ प्रत्येक एक भाग कूट छान कर हान्यों के बीज दो भाग साबित मिलाकर प्रति दिवस नौ माशे एक चमचा मिठाई मिलाकर खाय ।

काढ़ा कि बवासीर को जड़ से खो देवे करील की जड़ छाया में सुखा के फिर जोकूट करके तीन सेर जल में औंटावें जब आधसेर रहे छानकर पावसेर मात्र काल और शेष सापकाळ को पान करें सात वा दस दिन में बधिर बंद हो जाय नहीं तो बवासीर थोड़े ही काल में जाती रहेगी ।

अथवा पाषा के फूल एक तोला आठ माशे एक प्याले जल में भिगोदे और ओस में रखदे मात्र काल बिना छाने पियें ऊपरसे एक तोला आठ माशे पूरा खाय ।

अथवा

मांझा, महीदी की पत्तियां प्रत्येक पंद्रह तोले रात को डेढ़ पाव पानी में

अथवा लिसोई जलाकर पा/पुरानी बलनी की खाल जलाकर, चुकें।
अथवा माजूफल, अनार का छिलका पीस कर चुकें तो काँच निकले
को गुण करे।

फसल गुरदे और मसाने के रोगों की चिकित्सा में।

गुरदे और मसाने की पथरी में स्थान की पीड़ा से फल निश्चय हो
सकता है रेबी और पथरी गुरदे में लाल रगकी होती है और मसाने में सफेद
रग की।

चिकित्सा गाढ़ी वस्तु न खाए और इस रोग में तबियत को नरम रखना
उचित है अंगूर के पत्तों का शर्बत गुरदे की पथरी को गुण करता है।

विधि मुनक्का पदरह दिरम अर्थात् चार तोले साढ़े चार माशे, पिपा-
बासा दो तोले, गोखरू तीन तोले, खबूते के बीज जो कुट, डेढ़ तोले सोंफ
जो कुट दस माशे, अंगूर की नरम पत्ती ग्यारह तोले आठ माशे एक राति
दिन पानी में भिगोवे सबरे ही ओटा कर तिगुने बूरे की चाशनी कर शर्बत
बनावें।

सफूफ हजरुल यहूद

कि गुरदे और मसाने की पथरी को दूर करे हजरुल यहूद दस माशे,
खबूते के बीजों की पींगी, खीरा ककड़ी के बीजों की पींगी, अजमोद, बबूर
का गोद, गोखरू, कुलथी, सात २ माशे, सोंफ कुट छान कर तीन माशे, अज-
मोद बबूर का गोद साढ़े तीन माशे कुट छान कर खूरन बनावें मात्रा २८ माशे
चने के काढ़े के संग और जो इत दवायों को तिगुने शहद के संग चाशनी
में मिलावे तो उसे हजरुल यहूद का पाक कहते हैं।

चूर्ण दाऊदी के फूलों का, कि मसाने की पथरी को गुण करता है दाऊदी
के फूलों की पखड़ी सुखाकर कुट छान कर बराबर का घूरा मिलाकर खाए
और ओटा कर पीना भी गुण करता है।

दवा जवाखार, सुहागा दो २ माशे लेकर गोखरू के रस के संग पियें।

अथवा नीम के पत्ते जलाकर उनका सार निकाले दो माशे खाया करे।

अथवा अंगूर की लकड़ी की राख छ माशे गोखरू के रस के संग खाए।

अथवा कजा की कोपल जलाकर साठ माशे दो तोले शहद के संग खाए।

अथवा तिल की लकड़ी जलाकर सात माशे चौदह माशे सिरके संग खाए।

अथवा जगली कवूर की बीट सात माशे बराबर का घूरा मिलाकर पानी के सग खाया माय* सप्त कवूर की बीट जिसको दाने के बदले अलसी खिलाई जावे ।

अथवा कंजा की मिंगी मसाने और गुरदे की पयरी को गुण करती है कंजा की मिंगी छूट छानकर एक माशे, तीन माशे शहद के सग खाया और एक माशे नित्य घटाता जाय और ग्यारह दिन पीछे इसी प्रकार घटावे जब तीन माशे रह जाय मसाने की पयरी दूर हो जायगी ।

आवज्जन जिसके दो भेद हैं एक तो यह कि दवा का पानी वा गरम पानी सादा बड़े वासन में भरके उसमें रोगी बैठे और दूसरा तरदा कि पानी को लोटा तथा मशक में भरके दूर से रोगी के जोड़ों पर डालें ।

आवज्जन कि गुरदे और मसाने की पयरी को गुण करता है । कल्ल के पत्ता, मूली के पत्ता, शल्लम के पत्ता, तिल के पत्ता, खतमी के पत्ता पौने दोर तोले पानी में औटाकर जय आधा पानी रहे तब उसमें बैठावे ।

अथवा कवूर की बीट, सोया के बीज, करोंदा के बीज, सोंफ की जड़ गोखरू, खर्बूजे के छिलका, मेथी, खतमी के बीज, आधनाव थोड़ा लेकर औटाकर उस पानी में रोगी को बैठावे ।

काढ़ा कि गुरदे और मसाने की पयरी को, सोहवा है मुलहटी, कुलपी दूसरे माशे, सोंफ तीन तोले चार प्याले पानी में औठावे जब एक प्याला पानी रह जावे तब छानकर तीन माशे सेषानोन और चोड़ा घी मिलाकर पीवे

अथवा मुहम्मद जकरिया ने लिखा है कि जो आकर के पेड़की कोपल औटाकर थोड़ा घूरा मिलाकर नौ दिन पीवे तो मसाने की सब बीमारियों को दूर करे ।

अथवा काहू के चनों के सग औटाकर उसका पानी पीवे और कलौनी की जवारिक नो सदर रोग में लिखी है वह गुरदे और मसाने की पयरी को दूर करती है ।

अथवा पत्पर की फोटी कि एक पेड़ है उसकी पत्ती चौदह माशे पीस छानकर थोड़ा घूरा मिलाकर पीवे वा गुरदे की पयरी दूर हो और सूखे पत्ते हरे पत्तों से थोड़ा गुण करते हैं ।

अथवा यह गुरदे की पयरी को गुण करे है और पेशाब को जारी करे

है बुझारी की सीकों के फूल दा ताले लकर दो पहर पानी में भिगोव उसका
नितरा पानी लेकर उसमें खीरा, ककड़ी के बीज, गोखरू, जवासे मल्लेफ आदि
माशे गांगरा दो माशे पीस छानकर मिलावे और पोट्टा गुरा मिलाकर पीव ।

अथवा मूत्री के पसी फारस चार तोले आठ माशे निचोड़ कर तीन
माशे अमोद फाफ और उसी से निगल जाय ।

अथवा यह गुर्दे और पसानी की पथरी को गुण करे पोर्ष की पसी
परीन पीस कर पिये और चौलाई का साग खाना पथरी को गुण करता है ।

अथवा जो गुर्दे में वाय का दर्द हो तो रेंडी की भीगी पीसकर
गुनगुनी गुनगुनी लगावे ।

आवजन कि पथरी को गुण करे नील की पसी पानी में ओटा कर
रोगी को उसमें बैठावे ।

दवा कि सर्दी के गुर्दे के दर्द को गुण करे अस्पंद के पांच दाने
निगलना प्रारम्भ करे और नित्य पांच दाने बढ़ाता जाय जब सौ दाने तक
पहुंच जाय फिर धमी प्रकार कम करे तो गुर्दे का दर्द पद होव ।

अथवा जो बिल के पेड़ की कोपल छाया में सुखाकर जलावे और
नित्य सात माशे अथवा दस माशे खाया करे तो गुर्दे की पथरी दूर होवे ।

अथवा जवासे का रस पथरी के रोगों को गुण करता है और स्त्री
धर्म की रुकावट को भी दूर करता है ।

अथवा तिवली के तेल की माक्षिक गुर्दे और पसानी की पथरी और
सर्दी को गुण करती है इस का नुसखा पचायात में लिखा है ।

गुण जाळाचूम ने लिखा है कि जोहे की अगूठी तथा लख्खा पदवी
भी पथरी को गुण करता है ।

फूसल सोजाक की चिकित्सा में

इस रोग में ऐसी ठंडी दवा काम में लावे जो पेशाब लाने वाला हो और
सब लुभाव पेशाब की जलन को गुण दायक है कुलफा के बीज, सफेद पोस्त
के दाने, खीरा ककड़ी के बीज, खरबूज के बीजों की भीगी, तरबूज के बीजों
की भीगी डेढ़ २ तोले छोटे गोखरू खरूर का मोद कतीरा सावे २ माशे इसका

मोल फ नआय ग मोखिया बनावे पात्रा तीन माशे

मोली कि पेशाब की जलन को घुन कर मदरेजे को जलाकर पानी

पे डाले और उस की बराबर खिले चने भुना हुआ कतीरा पीसकर मिलावे और चने के प्रमाण गोखियां बनावे एक गोली गोखरु के रस में खाय ।

गोली कि सोजाक को गुण करे । पियवासा का छोटा पेड़ जलाकर उसकी राख कतीरे के जल में मिलाकर चने के प्रमाण गोखियां बनावे और प्रातः काल एक गोली गुलखैरा के जल के संग जो रात को भीगा हो पीवे दो नया और पुराना सोजाक नाश ।

चूर्ण

कि सोजाक को गुण करे । सेलखड़ी, राळ, मिथी दो दो तोला सालभ खाने, गोखरु, सरपाछी एक तोले छूट छानकर चौदह भाग करे और नित्य एक पाग बकरी के दूध के संग फांके ।

अथवा यह सोजाक को गुण करे और पीप को गुण करे भुनी फिटकरी, गेरु, साढ़े तीन मासे बराबर घूरा पिलाकर चूर्ण बनावे और नित्य सात मासे गौ के दूध के संग खाय ।

दवा

कि सदे मकृति की सोजाक को गुण करे सहजने का गोंद नित्य प्रत काल पीस कर एक तोले सात दिन दही के संग खाय ।

चूर्ण कि सोजाक को गुण करे । सालभ खाने, कुलफा के बाज सिरपाछी गोखरु, काहू के बीज, सेलखरी बराबर लेकर घूरन बनावे मात्रा एक तोले गौ के दूध के संग खाय ।

अथवा

यह सोजाक के मवाद को घट करे कशीरा, मांग के बीज, सिरपाछी रात, कालापीन बद, लाल बीजबद, बराबर लेकर घूरन बनावे मात्रा सात मासे

अथवा यह सोजाक को गुण करे हलदी, नांवले, बराबर छूट छान कर उसकी बराबर घूरा पिलावे मात्रा एक तोले पानी के संग फांके तो नया सोजाक सात दिन में नाश और रह नाश तो दो महीने तक लेना उचित है ।

अथवा यह घूरन सोजाक के पीप को जो जलज क साध जाओ दो गुण करता है । राख पीसकर बराबर की मिथी मिलाकर अठारह दिन तक दस मासे खाय ।

अथवा

यह सोजाक को गुण करता है और पीप को दूर करता है डाक की कोयल

है बुझारी की सीकों के फूल दा तले लकर दो पहर पानी में भिगोवे उसका
नितरा पानी लेकर उसमें खीरा, ककड़ी के बीज, गोखरू, जवासे गत्येक
माशे भांगरा दो माशे पीस छानकर मिलावे और थोड़ा सूर मिलाकर पीवे।

अथवा सूती के पत्तों का रस चार तोले आठ माशे निचोड़ कर तीन
माशे अजमोद फाक और उसी से निगल जाय।

अथवा यह गुरदे और मसाने की पथरी को गुण करे पोई की पंखी
महीन पीस कर पिये और चौराई का साग खाना पथरी को गुण करता है।

अथवा जो गुरदे में वाय का दर्द हो तो रेंडी की मींगी पीसकर
गुनगुनी गुनगुनी लगावे।

आवजन कि पथरी को गुण करे नील की पत्ती पानी में ओढ़ कर
रोगी को उसमें बैठाने।

दवा कि सदी के गुरदे के दर्द को गुण करे अस्पंद के पांच दाने
निगलना मारम्भ करे और नित्य पांच दाने बढ़ाता जाय जब सौ दाने तक
पहुंच जाय फिर वसी प्रकार क्रम करे तो गुरदे का दर्द बढ़ होवे।

अथवा जो तिल के पेड़ की कांपल छाया में सुखाकर जलावे और
नित्य सात माशे अथवा दस माशे खाया करे तो गुरदे की पथरी दूर होवे।

अथवा जवासे का रस पथरी के रोगों को गुण करता है और स्थी
धर्म की बकावट को भी दूर करता है।

अथवा तितली के तेल की मालिश गुरदे और मसान की पथरी और
सदी को गुण करती है इस का अनुसंधान पञ्चाघात में लिखा है।

गुण जाचानूम ने लिखा है कि छोदे की अगूदी तथा खरूखा महश
भी पथरी को गुण करता है।

क्रसल सोजाक की चिकित्सा में

इस रोग में ऐसी ठंडी दवा काम में लावे जो पेशाब लाने वाली हो और
सब छयाय पेशाब की जलन को गुण दायक है फूलफा के बीज, सफेद पोस्त
के दाने, खीरा ककड़ी के बीज, खरूज के बीजों की मींगी, तरबूज के बीजों
की मींगी डेढ़ २ तोले छोदे गोखरू धवूर का गोद कतीरा सात २ माशे इसमें
गोखरू का जथाय में गोखरू घनावे मात्रा तीन माशे

गोल्ली कि पेशाब की जलन को मन्द करे महरोजे को बलाकर पानी

में हाँते और उस की बराबर खिले चने भुना हुआ कवीरा पीसकर मिलावे और चने के प्रमाण गोखिया बनाते एक गोली गोखरू के रस में स्थाय ।

गोली कि सोजाक को गुण करे । पियाचासा का छोटा पेड़ चलाकर उसकी राख कवीरे के जल में मिलाकर चने के प्रमाण गोखिया बनाते और प्रातः काल एक गोली गुलाबरा के जल के संग जो रात को मीठा हो पीवे दो नया और पुराना सोजाक जाय ।

चूर्ण

कि सोजाक को गुण करे । सेलसदो, राँछ, मिथी दो दो तोला सालमखाने, गोखरू, सरयाली एक तोले छूट छानकर चौदह भाग करे और नित्य एक पाग बकरी के दूध के संग फाँके ।

अथवा यह सोजाक को गुण करे और पीव को गुण करे भुनी फिटकरी, गेरू, साढ़े तीन मासे बराबर चूरा मिलाकर चूर्ण बनावे और नित्य सात मासे गौ के दूध के संग स्थाय ।

दवा

कि सदैव मकृति की सोजाक को गुण करे सहजने का गौद नित्य मत् फाल पीस कर एक तोले सात दिन दही के संग स्थाय ।

चूर्ण कि सोजाक को गुण करे । तालमखाने, कुलफा के बाज सिरयाली गोखरू, काहू के बीज, सेलखरी बराबर लेकर चूरन बनावे मात्रा एक तोले गौ के दूध के संग स्थाय ।

अथवा

यह सोजाक के मवाद को बर करे कजीरा, भांग के बीज, सिरयाली राख, कालापीन बद्, लाल बीजबद्, बराबर लेकर चूरन बनावे मात्रा सातमासे

अथवा यह सोजाक को गुण करे हलदी, माँचले, बराबर छूट छान कर उसकी बराबर चूरा मिलावे मात्रा एक तोले पानी के संग फाँके दो नया सोजाक सात दिन में जाय और रह जाय तो दो महीने तक लेना अधिक है ।

अथवा यह चूरन सोजाक के पीप को जो जखान के राख साखी हा गुण करता है । राख पीसकर बराबर की मिथी मिलाकर अठारह दिन तक दस मासे स्थाय ।

अथवा

यह सोजाक को गुण करता है और पीव को दूर करता है डाक की काँपक

सुखाकर ढाक का गोंद, ढाक की छाछ और ढाक के फूल कुट छान कर बुरा
पर का घुरा मिलाकर नौ माशे नित्य दूध के संग फाँके परीक्षित है।

अथवा शोरा कलमी, बड़ी इलायची चौदह २ माशे कुट छान कर
भाग करे एक भाग सध्या और एक भाग सवेरे पानी के संग खाया कर और
चौथे दिन से इस प्रकार खाये कि नौ माशे या एक तोले साठे चाँदकी
पानी में भिगो कर सवेरे उसके पानी के संग तीन दिन तक खाये।

अथवा ताजखरूस एक पेड़ है कि हिन्दी में उसे मुर्ग का केश कहते
हैं उसकी जड़ एक तोले, दो तोले सफ़ेद कंद में मिलाकर घुरेन बनावे और
नित्य बीस दिन तक खाये।

अथवा बड़ की कोपक छाया में सुखा के पीसे और बराबर की घुरा
मिलाकर दूध की लस्सी के संग नित्य प्रातःकाल के समय खाये दवा दो तोले
गैहू का सत एक प्याले पानी में रात को घोल दे प्रातः काल पिये।

नकुय अर्थात् भीगी दवा गड़दी, आवले, सफ़ेद जीरा दो तोले चार
माशे, सब सर भर पानी में भिजोय आठ पहर और उसमें से आधपाव
प्रातः काल और आधपाव सायंकाल पीवे जब पानी थोड़ा रह जाय तब और
ढाक दे।

अथवा कालसे की जड़ चौदह माशे जौकुट करके राति को पानी में
भिगोदे प्रातःकाल मल छान कर थोड़ा घुरा मिलाकर पीवे।

अथवा आम की छाल जौकुट करके दो तोले चार माशे पावभर पानी
में भिगोकर जब रात भर मीग लुके प्रातःकाल मल छान कर सात दिन पीवे।

अथवा सदासुशगन पेड़ के पत्ता एक तोले रात को पानी में भिगो
प्रातःकाल मल छानकर थोड़ा घुरा मिलाकर पीवे।

अथवा कड़वी खट चौदह माशे जौकुट कर रात को पानी में भिगो
प्रातःकाल उसका नितरा पानी पीवे।

अथवा चार माशे बीजाबोल रात को पानी में भिगोवे प्रातः काल उस
के नितरे पानी में भिगो मिश्री मिलाकर पीवे।

अथवा एक तोले रीठा रात को पानी में भिगो दे प्रातः काल उसका
नितार कर पीवे।

कुर्सकाकनज अर्थात् पिठकौआ की टिकिया मुजाक और गुदे और
पसाने के पाव की गुण करे और पेशाब को खोलने पिठकौआ चौदह माशे

खीरा, ककड़ी व बीन, कुकुरे के, पीज, छिल्ली मुलाहटी जौकट परने, सफेद
पोस्त के दाने दस २ माशे, कलीरा, बघूर का गोंद, गेरू सात २ माश, अजि-
मोद साढ़ तीन माशे, अफीम पौने दो माश, कूट छानकर ईसबगोल के लुधाव
से टिकिया बनावे मात्रा चौदह माशे ।

काढ़ा सोजाक को गुण करे सखाहूती औटाकर पीवे ।

अथवा यह काढ़ा सोजाक और पशाब की कठिनता को गुण करे ।
खिर की जड़ सात प्याले पानी में औटावे जब एक प्याला पानी रहे छान
कर पीवे और इसी प्रकार तीन दिन तक पीवे ।

अथवा यह सोजाक को गुण करे । गुड़हर के फूल पहल दिन एक
गोबतास में घर के स्वाय इमी प्रकार चार दिन तक नित्य एक २ घड़ा
बिबे दिन से इसी प्रकार घटावे जब एक नग रह जाय ईश्वर करे तो सोजाक
तो रहे ।

अथवा नीम के पत्ता, चपेली व पत्ता औटाकर उसके गुनगुन पानी
इसी को रक्खे और भफारा ले आध घड़ी पीव वममें पशाब कर ।

अथवा सर्यारा अर्थात् ताजवरूस के बीज जि हैं हिन्दी में कुकुरा कहते
दस माशे-महीन कूट कर आध सेर दूध में रात को भिगा कर चांदनी में
बदे, मात काल को पीवे तो सोजाक और ममेह को गुण करे और बीर्यव्रा-
दा करे परतुं थोड़ा सा घुरा मिलावेना जचित है कि घुरा सर्यारे की छाग है ।

अथवा केले के पेड़ का रस निचोड़ कर पीवे तो पेशाब की जलन जाय ।

अथवा जौक कि हिन्दी पेड़ है बहुधा करके चौपासे में पैदा हाता है
की पत्तियां और फल एक तोले लेकर पानी में पीस कर घड़ा घुरा
ठाकर पीवे ता सोजाक जाय और दो पताशे में भर कर बड़ का दूध तीन
प्याले काल स्वाय तो सोजाक जाय ।

अथवा सात माशे जवाखार गाय के दही में पीव ता सोजाक जाय ।

अथवा गधा बिरोजा थोड़ा गुड़ में लपट कर स्वाय और वम फलकपे
पानी में पीव कर पीवे ।

अथवा सिरस के पत्ता पीस कर पानी में छान कर मिश्रण क दूध
थोड़ा घुरा मिलाकर पीवे तो सोजाक जाय ।

अथवा बघूर की कोपल एक तोले, गाखरू एक तोले दोनों का शरीर
तल कर थोड़ा घुरा मिलाकर पीवे ।

सुखाकर ढाक का गोंद, ढाक की छाल और ढाक के फूल कूट छान कर बराबर का घूरा मिलाकर नौ माशे नित्य दूध के संग फाँके परीक्षित है।

अथवा शोरा कलमी, बड़ी उलायची चौदह २ माशे कूटछान कर एक भाग करे एक माग सध्या और एक भाग सवेरे पानी के संग खाया कर और चौथे दिन से इस प्रकार खाया कि नौ माशे या एक तोले साठी चाँचको के पानी में भिगो कर सवेरे उसके पानी के संग तीन दिन तक खाया।

अथवा ताजखरूस एक पेड़ है कि हिन्दी में उसे मुर्ग का केश कहते हैं उसकी जड़ एक तोले, दो तोले सफेद कद में मिलाकर चूरन बनावे और नित्य बीस दिन तक खाया।

अथवा बड़ की कोपल छाया में सुखा के पीसे और बराबर की घूरा मिलाकर दूध की लरसी के संग नित्य मातःकाल के समय खाय दवा दो तोले गैहूँ का सत एक प्याले पानी में रात को चोले दे मातः काल पीये।

नकूय अर्थात् मीर्गी दवा महदी, आवले, सफेद जीरा दो तोले चार माशे, सब सर भर पानी में भिजोय आठ पहर और उसमें से आधपाव मातः काल और आधपाव सायंकाल पीवे जब पानी थोड़ा रह जाय तब और ढाल दे।

अथवा फालसे की जड़ चौदह माशे जौकूट करके राति को पानी में भिगोदे मातः काल मल छान कर थोड़ा घूरा मिलाकर पीये।

अथवा आम की छाल जौकूट करके दो तोले चार माशे पाँचभर पानी में भिगोकर जब रात भर भोग चुरे मातः काल मल छान कर सात दिन पीये।

अथवा सदासुहागन पेड़ के पत्ता एक तोले रात को पानी में भिगोव मातःकाल मल छानकर थोड़ा घूरा मिलाकर पीये।

अथवा कड़वी खल चौदह माशे जौकूट कर रात को पानी में भिगोव मातःकाल उमका नितरा पानी पीये।

अथवा चार माशे बीजाबोल रात को पानी में भिगोवे मातः काल उस के निचरे पानी में भिगो मिर्ची मिलाकर पीये।

अथवा एक तोले रीटा रात को पानी में भिगो दे मातः काल चराको नितार कर पीये।

कुर्सकाकनज अर्थात् पिटकौमा की टिकिया सुजाफ और गुर्दे और पसाने के घाव को गुण करे और पेशाब को खोले पिटकौमा चौदह माशे

खीरी, ककड़ी के बीज, कुड़क के बीज, जिला। सुखरटी जोड़ करके सफेद
पोख के दान दस २ माश, फलीरा, पयूर का गोद, गरु सात २ माश, अम
मोह सात, तीन माश, अफीम पौने दो माश, कूट छानकर इसमें गोता के छे बांध
में डिकिया बनावे मात्रा चौदह माशे ।

काढ़ा सोजाक को गुण करे सखाहती औटाकर पीवे ।

अथवा यह काढ़ा सोजाक और पेशाब की कठिनता को उखार कर
गांठ की जड़ सात प्याले पानी में औटावे जब एक प्याला पानी रहे छान
कर पीवे और इसी प्रकार तीन दिन तक पीवे ।

अथवा यह सोजाक को गुण करे । गुड़हर के फूल यह
नग वृताश में घर के स्वाय इसी प्रकार चार दिन तक नित्य एक २ बड़ा
पौंच दिन से इसी प्रकार घटाव जब एक नग रहे जाय ईश्वर करे तो सोजाक
जाता रहे ।

अथवा नीम के पत्ता, चमेली के पत्ता औटाकर उसके
दही को रक्खे और मफारा लो आध घड़ी पीछे वसमें पेशाब

अथवा सर्यारा अर्थात् ताजखरूस के बीज जिन्हें हिन्दी में
दस माश महीन कूट कर आप सेर दूध में रात को भिगा कर चाइनी में

खदे प्रायः काल को पीवे तो सोजाक और ममेह को गुण करे और बीर्य को
बढ़ा करे परंतु थोड़ा सा घूरा भिखालेना उचित है कि घूरा सुखारे की छाया है कि

अथवा केले के पेड़ का रस निचोड़ कर पीवे, तो पेशाब की जलन जाय ।

अथवा नौक कि हिन्दी पेड़ है बहुधा फरके चौमासे में पैदा होता है
स की पत्तियां और फल एक तोले लेकर पानी में पीस कर थोड़ा घूरा

छाकर पीवे तो सोजाक जाय और दो वृताश में भरे कर बड़ का दूध तीन
दिन पत कात स्वाय तो सोजाक जाय ।

अथवा सात माशे जवाखार गाय के दही में पीवे तो सोजाक जाय ।

अथवा गंधा बिराजा थोड़ा गुड़ में लपट कर स्वाय और उस के ऊपर
पानी से घोल कर पीवे ।

अथवा सिरस के पत्ता पीस कर पानी में छान कर भिखाले का घूरा
थोड़ा घूरा भिखाले पीवे तो सोजाक जाय ।

अथवा पपूर की कोपछे एक तोले, गाखरु एक तोले तोजे
कास कर थोड़ा घूरा भिखाले पीवे ।

दवा कि सोजाक का गुण करे गाय का दूध थोड़े घूरे और पतार से सग सदैव पीना पुराने सोजाक को अच्छा करता है ।

अमल अर्थात् टोटका कि स्त्री के सोजाक को गुण करता है स्त्री एक कपड़ा अपनी योनि में भिगाकर बच्चदार कुसिया को तीन दिन खबावे ता सोजाक जाय ।

पिचकारी कि इ द्रों के भीतर के घब को गुण कर नीलायाया तीन माशे, फिटकरी छः माशे, आध सेर पानी में औठाव जब आधा पानी रहे तब शशि में भर के पिचकारी ल जो इस दवा से छधिर आने लग ता कुछ दिनों नहीं और जो पीड़ा बढ़ जाय तो स्त्री के दूध की पिचकारी के और कोई पशुष्य इस दवा में सफ़ेद कत्था भी बढ़ाते हैं पिचकारी कि पेशाब की जलन को बंद करे देकामाली एक तोला, तीन तोले कढ़वे तेल में औठावे जब सूख जल जाय तब छान कर तज्ञ की पिचकारी छ ।

अथवा कत्था, मुर्दापग, रसात सात २ माशे, धुना नील योथा चार रत्ती औटाकर पिचकारी ले सोजाक जाय ।

अथवा त्रिफला का बकल दस माशे, नीलायोथ सात माशे, सब को कुड़ कर रात को पानी में भिगाव मात-कास्त पिचकारी ल ।

श्याक्त अर्थात् बच्ची जो सोजाक को गुण करे कत्थासफ़ेद, मुर्दासग, रात, बबूर का गोंद, गेरू सब बराबर महीन करके बच्ची बनाकर इन्दी के छिद्र में रख और कभी इम दवा में अधिक पीड़ा के समय अफीम बढ़ाते हैं और जलन की विशेषता में कपूर बढ़ाते हैं ।

कुतूर अर्थात् टपकाने की दवा इन्दी के घब को गुण करे । बबूर का गोंद, गेहू का सत्तू, स्त्री के दूध में घोल के ईसबगोल का लुमाव यह सब इन्दी के घावों को गुणदायक हैं ।

अथवा तालाब की काई निचोड कर थोड़ासा पानी इन्दी के छिद्र में डाले ।

फ़सल पेशाब की विशेषता में

जो मसाने की शिथिलता से और सरदी की विशेषता

नैवा मूत्र गरम करने वाली दवाई काम में लावे ।

आने के त्रारिश अर्थात् पाचन जो पेशाब को रोके त्रिफला का बकल घ

में मकरा कर गुलनार, नागरमोथा नौ २ माशे, छाहवान, अजवायन साढ़े चार २ मश शहद में पाचन बनावे ।

ज्वारिश नागरमोथा अर्थात् पाचन पेशाब की विशेषता और निषेधता और मसान की सरदी और धरन की सर्दी को गुण करती है और उदर और कब्जे को गरम करे । नागरमोथा एक ताल दश माशे पीस कर सिरके में मिठावे तीन दिन शहद में भिजो और सुखाकर कूट छान कर पच सेर घुरे में चाशनी करे ।

लाहवान की ज्वारिश पेशाब की विशेषता को गुण करती है छाहवान, गुलनार, साढ़े चार २ माशे, मस्तगी तीन माशे कूट छान कर शहद में मिठावे मात्रा एक तोले ।

कलोजी की ज्वारिश

पेशाब की विशेषता को गुण करे इस का सुखवा उदर विहार में लिख आये हैं ।

चूर्ण कि पेशाब को रोकता है लाहवान, नागरमोथा, कुलीजन, काता-जोरा, बतून इब्बुरास, धनियाँ सिरके में भिगाकर सुखाछ और पीसकर घूरन बनाले मात्रा ६ माशे ।

अथवा सिद्ध, अजवायन एक भाग लोके घूरन बनाव एक हथेली भर कर फाँटे या गुड़ में मिखा के गोलिए बनावे मात्रा सात माशे ।

दवा पेशाब की विशेषता को गुण करे । किसौड़ की पत्ती एक तोले लेकर उस का चैप निकाळे और एक तोले घूरा मिलाकर पीवे ।

तिज्ञा पेशाब की विशेषता को गुणदायक है इपली के चीयों की बीगी संहजने के पच्चे, दोनों को पीस कर नित्य दुही के नीचे लगावे ।

चूर्ण कि पेशाब की विशेषता को गुण करे । सिंघादे सूखपीस छानकर एक तोले खाय ।

अथवा बरूँ की कच्ची फली छाया में सुखाकर कूटछान घा में भूनकर थोड़ा घूरा मिखाकर सधवा सधर धेली २ भर खाया करें ।

दवा कि सोते समय पेशाब हो जाने का गुण करे याजूकज एक नग, रेहा क बीज थोड़े कूट छानकर खा ले ।

अथवा कुलीजन थोड़ा ठह पानी के संग खाना बहुत अच्छा है ।

अथवा कवूतर की घीट आठ में गूदकर रोटी बना कर खाय तो सोते समय पेशाब हो जाने को गुण करे ।

अथवा बकरी का सींग जलाकर शहद में मिलाकर खाय मात्रा एक तोले आठ मास तक ।

फुसल पेशाब के बन्द होजाने में

इस रोग के उत्पन्न होने के बहुत से भेद हैं जो पेशाब पसाने और रुद की सूजन से बंद हो तो प्रत्येक बासलीक नस की फुसल खुलवाये उसके पीछे पेशाब जारी होने की दवा काम में लावे ।

अथवा

कि पेशाब बन्द होने को गुण करे । राई, कलमीशोरा एक २ मास ले कर बराबर का घूरा मिलाकर दो मात्रा करे मात्रा काल खाय तो गुण करे ।

दवा कि बंद पेशाब को खोलने गेदा की पच्ची दो ताते का पानी में शीरा निकाल कर थोड़ा घूरा मिलाकर पीवे ।

तिला कि पेशाब को खोलने सूसे की मैगनी एक तोले आठ मास पानी में पीस कर गुनगुनी २ दूही के नीचे लगावे ।

दवा थोड़ा कपूर इन्दी के छिद्र में रखे तो पेशाब खुले ।

अथवा कलमीशोरा कपड़े में मिगोकर दूही के नीचे रखे ।

अथवा दो मास पारा पिचकारी में रखकर इन्दी के छिद्र में पहुँचावे तर्तु पेशाब खुले और जो सोय करके पेशाब बन्द न हुआ हो तो थोड़ा शोरा इन्दी में रखे तो पेशाब खुलजाय ।

अथवा

पांच रत्ती कोंच पीस कर पानी के सग फाँके तो पेशाब खुलजाय ।

अथवा मैस के कान का मैस रोगी की दूही के नीचे मले ।

अथवा केसू के फूल औठाकर दूही के नीचे तही दे ।

अथवा विपत्तिया का पेड़ पर लेप करे ।

अथवा बिसखपरा की पत्तियों का रस निखोड़ कर दूध में मिलाकर पिये ।

अथवा एक झुआ इन्दी के छेद में छोटे ।

अथवा खटपल पीस कर इन्दी के छेद में भरद ।

अथवा रोगी को गर्म जल में घेठावे ।

अथवा गोखरू, खीरा कफड़ी, सोंफ, खर्बूज के बीज पानी में पीसकर पीवे ।

अथवा बकरी के गुनगुने दूध में दूदी को रखे ।

अथवा रेवत चीनी सोंफ के अर्क में पीसकर दूदी के गिर्द लगावे ।

अथवा सीपी पीसकर दूदी के गिर्द लगावे ।

अथवा बारियाजुत अदविये में लिखा है कि सूर्या के अंटे के छिन्नको को अदर से साफ करके पीसकर घराघर का घूरा मिछाकर पीवे तो पेशाब खुले ।

अथवा मूंगे का दाना एक रत्ती पानी में घिसकर पीवे ।

अथवा सेंधानोन गुदा में रखे तो पेशाब खुले और तबियत को भी नरम करता है ।

अथवा विनौल पीस कर दूदी के ऊपर लगावे और एक रत्ती कपूर स्वाय ।

अथवा शहदूत के रस में कलमीशोरा पीसकर दूदी के नीचे लगावे ।

अथवा चौदह मांशे इद्रायन की जड़ पीवे ।

फ़सल पेशाब में रुधिर आने की चिकित्सा में

फिटकरी की टिकिया स्वाय । विधि फिटकरी भूनकर बारहसिंग का सींग जलाकर फतीरा, गेरू, गुलनार, भवूर का गोंद, साढ़ तीन २ मांशे कूट छांट कर टिकिया बनावे मात्रा साढ़े चार मांशे कुलक के शीरे के संग यह टिकिया सोझाफ को भी गुण करती है ।

दवा कि रुधिर के पेशाब को गुण करे इक्कीस दाने चाकसू के खूब महीन पीसकर स्वाय और ऊपर से चन्दन धूरे का पानी पीवे ।

अथवा जवासे पीसकर पीवे तो गुण करे ।

दवा कि रुधिर के पेशाब को गुण करे और चलत को बढ़ करे अनार का छिछका, छिली मसूर, भवूर की फली, लहिये, तुतेस, धाजरा, चन्दन थोड़ा २ छेके पानी में घेठावे जब आघा रहे तब उस में बैठे ।

फ़सल जौफ़्रं बाह

अर्थात् स्त्री से भोग करने की इच्छा न रहे अत्यन्त इच्छा तो दिल, मस्तक, कलेजे, उदर और शरदे के बल पर है यहाँ थोड़ी सी सहस्र दवा जो इस रोग

को गुण दायक है घर्षण की जाती है।

छोटा अबलेह पाक

हिन्दुस्तानियों ने बनाया है बल को बढ़ाता और वीर्य को गाढ़ा और पैदा करता है और सुप्त ममेह को गुण करता है और मस्ती लाता है। बिनौला, कड़ की भीगी, खर्बूजे के बीजों की भीगी, चिरौजी, तिल सफ़ेद, पोस्त के दान सेमर का मूमरा, सफ़ेद मूमली, शतावर, असमघ, सिंघाड़ का चून, झिल इमली के बीयाँ, लिसेाड़े एक २ ताले, केवड़ के बीज, प्याज के बीज, शतधम के बीज, मूली के बीज, भूफली, भुने ताड़ मखाने, समुद्रसाख, पैदा लकड़ी नौ नौ माशे, कुलीजन, चुनियाँ गोद, नागरमोथा, मज, गौष के बीज, छोटा गालरु, इद्रनौ, बबूर की फली, कमलगट्टा की भीगी, धावा के फूल, ममर का गोद, बीजवद मोचरस छै २ माश, गुजराती अमगध, भुना लठगन के बीज, अकरकरा, सोंठ पीपर, खुरासानी अजवायन तीन २ माशे कूटछानकर तिगुन कद की चाशने करे और जौ बादाम की भीगी, अखराट की भीगी, गिरी, एक २ ताड़ औ भांग दों तोले इस में डाले तों अत्युत्तम है नहीं तो शरीरों को इसी प्रकार से अच्छा है मात्रा एक ताँले छुहारे के दूध के सग लेवे।

किशमिश पाक कि बल को बढ़ावे और वीर्य का पैदा और गाढ़ा करे मोचरस, साक्षिष मिश्री, समवरसोख, स्याह मूसली, सफ़ेद मूसली, बादाम की भीगी डेढ़ २ ताले, शतावर ग्यारह ताल आठ माशे, सोंठ कुलीजन सात सात माशे, किशमिश आधसेर, कद सेमर, च शनी करे मात्रा दो तोल से तीन तोल तक गाय के दूध के सग जिस में छुहारे पड़ हों लवे।

मालकांगनी पाक कि बल को बढ़ावे, मालकांगनी, अकरकरा केवड़ के बीज, लोंग, केसर, चौदह २ माशे, अस्पद सात माशे, सफ़ेद पोस्त के दान डढ़ तोले, सफ़ेद तिल चार तोले आठ माशे, गुर्गी के अडे की जर्दी पाँच नग चौगुन शहद और कद में सब का मिला पाक बनावे।

दूसरा नुसखा मालकांगनी पाक का

हिन्दुस्तानी तरह पर मालकांगनी भांगरे के रस में भिगोवै और फिर गाय के दूध और पानी में, जब दूध को सोखले तब पीसकर परावर के शहद में पाक बनावे मर्षम दिवस पाने दो माशे खाय और इतना ही नित्य बढ़ावा जाय दो तोल चार माशे तक पहुँचावे और पालीस दिन तक खाय तो वृद्ध को तरुण करे।

पाक कि बल को बढ़ाव अकारकरा, लोंग, सोठ दो २ तोले, अडा की जर्दी २५ नग, सात छटाक शहत की चाशनी करे मात्रा चार तोले आठ माशे भोजन क प्रथम खाय ।

पाक प्याज का रस सेर भर, एक सेर शहद आंच पर रखे जब चाशनी हो जाय तब तात्त और सफेद तोदरी साठव मिथी, बड़मन सुख और सफेद सोठ, प्याज के बीज, मूली के बीज, गदना, शलगम के बीज, तात्त मखाने, काली और सफेद मूसली प्रत्येक एक सेर शही कूट खानकर पाक बनावे ।

पेठे का पाक कि भुति प्रमह को बहुत उत्तम है और वीर्य को गाढ़ा करता है खर्बूजे के बीज, सफेद मूसली, पेठे की मिठाई आंच २ पाव गुवारपाठा दो नग, कषाव चीनी छै माशे सब को महीन पीसकर आधसेर सफेद कद में चाशनी करे मात्रा ताले भर ।

लहसन पाक ।

सर्व प्रकृति वालों को बल बढ़ावे और पक्षाघात और लक्ष्म के रोगों को गुण करे लहसन को दूध में इतना औटावे कि सब दूध सोखजाय फिर उसका घी में भून और शहद में पाक बनावे ।

पाक कि भुत प्रमह को गुण करे और पतले वीर्य को गाढ़ा करे और बल बढ़ाव त्रिफला का चक्कल, छुआरा भुना, सातव मिथी, मेदा लकड़ी, गोखरू, दोनों मूसली, बालछड़ कोंच के बीज, सिंघाटे सूखे, कमल गट्टा की पींगी, तिसौड़ मीठ, इद्रौ, इमली के बीज की पींगी सात २ माशे गुलनार कात्तादाना, अजवायन, काछाजीरा शबुलकास, घनिया बसलाचन, बड़ की कोंपल, मस्तगी, शाहबलूस, बीजबद, सुर्यावी, लोच, असबद भुना, साढ़े तीन २ माशे, अजमोद, गध, तात्त मखाने, भुने, सगदर से ख, चुनिया गोंद, नागरमोया घाव के फूल, मोचरस, अतावर, धूर की फली, केकड़े के बीज, साढ़े चार २ माशे सिंगुने शहद की चाशनी में पाक बनावे ।

कड़ का चूर्ण कि बल को बढ़ाव सरभर पीपल को दो सेर दूध में औटावे जब दूध सोख जाय तब पीपल को सुखाकर पीसके नित्य चौदह माशे सात ताले मिथी में मिखा कर दूध क संग खाय ।

चूर्ण कि बल को बढ़ावे और वीर्य को पैदा कर मेयर का मूसरा महीन पीसकर बराबर का घूरा मिळाकर नित्य तोल भर गाय के दूध क संग फांवे ।

अथवा यह चूर्ण बिंदकुशाद को गुण करे । गावरू देड़ तोले, सिंघाद,

साठी चावल, कमलगट्टा को भींगो दूध २ पाश, तालमखान सात पाश, मोचरस समदरसाव सिरयाव, बीजबंद साठ तीन २, पाश सत्रे क बराबर बूरा मिलाकर चूरन बनाव मात्रा एक तोले ।

अथवा यह बीर्य को गाढ़ा करता है । बबूर की कच्ची फली मौलसिर की छात, शतावर, मोचरस बराबर और सब की बराबर बूरा मिलाकर चूरन बनाव मात्रा एक हथेली भर ।

अथवा बड़ की कोपल, गुलर की छात बराबर लोके बराबर का बूरा मिलाकर एक तोले दूध के संग खाय ।

अथवा यह बड़ को बढ़ावे दो तोले पिस्ता, दो तोले मिर्ची पिंसी इतना छः पाश सोठ सब को मिलाकर नित्य एक तोले ब्रह्म में लपेट कर रसी भर भींग महीन पीसकर उस पर छिड़ककर तीन दिन खाय ।

अथवा बबूर की कच्ची फली छाया में सुखाकर तालमखाने, चुनिया गोंद चने खिंचे हुए सब बराबर लोके सबकी बराबर मिर्ची मिलाकर नित्य मात्राकात एक हथेली भर खाय तो श्रुत प्रमेह जाय ।

अथवा खिरनी की छात, तज, मैदा लकड़ी सब की बराबर बूरा मिलाकर तोला भर गाय के दूध के संग खाय तो श्रुत प्रमेह और सादा प्रमेह जाय और बीर्य गाढ़ा होय ।

अथवा चुनिया गोंद, भूकली बराबर पीसकर तोले भर, नित्य गाय के दूध के संग खाय चात्नीम दिन तक ।

अथवा सिरस क बीज, पलास के बीज, बराबर कूट छानकर बराबर की मिर्ची मिलाकर तोले भर गाय के दूध के संग खाय तो बहुत गुण करे और श्रुत प्रमेह जाय ।

अथवा तालमखाने, कुलफा के बीज, मसगय, नागौरी, समदरसाव, मोचरस, बराबर कूट छानकर सब की बराबर बूरा मिलाकर हथेली भर खाय तो बीर्य गाढ़ा होय और बिटकुशाद जाय ।

गोली कि पतले बीर्य को गाढ़ा करे और श्रुत प्रमेह को मिटावे इसली के बीज तीन चार दिन पानी में भिगोव फिर अच्छा छिड़का दूर कर पीस कर बराबर का सफेद बूरा मिलाकर चने के प्रमाण गोलियां बनाव मात्रा दो गोली ।

चूरन कि बिंद कृपाव और श्रुत प्रमेह को गुण करे बबूर की छात बबूर

की फली, त्वर का गोंद, धूर की कोपल बराबर कूट छानकर घूरा, मिलाकर चूरन बनावे, मात्रा तोले भर ।

चूर्ण कि पतले धीरे को गाढ़ा करे गूँद के पेड़ की जड़ कि जिसके सूत पृथ्वी में घुस हो गोखरू, तालमखाने, कपलमहा की मीमी पाँचर तोले, भूफली, मखाने, बीजपद, सिरयाली के बीज, चुनियाँ गोंद तीनर तोले कूट छानकर चूरन बनाव एक हथेली भर गाय के दूध के संग स्थाय ।

अथवा कोच के बीज कसे जाया ये, सुखाकर महीन पीसकर दश पाशे पाव भर गाय के दूध के संग औठाकर स्थाय तो पतले धीरे और भुत प्रमेह को गुण करे ।

अथवा समदरसोख, अनवापन पाँच तोले दस पाशे, अस्पद जला हुआ साठे तीन तोले कूट छान सभा। सवेरे चौदहरे पाशे पानी के संग फाँके और खटाई और बादी वस्तुओं से बचा रहे तो बिन्दुकुशाद जाय ।

अथवा इलहूँ के बीज साठ तीन तोले, इतने ही बीजपद, तालमखाने, पीठे इन्द्र जौ, छोटे गोखरू, सातर तोले जिसमें २८ तोले सब की बराबर घूरा, कूट छान कर चूरन बनावे और फाँके तो बिन्दुकुशाद जाय ।

अथवा समदर सोख, तालमखाने, रेशा के बीज, देदर तोले कूट छान कर चूरन बनाकर सात पाशे मात्र काछ स्थाय खटाई और बादी वस्तु न स्थाय तो धीरे गाढ़ा होय ।

अथवा आँध की घूर दो तोले चार पाशे, दोनों मूसली, मोचरस सातर पाशे, एक नग पोस्त के डोड़ा, दो पाशे पाँग, मात्रा दो तोले भर गाय के दूध के संग ले तो भुत प्रमेह जाय ।

अथवा सूखे सिंघाटे, चुनियाँ गोंद, समदरसोख दोर पाग, बीजपद, मोचरस, तालमखाने, गोखरू, कोच के बीज, चुनियाँ, मैदालकड़ी, एकदर पाग काहूँ के बीज आधा पाग, बराबर का घूरा मिलाकर तोले भर स्थाय तो धीरे गाढ़ा होवे और धीरे के बहाव को रोके ।

अथवा गेंदा के बीज १४ पाशे बराबर का घूरा मिला खावे तो धीरे स्तमन हो ।

अथवा पड़ की कोपल, चुनियाँ गोंद, गिरनी की जड़ की छाल, रिह-सोड़े, भूफली, शतावर बराबर लूके कूट छानकर चूरन बनावे, मात्रा एक ठोले गाय के दूध के संग ले तो बिन्दुकुशाद जाय ।

अथवा बधूर की फच्ची फच्ची साढ़े तीन तोले, जोड़ी दूधी जड़ पत्ती साहित तीन तोले छाया में सुखाकर पीस के बराबर का कद मिलाकर चूरन बनाकर खाय तो वीर्य बढ़ने और विंदकुशाद को गुण करे ।

अथवा ढाक की छाल और गोंद, गूजर की छाल और गोंद, सेंपर का मूसरा और गोंद, मौलसिरी की छाल, भुने चना, बधूर का गोंद बराबर लके चूरन बनावे मात्रा चौदह पाशे खाय तो वीर्य गाढ़ा करे और बल को बढ़ावे ।

अथवा दोनों मूमली, तालमखाने, कौंच के बीज, लटगन के बीज, मोचरस, ऊठ फटेरा की जड़, बीजबद काळा और लाल, भूफळी, कमरकस और माठी चांचळ, जतावर, समदरसोख, मीठे इद्रजौ, साढ़े तीन १ पाशे सिंघाड़े सवा पांच मोश मध की बराबर का बूरा मिला सात पाशे गाय के दूध के मग खाय तो विंदकुशाद जाय और बल बढ़े ।

इलुआ कि पतले वीर्य को गाढ़ा करे इमली के चीरों की गुठली छिली हुई, ढाक का गोंद, गेहू का सत्त एक २ तोले, तीन तोले लाल बूरा, चार तोले घी गरम करके सत्त को भूनकर इमली के चीरों और गोंद पीसकर मिलाके इलुआ बनावे मात्रा एक तोले से दो तोले तक खाय ।

चूरण कि बढ़ते वीर्य को गुण करे तालाब की काई ठीकरे पर रखके भांच पत्र रखके जलावे और उसकी राख में बराबर का बूरा मिलाकर चार पाशे प्रति दिन खाय करे ।

अथवा बर्गद का फल छाया में सुखाके कूट छानकर गाय के दूध के सग खाय तो पर्वला, वीर्य अत्यन्त गाढ़ा हो जाय ।

गोली वीर्यस्तम्भी, खसखस, शुना स्पद, भिंगरफ, गोखरु, कुचला जला के सब बराबर औषधियों को कूट छान कर उस जल से कि भिस में पोस्त के डोढ़े भिगाये हो गोळियां बनावे और स्त्री गमन के चार घड़ी पहले एक गोली खाय ऊपर से एक प्याला गरमागरम दूध पीवे ।

अथवा अजवायम पांच पाशे, कदू के बीजों की पींगी छ पाशे अस्पद नौ पाशे, मांग के बीज आठ पाशे, भुने चने सात पाशे, अफ्रीम तीन पाशे, केसर चार रत्ती, इलायची के दाने एक पाशे, पोस्त के डोढ़ा दो नंग मध को कूट छान कर उसमें जल कि भिम में पोस्त के डोढ़ा भिगाये हो

गूद कर जगली वर के समान गोखियाँ बनावे बाँधित समय पर एक गोली खाय अधिक गर्मी करे तो बद्ध क तरवृज के और कुल्फे के बीजों का शीरा पीये ।

अथवा यह वीर्यस्त्रम का नुसखा हकीम चरबीखा का बनाया हुआ कि विशेषता इस में यह है जो अफीम नहीं डाली गई है खाय जब तक कि नीबू का रस न पियेंगे कभी वीर्य स्वास्थित न होगा। विधि यह है कि अक्ररकरा साढ़े तीन माशे, रैहां के बीज दो तोले चार माशे, कद सफेद दो तोले साढ़े सात माशे कूट छान कर गोखियाँ बनावे एक गोली काम में लावे ।

गोली कि वीर्य को रोकती है शुना स्पद, काफूर, बीजाबोल, अज-वायन बराबर कूट छान कर अदरक के पानी में घने के प्रमाण गोखियाँ बना कर एक गोली स्त्री गमन से पहले गाय के दूध के सग खाय ।

गोली जो जीरे के बराबर बनाकर लिंग के छिद्र में रखे तो अत्यन्त वीर्य स्तय होवे विनी हुई सफेद खूबकला, अफीम, पिश्री, धूप, काली मिर्च मेंढक की मस्ती अर्थात् मेंढक के सिर को खूब निचाँड़े जो छल निकले सीपी से खुरच कर चतार ले

गोली कि हिन्दियों को परीक्षित है स्त्री प्रसव की शक्ति को प्रबल करती है और भारी के पड़वात हारपन नहीं लाती और वीर्य को रोकती है जलाने का असपद एक तोले साढ़े पाच माशे, आधा कड़ा आधा पक्का, पोस्त के डोहे, काले तिल, मल्लेक सात माशे, गुड़ छै तोले चार माश, तीनों औषधियों को कूट छान कर पुराने गुड़ के सग कूटे जब खूब मिल जाय तब सात भाग करे मल्लेक भाग की एक गोली बनाव और स्त्री प्रसव के समय एक गोली खाय ।*

गोली कि भुत प्रमेह और प्रमेह को गुण करती है इमली के बीज छिले हुए, धूप के बीज छिले हुए, ताक मखाने, सेमल की मूखली, मिर्म के बीज, छिले हुए कोष के बीज, छिले हुए उटगन के बीज, भांग के बीज संघ बराबर लेके भांगरे के रस में खरल कर के काली मिर्च के प्रमाण गोखियाँ बनावे मात्रा छ माशे दूध के सग लेव ।

* **गोली** कि वीर्य के बहाव को रोके धतूरे के बीज छः माशे, काली मिर्च छः माश, कूट छान कर बदे के प्रमाण गोखियाँ बनाव और सदैव एक गोली

मात काल एक तोले सोंफ के शीरे के सग खाय यदि रोग थोड़ा और नवीन हा तो एक ही दिन में आराम होता है ।

केंचुए की गोली कि स्त्री भोग की शक्ति को पुष्टि देती है । ताला केंचुमा पाक और शुद्ध कर सुखा के दस तोले अजवायन तीन तोले चार माश कूट छान कर छः तोले आठ माशे गुड़ मिलाकर एक २ तोले की गोलियाँ बनाकर नित्य एक गोली इक्कीस दिन पर्यन्त खाय ।

अथवा कसौदी का छिलका सुखा कर चारोंक पीस के शहद में मिलाकर गोलियाँ बनावे और तीन तोले चार माशे अथवा मरुति के अनुसार खाकर एक प्याला दूध ऊपर से पान कर ।

अथवा स्याह घूँस के फूल सुखा कर चूने के समान गोलियाँ बनाकर एक गोली खाय ।

अथवा छोटी दुबी छाया में सुखा कर और महीन पीस कर जंगली बेर के समान गोलियाँ बनावे और मात काल एक गोली गाय के दूध के सग खाय तो बीर्य गाढ़ा होवे और स्त्री भोग की शक्ति पुष्टि होवे ।

अथवा नकछिकनी, स्याह मूसली, शठावेर काँच के बीज, छटगन के बीज, ऊद कदरा की जड़ का छिलका, पाल कागनी, गुड़ सब बराबर कूट छान कर अदरक के रस में जंगली बेर के समान गोलियाँ बनावे नित्य एक गोली गाय के दूध के सग खाय ।

अथवा

आधपाव गुड़, काले तिल तीन तोले चार माशे असंग, नागौर, छः तोले आठ माशे आधा कच्चा आधा भुना कूट छानकर चौदह गोलियाँ बनावे एक गोली नित्य खाये ।

चूर्ण कि प्रमेह को गुण दायक है त्रिफला, बटहर के फूल, हल्दी बराबर, मिर्ची सब की बराबर कूट छानकर चूरन बनावे मात्रा साढ़ दस माशे गाय के दूध के सग लेवे ।

अथवा अजवायन की भुसी आवमेर, मूली के बीज, भुने चने, जरदंग के बीज, काले तिल प्रत्येक पावभर कूट छानकर प्रति दिन तोले भर खाये ।

अथवा नकछिकनी, स्याह मूसली, अफ़ेद मूसली, सोंठ सब बराबर कूट कर चूरन बनावे सदैव पीने दो माशे गाय के दूध के सग खाये ।

अडे का हलुआ कि स्त्री योग की शक्ति को उत्पन्न बढ़ाती है भुजों के मत्पेक अडे के साथ सातरे बताश, घी खूब मिलाकर फोयलों की आंच पर रखें और चमचे से खताता रहे जब पकजावे तब उड़ा करके खाये ।

शकरकंद का हलुआ कि धीरे को गाढ़ा और उत्पन्न करता है ताजा शकरकंद सुखा कूट छानकर घी और घुंगू मिलाकर हलवा बनावे बाजे भुने शकरकंद का हलवा बनाते हैं ।

सिंघाड़े का हलवा ।

कि धीरे को गाढ़ा करता है सुखा सिंघाड़ा पीसकर बूरे और घी में हलवा बनावे ।

दवा कि बिंदकुशाद को गुण करे टाक की कोपल जो खिली न हो और हेमन्त ऋतु में अत में प्राप्त होती हैं जितनी हों नरम कूट छानकर छ वर्ष के पुराने गुड़ में मिला अखरोट की बराबर गोलियां बनावे चार दिन पर्यन्त एक गोली प्रातः कात्त खाया करें ।

अथवा भुने चने, बादाम की छिली मींगी तोल में दोनों बराबर नित्य दोनो समय खाना बहुत बल देता है ।

अथवा दो तोल चने की दात, मुकेश्वर अर्थात् छिली हुई पानी में भिगोकर सोंठ और सफेद पोस्त के दाने मत्पेक एक माशे शर्द में मिलाकर सदैव प्रातः कात्त खाया करे ।

द्वितीय दवा ।

जो ठंडी प्रकृति वाला मनुष्य शरद ऋतु में इस को खावे तो स्त्री प्रसंग की शक्ति, पल की रक्षा और पाचन शक्ति के लिये सब प्रकार गुण दायक है प्रति दिन एक फौड़ी भर पारा खाना आरम्भ करे और एक दांग तक पहुँचावे और निगलकर ऊपर स शोरबा पिये ।

अथवा चिलगाज की मींगी और मुनक्का दोनों को १ रात दिन पानी में भिगोकर थोड़ा घूरा मिलाकर खावे ।

अथवा ऊठ फटेरे की जलका छिलका एक तोल आठ माशे चौकट करके पोटली घाँव आपसेर दूध और आपपाव पानी में औठावे जब पानी जलकर दूध मात्र रहजावे घूरा मिलाकर पिये और जो इनमें दा तीन छुहारे काले तो विशेष गुण कारक है ।

अथवा शहद औंठवे चसके भाग निकालकर चस में मूली के बीज पीसकर मिलावे मात काल और रात को सोते समय खाया करे ।

अथवा पाँच सेर ढाक की जड़ दो तीन सेर पानों में औंठवे जब आधा रहे और गाढ़ा होजाय तब चस में से थोड़ा पान के संग खाया करे ।

अथवा शहद, भिलाया, घी, परावर लेके चाशनी करे प्रकृति के अनुसार दें यह औषधि गरम प्रकृति वाले को देनी उचित नहीं है ।

अथवा जगली सहजने का पेड़ जो नरम और छोटा हो चसकी जड़ टुक टुक कर छाया में सुखाव और अनवायन की भुत्ती बिले चरद तीनों को समान लेकर बराबर का गुड मिलावे और नित्य मातःकाल अखरोट की बराबर खाया करे । यदि ६ मासे खाये तो सब प्रकार गुण करे ।

अथवा गुड़हल के फूल छाया में सुखावे और कूट छानकर कदमें मिलाकर चालीस दिन तक तीन मासे नित्य खाया करे ।

अथवा असगंध छः तोले आठ मासे कूट छानकर एक सेर दूध में औंठावे और तीन तोले मिर्ची मिला के सप्ता सवरे खाय शरीर को लाल और पुष्ट करे खैरुलजारत में लिखा है कि जो स्त्री गमन के पश्चात् चौदह मासे गुड़ खावे तो कभी शरीर निर्बल नहो ।

अथवा गौ के दूध में सिपाड़ा खाय ।

अथवा अरंड की कोपल आधपाव, मांस आध सेर, दो प्याज़ पकाकर तीन दिवस पर्यन्त खाय ।

अथवा पोस्त के दाने दो तोले, शहद चार तोले, सोंठ पौने दो मासे कूट छानकर मिलाके चालीस दिन खाय ।

अथवा गोखरू कूट छानकर घूरा और गौ घृत और शहद मिलाकर खाय ऊपर से गाय का दूध पीवे ।

अथवा गधक आवलासार, बिसखपरे के रस में खरल करे कि गाढ़ा हो जाय और नित्य एक चावल प्रमाण पंद्रह दिवस खाय ।

अथवा दुग्ध चावल खाना बीर्य को उत्पन्न और बने क होला खाना पुष्ट करता है ।

अथवा परगद का दूध दो तीन घृद पचासे में खाया करे ।

अथवा दो तोले विनौले गौ के आध सेर दूध में पकाकर खाय ।
 अथवा घेर फी गुठली की भींगी पीसकर पुराने गुड़ में मिलाकर खाय ।
 दवा कि सब प्रकार के ममेह को गुणदायक है । पुरानी कधी ईद पीस
 छानकर एक भाग, पूरा दो भाग मिलाकर नित्य साढ़े तीन माशे खाय ।

द्वितीय दवा कि धीर्य और उसके थैप के बहने को रोके और भुत ममेह
 को गुण करे और जो स्त्री खावे मग सकोचन होय । मुर्गी के अंडे का छिलका
 पानी में डाल कर उसके भीतर के पतले परदे को दूर करके छिलकों को
 वासन में रखकर इतना नीबू निचोड़े कि छिलकों के ऊपर एक अंगुल हो
 जावे । फिर उस पर कुछ दफ दे यहाँ तक कि सब रस सूख जाय इसी प्रकार
 तीन बार करे पश्चात् छिलकों को मिट्टी के कुलहड़े में रखकर कपर मिट्टी कर
 आरनों की गजपुठ आंच में फूक लेवे जब ठंडा हो जाय फिर उतनी ही भाग
 में रख इसी प्रकार तीन बार के फूकने से छिलका समुद्र हो जावेगे उस
 निकाल कर दो रत्ती शरद में मिलाकर खाय खटाई और बादी से
 बचत रहे ।

अथवा दूध का जुड़ा नित्य मासःफाल वासी पानी में पीसकर छानकर
 पीवे एक सप्ताह में गुण करे ।

चूर्ण कि बिदकुशाद को गुण करे खिरनी की छात, गाँदी की छात,
 जिसाँदे की छात, आँव की छात सब बराबर कूट छानकर बराबर का घूरा
 मिलाकर नित्य सबेरे ही चौदह माशे तक खाय ।

अथवा आक के फूल, घतूरे के फूल, स्याह भूसली, अस्पद प्रत्येक एक
 तोले आठ माशे कूट छानकर घी में मकरोकर पाँच तोले शरद में मिलाकर
 स्त्री प्रसंग के पूर्व चार माशे खावे ऊपर से दूध पिये ।

अथवा सोंठ, पीपल, जारदफ के फूल बराबर लेकर मुर्गी के अंडे की
 जर्दी क संग खाय ।

अथवा अम्रपायन, स्याह तिल, दोनों एक भाग पोस्त के दाने आधा भाग
 पीसकर गुड़ में मिलाकर खाय मात्रा थोले भर ।

अथवा खिरनी के बीजों की भींगी सुखा कूट छानकर और चमका तीसरा
 भाग पूरा मिला कर गौचरि के संग खाय ।

अथवा नित्य मासः फाल मीठा आम खाय और ऊपर से गौ का दूध
 जिम में दो तीन छुहारे थोड़ी सी सोंठ और ठाकर पीवे तो कामदेव को

और शरीर को सुष्ट करता है और, मस्तक को बल देता है और पक्षा सीत फल
वीर्य को उत्पन्न करता है और कठोर कामदेव को बलवान करता है ।

आम का हलवा कि कामदेव को बल देने वाला और वीर्य को बढ़ाने
वाला है । मोठे आम का रस तीन सेर, बुरा सकंद सर भर, और गो का
घृत आध सेर, गोक्षौर एक सेर, शहद पाव सर, साठ एक तोला, पीपल छः
माशे, शतावर एक तोला, सालब मिश्री, बादाम की पीगी मत्पेक चार
तोले, खोलगान छ माशे, पहमन सकंद तथा लाल दो तोले, समर का सुमल
एक तोले, सूखा सिंघाड़ा चार तोले, लुहारे कुट चार तोले, मयम बुरा और
अमरम दूध में डाल कर शबत बनावे, फिर मींगियों को पीस कर घी में भून
कर शबत में मिलावे परवात दूसरी औषधियाँ डाल कर हलवा बनावे ।

लहसन का तेल कि लिंग की शिथिलता को गुण करे । लहसन को
अलसी के तेल में खोटा कर छान ले और राई और अकरकरा नीबू के बीज
मातृकांगना मत्पेक थोड़ा कुछ छान कर उसी तेल में लुका कर कई एक दिनों
लिंग पर मले ।

शुबू के फलों का तेल

लिंग को बलवान करता है शुबू क फूल छेकर ताकाव में डले जब
कुम्हड़ा जावे और बदल दे इसी प्रकार तीन बार बदल फिर छान कर
थोड़ा अकरकरा पीसकर मिलावे और बाँछिउ समय पर लिंग पर मले
पान बाधे ।

अथवा भटकड़ा की पत्तियाँ कड़वा तेल मत्पेक छः तोले अठ माशे
एक कावा बिच्छू और बड़ा जो मातृ होवे तो बहुत उत्तम है नहीं तो मिस्र
प्रकार का मिला और पहिले तेल को गरम कर पत्तियों की टिकियाँ बनाकर
बिच्छू और टिकियों को उसमें डालकर जलावे जब भली भाँति जल जावे
छान कर रखे और एक रसी पान पर लगा कर लिंग पर बाधे ।

अथवा खोभा कि टीली की तरह एक जानवर होता है उस के पर
नहीं होते हैं और दवान तथा रसबाक भी उसे कहते हैं और उससे सुलबुल
को पड़त है पात्र वा छ नंग पकड़ कर छ तोले आठ माश गोघृत और
एक तोल अठ माशे केसर मिला बासन में रखकर जकाव फिर खूब पीत
कर लिंग पर मले ।

ऊटकटेरे का तेल

कि लिंग की शिथिलता को दूर करता है ऊटकटेरे का पद नद टहरी

पत्तियों समेत बकरों के दूध में भिगो कर पाताल यंत्र के द्वारा रोगान् लक्षित कर लिंग पर मले ।

चींटी का तेल

बड़ी चींटी जो कपड़ों और आम के पेड़ों पर होती है सौ नग चमेली के तेल में डाल कर शीशे में भर कर चालीस दिवस घूप में रखें फिर तेल को लिंग पर मले ।

चमेली की पत्तियों का तेल

कि कामेद्व को पुष्ट और वीर्य को स्तर्भन करने वाला है सफेद चमेली की पत्तियां पीस कर उनका रस लेकर घी में जलावे जब पानी जल जाय और तेल मात्र रह जाय शीशी में रखें स्त्री विलास के दो घण्टे पहिले लिंग पर मलके पान बांधें ।

तेल इतलस करने वाले को गुण दायक है । कपड़े को आक के दूध में एक दिन रात भिगो कर छाया में सुखावे और उस में घी लगा कर दो बची बना कर जलावे और उस के नीचे याखी रखे परन्तु याखी कांसे की होवे जो तल बची से याखी में टपके उसको लिंग का सिर जोड़ कर मले और ऊपर से अरुंड का पत्ता बांधें ।

अथवा

पाव सेर चमेली की पत्तियां पाव सेर घी में डाल कर कढ़ाही में औटावे जब पत्तियां जल कर तेल रह जावे कढ़ना कूट, कच्चा सुहागा मत्पक चौदह माशे घी में डाले जब भिल कर रंग लाल होजावे तब कढ़ाही चवारकर जहर कीतियां मिलाकर तेल को फूल कांसीके बर्तन में दोपहर नीम की लकड़ी से रगड़कर शीशे में भरके रखे और एक माशे लिंग का सिर जोड़ कर मले और ऊपर से पान बांधें इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यन्त दो दिन का बीच देकर लगावे और इस काल में स्त्री योग न करे ।

चमेली का तेल कि काम को प्रदीप्त करता है चमेली की पत्तियों का रस तीन ताळ चार माश, साखिया दस माशे, घीटा तेल, कढ़वा कूट, मत्पक एक तोला आठ माशे, सुहागा एक तोले आठ माशे, तिलका तेल ग्यारह तोले दस माशे, पत्तियां पीस कर टिकिया जलावे और तेल में पानी मिलाकर घम को जलावे जब पानी जलकर तेल मात्र रहजावे पिसी औपधियां मिलाकर

रगड़े और एक सप्ताह पर्यन्त लिंग पर मले।

जौंक का तेल बड़ी जौंक सात नग आध पाव भाँटे तेल में जलाकर छान कर लिंग पर मले।

अथवा माजकागनी और कुचले का घूरा, पत्तास के बीज, जगली कवूर की बीट, प्रत्येक छ तोले आठ माशे कौड़ा मफद सात माशे, बकरी के दूध में भिगोकर सवरे आतिशी शीशी में तेल निकालकर लिंग पर मर्दन कर और दूसरे नुसखे में यह भी लिखा है कि कौड़ी की बराबर अकरकरा मिलावे।

अथवा एक बालिश्ट महीन कपड़ा लेकर आध सेर घतूरे के अर्क में इक्कीस दिन पर्यन्त रक्खे कि सब अर्क कपड़े में सूख जाय फिर एक तोले साढ़े पाँच माशे तिल के तल में मदी आग से पकावे पश्चात् निकाल कर कपड़े को लोहे की सीख में छपेट कर नीचे वाला रक्खे और एक ओर से कपड़े में आग लगा दें जो तेल कपड़े से घाली में टपके उसको ले रक्खे और प्रति दिन चार दिवस पर्यन्त दो २ बूद लिंग पर मले।

अथवा पीठा तेलिया तीन तोले चार माशे, मूली के बीज दस माशे, जमाल गोटे की मींगी सब औषधि महीन पीस कर आध पाव तिल के तेल में खरल करके थोड़ा उसमें से काम में लावे तो इयलस करने वाले को गुण करे।

अथवा एक तोले नौ माशे मीठा तेल मदी आँच पर औटावे और पौने दो माशे सुखे इहताल पीस कर उस में मिलावे फिर सुहागा उस के पश्चात् कड़वा कूट, प्रत्येक साढ़े तीन माशे उस में मिलावे, फिर चमेली की पत्तियों का रस ढाल कर आग पर रखे जब पानी जल कर तेल रह जाय लिंग पर मले के पान वावे।

अथवा लोब, फिटकरी, अरब की जड़ का छिलका, नख, असमंघ प्रत्येक साढ़े तीन माशे कूट छान कर पानी में ठिकिया बनावे और आध पाव तिल के तेल में जका कर छानके रखे और एक बूद लिंग पर मले ती शिथिलता दूर होवे।

अथवा तिल का तेल और मछली का तेल प्रत्येक दो तोले आठ माशे पीपल चार माशे सब को पीस कर तिली के उक्त तेल में मगद कर एक बूद लिंग के छेद में टपकावे और छिद्र अधिक सिकुड़ा हो तो नीम का तेल टपकावे।

वाम मछली का तेल घनाने की यह रीति है कि वाम मछली के टुकड़े करके पानी में औटाव जितनी चिकनाई पानी पर आवे उसको काम में लावे। मैंने एक पुस्तक में लिखा देखा है कि कई नग भिदों को पीठे तेल में जला कर लिंग पर मले तो उसकी रगों को घलवान करता है।

गुण विन्दु कुशाद प्लिंग के छिद्र बढ़ जाने को कहते हैं और उसकी चिकित्सा में हिंदी वैद्यों के मत से वही कठिनता पड़ती है और जो वस्तु वीर्य को गाढ़ा करती है वही इसको भी गुणदायक है।

तेल कि कामदेव को मदीय करे घृषणी लाक और सफेद की दाह, हरताल प्रत्येक एक तोले चार मासे बकरी के दूध में खरल करे और बने के प्रमाण गोलियां बनावे फिर आतिशी चीशी में भर कर तेल निकाल कर लिंग पर मले और ऊपर से पान घांघे।

रिफादह अर्थात् पट्टी

कि कामदेव को घलवान कर महीन कपड़ा थूहर के दूध में तीन बार भिगोकर सुखावे और तीन बार प्याज के रस में भिगोकर सुखावे पश्चात् उस कपड़े को अलसी के तेल में एक रात दिन भिगोकर फिर लिंग का सिर छोड़ कर माखन से छुपड़ कर ऊपर से यह पट्टी चार घड़ी पर्यन्त घांघे रखें जो आवश्यकता हो तो दूसरे दिन भी यही कर्म करे और कपड़े को मक्खन अलसी के तेल में भिगाये रखें।

अथवा कपड़ा आवाहलदी में रगकर जाया में सुखावे पश्चात् घूर्ने के रस में तीन बार फिर आक के दूध में तीन बार भिगोकर छाया सुखाल फिर भैंस के घृत में भिगोकर पदी आंच पर भूनकर पट्टी पर शहद लगा क हीराहींग एक रत्ती उस पर छिड़क कर तीन दिवस पर्यन्त घांघे।

अथवा आक का दूध आध पाव और शुद्ध शहद ड्राई पाव कड़ाही में छोड़े के दस्ते से इतना रगड़े कि चाञ्चनी बन जावे और नरस के सबब कड़ाही दस्ते के संग जमीन से सट जावे फिर चार मासे अफीम टाक कर रगड़े कि खूब पिलनाय सब दवाई को चीनी के सरसन में रखे और लिंग का सिर छोड़ कर छेप मले और ऊपर से पान लपेट कर यह छेप मले और गाढ़े या जीन या गजी की पट्टी घांघ कर एक दिन बैठे रहें फिर इस के पश्चात् पट्टी खोलकर गौ घृत इक्कीस बार घोषा हुआ लिंग पर मर्दन करे और तीन दिन इसी प्रकार करे।

तिला कि काम की निर्वहता और हथलस करने वाले को गुण करे
आक का घूष और गाय का घी दोनों बराबर खरल बारह पहर करके एक
रत्नो लिंग पर लगावे और कोई २ मनुष्य इस में शहद भी डालते हैं और
वाजोने लिखा है कि तीन तोले चार माश आकके दूध में एक तोले आठ माश
घी पिटाकर जलावे और लकड़ी से खूब रगड़े जब दूध जलकर रौगन बाकी
रहजावे तो आतिशी मदिरा में खरल करे और लिंग का सिर छोड़ कर मुले
ऊपर से लिसौड़े के पत्ते बांधे और एक पहर परचात खाल डालें ।

अथवा एक काले कुक्कुट का कि जिसने जुपती न की हो रुधिर लेके
उस के समान जवान गर्भव का रुधिर मिला लिंग पर मर्दन करे और वायु दे
कि सुख जावे इसी प्रकार तीन बार लेप करे प्रथम बार जलन उत्पन्न होगी
दूसरी बार कप तीसरी बार सब जलन जाती रहगी और काम देव बल करेगा
उस दिन स्त्री प्रसव न करे यह मर्दन नपुंसक और हथलसी को अति गुण
दायक है ॥

मर्दन अर्थात् तिला

कि काम को प्रवृत्त करता है । मूली के बीज, बिनौले प्रत्येक दो भाग
अकरकरा, कटवा कूट प्रत्येक एक भाग महीन पीसकर लगावे ।

मर्दन कि इस को लेपराज कहते हैं लोंडेबाज और हथलसी को गुण
करे और लिंग के टेढ़ेपन को दूर करे और काम देव को प्रवृत्त करे एक माक
बैंगन जो पककर पेठ पर पीला पड़गया हो लेकर साठ नग पीपल खुभाकर
छटकावे जब बैंगन सूख जावे जाबसेर भीठे तेल में थोटावे जब तेल उफान
पर आजावे सात तोल मावे केजुआ मिलावे जब केजुए जलेजावे लहसन छील
कर उस में डाल फिर खरल कर एक आतिशी में उस रखे और पहरह दिवस
पर्यन्त प्रति दिन एक माशे लिंग पर मुले के पर्गद वा लिसौड़े के पत्ते उस पर
बांधे परमेश्वर की दया से आराम होगा ।

अथवा सफेद घूषा, अकरकरा, और बोहरी प्रत्येक सवा तीन माशे
सखिया एक माशे दो आतिशी मदिरा में एक दिवस खरल करके रात्रि के
समय लिंग पर मुले उस पर कच्चे घाग से पान बांधि और सो रहे इसी प्रकार
एक सप्ताह पर्यन्त बांधे इस काल में काम बिलाम की और भीति न करे
मनुष्य के कान के में शूकर के नयी पिटाकर तीन दिन

अथवा सफेद कनेर की जड़ बराबर गंधे के मूत्र में पीसकर लिंग पर मर्दन करे और बाजे इस में थोड़ा शिंगरफ भी मिलावे हैं उस के ऊपर अरंड के पत्त पांचे कि सूख जावे वा तोलिया बिष आंश हलदी, मैदा लकड़ी मत्पेक दस मासे पृथक २ कूट छान कर तीन मात्रा बना के एक मात्रा ताजा पानी में खूब रगड़ कर लिंग का सिर और सीपन छोड़ के लेप कर ऊपर से पान लपेट कर सब दिन बधा रखले दूसरे तथा तीसरे दिन भी इसी प्रकार करे चाप दिन घी धोकर लिंग पर मले ।

अथवा एक बड़ी जोंक जो सालाब में होती है गौ का घी पाव भर प्रथम घी को लोहे के वर्तन में तपा कर जोती जोंक उस में डालदे जब जोंक का पेट फटजाय और फटने का शब्द कान में आवे उत्तार कर सेपर का गोंद चार मासे महीन पीस कर उस में मिलावे और नीम क सोटे से चार महर रगड़ और लिंग पर लगावे जो बड़ी जोंक न मिले तो सात नग छोटी जोंक ले ।

अथवा कनेर की जड़, धतूरे की जड़ का जिलका, भांग की जड़ का जिलका, आक की जड़ का जिलका, बराबर लेके छाया में सुखा कूट छान कर धतूरे के पत्तों के रस में बेर की बराबर गोछिया बनावे और एक गोली अपने मूत्र में पीस कर लिंग पर लगा के सुखावे पीछे स्त्री भोग में मृत्त हों

अथवा सफेद सरसों, कड़वा कूट, बड़ी बटरी, कापफल, असगंध की जड़ सब बराबर कूट छान कर पानी में मिला के लिंग पर मर्ने जब सूखन लगे छुड़ा ढाले तीन वा चार दिनस इसी प्रकार करे लिंग, बड़जावे अगर सफेद सरसों न मिले तो पीछी लेवे ।

अथवा केंचुआ एक तोले, गौ का घी दो तोले मिलाकर दो महर स्वरञ्ज करे थोड़ा शिशन पर मले और उसक ऊपर कनेर वा बट के पत्ते पापे ।

अथवा अस्पद, रेंही की पत्ती, पीछी सरसों मत्पेक पांच तोले कूट छान कर घमेनी के सेल में स्वरञ्ज करके मात काल को उस एह में जहाँ मायु का प्रवेश नहीं बैठकर लिंग पर मले जो गर्दश्कृत हो तो अगोठी में भग्नि गंध लेत करफ आगे रखे और बार २ हाथ सेक २ कर नाभि स ऊपर गया पयन्त सके, सेक का काल न्यूनसे न्यून पांच पदी है यह विधि जाडसरसों ने अपने मूर्जरिचान में लिखा है ।

लेप कि आनन्द दायक है ताजा पीरबट्टी उस के बराबर बर का दूता ।

लेकर तिल के तेल में महीन पीस कर लेप करे ।

मर्दन पारा पांच तोल, गौ के पिछे पारह नग, आध सेर भाग के रस में लोह के दस्त से एक पैसा उसपर लगा के छः दिन पर्यन्त रगड़े जब गाढ़ा हाजाय जगती घर के समान गोळियां बनावे एक गोली धूक में पीस कर लगावे ।

लेप कि धीरे धीरे स्तन करता है । खुशकी में रहने वाले मेंढक को छाया में सुखाकर उनके सिर और पैरों को काटकर महीन पीसे फिर एक जायफल और दो माश केसर मिलाकर गालियां बनावे और लिंग का सिर छोड़ कर लेप करे ।

अथवा अमगध, गजपीपल, पड़वा कूट, पीसकर गौ के माखन में मिला कर पंद्रह दिन तक प्रति दिवस दो घोर मल और गरम जल से धो डाले दूसरे नुसखे में गजपीपल की जगह पीपल लिखा है और एक पुस्तक में वर्णन किया है कि एक बड़ा मेंढक जो कुएं में रहता हो लेकर उस की गुदा से देवे और साढ़ दस माश चपल अर्थात् पारा उसके मुह में भर कर रखे जब सुख जाव तब उसका पेट चीर कर पारे को कि गोली बघ जायगी निकाल ले स्त्री मसग क समय मुख में रखे कभी धीरे रखलित न होवे ।

अथवा गौ का पिछा शहर में मिलाकर लिंग पर मले और गरम जल से धोवे इसी प्रकार पंद्रह दिवस पर्यन्त करे और यदि जगती कपोत की बीट तथा चरबी और सेंधानोन छहद में मिलाकर लिंग पर मले और स्त्री भाग करे तो अत्यंत आनंद प्राप्त होवे ।

अथवा माख बेंगन मिट्टी में लपेट कर भूपल में रखे और फिर मिट्टी दूर कर बेंगन का जल निचोड़ कर छान लें फिर कई एक नग पीपल तीन दिवस पर्यन्त उसी पानी में भिगो कर रखे चौथ दिन निकाल के सुखा कर महीन पीस लिंग पर लेप करे ।

अथवा कनर की जड़ महीन पीसकर केटोरी के रस में खरक करके लिंग पर मले ।

लेप कि लिंग कट्टेपन को जो हथेली करने से हो गुण करता है । मद्य लिंग को सिल के गुनगुन तेल से मले पश्चात् यादव हाथों पीसकर गुनगुन लेप करे ऊपर स पान वा अरक के पत्ता लपेट कर उसके चारों ओर खपंच रखकर पट्टी से दृढ़ पाँचे एक महर के पश्चात् गुनगुने जल से धोव एक सप्ताह

में लिंग का टेढ़ापन जाता रहेगा ।

मर्दन कि, लिंग को मोटा करे, मतिरात्रि लिंग को ताजा दूध से मले फिर सूखे कछुए पीसकर मले ।

अथवा कायफल भैंस के दूध में पीसकर लेप करे और रात भर बांधे रख मातृकाल गरम जलसे धोवे कई एक दिवस इसी प्रकार करे ।

अथवा रेंडे का छिलका अकरकरा सींचण मध में खरल करके लिंग का सिर छोड़ कर मले और उसके ऊपर पान लपटें इसी प्रकार कई एक दिन करने के पश्चात् गुण मग्न होगा ।

अथवा कमलगद्द का जीरा शुद्ध छहद बराबर परस्पर खूब पीसकर लिंग का सिर छोड़कर मले और ऊपर से कपड़ा लपटें और दो पहर पश्चात् खोलकर गरम जल से धोवे और फिर इसी प्रकार करें ।

अथवा सात मास इन्द्र जी भैंस के ताजा दूध में भिगोकर चार पहर पीस कर गुनगुना २ लिंग पर लेप कर ऊपर से कपड़ा लपट कर सो रहे सुबेरे उष्ण जल से धोवावे कई एक दिन निर्विघ्न यही काम करे तो लिंग बढ़ा होवे ।

अथवा उदगन के बीज कुछ छानकर मातृदिन दो बार लिंग पर लेप करे और कई दिवस पर्यंत इसी प्रकार करे तो लिंग बढ़ और कड़ा होवे ।

मर्दन कि लिंग की दृढ़ता और मधेज को गुण करे असंगंध की जड़ जैकुट करके काल घतूरे के रस में बीस बार भिगोकर सुखावे फिर पीसकर रख और धूर में रगड़कर लिंग पर मले और एक पहर के पश्चात् स्त्री मसंग करे उसके पीछे गौघृत लिंग पर मले ।

अथवा चमड़ी के तेल में राई पीसकर लिंग पर लगावे ।

अथवा अकरकरा दो भाग, जगली प्याज का रस दस भाग, पीस कर लिंग पर लगावे ।

अथवा राजा रेंडे के तेल में खरल कर कपड़े पर अमोके लिंग पर बांधे रेंडे लगाकर करता है पर तु काम की मजबूती और दृढता को गुण करता है ।

अथवा हुलहुल के बीज दो भाग और उसकी छाया एक भाग महीन छूट छानकर पीठे तेल में चार पहर खरल करके लगावे ।

अथवा लौंग समुद्र फल की मींगी एक २ नग पीसकर लगावे ।

रेंडी का तेल कि दयलस का पल्लव गुण करे पीठा तेछ रेंडा की पांगी

लेकर सित्त के तेल म महीन पीस कर लेप करे ।

गर्दन पारा पांच तोल, गौ के पित्ते बारह नग, आध सेर भांग के रस में लोह के दस्ते से एक पैसा उसपर छगा के छः दिन पर्यन्त रगड़े जब गाढ़ा हो जाव जगली घर क समान गोलियां बनावे एक गोली धूक में पीस कर लगावे ।

लेप कि वीर्य को स्तम्भन करता है । खुरकी में रहने वाले मेंढक को छाया में सुखाकर उनके सिर और पैरों को काटकर महीन पीसे फिर एक जापफल और दो माश केसर मिलाकर गोलियां बनाव और लिंग का सिर छोड़ कर लेप करे ।

अथवा असगध, गजपीपल, कड़वा कूट, पीसकर गौ के माखन में मिला कर पंद्रह दिन तक मक्खि दिवस दों घोर मल और गरम जल से धो डाले दूसरे नुसखे में गजपीपल को जगह पीपल लिखा है और एक पुस्तक में वर्णन किया है कि एक बड़ा मेंढक जो कुएं में रहता हो लेकर उस की गुदा सीं देव और साढ़े दस माश चपल अर्थात् पारा उसके मुह में भर कर रखे जब सूख जाव तब उसका पेट चीर कर पारे को कि गोली बंध जायगी निकाल ले स्त्री प्रसव क समय मुख में रखे कभी वीर्य स्तब्धित न होवे ।

अथवा गौ का पिछा शहद म मिलाकर लिंग पर मले और गरम जल से धोवे इसी प्रकार पंद्रह दिवस पर्यन्त करे और यदि जगली कपोत की बीट तथा चरबी और सेंधानोन शहद में मिलाकर लिंग पर मले और स्त्री मोग करे तो अत्यंत आनंद प्राप्त होवे ।

अथवा मारु बैंगन मिट्टी में लपेट कर भूपछ में रखे और फिर मिट्टी दूर कर बैंगन का जल निकोड कर दान लें फिर कई एक नग पीपल तीन दिवस पर्यंत उसी पानी में भिगो कर रखे चौथे दिन निकाल के सुखा कर महीन पीस लिंग पर लेप करे ।

अथवा कनर बी जड़ महीन पीसकर बटेरी के रस में खरक करव लिंग पर मल ।

लेप । कि लिंग कटेक्षण को जो इयत्तम करने से हा गुण करता है । प्रयोग लिंग का सित्त क गुनगुन तेल स मले पश्चात् यादे हाथों पीसकर गुनगुन ताव करे ऊपर में पान वा अरक के पत्रा लपेट कर उसके चारों ओर खपध रख कर पट्टी से हृद पावे एक महर के पश्चात् गुनगुने जल से धो व एक सप्ताह

अथवा धर्म का देव गी का देव दोनों परापर होकर धर्म में रत्न और
राज की वस्त्रों में यही सब सुखसाधन ही पड़ी पड़वाते रत्नी गमन करते अत्यन्त
मन में रहते ।
अथवा रत्न धर्म की पवित्रता का रस निकाल कर दोनों राजा पर
आज सब सुखसाधन रत्नी गमन करते ।
अथवा कष्ट, कष्टों का क्षीर, सब पीसकर मूड के साथ जोड़ जीरे
के समान गीछियाँ बनावे और जिह्व के छिद्र में रखे एक पड़ी पीछे विषय करते
धर्म में और विरक्तता की गुण करते ।
अथवा रत्न मूड मूड में पिछाकर जीरे के समान पवित्र बनाकर
रत्नी के छिद्र में रखे ठीक पड़ी पड़वाते ही साग कर धर्म एक पुस्तक में लिखा
रखा है कि कौन की सब जगहों के पाठ्य की परावर रत्नी योग के समान मूल
में रखे सब नक मूल में रत्नी रत्नी रखित न होगा ।
उस के बावों की रत्नी सदा में धर्मकर सोवे अस्मिता की गुण करती है
और निरुद्धता करि में धर्मगी यह भी गुण करती है । अस्मिता धर्म में
रत्नी रखित रत्नी की कष्ट है । लिखा है कि रत्नवार की पाठ और विषय
की पुस्तक का एक बात जोग और पौरी कीटों में छिद्र कर धर्मगा और देवने
सदा पर धर्मकर योग करनी रत्नी रखित की होकरा है ।
और छेदने का अस्मिता धर्म में रखे कर कष्ट में रत्नी सब नक मूल
में रत्नी रत्नी रखित न होगा ।
रत्नी गी ।

होने क समय ठहरत है और उत्तम यह है कि एक नियत अक जैसे पांच वा सात आरभ करके एक टांक अक बढ़ाता जाय दूसरी विधि यह है कि जब जाने कि वीर्य निकलता है छगलियां और मध्य से उस रग को जो अडकोश के नीचे गुदा के बीच में है पल से पकड़ लें वीर्य आता हुआ फिर बायगा इसी प्रकार प्रति बार करे उत्तम तो यह है कि जब भोग करने बैठे पार्षण अर्थात् पट्टी से यह नस दबाये रखे ।

गोली कि वधेज करे शिगरफ, मोचरस, अफीम अत्येक चार माशे, सुहागा एक माशे पीसकर कालाभिर्च के बराबर गोलियां बनावे एक गोली स्त्री प्रसंग से पहिले खाय ।

यत्र कि ऊठ की अस्ति में छेद करके जिस क सिरहाने रखदे उसे का वीर्य स्वाकृत नहो ॥

फसल खुसिये अर्थात् अडकोश की बीमारियों की चिकित्सा में

प्रसक्त अर्थात् अडकोश का बढ़ना कि फारसी में बादखाया कहत है । **गुण** जो दक्षिण अडकोश में सूजन हो तो जैमन हाथ की असक्षिम नस को ढाह देवे और जो जैमने अडकोश की सूजन हो तो बाँप की, पाड़ा जाती रहेगा ।

असक्षिम एक नस है उस की पास की अगुली के बीच में उस को रेशमी कपड़ा बाँध जलादे और ढाहना प्रायः आवास लोग जानते हैं कि व अपने हाथ पेर ढाहत हैं ।

दवा कि हिन्दी मनुष्य काम में लासे हैं अकोश के बढ़ाने को गुण करती है । टांक की जड़ की छाल साया में सुखाकर महीन कूट छान कर सात माशे ताजे पानी के सग फाँके यह नाभि की पीड़ा को भी गुण करे ।

चूर्ण कि अडकोश की वृद्धि को गुण करे बायबिडग, छवर, पुरानी ईंट कूट छान कर तीन तोले चार माशे घी क सग खाय यदि पहिले दिन घमन हो तो अडकोश अपनी पूर्व दशा पर आजायगा ।

काढा कि अंडवृद्धि का गुण करे अमलतास एक तोल साढ़े पांच माश पांच वा छे तोले पानी में आटावे जब चौथाई रह तीन तोले घी मिलाकर गुनगुना गुनगुना खहा होकर पीवे ।

अथवा घुना सुहागा छ रची पीसकर पुराने गुठ में मिछा के तीन गालियाँ घनावे एक गोली नित्य प्रातः काल खाय और उस के ऊपर थोड़ा घी पीवे अछोना नर्म भोजन करे ।

लेप कि अढकोश की सूजन को गुण करे । ऊट की मैंगनी और थोड़ी इलदी औटावे जब गाढ़ी हो आय गुनगुनी २ लगावे ।

अथवा छुहार की गुठकी का चूर्ण, खतमी के बीज सिर के में मिछाकर लेप करे तो सर्दी की सूजन दूर होवे ।

अथवा आषपाष गाँग पानी में औटावे जब आधा रहे तब उस पानी में अढकोश धोवे और उस का फोक छेप करे ।

अथवा पकरी की मैंगनी, खुरासानी अजवायन दोनों बराबर पानी में घोटकर गुनगुना कर लेप करे ।

अथवा अढ की जड़ सिरके में पीसकर गुनगुना कर छेप करे मैनफल के बीज नाजबू के पत्तों के रस में पीसकर लेप करे ।

अथवा कायल के बीज कूट छान कर गुनगुना २ छेप करे ।

अथवा भांगरा, चूरे की मैंगनी, नकछिनी मत्पेक बराबर रोसन के बीज दूने अरड के पत्तों के रस में घोट गुनगुना कर लेप करे तो अढकोश की पीड़ा और सूजन दूर हो और बालकों की अढवृद्धि को अरहर पानी में पीसकर लगाना गुण करता है ।

दवा कि गरमो के अढकोश के सोय को गुण करे । भाँग को पानी में भिगाकर जब तक सघित हो अढकोश उस में रखे इसी प्रकार दो बार करे और उसका फाक अढकोश पर बांध ।

अथवा मसूर बिनी हुई अनार का छिलका दोनों बराबर पानी में औटावे जब गलजाय पीसकर लेप करे ।

गर्दन कि अढकोश की सद सूजन को गुण कर । रेन्डी का गोंद पीस करके नित्य दो तीन बार लगावे ।

अथवा पाज्जु अमगठ पानी में पीसकर गुनगुना २ छेप करे ।

अथवा नकचूर पीसकर गुनगुना २ छेप करे ऊपर से पान पाँप ।

दवा कि अढकोश की सर्दी के सोय को गुण करे मरुवे के पत्र थार गहनी पीसकर रोटी पनाय अढकोश पर बाँध सूजन और पीड़ा का गुण करे ।

गुण अंडकोश के गर्भ सोप की चिकित्सा साफन फरुद का खोलना है
अथवा अजवायन खुरासानी जो का चून, कदू के टुक घनिये की पत्तियों
का अर्क काई और लालचन्दन का लेप करना गुण करता है और जो सूजन
सर्दी से हो तो मेथी दाल्यों के बीज शहद में मिलाकर लेप करे ।

नतूल अर्थात् तरा कि अंडकोश की सूजन और पीड़ा को गुण करे
टेसू के फूल पानी में औटाकर अंडकोश पर तरादे और उसका फोक गुनगुना
गुनगुना बांधे ।

मर्दन अंडकोप की चोट को गुणदायक है थोड़ी हल्दी पीसकर कुक्कुट
के अडे की जर्दी में मिलाकर गुनगुना २ लगावे ।

अथवा सफेदजीरा, कात्तीभिर्घ पानी में पीसकर औटावे और मर्दन
करे तो अंडकोप की सज़्जी दूर हो ।

अथवा पन्ना जीरा शहद में मिलाकर लगावे ।

लेप कि अंडकोप की खुजली को दूर करे । सिरस की छाल पीसकर
लेप करें ।

अथवा रेंहां पानी में पीसकर लेप करे तो अंडकोष की सूजन को
गुण करे ।

दवा कि अंडकोप और लिंग के घाव को गुण दायक है । रोंगटा जला
हुआ अगूर की लकड़ी की राख घाव को थूक से भिगाकर उस पर बुके ।

गुसूल वह गीली दवा जिससे घाव को घोंबे । गुसूल कि अंडकोप के
घाव को गुण करे धधूर की छाल लौकट करके पानी में औटावे और उससे
घाव को घोंपा करे ।

अथवा कवेला तिल के तेल में मिलाकर लगावे ।

बुकी कि घाव को गुण करे चाकसू महीन पीसकर घाव पर बुके ।

लेप कि नाभि की चवाई को गुण करे अर्थात् यदि नाभि ऊंची होनाय
तो इस दवा से अपनी पूर्व दशा पर आजावे अजवायन छूट छानकर गुर्गी के
अडे की सफेदी में मिलाकर लेप करे और उस पर शीशे का टुकड़ा बांधे ।

फसल उन बीमारियों की चिकित्सा में जो केवल
स्त्रियों के होती हैं

अगर अर्थात् वांछ अथवा गर्भ का होना जिस स्त्री को यह रोग हावे उस

का अरथी में अकरीयह कावे है और अकरी की उन कार्यों से होता है ना गर्भ के रोकेन बाधे इति है इसको अकर भजाजी कहते हैं इसकी चिकित्सा होसकी है और कभी अकर बिना कार्यों के भी होता है जैसे कि बाजे वृत्त नहीं प्रकट हो तो यह अकर अकरीयह है और इसकी चिकित्सा नहीं है और अकर के कारण कभी पुरुषों में होते हैं और कभी स्त्रियों में । इसकी परीक्षा इस प्रकार करनी सचित है कि सात दाने गेहूँ या जौ के पृथक् २ मट्टी के तौलन भाजन में रखें और एक वासन में पुरुष और एक में स्त्री सात दिवस पर्यन्त भूने जिसके सूत्र से पूर्वोक्त दाने में छगी वसी में अकर का कोई कारण जानो ।

अथवा स्त्री पुरुष पृथक् २ बटोरी में पानी भरकर अपना २ वीर्य उन में डाले जिसका वीर्य पानी में न बैठ और ऊपर ही तैरता रहे वसी में कोई दृक्क अकर का जानो ।

अथवा स्त्री पुरुष पृथक् २ काहूँ वा कटू की लोड़ में भूना करें जिस के सूत्र से पड़ सूत्र जाय वसी में कोई कारण अकर का जानो । अब अकर की कई एक महत्त औषधियाँ लिखी जाती हैं ।

चूर्ण कि जिसके फाँकने से स्त्री गर्भिणी होवे, हाथी दाँव कूड़े खानकर बराबर की मिर्ची भिंछाकर रसै जिस दिन रजस्वला हो चुक नौ मासे सात दिन तक खाए और पश्चात् पुरुष के संग भोग करे तीन दिन में गर्भ धारण करेगी ।

अथवा कायफल कूट खानकर बराबर का घृा गिलाकर रजस्वला होने के पश्चात् एक २ हफ्ते पर कर तीन दिन पर्यन्त खाए और दूध चावल आहार करे इसके पश्चात् पुरुष से रति कराए ।

अथवा असगप कूट खानकर रति के आरम्भ से पुरे से साढ़े तीन मासे से सात मासे तक खाए और शुद्ध होने के पश्चात् पुरुष से विजास करे और दूध चावल भोजन करे ।

गोल्ली कि गर्भ धारण करावे बीजावलि, नौसादर बराबर पीसे कर चार तोल के ममाण गोल्लियाँ बनावे स्त्री रजस्वला होने के समय प्रति दिन १ गोली खाए और शुद्ध होने के पश्चात् पुरुष से संग करे ।

द्वेवा कि गर्भ पर नियत है हाथी का मूत्र काम बिलास से पहिले अपना रूप संगम के समय बंधा की पितावे ।

अथवा पियावांसे का जड़ पौने दो मासे पानी में पीसकर थोड़ा गौ दुग्ध के संग पुरुष स्नाय और तीन दिवस पर्यन्त स्त्री को खिलावे उसके पीछे भोग करे।

अथवा काळे घतूरे के फूल पीसकर शहद और घी में मिलाकर स्नाय।

अथवा एक नग समुद्रफल थोड़े दही के साथ निगले अवश्यमेव गुण करता है।

अथवा यह कि गर्भ पर सहायक होता है कजा की भिंगी स्त्री दुग्ध में पीसकर और उस में कपड़ा भिगोकर भग में रखे।

अथवा अजवायन एक हथेली भर कई एक दिवस पर्यन्त स्नाया करे।

शियाफू रजस्वला होने के पश्चात् तीन दिवस सरसों पीसकर बची करे गर्भवती होजाय।

अथवा बाज की बीट कपड़े पर लगाकर स्त्री रजस्वला होने के पीछे अपनी योनि में रख तो गर्भ पर सहाय करे और लिखा है कि थोड़ी बीट शहद में मिलाकर स्त्री खवे तो अवश्य गर्भ धारण करे।

अथवा कवूतर की बीट रजस्वला होने के पश्चात् योनि में रखे।

फसल गर्भणी की विधि के व्याख्यान में।

विदित हो कि गर्भवती स्त्री को फसल और सुपाहिल अर्थात् विरेचक से विशेष करके चौथे मास की आदि और सातवें मास के अन्त में वचना उचित है तथा प्रसूने और स्त्री गर्भ के खलन वाला वस्तुओं से और दूर की बातों और भयकर शब्द से बचना चाहिये और दो महीन पश्चात् पुरुष समागम का त्याग करना उचित है और आहार अधिक खाना न चाहिये और अजीर्ण से डरती रहे और जो गर्भधा प्रसन्न चित्त और यथोचित लुधा रखती हो और उसको कोई रोग और सिर पीड़ा और भिड़ती आदि न हो और उसको दक्षिण आर में गर्भ जात हो और दक्षिण कुच भी भारी हो और कुचा पर लाली प्रकट हो तो निस्सन्देह पुत्र जनेगी।

और जिस स्त्री को पुत्र का गर्भ न होगा उसके इसके विरुद्ध चिन्ह होंगे उसका सिर भारी और मुख पीछा और निस्तेज होगा लुधा-यून और शिथिलता विशेष होगी तथा कुचा भी कुछ विशेष बड़ी न होंगी और उसका दृष पतला होगा और निद्रा अधिक आवेगी और चलने में प्रथम दाहिना पांव जड़ा वेगी और खड़े होने के समय जमीन पर दाहिना हाथ टंककर सटगी और वैया

न यह भी लिखा है कि गर्भिणी अपनी हथेली पर जूँ रखकर उस पर अपना दूध डुंढे जो वह जूँ उसमें डिले चले तो पुत्र होने का चिन्ह है और जो न दिले पर जाय तो पुत्री उत्पन्न होगी और यह भी लिखा है कि चुबदर के पक्ष सुखा करके गर्भवती की नाक में फूँके जो ब्रॉक आवे तो छद्मकी नहीं तो छद्मका जनेगी।

गर्भरक्षक अर्थात् वे औषधियाँ जो गर्भपात न होने दें बाजी स्त्रियों का गर्भ आदि में गिर पड़ता है व लाल वस्त्र में छाछ सूत से कि कसूम से रंगा हो एक कजा बांधकर नौ मास पयत्त कटि पर बांध रखें।

अथवा यह सूत कि कुवारी कन्या के हाथ का हो स्त्री के तलु से नव के नख तक नापे और इक्कीस तार का बन वे और पाले घटूरे की जड़ के साथ डुङ्ग करके उस सूत में पृथकर बांध कर स्त्री की कटि में बांधें ॥

अथवा पत्र की मुद्रिका अर्थात् अगूठी दाहिने हाथ में धारण करना गर्भिणी के रुधिर द्रव को रोकता है।

गर्दन कि स्त्री की योनि की खुजली और जलन को गुण करे खनपी के बीज, गुरुतानी मिट्टी मकोय की पत्तियों के रस में पीसकर लगावे।

अथवा भीमसेनी कपूर गुलाब मं पीस कर भग में मलें।

गुण कहवत् कटि पर बांधे गर्भपात की रक्षा करता है और गर्दन में बांधना यक्रीन को और छाती पर रखना दिक्ष को गुण करता है और ताम्रान को जो एक प्रकार का विष है युक्त साथ है और मायः वषा के काल में प्रकट होता है हम का रंग लाल या पीला या नीला या काला या हरा होता है और जलन विशेष होती है गुण दायक है।

दवा कि गर्भिणी स्त्री की चुबा के उत्पात को गुण करे वहीं इलायची दो तोले ग्यारह माशे सब दो तोल कद्द के साथ पीस कर तीन माशे नित्य खाय।

फ़सल असर वलादत अर्थात् शीघ्र प्रसूत

वा प्रसूत कष्ट की चिकित्सा में।

जन्म के समय सुगन्धि युक्त वस्तु न जाने दें और चौदह माशे अमलवास के छिड़के पानी में ओटाकर थोड़ा घूरा मिलाकर पिलाना और घट के घुम की धूनी दना प्रसूत के कष्ट को दूर करता है।

वेद्यो ने लिखा है कि याही चोके की छीद, कपूतर की पीठ के सग जनाये

अथवा पियावासे की जड़ पौने दो मासे पानी में पीसकर थोड़ा गौ दुग्ध के संग पुरुष खाये और तीन दिवस पर्यन्त स्त्री को खिलावे उसके पीछे भोग करे।

अथवा काले घतूर के फूल पीसकर शहद और घी में मिलाकर खाये।

अथवा एक नग समुद्रफल थोड़े दही के साथ निगले अवश्य यमैव गुण करता है।

अथवा यह कि गर्भ पर सहायक होता है कज्जा की भेंगी स्त्री दुग्ध में पीसकर और उस में कपड़ा भिगोकर भग में रखे।

अथवा अजवायन एक हथेली भर कई एक दिवस पर्यन्त खाया करें।

शियाफ रजस्वला होने के पश्चात् तीन दिवस सरसों पीसकर बत्ती करे गर्भवती होजाय।

अथवा बाज की बीट कपड़े पर लगाकर स्त्री रजस्वला होने के पीछे अपनी योनि में रखे तो गर्भ पर सहाय करे और लिखा है कि थोड़ी बीट शहद में मिलाकर स्त्री खाने से अवश्य गर्भ धारण करे।

अथवा कबूतर की बीट रजस्वला होने के पश्चात् योनि में रखे।

फसल गर्भणी की विधि के व्याख्यान में।

विदित हो कि गर्भवती स्त्री को फसल और मुमहिल अर्थात् विरचक से विशेष करके चौथे मास की आदि और सातवें मास के अन्त में बचना उचित है तथा पछन और स्त्री गर्भ के खलने वाला वस्तुओं से और दूर की बातों और भयंकर शब्द से बचना चाहिये और दो महीन पश्चात् पुरुष समागम का त्याग करना उचित है और आहार अधिक खाना न चाहिये और अजीर्ण से दूर रहती रहे और जो गर्भघातसम्बन्धित और यथोचित चुषा रखती हो और समको कोई रोग और सिर पीड़ा और मिकती आदि न हो और उसको दक्षिण आर में गर्भ ह्रात हो और दक्षिण कुच भी मारी हो और कुचों पर लाठी मकड़ हो तो निस्सन्देह पुत्र जनेगी।

और जिस स्त्री को पुत्र का गर्भ न होगा उसके इसके विरुद्ध चिन्ह होंगे उसका सिर मारी और मुख पीछा और निस्तेज होगा भुवा न्यून और शिथिल विशेष होगी तथा कुचा भी कुछ विशेष बड़ी न होगी और उसका दूध पतला होगा और निद्रा अधिक आवेगी और चलने में प्रथम दाहिना पांव उठायेगी और गड्ढे होने के समय अमीन पर दाहिना हाथ टेककर उठेगी और वैधियाँ

ने यह भी लिखा है कि गर्भिणी अपनी इधकी पर जूँ रखकर सस पर अपना दूध दूरे जो वह जूँ उसमें दिखे चले तो पुत्र होने का चिन्ह है और जो न दिखे पर जाय तो पुत्री उत्पन्न होगी और यह भी लिखा है कि सुषुप्ति के पक्ष सुखा करके गर्भवती की नाक में फुके जो झींक आवे तो लड़की नहीं तो लड़का जनेगी।

गर्भरक्त अर्थात् वे औषधियाँ जो गर्भपात न होने दें बाजी स्त्रियों का गण आदि में गिर पड़ता है व लाल धूसर में लाल सूत से कि पसूम से रंगा हो एक कमा बांधकर नौ मास पर्यन्त कटि पर बांध रखें।

अथवा यह सूत कि कुवारी कन्या के हाथ का हो स्त्री के तलु से नख के नख तक नापे और इक्कीस तार का बन घे और काष्ठ घटूरे की जड़ के साथ डुकड़ करके उस सूत में पृथकर बांध कर स्त्री की कटि में बांधें ॥

अथवा पत्र की छद्रिका अर्थात् अगूठी दाहिने हाथ में धारण करना गर्भिणी क कथिर द्रव को रोकता है।

मर्दन कि स्त्री की योनि की खुजली और जलन को गुण करे खतमी के बीज, मुरतानी मिट्टी मकोय की पत्तियों के रस में पीसकर लगावे।

अथवा भीमसेनी कपूर गुलाब में पीस कर गण में मलें।

गुण कहवधा कटि पर बांधे गर्भपात की रक्षा करता है और गर्दन में बांधना यक्रीन को और छाती पर रखना दूध को गुण करता है और तात्मान को जो एक प्रकार का विष है युक्त साथ है और प्रायः बच्चे के काल में प्रकट होता है इस का रंग लाल या पाला या नीला या काला या हरा होता है और जलन विशेष होती है गुण दायक है।

दवा कि गर्भिणी स्त्री की जुवा के उत्पात को गुण करे बड़ी इलायची दो तोले ग्यारह मासे सब दो ताजे क्रद के साथ पीस कर तीन मासे नित्य खाय।

फसल असर वलादत अर्थात् शीघ्र प्रसूत

वा प्रसूत कष्ट की चिकित्सा में।

जाने के समय सुगंधि युक्त वस्तु न जाने दे और चौदह मासे अमलताम के छिछके पानी में आटाकर थोड़ा-पूरा पिछाकर पिलाना और घाद-के-सुम की घूनी देना प्रसूत के कष्ट को दूर करता है।

वेधों न लिखा है कि गारदी घोड़े की खीद, कपूतर की पीट के सग जलमें

घोतकर स्त्री को खिन्नाना कीम प्रसून को सहायता देता है ।

और साँपकी काँचली की धूनी गुण वरुवे की तुरंत बाहर लगी है
और गाँवर क धीनी की धूनी गुण करती है ।

अथवा बंधू के कुत्त नौ पाश थोड़े अल में ओटा कर यपोचित शोध
मिलाकर पिलाया अत्युत्तम है ।

देवा कि गर्माशय में रक्त का कथिर बहने लगे तुरंत रोक गुत्तर की
जड़ जोड़कर औटा के पिये ।

अथवा नीलोकर, मुकददी फड़ी हुई, चन्दन पिता हुआ, मिश्री बराबर
कनकी पत्राकर मंगे हुए साठो चौबछा के पानी के साथ एक हथेली भर खावे
ओटा कि प्रसून के कण्ट को हरता है मकरनातीस पत्थर चापे हाथ में
रक्ख ।

अथवा कजा चर्म में रख कर दोनों पिङ्गलियों में रखे ।

गुण थोड़ी हींग खाना और मनुष्य के सिर के बालों की धूनी लेना ।

अथवा मनुष्य के केश मलाकर उनकी राख गुलाब जल में मिलाकर
स्त्री के सिर से मलना ल ल वस्त्र में नोन मिलाकर स्त्री की जैमनी और
लटकाना ।

अथवा साँप की काँचली स्त्री के नितब पर बाँधना और उसकी धूनी
देना ।

अथवा चक्रमक पत्थर कपड़े में लपेट कर स्त्रीकी जंघा में बाँधना
कीम प्रसून के लिये गुण दायक है ।

इसा प्रकार बारह सोंगे का सोंग बाँधना और गिद्ध का पर पैर लगे
रखना और सिरफिका की जड़ कमर में बाँधना और अति सर्प के दाँत स्त्री
के गले में छड़काना प्रसून के कण्ट को दूर करता है ।

इन्द्रायन की जड़ पीसकर गाय के घी में मिलाकर भग में मलना बच्चे
को तुरन्त बाहर लाता है ।

देवा कि उस पीड़ा को नाशित करे कि उत्पन्न होने के पश्चात् गर्माशय में
शोथ है खजूर का खिलकी तीन तोले चार पाशों सोफ के अक्ष में पीसकर पिये ।

अथवा पुराना खापरा खाए ।

अथवा पहाड़ी पोदीना औटाकर पिये ।

अथवा पोस्त के ढाँचों का काढ़ा पिये ।

फसल उन औषधियों के व्याख्यान में जो स्त्री को बांझ करें

हाथी की साजा लीद निचोड़ कर एक तोले शहद में मिलाकर रजस्वला होने के पश्चात् तीन दिवस पर्यन्त पीये और हाथी की लीद योनि में मलना भी बांझ करता है ।

अथवा नौसादर फिटकरी जल में पीसकर भग में स्त्री वर्ष के पश्चात् रखे ।

अथवा जो स्त्री प्रति दिन प्रातः काल एक लोंग निगले कभी गर्भ न रहे ।

अथवा स्पद नागौरी जलाकर रजस्वला होने के पश्चात् खाये ।

अथवा जो लिंग के सिर को भीठे तेल और नोन से मलकर भोग करे तो कभी गर्भाशय बीर्य को स्वीकार न करे ।

शियाफ्र कि स्त्री को बांझ करे बावची भीठे तेल में पीसकर स्त्री वर्ष के पश्चात् बत्ती बनाकर भग में रखे ।

दवा इकदी पीसकर रजद्रव के समय खाये और शुद्ध होने के पश्चात् भी तीन दिन खाये तो गर्भवती न हो ।

अथवा चमेली की जड़ और चंपे के फूल का कीरा छाया में सुखावें और रजद्रव के आरम्भ से तीन दिवस पर्यन्त खाये ऊपर से एक छूट जल पिये ।

काढ़ा कि गर्भ को न रहने दे फरास की जाल और गुड़ औटाकर पिये ।

अथवा कालीमिर्च भोग के पश्चात् योनि में रख ।

अथवा साढ़े चार माशे नील पिये ।

गोली कालीज्वारी, कावली इड़ की गुठली, नागेश्वर, नर्काचूर, कळोजी, कायफळ प्रत्येक एक तोले साढ़े पांच माशे कूट ज्ञान कर गोखियां बनाव और रजस्वला होने के समय एक गोली नित्य सात दिवस पर्यन्त खाये । लिखा है यदि स्त्री चमेली की एक कली निगले तो वर्ष दिन तक गर्भ स्थित न हो ।

अथवा रेंदी की गूदी निगल जाय तो वर्ष दिन तक गर्भ न रहे ।

अथवा खाने का नोन पीस कर भग में रखे ।

अथवा घूरे की पेंगनी शहद में मिलाकर बत्ती बनाकर योनि में रखे ।

विधि गर्भ न रहे स्त्री समोह के समय अपनी जांघ न फैलावे और

पुरुष को सचित है कि जब वीर्य स्वस्थित होने लगे अपना लिङ्ग बाहर निकाल ले और प्रबंध करे, कि अपने वीर्य स्वस्थित होने के संग ही स्त्री का वीर्य स्वस्थित न होवे और समोह के प्रश्चात् शीघ्र खड़ी होकर वहीं और लड़के का दाँत जो पहले गिरे और भूमि पर न गिरने पावे उसे लेकर रविवार के दिन चाँदी में पढ़ाकर स्त्री भुजा पर बाँधे कभी गर्भ न रहेगा।

अथवा गेंदक की अस्ति स्त्री अपने पास रखे।

अथवा सर्प के दाँत अपने पास रखे।

अथवा काकनज के सात दाने स्त्री धर्म से शुद्ध होकर निगले।

अथवा थूहर की लकड़ी छाया में सुखा कर जलाके एक मासे उसकी राख बराबर का चूरा मिलाकर इक्कीस दिवस पर्यन्त नित्य खाय।

अथवा यन्त्र के फान का पैल एक दाने बाकला की बराबर काटे रंग के पशुमने में बाँध कर गले में लटकावे जब तक कि गले में रहेगा कर्म भर्म न उठने देगा।

शियाक्र सैजने के बीज खूब महीन पीसकर गो घृत और शहद मिलाकर स्त्री धर्म के प्रश्चात् बत्ती करे।

गुण लिखा है कि जो स्त्री अपने पुत्र के मूत्र पर मूवे तो गर्भिणी कभी नहीं और प्रतिमास थोड़ा खरचर का मूत्र पीना यह भी गुण रखता है।

अथवा यह गर्भ न रहने दे और गर्भाशय की पीड़ा को जो भोग के प्रश्चात् होती है दूर करे माजू महीन पीस कर कई उस पर छपेट कर गोला बनाकर काम विनोद से पहले मगदारा गर्भाशय के मुख तक पहुँचावे।

फसल गर्भपात में

दवा कि गर्भ को गिरावे हंदायन निचोड़ कर उस में कई डबोकर भग में रखें।

शियाक्र मुरई बीजों सहित पीसकर बत्ती करे।

अथवा साबुन बत्ती, बैसा बना कर गर्भाशय के मुख में रखे उस को कटवे तेल में पीसकर उस में कई भिगोकर गर्भाशय के मुख में रखे।

अथवा पीनामोल गुड़ में मिलाकर खाए और कटूल पीसकर बत्ती करे।

काढ़ा कि पेट से बच्चा निकालने में अद्वितीय है बथुवे के बीच देड़ तोला आधा सिर जल में आटावे जब आधा शेष रहे छान कर पिये ।

चूर्ण कि गर्भ को गिरावे अशुनान जो कि एक दवा है साढ़े तीन माशे कुट छान कर फाँके ।

शियाफ्र कि गर्भ को गिरावे और स्त्री घर्भ के कविर को जारी करे एलुआ कढ़वा, चिन्दाज बराबर तीक्ष्ण मद्य में खरल कर बची बनाकर भग में रखे ।

काढ़ा कि बच्चे का नाछ और भिरखी को गर्भाशय से बाहर निष्का-
यता है सहजने की छाछ गुड़ के साथ आटाकर पिये ।

धूनी कि गर्भ को गिराती है जगली कपोत की बीठ और गाबर के बीज बराबर लेकर धूनी देवे ।

शियाफ्र मुनमुना कि गेहू में होता है और एलुआ बराबर लेकर बची करे ।

लेप कि गर्भ गिरने में सहायता देता है ऊटकटारे की जड़ पानी में पीस कर गर्भवती के पेट पर लेप करे ।

अथवा गुड़हल के फूल पानी में पीसकर नाभी और उस के आसपास लेप करे ।

धूनी कि गर्भ को गिरावे गधक, बीजा शोल, होंग, भूगल पीसकर धूनी ले और जो गायका पित्त मिछावे अधिक गुण करे ।

अथवा यह कि ज्वि और मरे बच्चे को बाहर निकासे और गर्भ को गिरावे घोड़े की लीव स्त्री अपनी भग के नीचे जलाकर धूनी लेवे ।

अथवा अनार का छिछका जलाकर धूनी लेवे ।

दवा कि गर्भ को गिराती है बिपलपरें की जड़ छः अंगुल काटकर उस का एक सिरा चारीक बनाव और एलुआ गाय के पित्त में पीसकर इस के चारीक सिरे पर मछी भाँति लगाकर सुखा के गर्भाशय के मुख तक पहुँचावे और उसका दूसरा सिरा सागे से दड़ बाँधे इसी प्रकार दो बार दिवस करने से गर्भ गिर जावेगा ।

दवा भोग दस मासे मात जाल ही नाप ।

शियाफ अरदी की कोयल कोयल टहनी रेंडों के तेल में भिगोकर चूरे करे।

घुनी गधे के सुम और लीद की घुनी ले।

दवा कि गर्भ को गिरावे मैथी, हलदी, फिटकरी एक २ दाम अर्थात् मत्पेक एक तोले आठ माशे मडभूने के छप्पर का घुमा दश माशे कूट छान कर पानी में पिला बत्ती बना कर सुखावे और नरम करने वाली वस्तु जैसे घी और पोदीना गर्भाशय के मुख में लगावे उस के पश्चात् दोनों समय बत्ती रखे और गर्भ गिराने के पश्चात् एक कपड़ा घी में भिगो कर मग में रखना चाहिये कि पीड़ा दूर होजाय और भी गर्भ गिराने के पश्चात् गोखरू छः माशे खबूते के बीज सौंफ मत्पेक एक तोला औटाकर छान के मिथी पिलाकर पीवे और आहार कुछ न खाये और जल के बदले कपास की कलियाँ और वांस की ताका शन्धी मत्पेक छः तोले आठ माशे पानी में औटा कर पिये।

काढ़ा गानर के बीज, सोया के बीज, मेथी मत्पेक एक तोले नौ माशे दो सेर पानी में औटावे और नम आधा शप रहे मल छान कर दो सप्ताह पर्यन्त इसी प्रकार पीवे ॥

बत्ती परीक्षित है। एलुमा, विसखपरे की जड़, नींढायाया खिरनी की जड़ महुए के बीज बराबर कूट छान कर घची बनाकर मग में रखे।

अथवा अरदी की कच्ची एक तोला आठ माशे, एलुमा चार माशे खिरनी के बीजों की गींजी चार माशे महीन पीस कर घची बनाकर दोनों समय गर्भाशय के मुख में रक्खा करे।

अथवा पोखरूख कि एक मसिद्ध लकड़ी है एक भाग उसमें से लेकर पानी में घिस और तीन भाग रसौत मिलाकर लुहारे की गुठली के समान बनावे और सुखाकर गर्भाशय के मुख में रखे। दो या तीन दिवस में गर्भ गिर जायगा और जो गर्भाशय के आस पास दाने पड़ जाय तो उनमें घी लगाये।

कसल भग सकोचन की औपधियों में

दवा बैगन सुखाकर पीस कर भग के अर्द्ध मखे ।

चूर्ण कि भग को तुंग करे ढाक की कलियाँ छाया में सुखाकर परा
पर का पूरा गिलाकर साढ़े दस मासे प्रति दिन सजा सवर खाया करे चौ-
दह दिन में भग तग हो जायगी ।

शियाफ आख की जड़ स्त्री अपने मूत्र में पीसकर बची करे और
चार घड़ी परचात पुरुष के पास जाय तो पुरुष उस पर आशक्त हो जायगा ।

अथवा केचुप सुखा कर स्त्री अपने शुभ्र रूपान पर मखे तो कोई मनु
ष्य उस पर सामर्थ्य नही सकेगा ।

अथवा चप्पू की छाल, भड़वेरी की छाल, मौलमिरी की छाल, कच
नार की छाल, अनार का छिलका, सब बराबर थोड़े जल में भौटाकर उस
पानी से घोंनि को धोवे और भौटाते समय एक स्वेनवस्त्र उसमें डाल दे जय
रंगीन होनावे उस में से थोड़ा कपड़ा घोंति में रख ।

अथवा ढाक की कौपल छाया में सुखाकर कूट छान कर बगवर की मि-
थी मिलाकर पौने दो मासे से सात मासे तक खाय सात दिन में भग तग हो जायगी ।

अथवा लीप पीस कर प्रति दिन दो बार घोंनि में मख ।

अथवा बीरबहुटी पी में पीसकर मखे ।

अथवा गेदे की छिलका बछाकर उसकी राख मखे ।

अथवा जाई खुही के फूल पीस छानकर मखे ।

अथवा वसायन की छाल छाया में सुखाकर कूट छानकर बत्ती बनाकर
भग में रखे अति गुणदायक है ।

अथवा लहू पातक क बीन कूट छानकर घोंनि म मख ।

चूर्ण कि उस पानी को दूर करे जा गर्भाशय में बहता है मौलमिरी की
छाल सुखाकर कूट छानकर बराबर का पूरा मिलाकर प्रति दिन नाभ फाल
ताजा पानी के साथ एक इधली भग फाँक ।

अथवा इमली के बीजों की बीजी कूट छान कर भग में दोमों समय मखे ।

अथवा सण्ड्र भाग हज की गुठली की बिगी बराबर पीसकर घोंनि में मखे ।

अथवा जुनियाँ गोंद छ माशे खूब महीन पीसे और दो तोले फिटकूरे
भूने और भूनते समय वही जुनियाँ गोंद पानी में मिलाकर उस पर छिन्न
सीतल होने के पश्चात् फिर उसे पीसे और फिर थोड़े से धावा के फूल मिला
कर फिर पीसे और भग में रखे अद्भुत गुण देखने के वास्ते इस से चर्च
और कोई औषधि नहीं है।

अथवा कचनार की कली एक तोले आठ माशे अनार का छिलका मो
चरस प्रत्येक पाँच माशे बभूर की कच्ची फली सुखाई हुई चार नग, माजू प
नग महीन पीस कपड़े में छान कर काम में लावे।

सौभाग्यसौंठ अर्थात् सौंठ की माजून जिसको सुहाग सौंठ कहते हैं
भारतवर्षीय वैद्यों की चनायी हुई स्त्रियों की कपर को पल्ल देने के लिए
अत्युत्तम है सौंठ आध पाव, घी तीनपाव गौ दुग्ध में औंटावे- जब माड़ा
जाय खरबूजे के बीजों की पींगी, निशास्ता, सिंघाड़ा प्रत्येक दो तोला असम
सेकड़ मूसली, मोचरस, नागौरी गोंद, इलायची के बीज, शतावर प्रत्येक दो
तोले, तेजपात, चदन पीसकर तज, धावा के फूल प्रत्येक नौ माशे, गोखर
पीपल, कालीभिच, बालछड़, नागरमोया, कौब के बीजों की पींगी, जुनिया
गोंद प्रत्येक छः माशे कूट छान कर बूरे में माजून बनावे।

फसल इलाज सैलानतमस अर्थात् स्त्री धर्म के
अधिक रुधिर बहने की चिकित्सा में

प्रकट हो कि जो नियत समय पर रजद्रव न हो उसको इस्तहाज कहते
हैं इस रोग में कुबों के नीचे सींगी लगाना अति गुण करसा है।

दवा कि रज के रुधिर को बृद्ध करे रकायन की कौपल एक तोला भांग
के सदृश घोट छानकर पीवे।

अथवा कपास के फूल जला कर उनकी राख एक हथेली भर जल
के संग फाँके।

अथवा करी की छाल सात माशे कूट छान कर थोड़ा पुरा मिलाकर
पानी के संग फाँके।

चूर्ण कि रुधिर के विशेष द्रव को रोकें। मसूर, अरहर, उद प्रत्येक दो
तोले, साठी आंवल एक तोले सब को जला महीन पीसकर कली बनावे
और एक हथेली भर खावे।

अथवा चने जले हुए, तम, लोघ, बराबर पीस कर घूरा, मिलाकर एक हथेली भर फाँके ।

अथवा मालती के पुष्प, कोरी खाँड़ मस्येक छः माशे परस्पर मिलाकर खाय ।

अथवा सेलसुरी, गेरू बराबर मिलाकर फयकी बनावे मात्रा छः माशे प्रातःकाल सीसक जल के साथ ।

अथवा छोटी दूधी छाया में सुखा कूट छान कर प्रातःकाल एक हथेली भर फाँके ।

अथवा जाल के दाने बराबर का घूरा मिलाकर पीसे और जल के सग एक हथेली भर खाय ।

अथवा असगव, बराबर का घूरा मिलाकर एक तोला ताका पानी के सग खाय ।

अथवा बभूर का गोंद घुना हुआ बराबर का गेरू पीसकर प्रातःकाल नौ माशे खाय ।

दवा कि स्त्री धर्म के विशेष रुचिर को गुण करे हार सिंगार की कौपल कालीर्भिष सात नग जल में पीस छान कर पिये ।

अथवा सुखतानी मिट्टी पानी में भिगोकर प्रातःकाल चस का नितरा हुआ पानी पीवे ।

काढ़ा कि रजस्वला के रजद्रव को खोवे सूखा घनियाँ एक हथेली भर कर औटावे और छानकर कई एक दिन पिये ।

अथवा कचनार की कछियाँ और हरे गुलार और कुकुरे का स्राग तथा मसूर की दात और पटसन के फूल पका कर छाछ चावल के मात के सग खाय ।

नफूफिल अर्थात् सुपारी पाक जो भग के पानी बहने को दूर करने के लिये अत्यन्त गुण दायक है गौ दुग्ध पाँच सेर, चिकनी सुपारी पाव सेर, कूटे छान कर दूध में डाल कर मन्दी आँध से औटावे कि गाढ़ा होजाय परचात, भाप सेर घूरा डाल कर चाशनी करे फिर छोटी बड़ी माई मस्येक चार तोले दो माशे, सुपारी के फूल, पाषा के फूल, मस्येक आठ तोले चार माशे, डाक का गोंद भाप पाव सफ़ेको मरीन कूट छान कर जय चाशनी सीतल होने के

अथवा चुनियां गोंद छ पाशे खूब महीन पीसे और दो तोले फिटकरी भूने और भुनते समय वही चुनियां गोंद पानी में भिजाकर उस पर छिड़के सीतल होने के पश्चात् फिर उसे पीसे और फिर थोड़े से धावा के फूल पिला कर फिर पीसे और भग में रखे अव्यक्त गुण देखने के वास्ते इस से उत्तम और कोई औषधि नहीं है।

अथवा कचनार की फली एक तोले आठ माशे अनार का छिलका पौ-चरस प्रत्येक पांच माशे बभूर की कच्ची फली सुलाई हुई चार नग, माजू एक नग महीन पीस कपड़े में छान कर काम में लावे।

सौभाग्यसौंठ अर्थात् सौंठ की माजून जिसको सुहाग सौंठ कहते हैं। भारतवर्षीय वैद्या की बनायी हुई स्त्रियों की कमर को बल देने के लिये अत्युत्तम है सौंठ आध पाव, घी तीनपाव गौ दुग्ध में औटावे- जब गाढ़ा हो जाय खरबूजे के बीजों की मींगी, निशास्ता, सिंघाड़ा प्रत्येक दो तोला असगंध, सोकद मूसली, मोघरस, नागौरी गोंद, इलायची के बीज, शतावर प्रत्येक दो तोले, तेजपाव, चदन पीसकर तम, धावा के फूल प्रत्येक नौ माशे, गोखरू, पीपल, कालीभिर्च, बालछड़, नागरमोया, कौष के बीजों की मींगी, चुनियां गोंद प्रत्येक छः माशे कूट छान कर घरे में माजून बनावे।

फसल इलाज सेलानतमस अर्थात् स्त्री धर्म के

अधिक रुधिर बहने की चिकित्सा में

प्रकट हो कि जो नियत समय पर रजद्रव न हो उसको इस्तहाज कहते हैं इस रोग में कुर्चों के नीचे सींगी लगाना आति गुण करता है।

। दवा कि रज के रुधिर को बंद करे वक्रायन की कौपल एक तोला भांग के सदृश घोट छानकर पीवे।

अथवा कपास के फूल गला कर उनकी राख एक हथेली भर जल के सग फाँके।

अथवा करी की छाल सात माशे कूट छान कर थोड़ा घरा पिलाकर पानी के सग फाँके।

चूर्ण कि रुधिर के विषय द्रव को रोके। मसूर, अरहर, उर्द प्रत्येक दो तोले, साठी चावल एक तोले सब को जला महीन पीसकर फली बनावे और एक हथेली भर खावे।

अथवा चने जले हुए, तन, खोद्य परापर पीस कर घूरा, मिलाकर एक इयेली भर फाँके ।

अथवा मालती के पुष्प, कोरी खाँड़ मत्स्यक छः माशे परस्पर मिलाकर खाय ।

अथवा सेलखरी, गेरू परापर मिलाकर फयकी मनुवे मात्रा छ माशे मातःकाल सीतक जल के साथ ।

अथवा छोटी दूधी छाया में सुखा कूट छान कर मातःकाल एक इयेली भर फाँके ।

अथवा जाल के दाने परापर का घूरा मिलाकर पीसे और जल के संग एक इयेली भर खाय ।

अथवा असगंध, परापर का घूरा मिलाकर एक तोला वाजा पानी के संग खाय ।

अथवा मरूर का गोद भुना हुआ परापर का गेरू पीसकर मातःकाल नौ माशे खाय ।

दवा कि स्त्री धर्म के विशेष कथिरी को गुण करे हार सिंगार की कोंपल कालीमिर्च साव नग जल में पीस छान कर पिये ।

अथवा मुलतानी मिट्टी पानी में भिगाकर मातःकाल उस का नितेरा हुआ पानी पीवे ।

काढ़ा कि रजस्वला के रजद्रव को खोले सूखा अनियाँ एक इयेली भर कर औठावे और छानकर कई एक दिन पिये ।

अथवा कचनार की कलियाँ और हरे गुलार और कुलफे का साग तथा मसूर की दाल और पटसन के फूल पका कर जाला चाँचल के मातः के संग खाय ।

नफूफिल अथवा सुपारी पाक मो भग के पानी बरने को दूर करने के लिये अत्यन्त गुण दायक है गो दुग्ध पाँच सेर, चिकनी सुपारी पाव सेर, कूट छान कर दूध में डाल कर मन्दी आँध से औठाव कि गाढ़ा होनाय परचाव, भाव सेर घृण डाल कर चायनी करे फिर छाटी बड़ी माई मत्स्यक बार तोलो दा पाये, सुपारी क फूल, पावा के फूल, मत्स्यक आठ तोल बार माश, डाक का गोद भाव पाव सबको महीन कूट छान कर भव चायनी सीतक रोम के

समीप हो उसमें मिलावे और शुद्ध भोजन में रखकर यथोचित एक तोले आठ माशे से लेकर दो तोले पाँच माशे तक खाय ।

टिकिया की स्त्री धर्म के विशेष रुधिर को राके । रसौत, चयूक का गोद,

राक गत्येक एक माशे, सुपारी दार्द माश कूट छान कर पानी में माश भर के प्रमाण टिकिया बनावे और नित्य दो तीन खाय ।

हसूल अर्थात् भग में रखने की औषधि कि रुधिर को राके गंधे की लीद, सुखाकर पोटली बांधकर यौने में रखे ।

अथवा पकरी की मँगनी सूखी पीसकर पोटली बनाकर गर्भाशय के मुख पर रखे यदि योद्धा कृदरु मिछावे तो अति गुण करे ।

अथवा अनार का छिलका औटाकर एक तोला पिये ।

अथवा सुना और बिना सुना जोरा जाल तंबुल के मध्य में पीसकर भग के अंदर रखे ।

फसल अरुतबास हैज अर्थात् स्त्री धर्म के रुक जाने की चिकित्सा में

जो अतु धर्म का खून शारीरिक रुधिर की न्यूनता से रुक जाय तो कोई हर्ज नहीं और जो किसी दूसरे कारण से रुक हो जाय तो अवश्य चिकित्सा करनी चाहिये । अतु काल से पहले साफ नस की कस्त खुलवाना स्त्री धर्म को जारी करती है ।

काढ़ा कि अतु धर्म जारी करवा है । तुवा, लालपनीठ, मयी, गाजर के बीज, मली के बीज, साये के बीज, अजवायन, सौफ, तितली की पत्तियाँ, तुर्की दुर्गेना धरापर गुड़ मिलाकर औटाकर पिये ।

अथवा नर्मा बाढ़ी के फूल और पत्ते आधपाव सेर भर जल में औटाव जब चतुर्थांश शेष रहे तब छ ताळे आठ माश गुड़ मिलाकर पिये ।

अथवा अखरोट का छिलका, मूली के बीज, अमलताम का, छिलका, हंसराज, बाँधविडग जो कूट कर मत्येक नौ माशे द्विगुणे गुड़ मिलाकर औटा कर पिये तो रजोधर्म जारी होवे और यह गर्भ को भी नष्ट कर देता है और बाजे इसमें कलौजी और कपास का छिलका भी मिलाते हैं ।

अथवा नीमकी छाल जो कूट करके चार माशे, गुड़ दो तोले, छेड़ पाँच जल में औटावे जब आधपाव शेष रहे तब छानकर पिये ।

काढ़ा एक कसर की पीड़ा को जो अतुक्काल में होती है गुण करे सोंठ, पायबिडग, दस माशे, गुड़ तीन तोले चार माशे औटाकर पीये ।

चूर्ण कि स्त्रीधर्म को गुण करे मूली क बीज, गाजर के बीज, मेथी, कूट धानकर एक हथेली भर अर्द्धांश अन्न के सग फक्की बनावे ।

अथवा कालेतिल, गोखरू मत्स्यक एक तोला रासको पानी में भिगादे और मात काल शीरा निकाल कर थोड़ा घूरा मिलाकर पीवे ।

अथवा मनीठ पीसकर एक हथेली भर फांके

जवारिश शोनीज्ज अर्थात् कलौंजी पाक मूत्र और रजोधर्म के द्रव को जारी करता है और गर्भाशय की पीड़ा को दूर करता है ।

फलीता अर्थात् बची गुड़ थोड़ा घी में मिलाकर आग पर रखे जब बची बनाने के योग्य हो थोड़ा सूखा बैरोजा पीस मिलाकर बची बनाय गर्भाशय के मुख तक पहुँचावे ।

अथवा स्त्री नख जलाकर उसकी धूनी कई बार ले और गदे बैरोज की धूनी भी अति गुण करती है ।

लेप कि गर्भवती के नखों की पीड़ा को गुण करता है कालीजीरी तीन तोले चार माशे, रेंड़ी का गुदा आधपाव, सोंठ एक तोला आठ माशे सब को औटाकर पीस के गुनगुना २ लेप करे ।

हमूल कि गर्भाशय के गद पानी को शुद्ध करता है बीजादोल, लौंग पराधर कूटछान कर वस्त्र में बांधकर दोनों समय गर्भाशय के मुख तक पहुँचावे तीन दिवस में शुद्ध करे ।

अथवा अममोद, पायबिडग, गदा बैरोजा सूखा मत्स्यक एक माग, सोपे के बीज सैधानोन मत्स्यक आधा माग शहद में मिलाकर और रुई में लपेट कर गर्भाशय तक पहुँचावे ।

अथवा पायबिडग, समुद्रभाग, मत्स्यक एक भाग, गदा बैरोजा सूखा, सैधानोन मत्स्यक दो माग कूट छानकर कपड़े में बांधकर भग में रखे ।

लेप कि इस पीड़ा को जो सर्दी से हो गुण करे तिल पीठ तेल में पीस कर अर्द्धाण्य नामि के नीचे लेप करे ।

अथवा गदा बैरोजा, लौंग, पायबिडग, सैधानोन, नर्काधूर मत्स्यक थोड़ा

अछौनी बहुत सा घृत डालकर अथवा दही भात भोजन करे ।

काढ़ा भारतवर्षीय वैद्यों का बनाया हुआ कि कटि की पीड़ा को खोवे, अजीर की जड़ की छाल, सोंठ, धनियां जोड़कर सोलह तोले ८ मांशे दाई पाव जल में रात को भिगोकर प्रातः काल छौटावे जब चतुर्थी शेष रहे तब छानकर पिये ।

इलुवा कि कटि की पीड़ा को गुण करता है सोंठ, रेंदी की मिंगी मल्लेक दस तोले, घी, बूरा मल्लेक तेरह तोले चार मांशे, मौ का दूध आधसेर, प्रथम रेंदी की मिंगी कूटकर घी में भूने फिर दूध में मिलाकर छौटावे जब गाढ़ा हो जाय बूरा डालकर इलुवा बनावे और प्रकृति के अनुसार खाय ।

चारदाना कि जोड़ों की बीमारी तथा सर्दी और बादी की बीमारियों का गुण करता है हाल्यो, अजवायन, कलौनी, पेयी बराबर लेकर प्रातः काल एक चुटकी भर अर्थात् तीन चगलियों स जितनी उठ फाककर जल के घूट के संग निगल जाय इस नुस्खे को शरीर का राजा कहते हैं ।

माजून शोरजान शोरजान दो तोले, ग्यारह मांशे सनाय, एक तोले साढ़ पांच मांशे सोंठ, नेत्रवाल, सकुद जोरा, पीपल मल्लेक सातमांशे, शहद सधकी बराबर लेकर माजून बनावे पात्रा नौ मांशे गरम जल के संग ।

दवा कि कटि और जोड़ की पीड़ा को जो गर्मी से हो गुण करता है ।

धानियां साढ़ तीन मांशे, कद दस मांशे, मिठाकर खाय और साढ़ दस मांशे पोस्त के दाने, साढ़ दस मांशे कद के साथ खाना भी गुण करता है ।

चारदाना कि सर्द बीमारियों में काम में लाते हैं माल कागनी, पमार के बीज, बाबची, हजियों बराबर मिठाकर रखें तीन मांशे साधत प्रातः फाक गरम पानी के संग निगल जाया करे यह औषधि श्वेत दागको भी गुण करती है कफ का नाश करता है और शरीर की रक्षक है माल कागनी लेकर पहिले दिन एक दाना निगले और प्रति दिवस एक दाना बढ़ाते जाय जब सौ दाने तक पहुच जाय फिर इसी प्रकार प्रति दिन कम करे इस न्यूनाधिक काल में पूर्वोक्त रोग दूर हो जायगा भूल अधिक बढ़ाई और जो बढ़ाने के फाक में गरमी विशेष विज्ञात हो तो अधिक न करे, किन्तु उसी दिन से एक एक कम करने का आरम्भ करे ।

अथवा खरील की लकड़ी जलाकर दो मांशे थोड़े घी के संग खावे ।

अथवा यह कि हाथ पाँव रहजाने को गुण करे और सदैव के अजीर्ण को गुण करे जिस मनुष्य को घायशूल सठने का अभ्यास हो उसको भी बहुत गुण करती है रेंडी छीलकर निगल जाय पहिले दिन एक दाना दूसरे दिन दो दाने इसी प्रकार प्रति दिन एक २ बढ़ावे जब सात दिन क्यतीत हो जाय फिर एक २ प्रति दिन कम करे ।

अथवा प्रति दिन एक मासे रासन के बीज खाय ।

अथवा पोस्त के ढोड़ यथोचित भिगोदे और इतना पिये कि नशा नहो

अथवा कलपीशोरा, कतीरा छ रत्ता, एक तोले आठ मासे सरद में मिलाकर तीन दिवस पर्यन्त खाय और दो मासे शोरा भीठे तेल में मिलाकर कमर पर मलवावे ।

अथवा घूरा और खोपरा खाना कमर की पीड़ा को गुण करता है ।

अथवा महुए के बीजों का तेल जो कोल्हू में निकलता है घी के सहज पीला निकलता है जोड़ों पर मलना पाय की पीड़ा आदि को और सर्द रोगों को दूर करता है ।

अथवा रेंडी, सेंधानोन, मैदालकड़ी, मत्स्य एक तोला, हींग छः मासे, गेंहू का आटा आधपाव सब को परस्पर पीस मिलाकर रोटी पकावे जब एक और पकजाय पीड़ा के स्थान पर बांध ।

फलुए का तेल कि क्रद के सहज पीला होता है और पहाड़ से आते हैं विरेचक के पश्चात् मले वा जोड़ों तथा सर्दी और पादी तथा वक्र की बीमारियों को गुण करता है ।

संभालू का तेल इस तेल का मलना जोड़ों की पीड़ा का गुण करता है संभालू के पत्ते कूटकर अर्क निकाले और उसकी बराबर भीठा तल मिलाकर औटावे जब अर्क जल जाय और वेबल तेल रहजाय छान कर गुनगुना गुनगुना पीड़ा पर मले और संभालू के पत्त उस पर बांध ।

वेद अजीर का तेल कि जोड़ों की पीड़ा को गुण करे अरद की अठ आठ सेर जल में औटावे कि दो सेर रहे रेंडी का तेल ढाल कर इतना औटावे कि पानी जल कर तेल शेष रह जावे पीड़ा की जगह मर्दन करें ।

अथवा मलसी का तेल, सरसों का तेल, तिल का तेल मत्स्य आध

पाव, घतूरे के पेड़ का अर्क पत्ते, फल, और जड़ सहित निकाला हो सब तेलों में डाल कर मदी आँच से औटावे जब अर्क जल कर तेल मात्र रह जाय छान कर पीड़ा पर मले और उस पर अरठ वा आख के पत्ते बांधे ।

आख का तेल कि बाय को दूर करता है और उसका सेक जोड़ों की पीड़ा को गुण करता है । आख की जड़ जोड़ूट कर के कड़वे तेल में जलावे जब जल कर नीचे बैठ जाय तेल छान कर मछे और केवल आख के पत्ते गरम कर घुटने की पीड़ा पर बांधे गुण करता है ।

तेल कि जोड़ों की पीड़ा और अर्द्धांग को जिसे वायुने पकड़ा हो गुण करे मीठा तेल पाव सेर, लहसन आधपाव, लहसन छीलकर चारनग भिजाये समेत तेल में जलावे फिर छान कर काम में लावे और वायु से बचता रहे ।

अस्पंद का तेल कि कटि और पिंढली और पसखी की पीड़ा और रांघन को गुण करे अस्पंद, मीठे तेल में जलावे और छानकर मले और किसी २ के मन में अस्पंद के तेल की यह विधि है कि अस्पंद तेरह तोला चार माशे, सोंठ तीन तोला चार माशे, रात को पानी में भिगोदे और मात काल आध सेर मीठे तेल में औटावे जब जल, अस्पंद, सोंठ जल कर तेल रहे जाय छान कर मर्दन करे और कोई २ इस तेल में कड़वाकूट मिलाकर मछवे हैं और बाघची के तेल का मर्दन कि अर्द्धांग बात में वर्णन किया गया है रांघन को गुण करता है ।

गोली कि जोड़ों की पीड़ा नुक्रस और रांघन को गुण करती है शीतरज अफीम मत्स्यक सात माशे काहू के बीज, अजवायन मत्स्यक दो तोले ग्यारह माशे कूट छानकर चिल्लशोको की मिंगी के ममाण गोछियाँ बनावे मात्र एक गोली ।

अजवायन का तेल कि जोड़ों की पीड़ा को अति गुणदायक है अजवायन पीस कर मीठे तेल में मिलाकर मछे ।

तवाकू का तेल कि जोड़ों की पीड़ा को अति गुणदायक है तवाकू आध सेर, मीठा तेल पाव सेर, को तोड़ कर आध सेर जल में रात को भिगोदे मात काल तवाकू का पानी निचोड़ कर तेल में मिलाकर मदी आँच से औटावे जब पानी जल कर तेल शेष रह जावे मछे ।

नाजबू का तेल कि घुटने की पीड़ा को गुणदायक है नाजबू की पत्तियों

का अर्क दो भाग, मीठा तेल एक भाग लेकर औटावे जब पानी जलकर तेल बाकरी रह जाय एक तोले घने का पानी कि जीरा उसमें पकाया हो मिलाकर पिपे और पीड़ित अवयव पर भी मलें ।

चोबचीनी का तेल कि जोड़ों की पीड़ा और पीठ की पीड़ा और उस पीड़ा को जो उपद्रव से होती है गुण करे । चोबचीनी अघकुर्वी और मीठा तेल मत्पेक पौने चार तोले पांच सेर जल में औटावे जब पानी जल जाय छानकर काम में लावे ।

चमगीदड़ का तेल कि जोड़ों की पीड़ा और अर्द्धांग आदि को गुण करे एक षड़ा मोटा चमगीदड़ पीठे तेल में औटावे जब चमगीदड़ जल जाय छानकर काम में लावे और इस तेल को शिंघ के छेद में उपकाना पेशाब को खोलता है ।

महदी का तेल कि जोड़ों की पीड़ा को गुण करे महदी की पाँचियां आध सेर जल में औटावे जब आधा शेष रहे आध सेर तिल के तेल में जलावे जब पानी जलकर तेल शेष रह जावे काम में लावे ।

अथवा महदी के पत्ते, सभालू के बीज, नाजबू के पत्ते, घतूरे के पत्ते, आक के पत्ते, अरक के पत्ते, मकोय के पत्ते, सब बराबर लेकर अर्क निकाल कर और पत्तों के प्रमाण से मीठा तेल लेकर औटावे और अस्पद और सोये के बीज एकर तोले, अजवायन छः माशे मिलावे जब औषधि जल कर तेल मात्र रह जाय छान कर प्रथम दो माशे अफ्रीम तेल में मिलावे फिर एक तोला कड़वा शोरजान मिलाकर काम में लावे ।

सोंठ का तेल कि जोड़ों की पीड़ा और वाय का नाश करता है अदरक का अर्क चार भाग, मीठा तेल आधा भाग, परस्पर मिला कर औटावे जब पानी जल कर तेल शेष रह जावे छानकर गुणगुनार लेप करे ।

अथवा नेबड़ के फूल पीठे तेल में टाक कर चालीस दिवस पर्यन्त धूप में रख फिर मलें ।

बफ़ारा कि कपों की पीड़ा को गुण करे । कसा औटाकर बफ़ारा ले और वायु से बचें और जिसको शीत पकड़ ले वह बफ़ारा गुण करता है सिसं के पत्ते, सभालू के पत्ते, सहजने के पत्त औटाकर बफ़ारा ले और पत्तों को अवयव पर बांध और बज्र से बचता रहे ।

अथवा समाख की पत्तियां, सोये के बीज, अस्पद औटाकर बकारा ले
अवयवों में गांठ पड़ जाने को गुण करता है ।

अथवा यह औषधि कि अवयवों की पीड़ा को गुण करता है धतूरे के
पत्ते गरम कर बांधे ।

लेप कि पीठ और घुटने की पीड़ा को गुण करे मैदालकड़ी पीसकर
गुनगुनी कर लेप करे ।

अथवा नीम की कॉपेल और उसके भीतर का छिलका छीलकर गाढ़ा
गाढ़ा अर्द्धोष्ण लेप करे ।

लेप कि नुकरस आदि को गुण करे कपास की पत्तियां मीठे तेल में
औटाकर लेप करे ।

अथवा बिनौले कूट छानकर थोड़ा जल में औटावे जब तक जायं पीस
और टिकिया बनाकर एक दिवस में दो बार अर्द्धोष्ण बांधें थोड़े ही काल में
आराम होवे ।

लेप कि जोड़ों की पीड़ा को गुण करे गौमय सिरके में पकाकर पीड़ा के
स्थान और सोप पर बांधे ।

अथवा कनेर की पत्तियां औटाकर कूट के मीठे तेल में मिलाकर लेप करे ।

अथवा बकरी की मँगनी दो भाग, जौका चून एक भाग सिरके और
बरडी के तेल में मिलाकर लेप करे ।

लेप कि गरमी के नुकरस को दूर करे । काई लगावे और इसी प्रकार
जौ का आटा और खतमी कूट छान कर लेप करना या शहद में मिलाकर
लगाना शरद नुकरस को गुण करता है ।

मर्दन कि घुटने की पीड़ा को गुण करे । सहजने के बीज पीसकर गुन-
गुना २ मर्दन करे ।

अथवा कांटेदार गृहर को फाड़कर पीड़ा स्थान पर एक दिन रात
बांधे और कई एक दिवस इसी प्रकार करे ।

लेप कि जोड़ों की पीड़ा को दूर करे । बिल्वे हुए धुले तिल वापूना
प्रत्येक एक सोला, रेंडी की मिंगी छः माशे पानी में पीसकर लगावे ॥

दवा कि सरकटे की जड़, सोंठ पीसकर मीठे तेल में मिलाकर अर्द्धोष्ण

मल और जो सरबदे की जड़ न हो तो नरसल की जड़ काफी है ॥

लेप कि नुकरस के छिये गुणदायक है अरब के पत्ते और पीसकर लेप करे ।

मर्दन कि सर्दी की पीड़ा को गुण करे कोबान पीसकर मछे और सेक करे ।

लेप कि रांघने और घुटने की पीड़ा को गुण करे साधुन मरदी में मिठाकर पानी में पीसकर लेप करे और किसी र ने इन्द्रायन मिठाना भी लिखा है ।

अथवा मरंदी की पत्तियाँ, अरब के पत्ते पीसकर गुनगुना र घुटनों पर लेप करे तो पीड़ा दूर है ।

दवा कि पीठ और कटि की पीड़ा को गुणदायक है डुलडुल की छाक की ऊपर की स्याही दूर कर के भीतर का छिछका सोया में सुखा कूट छान कर पकावे और इसकी बराबर चूरा मिठाकर मात काक एक तोला साढ़े पाँच मांशे सोंफ के शीरे के संगं लाप ।

मर्दन कि नुकरस को गुण करे धरूरी की मंगनियाँ शहद में मिठा के लगावे ।

दवा कि रांघने की गुणदायक है सोंठ पावसेर, मरंदी कूट छान कर एक तोला पारा सस में खुर मिठाकर घोड़ा सस में से लेकर मर्दन करे ।

लेप कि बाघ की पीड़ा को गुण करता है सहजने की पत्तियाँ पानी में पीस कर अर्द्धोष्ण लेप करे ।

अथवा सोंठ, कायफल, असंगंध बराबर पीसकर मर्दन करे ।

अथवा रेंडी, सघातोले, मैदालकड़ी प्रत्येक एक तोला, हींग छ मांशे गेहू का चून आधपाव परस्पर कूट छान कर रोटी बनवे रोटी को एक और तबे पर सेक कर अर्द्धोष्ण पीड़ा के स्थान पर पाँच तो बाघ और कफ की पीड़ा दूर होय ।

लेप कि सोय और पीड़ा को गुण करे अजवायन कूट छान कर शहद में मिठाकर लेप करे ।

दूसरा लेप कि पारिण अर्थात् एडी और पादसल की पीड़ा को गुण करता है मसूर सिरके में और कर अर्द्धोष्ण लेप करे ।

निगले जाय पानी के संग कि दाँतों से न लगन पावे और खिचड़ी, दाल भात और गेहूँ की रोटी भोजन करे और खटाई तथा चादी से पथ्य रखे पाँच दिवस में रोग दूर होवे यह औषधि उपदंश और अवयव की पीड़ा को जो उपदंश के कारण से हो अति गुण दायक है और जो मुख आंजाय तो कुल कसे और इस औषधि को संचन त्रिरेचक के पश्चात् अति उत्तम है।

अथवा रोस्ते की जड़ की छाल धूरी, पीसकर जगली बर के समान गोलेया बनाकर घी के संग खाय।

अथवा अजवायन की छुसी, सरसों, कालीमिर्च प्रत्येक एक तोले आठ माशे कूट छान कर, गालियाँ बनाकर खाय इस औषधि के सेवन में खाने पीने का कुछ डरानहीं।

अथवा पारा, देसी, अजवायन, खड़ासानी, अजवायन, भिलाए प्रत्येक एक तोले आठ माशे, लेकर मांगरे के रस में रगड़ कर सुखावे और बस की बराबर गुड़ मिलाकर एक तोले आठ माशे के ममाण गोलियाँ बना के नित्य एक गोली दो सप्ताह पर्यंत खाय और जो मुख आवे तो कचनार की छाल पानी में ओटाकर कुल्ला करे।

गोली शिगरफ कि उपदंश और अवयव की पीड़ा को जो उपदंश के कारण हो गुण करती है। शिगरफ, अफीम, पारा प्रत्येक दो तोले अजवायन पाँच तोले भिलाये ठोपी दूर कर के सात तोले पुराना गुड़ पाँच तोले पारा और शिगरफ परस्पर मिलाके औषधियों को कूट छानकर मिलावे और अदरक के पानी में खरल कर सात गोलियाँ बनावे और प्रति दिन एक गोली खाय।

गोली पारे की कि उपदंश को गुण करती है पण्डिया कथा चौदह माश पारा चार माशे पुराना गुड़ साढ़े तीन तोले पीस कर सात गोलियाँ बनाकर काम में लावे।

अथवा पारा, गंधक, हरिताल, सुहागा, प्रत्येक साढ़े तीन माशे, काला मिर्च सात माशे कूट छान कर नीचू के रस में गोलियाँ बनाकर माथा दोनों समय एक २ गोली खाया करे उपदंश जाता रहे और काम प्रसन्न होय।

अथवा पारा, अजवायन, म्याह, मूसली, प्रत्येक सात माशे भिलाए साढ़े तीन पाउं, गुड़ और तोले आठ माशे ग्यारह गालियाँ बनाकर प्रति दिन एक गोली दही के संग खाये।

काढ़ा कि उपदेश के वास्ते परीक्षित है और मुख नहीं छाता और न इस कं सेवन में कुछ खाने पीने का डर है और जो पथ्य करे तां मांस और मात खाये शीघ्र ही उपदेश दूर होवे फचनाल की छाल इन्द्रायन की जड़ बधूर की फली छाँटी फटेरी की जड़ और पत्ते पुराना गुड़ मत्पेक आघवाव तीन सर जल में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे छानकर शीशे में रख और सात मात्रा करे इधर कृपासे शीघ्र रोग दूर हो ।

अथवा सिरस की छाल बधूर की छाल नीप की छाल मत्पेक सवासेर सबको सात छोटे पानी में औटावे और जब एक छोटा शेष रहे शुद्ध करके झीझा में रखे और प्रति दिन आघवाव पिये और एक सप्ताह पर्यन्त चने की रोटी खाये ।

दवाई घरगद के पत्ते मूलाकर उसकी मम्म दो कौड़ी के बराबर पान में रखकर नित्य खाये जो शेष उपदेश रहा हो दूर होवे ।

अथवा हुलहुल की पत्तियां पीसकर भांग की तरह पिये और उसका फोक भाव पर पाये ।

अथवा घरगद की छाल एक तोले साढ़े पांच मासे काली मिर्च साढ़े दस मासे डाई पाव पानी में पीसकर चौदह दिन तक खाये ।

अथवा इस कि घास होती है जड़ पत्ता और टहनी सहित जलाकर उसकी छः मासे मम्म एक तोले शहद वा गुद में मिलाकर प्रतिदिन एक सप्ताह पर्यन्त खाये ।

अथवा कसौड़ी की पत्तियां एक तोले साढ़े पांच मासे काली मिर्च साढ़े तीन मासे दोनों को पीसकर पिये और अन्नाना भोजन करे ।

अथवा बड़ी २ कपी की पत्तियां आदि रोग में लेकर एक तोले आठ मासे पानी में मिलाकर समका जल बीस दिवस पर्यन्त पीये ।

धूनी कि उपदेश का दूर करे खुगसानी अमवायन टाह मासे, धिंगरफ, पांच मासे, नीलायोया दो रत्ते, अकरकरा, पांच मासे, आककीलात दस मासे, कूट छानकर घेर की लफड़ी पर आंग पर उसका धुमा लें ।

अथवा खुगसानी, अमवायन, अकरकरा की फली, अकरकरा, मुदासग मत्पेक एक मासे पीसके घेर की लफड़ी की आंग पर धूनी लें ।

हुक्का कि उपदेश का गुण करे । धिंगरफ नीलायोया मत्पेक चार

तोले दो मांशे घायबिडग पांच मांशे आफ की जड़ की छाल दस मांशे यदि मकृति बलवान हो तो बीस मांशे कूट पीसकर छ' ठिकिया बनावे और बेजक के हुक्केमें बेर की छक्की की आंच से तवाकू की तरह पीवे और घुआ उसका घावपर ले और उसका गुना कि भस्म की तरह होजाय धुक में मिला के तीन दिवस दोनों समय घावपर मले और गेहूं की रोटी घी घूरे के संग भोजन करे उचित है कि वषा सेवन से पहिले विरेचक ले ।

अथवा शिगरफ अकरकरा नीम का गोंद माजू सुहागा मत्पेक एक तोला आठ मांशे सबको जौकूट करके सात पुड़िया बनावे एक पुड़िया चिलम में रख के बेर की आंच से पिये जब उसका एक पासा जल जावे दूसरा पासा जलाकर पिये यदि इस काल में चपन होवे कुछ आश्चर्य नहीं इसी प्रकार दो तीन पुड़ियां मातःकाल मध्यान्ह सायंकाल के समय पिये और उसकी राख घाव पर छिड़के और मोहनमोग भोजन करे तीन वा सात दिवस इसी प्रकार करना काफी है जो मुख आनाय चमेली की पत्तियां ओढाकर कुछे करे ।

दवा कि चपदश को गुण करती है । कना की हरी पत्तियां नीम की हरी पत्तियां मत्पेक पदरह मांशे काशीमिर्च साढ़े सात मांशे पत्तियों का झीरा निकाल कर चौबचीनी चार मांशे पीसकर छिड़के इसी प्रकार सात दिवस पिये भोजन अलौना करे ।

अथवा फिटकरी, शिगरफ, अरुपद, अनवायन मत्पेक चार मांशे सब को पीसकर दो २ मांशे दोनों समय चिलम में रखकर बेर की आंच से तवाकू की तरह पिये और जिस घर में रोगी को हवा न लगे रहे, धिकनाई और लवण न स्थाय किंतु सूखी और बिना धृत के जुपकी रोटी भोजन करे ।

अथवा रसकपूर, शिगरफ, मत्पेक छ' मांशे नीलायोषा साढ़े तीन मांशे सफेद मोम तीन तोले चार मांशे, मौघूत छ' तोले आठ मांशे, कपड़ा चार गज नीम की पत्तियों की ठिकिया पहिछे बनाकर घी में पकाकर दूर करे फिर मोम दाखे जब वह गलनाय बर्तन को नीचे उतार कर रसकपूर डालकर उगड़े फिर शिगरफ मिलावे पश्चात् नीलायोषा डाढकर मोम अमाकर छ' पत्तियां बनाकर और अपने कलेवर को चादर से छिपाकर एक पत्ती की बेरकी आंच से धूनी लेवे और तीन दिवस पर्यंत दूध चौबल भोजन करे ।

मरहम कि चपदश को गुण करे रसकपूर, काशगरी सफेदा मत्पेक मात मांशे, छोटी इलायची के पीच साढ़े तीन मांशे घी में मिलाकर मरहम बनावे ।

अथवा कत्था दो माशे, सलखड़ी एक माशे, नीला घोया एक चणिक, जली सुपारी एक नग, धी यथोचित लेकर एकसाँ एक बार घोबे फिर औषधियों में मिलाकर परहम बनावे जो पीली कौड़ी जलाकर मिलावे तो अत्युत्तम है।

अथवा आक के पत्ते २१ नग, सरसों का तेल आधपाव, सात २ पत्ते तीन बार जलाकर मसम करे, फिर मोम मिलाकर परहम बनाकर काम में लावे बुर्की कि उपदश को गुण करे। कीसुखन चर्म जलाकर नीलापोषा, पीली कौड़ी जलाकर सब बराबर छूट छान कर घाव पर बुर्के।

अथवा सफ़ेद कत्था, पुरानी सुपारी मत्पेक चार तोले दो माशे, जगल एक तोले आठ माशे, सब को एक तोले जल में पीस कर कागज पर लगा के जलावे और उमकी राख घाव पर छिड़के।

अथवा पुराने जूते का चमड़ा, मगूर या चन जलाकर पीसकर बुर्की बनावे।
अथवा काबली इह, सुरागा, आवला सब को जला पीस कर घाव पर छिड़के।

फ़सल जजाम अर्थात् कुष्ठ की चिकित्सा में

यह रोग हाव से होता है और जब पुराना होजाता है फिर इस से आरोग्यता प्राप्त नहीं होती आदि में कसद खुलवाना और बिरेचक लेना उचित है। चाहिये कि मास बिरेचके छेवे और शोक क्रोध तथा जागने से बचे और कुष्ठ वाले के लिये अत्युत्तम भोजन बकरी का दूध है।

माजून बीस, अर्थात् बड़ नाग का पाक, भारतवर्षीय बेघों का निर्माण किया हुआ कुष्ठवाले को गुण दायक है कालीहड़, चिता, मत्पेक दो तोले ग्यारह माशे, कालीमिर्च एक तोले में दो पाँच माशे, बछनाग पौने नौ माशे छूट छान कर धी में मकरो कर द्विगुण शरब में मिलाकर माजून बनावे मात्रा साढ़े पाँच माशे से माव माशे तक वा साढ़ चार माशे द्वाउत्तमिस्क के साथ खाय कि वह बछनाग का सयागी है।

गुण भारतवर्षियों की परीक्षित है।

कुशता हरताल जालीसे दिवस खाना कुष्ठ दूर करता है।

विधि हरताल एक तोला आठ माशे, कृषा फिटकरी तीन तोले चार माशे, माघे कजे की भिंगी जीकूट करके सकोरे में रखे उस पर फिटकरी पीसकर मिलावे फिर उस पर हरताल टाले और शेष आनी कजे की पींगी और

फिटकरा पीसकर बिछावे फिर उस पर हस्ताक्षर डाले और कपराटी कर सात सेर आरनों की आंच में रख कर आगदे जब शीतल होजाय निकाळ कर आधी रत्ती पान में खाया करे पचास दिवस पश्चात् रोग दूर होजाय ।

दूसरी विधी एक तोले आठ माशे हस्ताक्षर मुर्गी के अडे की सफेदी में मिलाकर गोला बनावे और एक सकोरे में रख कर दूसरा सकोरा उस पर ढक कर कपर मिट्टी करके छाया में उसे सुखावे और चार महर आंच देवे ।

नीम का चूर्ण कि कुष्ठ को गुण करता है । पुराने नाम की जड़, छाल, फल, फूल, पत्तियां मत्त्येक आध सेर, कालीमिर्च, काबली इड़ का बकल, बहेड़े का बकल, आवला, बावली मत्त्येक आधसेर कुष्ठ छान कर फक्की बनावे मात्रा आठ माशे से सोलह माशे तक मजीठ के काय के संग चार मास पर्यन्त सेवन करे और मांस लवण तथा वादी तथा तीक्ष्ण वस्तुओं से परहेज करे ॥

गोली पारे की की कुष्ठ के लिये परीक्षित है पारा सात माशे, संक्षिपा साढ़े तीन माशे, कुदरू एक तोला नौ माशे, रेवतचीनी साढ़े दस माशे, बधूर का गोद सात माशे, पारे का कुरता करके सब औषधियों को उस में ढाल के खरक करके फिर कुश्ता ढाल कर और सात नग बहेड़े के पत्ते उसमें मिलाकर कालीमिर्च के प्रमाण गोलीयां बनावे दोनों समय एक २ गोली नित्य खाय और खटाई से बचता रहे ।

नकू कि कुष्ठ को गुण करे । पिचपापंदा, असगंध, अझडदी, काबली इड़ का बकल, सब बराबर दो २ तोले रात को पानी में भिगीकर प्रातः काल मल छान कर पान करे ।

चूर्ण कि कुष्ठ और बधिर विकार को गुण करे । हिंगोट की छाल कुष्ठ छान कर प्रति दिन प्रातः काल एक तोला जल के संग फाके और खटाई और वादी और लवण से बचता रहे दो सप्ताह में आराम हो जायगा ।

नकू चने की सुसी आध पाव सेर भर पानी में भिगी कर प्रातः काल मल छानकर पिये इसी प्रकार एक मास चन्नीस दिवस पर्यन्त सेवन करे तन्मुख दुग्ध, दधि और जो वस्तु श्वेत हो तथा खटाई से पथ्य करे मांस, गुड़, शकर जो उनमें से प्राप्त हो सके खाये यदि रोग कुछ शेष रहे और भी पिये ।

दवा कि अजाम को गुण करे । जल, कि मस्ती के समय नीम से टपके

लेकर घदन पर मले ।

अथवा सिरफोके का रस सेवन करना कुष्ठ को गुण करता है या नीम के पत्तों का रस जजाम को गुण करता है ।

नकू कि कुष्ठ को अति उत्तम है बिजैसार की लकड़ी कूट कर जल में भिगोकर पिये इसी प्रकार चालीस दिवस काम में लावे ।

अथवा महदी की पात्तिया एक तोले दो माशे रात को पानी में भिगोदे और सवेरे ही मल ज्ञान कर थोड़ा पुरा मिलाकर पिये इसी प्रकार चालीस दिवस पर्यन्त पान करे ।

दवा कि कुष्ठ के वास्ते सिरस की पात्तियां एक तोले आठ माशे, का लीमिर्च दो माशे जल में पीसकर चालीस दिवस पीवे ।

अथवा वधूर की छाछ तीन तोले आठ माशे लौकट करके जल में भिगोकर प्रातः काल मल ज्ञानकर नित्य इसी प्रकार पीवे ।

शीशम का शर्बत किलधिर विकार और कुष्ठ आदि को गुण करता है शीशम का चूरा पावभर तीनसेर दर्या के जल में अष्ट गहर भिगोकर प्रातः काल औटावे जब आधा शेष रहे तीन पाव घूरे में चाशनी करे मात्रा छ तोले ।

अथवा प्रतिदिन दोनों समय इस प्रकार कि शीशम की लकड़ी का चूर्ण दस माशे लेकर आधपाव पानी में औटावे जब आधा शेष रहे ज्ञानकर पूर्वोक्त शर्बत मिलाकर चालीस दिवस सेवन करें स्वदाई, दूध, दही से बचता रहे ।

दवा समुद्रफल के वृक्ष की छाल कूट ज्ञान कर प्रति दिन पानी के संग तीन दिवस खाय, और तीन दिवस न खाय, इसी प्रकार इक्कीस दिवस सेवन करे और इस काल में भूंग की दाढ़ और खिचड़ी सेवन करे आदि में घमन होगी और यदि रोम हट हो पहले दिन घमन न होगी और परचाढ़ कई एक दिन के घमन बंद हो जायगी ।

दवा नीम की पत्तियों का लवण कोइ, खान, दाद आदि को गुण दायक है ।

जजाम चाली को देखा है कि उन्होंने रोग की आदि में अफ्रीम और पोस्त खाने का अभ्यास किया रोग म्यून होगया ।

शर्बत दाऊदी की जड़ का और काय इस रोग के दूर करने में लाल गंधक के सहश अमृत तुल्य है और तसकरे दाऊदी वालने परीक्षित छिस्ता है ।

औषधि कि रवेत दाग और कुष्ठ को गुण करे नीम की पत्तिया और
उन की बराबर काले तिल और थोड़ा सेंधा लवण लेकर और पुराना गुद
सब औषधियों के बराबर मिला कर प्रति दिन एक तोला साढ़े पाच मास
खाय ।

फसल साफ़द अर्थात् सिर के गंज की चिकित्सा म

यह सिर का घाव है पीत और खुरद के संग हो तो उस की उत्पत्ति वात
से है बाल अवस्था में कि तरी विशेष होती है युवा अवस्था के आरम्भ तक
बल करता है ।

चिकित्सा जोरू लगाना गुण दायक है

दवा परित्तित-आंवला जलाकर पाव सेर पोस्त के ढोडे जलाकर,
आवपाव मंही, कबेला प्रत्येक छः तोले आठ माशे, नीलापोया, सुना सुहागा,
मड़भूजे के छपर का घुआ, मंही की राख प्रत्येक एक तोला आठ माशे कुट
छान कर सरसों के तेल में मिला कर मर्दन करे ।

अथवा बिसखपरे के पत्तों का तेल कि गंज को दूर करे, बिसखपरे के
पत्ते, फ़रास के पत्ते, नीम के पत्ते, चमेली के पत्ते, अरुट के पत्ते, बकामने के
पत्ते और फ़ल प्रत्येक दो तोले पीस कर दिकिया बना कर पाव सेर पीठे तेल
में जलावे फिर एक माशे नीलापोया, मंही की पत्तिया, मुर्दासंग, सुहागा
सुना, इलदी जला कर, बावची, कत्या, भावला जला हुआ, काळीमिर्च जली
हुई प्रत्येक छः माशे पीस कर राशन में मिलावे और नीम की लकड़ी से
रगड़ कर काम में लावे ।

तेल गधे की लीद का कि सिर के गंज को दूर करता है गधे की लीद
कि आधी सूखी गढ़े में रख कर थोड़े कोयले जला कर जलावे और उस के
ऊपर कांसी की ररेसी याली कि जिस के किनारे छछटे हुए हों इस प्रकार
उस गढ़े पर रखे कि उस के किनारे दो अंगुल पृथ्वी से उठे रहे कि लीद
का घुआ उस याली में समर हो उस को छेकर मले ।

अथवा राई आधी कच्ची आधी पक्की पीस कर उसे कड़वे तेल में
मिलाकर लगावे ।

अथवा मंही की पत्तिया चार तोले, बावची मुर्दासंग दो दो तोले,
नीलापोया तीन माशे, कुट छान कर कड़वे तेल में मिलाकर गंज पर मले ।

लेप कि सिर के गज को गुण करे । हलदी दस तोले, नीलापोया पांच तोले, आघ पोष मीठे तेल में मिलाकर जला पीसकर लेप करे ।

मर्दन काबली हड़ का बकला, कत्या, श्रीरा, कायफल प्रत्येक साढ़े तीन माशे, नीलापोया पौने दो माशे कूट ज्ञान कर गंज पर मले ।

दवा कि गज्ज और चन फोड़ों तथा फुनसियों को आराम करे कबेला, कत्या, गेरू, शोरा, नीलापोया प्रत्येक एक भाग मुद्दासग, काली मिर्च प्रत्येक दो भाग, मर्दो की पत्तियाँ चार भाग, सरसों का तेल गरम करके उसमें मिलाकर काम में लावे ।

लेप गज्ज को दूर करे । अरन्ध की कोंपल कूट कर थोड़ा नोन मिला कर लेप करे ।

दवा गज्ज को गुण करे । पुराने जूते का तला जलाकर तेल में मिला कर मर्दन करे ।

अथवा तम्बाकू का गुल पीस कर कढ़वे तेल में मिलाकर लगावे ।

अथवा आम के अचार का तेल जो षण् दिन का हो गज्ज पर लगावे ।

अथवा चोड़े का सुप जलाकर मीठे तेल में मिलाकर सिर पर लेप करे ।

अथवा बकायन के फलों का तेल कि गज्ज को दूर करे बकायन के फलों की मिर्गी औकूट करके कढ़वे तेल में जलाकर ज्ञान कर मर्दन करे ।

तेल फरास के पत्ते पीस कर टिकिया घना के कढ़वे तेल में जला कर ज्ञान कर गज्ज पर मले ।

लेप घनिया सिरके में पीस कर लगाना गज्ज को गुण करता है ।

अथवा चुक्रन्दर के पत्ते पीस कर लेप करना गुण करता है ।

दवा बकरी की मेंगनी लगाना गज के फलने वाले फोड़ों को गुण करता है ।

फसल वर्ष और बहक अवीज यानी सफेद दागों

की चिकित्सा में

मकट हो कि बर्स चन सफेद दागों को कहते हैं जो वास्तव में उत्पन्न होते हैं और मांस तथा त्वचा के भीतर भी प्रवेश कर जाते हैं इस में आरोग्यता प्राप्त नहीं होती ।

और बहक अवीज थोड़ी सफेदी लिए मांस त्वचा पर मकट होते हैं ।

औषधि कि श्वेत दाग और कुष्ठ को गुण करे नीम की पत्तिया और
उन की बराबर काले तिल और थोड़ा सेंधा लक्षण लेकर और पुराना गुड़
सब औषधियों के बराबर मिला कर प्रति दिन एक तोला साढ़े पाच माश
खाय ।

फसल साफ़द अर्थात् सिर के गंज की चिकित्सा में

यह सिर का घाव है पीव और सुरुष के संग हो तो उस की उत्पत्ति बात
से है घाव अवस्था में कि तरी विशेष होती है युवा अवस्था के आरम्भ तक
बल करता है ।

चिकित्सा नौक लगावना गुण दायक है

दवा परिचित-आंवला जलाकर पाव सेर पोस्ते के ढोडे जलाकर,
आधपाव मरदी, कबेला मत्पेक छः तोले आठ माशे, नीलायोया, सुना सुहागा,
महभूजे के छपर का धुआ, भट्टी की राख-मत्पेक एक तोला आठ माशे कूट
झान कर सरसों के तेल में भिछा कर मर्दन करे

अथवा विसखपरे के पत्तों का तेल कि गंज को दूर करे, विसखपरे के
पत्ते, फ़रास के पत्ते, नीम के पत्ते, चमेला के पत्ते, अरंड के पत्ते, बकायन के
पत्ते और फल मत्पेक दो तोले पीस कर दिकिया बना कर पाव सेर पोठे तेल
में जलावे फिर एक माशे नीलायोया, मरदी की पत्तिया, सुर्दासग, सुहागा
सुना, इलदी जला कर, बावची, कत्या, आंवला जला हुआ, काळीमिर्च जला
हुई, मत्पेक छः माशे पीस कर सुगन्ध में भिछावे और नीम की लकड़ी से
रगड़ कर काम में लावे ।

तेल गंध की लीद का कि सिर के गंज को दूर करता है गंध की लीद
कि आधी सूखी गढ़ में रख कर थोड़े कोयले जला कर जलावे और उस के
ऊपर कांसी की ररेसी या ली कि जिस के किनारे चूटे हुए हों इस प्रकार
उस गढ़ पर रखे कि उस के किनारे दो अंगुल पृथी से चढ़े रहें कि लीद
का धुआ उस यात्री में समर हो उस को छेकर मले ।

अथवा राई आधी कच्ची आधी पक्की पीस कर उसे कढ़वे तेल में
भिलाकर लगावे ।

अथवा मरदी की पत्तियां चार तोले, बावची सुर्दासग दो दो तोले,
नीलायोया तीन माशे, कूट झान कर कढ़वे तेल में भिलाकर गर्भ पर मले ।

लेप कि सिर के गज को गुण करे । हलदी दस तोले, नीलायोया पाच तोले, आध पाव पीठे तेल में मिलाकर जला पीसकर लेप करे ।

मर्दन काषठी हृद् का चक्कल, कत्या, क्षीरा, कायफल मत्येक साढ़े तीन माशे, नीलायोया पौने दो माशे कूट छान कर गंज पर मले ।

दवा कि गञ्ज और उन फोड़ों तथा फुनसियों को आराम करे कबेला, कत्या, गेरु, शोरा, नीलायोया मत्येक एक भाग मुर्दासग, काली मिर्च मत्येक दो भाग, मर्दों की पत्तिर्पा चार भाग, सरसों का तेल गरम करके उसे में मिलाकर काम में लावे ।

लेप गञ्ज को दूरकरे । अरन्ध की कोपेल कूट कर थोड़ा नोन मिला कर लेप करे ।

दवा गञ्ज को गुण करे । पुराने जूते का तला जलाकर तेल में मिला कर मर्दन करे ।

अथवा सम्बाहू का गुल पीस कर कड़वे तेल में मिलाकर लगावे ।

अथवा आम के अचार का तेल जो वर्ष दिन का हो गञ्ज पर लगावे ।

अथवा घोड़े का मूत्र जलाकर पीठे तेल में मिलाकर सिर पर लेप करे ।

अथवा बकायन के फलों का तेल कि गञ्ज को दूर करे बकायन के फलों की मिर्गी जौकूट करके कड़वे तेल में जलाकर छान कर मर्दन करे ।

तेल फ्रास के पत्ते पीस कर टिकिया घना के कड़वे तेल में जला कर छान कर गञ्ज पर मले ।

लेप घनिया सिरके में पीस कर लगाना गञ्ज को गुण करता है ।

अथवा जुकन्दर के पत्ते पीस कर लेप करना गुण करता है ।

दवा बकरी की मेंगनी लगाना गज के फलने वाले फोड़ों को गुण करता है

फसल वर्ष और बहक अवीज यानी सफेद दागों

की चिकित्सा में

प्रकट हो कि वर्ष उन सफेद दागों को कहते हैं जो बाह्य त्वचा में उत्पन्न होते हैं और मांस तथा त्वचा के भीतर भी प्रवेश कर जाते हैं इस में आरोग्यता मांस नहीं होती ।

और बहक अवीज योही सफेदी छिप बाह्य त्वचा पर प्रकट होते हैं इस

का यदि आदि से प्रबन्ध किया जाय तो दूर हो जाता है।

चिकित्सा कफ दोष को प्रचाने के अथवा विरेचक लेवे और उठो वस्तु अर्थात् दुग्ध आदि से सेवता रहे।

गोली जगली अर्जीर की छाल नौ तोले साठे सात माशे, चीता चार तोले आठ माशे, गंधक ज्ञान तोले साठे चार माशे, कालोहड, धनिया प्रत्येक दो तोले नौ माशे कूट छान कर गौ मूत्र के मूत्र में मिलाकर औसवे जब गाढा हो जाय—पीसकर गोलियां जगली सेर के प्रमाण बनावे फिर एक मास बीस दिवस पर्यन्त मासिदिन दोनों समय एक २ गोली खावे।

अथवा शुद्ध बावची, शिफ्टी हुई कटुमर की छाल नीम की छाल नीम की दहनी की छाल, नीम की पत्ती सब बराबर कूट छानकर कटपे की लकड़ी टुक २ कर एक भाग आठ भाग जल में औटावे जब आधा भाग रहे छानकर पूर्वोक्त औषध घममें मिलावे और गोलियां बनाकर साठे तीन माशे से सवा पात्र माशे तक खाय।

बावची के शुद्ध करने की यह विधि है कि बावची को छाल गौ के मूत्र में जो प्रसूता न हुई हो इक्कीस दिन भिगोवे फिर निकाल कर उसका छिलका दूर करके छाया में सुखावे।

गोली कि सक्के दाग को गुण करे शुद्ध बावची, काले त्रिफ बराबर लेकर शहद में मिलावे और तीन २ माशे की गोलियां बनाकर एक २ गोली मासिदिन दोनों समय खाय।

गोली अजमोद, बावची, पंवार के बीज, कमलगट्टा बराबर लेकर शहद वा गुड़ में मिलाकर गोलियां बनावे मात्रा सात माशे।

अथवा गेरू, गंधक, बावची बराबर महीन पीसकर अदरक के समेरीठे के प्रमाण गोलियां बनावे और एक गोली औकट करके रात के समय पानी में भिगोवे उसे छानकर मातः काल पीवे और उसका फोक ज्वदन पर पलकर धूप में बैठे और खट्टी तथा वादी वस्तुओं से पचता रहे इसी प्रकार सेवन करता रहे।

दवा काले घतुरे के बीज सात माशे आधे छुने आधे कच्चे चीता सात माशे, कालीमिर्च साठ तीन माशे कूट छानकर मासिदिन दो रंछी खाय और एक समय दूध यावत् औषध करे।

तेल घूम का, कि एक घूम ले उसका पेट चाक करके शुद्ध करे और दो सेर अष्टादश तोले मीठ तेल में औटावे जब तृतीयार्ध होय रहे वख उस तेल में

भिगोकर रात को दाग के ऊपर बांधे और मातःकाल थोड़ा लें इसी प्रकार पचास दिन तक करे ।

अथवा स्याह कसीस एक तोला साठे पांच पाशे, चार तोले साठे चार पाशे सेल, बावची तीन सेर, नीम की सुखी पाचिया आधसेर, स्याह कुकंदर दूध सेर, कूट छानकर गोखिरा बनाकर प्रति दिन एक गोली खाय ।

नीम का चूर्ण वर्ष को गुण करे फल फूल और पचिया नीम की बराबर पीसकर दो पाशे खाना आरम्भ करे छ माशे तक पहुँचा कर चारोंस दिन तक सेवन करे ।

अथवा मुदी एक भाग, समुद्रसोख आधा भाग, कूट, छानकर फक्की बनावे मात्रा एक माशे से नौ पाशे तक ।

अथवा बावची आधसेर, लवण तीनपाष कूट छानकर एक दियेजी मर नित्य खाय सिन्नाय चने की रोटी के और कुछ योजन न करे ।

अथवा गुलर की छाल लाळा के बीज दोनों बराबर कूट छानकर पानी से चारोंस दिवस फाँके ।

दवा अजमोद पाँच दिन चार माशे फिर एक माशे प्रतिदिन आगिक करके मास काल छीतल जल के सग फाँके यहाँ तक कि स्याह पाशे तक पहुँचावे यदि दो मास में गुण भगट नहो हो, तीसरे मास में एक माशे बायबिड़ग नित्य खाय और हादी से पथ्य करे और चने की रोटी खाना गुण दायक है बिना इसके दूसरी वस्तु न खाय ।

अथवा अजमोद दो भाग, गेरु एक भाग कूट छानकर दो माशे नित्य खाय बिना घृव अलौनी रोटी खाय ।

मर्दन कि वर्ष को गुण करे बावची, पवार, गेरु बराबर कूट छानकर अद्रक के रस में गोखिरा बनाकर दो सप्ताह तक मलकर धूप में पैठा करे ।

अथवा पलासपापड़ा पाँच तोले, कच्चा नीलाथोया तीन पाशे, सफेद स्याह एक तोला कूट छानकर नीबू के रस में खरका करके गोखिरा बनाकर लगाया करे यह गोली दाद को भी दूर करती है ।

मर्दन कलौजी सिरके में पीसकर छगाना बदन और वर्ष को गुण करता है ।

अथवा कुंदर शहद में मिलाकर लगाना भी गुण करता है ।

अथवा मालकांगनी गौमूत्र में इसकीस दिवस भिगोकर ससका सेल निकाल

कर बस पर लगावे ।

अथवा नौसादर शब्द में मिलाकर लेप करे ।

अथवा कलौजी दो तोले साढ़े साठ माशे, बावची साढ़े तीन माशे, घृत के बीज सवा पांच माशे, आक के पचे आठ नग पीस कर सफेद दाग पर लगावे ।

अथवा कुंदर मूली के बीज सिरके में पीस कर लगावे ।

अथवा कुंदर मूली के बीज अथवा बकरी का गुरदा दूक, दूक करवे पाव सेर गधक छिड़के कर उसका जल कि उस में स टपके उस को बहक व बसे पर लगावे ।

अथवा इमली के बीजों की पींगी बावची दोनों बराबर महीन पीसकर आठ दिवस लकड़ी से सफेद दागों पर लगावे ।

लेप मजीर की जड़ बावची, सुहागा, इमली ताजा जल में पीस कर बालीस दिवस लेप करे ।

मर्दन हरठाक, सज्जी मत्स्येक दस माशे कूट छान कर मूत्र में मिलाकर दागों पर लगावे ।

अथवा हल्दी, आंबाहल्दी, भावनासार गधक, आवका, काख, पंवार के बीज सब बराबर कूट छान कर शुद्ध जल में मिलाकर लगावे ।

लेप मूली के बीज दस भाग, कुंदर, कूट मत्स्येक दो भाग, पुराने सिरके में मिलाकर लेप करे ।

मर्दन मूली के बीज, चीता, आवला बराबर सिरके में मिलाकर लगावे ।

अथवा यह तुसखा पुस्तक गज बादाबर्द से लिखा है श्वेत दाग को गुण करता है । सज्जी, घृत की कण्ठ, बराबर पीसकर दाग पर मछे जब सूख जाय कठोर वस्त्र से छीलकर और दूसरी बार लगावे । इसी प्रकार कई बार लगावे उस जगह की खाल भस्म होकर एक दाग भगद होगा फिर उस पर पीठा सेल मछे कि अपने पूर्व रूप पर आजाय ।

मर्दन बावची तीन दिन दही में भिगो कर फिर सुखा कर आतिशी शीशी में सेल निकाळे फिर थोड़ा नौसादर पीस कर उसमें मिलावे और दाग को सुजाकर उस पर मछे ।

अथवा कैचुप घर्तन में बद कर के एक मास तक रखे इस अवसर में राख होजायगी उसको लेकर घर्त पर लगावे ।

अथवा काछा बिच्छू मार कर सुखाकर सिरके में मिलाकर लगावे ।

अथवा अधाहूली की जड़ पानी में मिलाकर लगावे ।

अथवा अधाहूली की जड़ पानी में पीस कर लेप करे ओष्ठ की सफेदी दूर होजायगी ।

अथवा तषाकू के बीजों का तेल कोल्हू में निकलवाकर लगावे थोड़े ही काळ में दाग दूर होजायगा ।

अथवा केले के पीछे पत्ते कड़वे तेल में जलाकर मुद्दासंग में मिलाकर लगावे ।

अथवा सिरस के बीजों का तेल लगावे ।

अथवा बैंगन को पानी में ओढ़ावे जब गल जावे उसका शुद्ध जल थोड़े तेल में मिला कर फिर ओढ़ावे जब पानी जलजाय तब फिर उस तेल को लगावे ।

छुहारे का तेल कि घर्त को गुण करे । एक नग छुहारा सरसों के तेल में जलाकर रगड़ कर रखे रात को दाग पर मलकर कोयलों की आंच पर सेके कि गरम होजाय इसी प्रकार कई दिन तक करे ।

बाजी पुस्तकों में लिखा है कि छुहारे की गुठली शुद्ध कर तेल में जलाकर थोड़ा सिंगरफ मिलाकर लगावे यह रौमन ज्ञानन और नासूर को भी गुण करता है ।

फसल इलाज मर्ज अर्कगदनी अर्थात् नारवा

रोग की चिकित्सा में

यह एक दाना है जब फूट जाता है तब उसके अंदर में एक तागा निकलता है ।

चिकित्सा- मवाद से शरीर को शुद्ध करे और तारुवे के आसपास नोक लगावे और गरम पानी से जिसमें तेल ढाल के ओढ़ाया हो पोया करे कि तागा सहज ही से निकल जावे और ध्यान रहे कि टूट न जाय ।

दवा कि नारवे को छुण करे मयम नारवे और सोप को अर्द्धोष्ण तेल छुपड़ के आख के पत्तों से सेक करे और चन्दी पत्तों को घान पर बांधे ।

अथवा श्वेत विसखपर की जड़ उसके पत्तों के रस में पीसकर नाक पर बांधे और कोई २ इस में सोंठ भी डालते हैं।

लेप कि नाक के गुणदायक है जमालगोटा पीसकर लेप करें।

अथवा कलौजी दही में पीसकर लेप करें।

अथवा सुखा के लुआ नारंग वाले को खिलाना नारंग को सुखाता है।

अथवा दस माशे सुहागा गुलाब के पुष्प के तेल में मिलाकर तीन दिन तक खाये और इस अवसर में चिकना भोजन करें।

लेप कि नाक को गुण करे प्याज एक नंग, लहसुन एक नंग, थोड़ा साधुन, भिलाया एक नंग, दस माशे सरसों कूट छानकर टिकिया बनाकर नाक पर एक अहर्निश बांधें तीन दिवस में सफाया निकल जावेगा।

दवा कि नाक को गुण करे राख एक तोला आठ माशे, साधुन तीन तोला पांच माशे, अफीम दस माशे कूट पीसकर तेरह तोले चार भागों में बिल के तेल में पकाकर मरहम के सदृश कर पान पर लगाके बांधें और दोनों समय मरहम बदल दिया करें तीन दिवस में आराम हो जायगा।

लेप कि नाक को गुण करे। योंठ का आटा छः तोले आठ माशे थोड़ी हींग मिलाकर पीस कर नाक पर बांधें।

अथवा चौराई की जड़ पीसकर बांधें।

गोली जगली कपोत के पुरीप तीन तोले चार माशे, गुड़ बराबर का मिला कर कूट पीसकर जगली बैर के प्रमाण गोलीया बनाकर एक गोली नित्य खाय।

दवा कि नाक को गुण करे घोड़े का पर, दो चावल गुड़ में मिलाकर खाय।

अथवा सात दाने बक्रायन नित्य निगल जाय करे।

अथवा एलुआ दस माशे पहिले दिन, दूसरे दिन एक तोले आठ माशे, तीसरे दिन साढ़े चार माशे खाये और तसपर भी लगावे।

अथवा काषकी इड़ का चक्कल, बड़ेइ का चक्कल, ओषला, सोंठ, कवला बराबर नित्य सात माशे, एक ताळा नौ माशे शहद में मिलाकर खाये और दूध, घी अल्पम्ब खाना गुण करता है।

फसल जमरह की चिकित्सा में

उसको सुखं बाद या कहते हैं और वह विशेष कर बालकों के उत्पन्न होता है। निदान उसका रुधिर विकार वह एक सोथ है यदि जलवा चमकता दोड़ता फैलता पीली रगत का हो उसको जमरह खासिस कहते हैं और वह कबल पित्त से होता है और जो पित्त में रुधिर भी मिला हो तो उसमें जलन विशेष नहीं होती और खूनी लाल रंगत का होता है।

चिकित्सा दूध पिलाने वाली को रुधिर शोधक औषधियां पिलावे।

गोली कि बच्चों की सुखं बाद को गुण करे, जम्ही, नीलकण्ठ, लाल चन्दन मस्तक तीन मासे, बकापन की पत्तियां, नीमकी पत्तियां पांच नग, बनियां तीन मासे, काही मिर्च, मुलतानी मिट्टी मस्तक एक मासे मही की पत्तियां पांच मासे और बनियां पछे जल में भिगोकर प्रातः काल सब औषधियां पीसकर घन के प्रमाण गोलियां बनाकर खाय और भूग की दाढ़ यात अछौने भोजन करे और खटाई और बाढ़ी वस्तुओं से बचता रहे।

अथवा रसौत, काहीमिर्च, अफीम, नीमकी पत्तियां, चाकस की मिंगी, पेठे के बीज बराबर कूट छानकर बाजरे के प्रमाण गोलियां बनाकर एक गोली उसकी मां के दूध के संग देवे।

अथवा बकन कि एक बूटी होती है तीन बोलें चार मासे लेकर जल में पीसकर पाव सेर आटे में मिलाकर रोटी पकाव घी से जुड़कर दूध पिलाने वाली को खिलावे अवश्य गुण करे।

अथवा सिरफाका औटाकर बच्चे का पिलावे।

अथवा रसौत घने के प्रमाण बालक को खिलावे।

काढ़ा कि बच्चों के रुधिर विकार को और सुखं बाद को गुण करता है। लालचन्दन मही की पत्तियां मस्तक चौदह मासे, फसम के फूल सात मासे जोकृत करक सात मात्रा करे और एक मात्रा आघपाव जल में भिगोकर प्रातः काल औटाकर पिये और उसका फोक रात को औटाकर पिये और उसका फोक घदन पर मलकर गरम मल से नहा डाले इसी प्रकार सात दिवस पर्यन्त करे और गेहू की अछौनी राटी घी के संग खाय।

फसल कोवा अर्थात् दाद की चिकित्सा में

यह रोग घात से होता है इसमें खुजली और जलन अधिक होती है और

वाद्य त्वचा पर फैलता जाता है और कभी रुधिर विकार से भी उत्पन्न होता है आदि में उसकी चिकित्सा जब तक मांस में प्रवेश नहीं करता, सहज है परन्तु जब मांस में प्रवेश करना है तो चिकित्सा कठिन है और जब तक जोर का पड़ने न लगाये जावे दूर नहीं हो सकता ।

गोली कि दाद को गुण करे, ताल, गधक, मुहागा, अजवायन खुरासानी कूट दानकर पानी में गोलियां बनाकर दाद को खुजाकर लगावे ।

लेप मुर्दासंग, गधक, नौसादर, मुहागा, माजू, फालीमिर्च, सफ़ेद कत्या, अफ्रीप, चीनियां गोद कूट दानकर गोलियां बनावे और एक गोली नीबू के रस में घिसकर लेप करे ।

अथवा माजू एक भाग, चूना डढ़ भाग, याजू महीन चूने में रगड़कर थोड़े जलमें मिलाव जब नीबू वैठनाय पानी लेकर दाद को खुजाकर मले ।

मर्दन कि दाद को दूर करे दाद को खुजाकर घों से छुपड़कर चूना लगावे ।

दवा आख के फूल, पंवारे के बीज, कूट दानकर खट्टे दही में मिलाकर मर्दन करे और खट्टा दही न मिछे तो बासी नक ही होवे ।

मर्दन हमली के बीज नीबू के रस में घिसकर लगावे ।

अथवा सूखा सिंघाड़ा नीबू के रसमें घिसकर लगावे ।

अथवा हारसिंगार की पत्तियां पीसकर लगावे ।

अथवा इच्छदी जकाकर चूने और पान में मिलाकर पानी में रगड़कर दाद को खुजाकर लगावे ।

अथवा नीबू का रस दिनमें दो बार दाद को खुजाकर लगावे ।

अथवा पालक, जुही की जड़ नीबू के रसमें रगड़कर मले और इन के पत्ते रगड़ना भी गुण करता है ।

अथवा कलौजी सिरके में रगड़कर मले ।

अथवा कत्या, पत्तासपापड़ा लगावे ।

अथवा कसौदी की जड़ नीबू के रसमें पीसकर लगावे ।

दवा कि दाद को गुण करे । गैहू का चोषा अच्छी पल्ले और चोषा निकालने की पह विधि है कि लोहे का टुकड़ा आग में सफ़ाकर गैहू के ऊपर रखकर दवावे उसमें से फाले रगड़ा पानी निकले उसे गरम र लेकर दाद पर मर्दन करे ।

अथवा यह कि दाद के वास्ते परीक्षित है आंवला, कालचंदन, राल, चीनिया गोंद, सुहागा, कल्या बराबर पानीमें पीसकर दाद को खुजाकर लगावे ।
अथवा यह कि दाद और खुजली तर तया सूखी को गुण करे । पवार के बीज पानी में भिगोद जब सड़ जाय तब पीसकर मल फिर गरम जल से स्नान करे ।

लेप कि दाद को गुण करे । रेह कपड़े में छान जल में पीसकर लगावे ।
अथवा अमलतास की पत्तियां दाद पर मले ।

अथवा उसकी कच्ची फलों की भिंगी निकालकर जल में पीसकर लगावे ।

अथवा मूँठी के बीज नीबू के रस में खरख करके गोलिएं बनाकर लगाया करे ।

अथवा मूँठी के बीज, सीताफल की पत्तियों के रस में पीसकर गोलिएं बनाकर लगवि ।

लेप कुचला सिरके में पीसकर लेप करे ।

मर्दन कि दाद और खुजली को गुण करे । सजी एक तोला आठ माशे कुट छान कर तीन तोला चार माशे गाय का घी सौ बार घोकर उस में मिलाकर मर्दन करे ।

दवा अजीर का दूध मले ।

अथवा चन्दन, सुहागा, अफ्रीम लीजों औषधि बराबर, लेकर नीबू के रस में पीस कर दाद को किसी खरखरी वस्तु से खुजा कर मले ।

अथवा मैमिल जल पानी में पीस कर लगावे ।

अथवा सरेस मले ।

अथवा पारा सिरके में मिलाकर लेप करे लिखा है कि जब तक दाद अच्छा नहीं होता सरेस नहीं छूटता ।

अथवा मरदी सिरके में पीस कर लगावे ।

अथवा चीनाबोल सिरके में पीसकर मर्दन करे ।

लेप कि दाद को गुण करता है नीम की पत्तियां दही में पीस कर लेप करे ।

मर्दन पवार के बीज एक माशे, सजी दो माग, बराबर चार माग

कमा के, पानी में पीस कर आरमे, कड़ सा दाद का खुजा कर उस पर इतनी
देर लगावे कि सूख कर दो तीन दिन में दूर होवे ।

अथवा सिंदूर, गंधक, हल्दी, कालीमिर्च, सुहागा बराबर लेकर घी में
मिला कर प्रतिदिन चार वा पाँच बार मर्दन करे ।

अथवा पवार के बीज, आवला, कट्या, देही के पानी में पीसकर दाद
को खुजला कर मले ।

अथवा पारा, आवलासार, गंधक, नीलायोया, सुहागा, नीचू के रस
में पीस कर दाद का खुजा कर लगावे ।

फसल इलाज जर्ब अर्थात् तर खुजली और दकह

अर्थात् सूखी खुजली की चिकित्सा में

जो कि यह रोग वास्तव में उत्पन्न होता है इसलिये त्वचा के रोगों
में गिना जाता है और तर खुजली का मादा मायःखारी कफ है और सूखी
में वात की विशेषता होती है ।

चिकित्सा इफ्तयदाय, कस्ट खाँके और स्ना भोग तथा बेगन, मिर्च,
तेल आदि गर्म और सख्त चीजों से पथ्य रख और प्रतिदिन पित्तपापड़
का अवलह लाय ।

दवा कावली हड़का चक्कल, घरेड़े का चक्कल, आवला, कालीहड़, सिर-
फोके की पत्तियाँ, अफ्रीम मत्पेक सात माशे, पित्तपापड़े के पत्त दो तोल ग्यारह
माशे, कुछ छानकर गाय के घी में मकरो कर त्रिगुण दूरा मिलावे मात्रा दो तोल ।

अथवा नीम की कोपल दो तोल पाँजी में पीसकर पंद्रह दिन तक
पिये और इसी रीति से सिरफा का पीना भी शुण करता है ।

अथवा कड़वा चिरायता, पित्तपापड़ा, कालीहड़ मत्पेक एक तोला रात
को पानी में भिगोकर भात काक पीस छानकर पिये ।

अथवा गंधक, आवलासार हल्दी, चावची, मत्पेक दस माशे पित्तपापड़ा
एक तोल आठ माशे सबका तीन भाग करके उसमें से एक भाग रात को जल
में भिगोदे भात काक छानकर पिये । और उसके फूंक को कड़व तेल में मिला
कर शरीर पर मर्दन करे और गरम जल से स्नान करे ।

अथवा इमली को भिगोकर मलना और पान करना सूखी और तर
खुजली का आराम करता है ।

अथवा कालीहड़ मौकुट, करक पांच ताले आठ माशे, अमरवेल एक तोला साढ़े पांच माशे आध सेर गरम पानी में भिगोदे मातः काल छानकर दो तोला नौ माशे पूरा मिलाकर दो बार पीवे और मुजिज में लिखा है कि प्रति दिन आधसेर दूध और आधा शिकजशीन मिलाकर पीना गुणदायक है ।

और यह औषधि शलुज रईम क मत से भी परीक्षित है परन्तु इसनी दवा गवारों के योग्य हैं और लोगों के लिये इसनी दवा अति भूख लगाने वाली और ज़दर को निर्बल करने वाली है ।

गधक का तेल कि दाद तथा तर और सूखी खुजली को दूर करता है । गधक आक के दूध में दो दिवस पर्यन्त खरख करके टिकिया बना कर छाया में सुखाव फिर माजून में ढाल कर जल मर के चार महार मदी आध से औटाव जितना तल पानी पर आवे उसको काम में लावे और कोई २ गधक को पीली रगत के आक के दूध में औटा कर दो दिन खरख करवे हैं ।

दवा नीलायोधा, सूखा तथाकू प्रत्येक साढ़े तीन माशे कबेला सात माशे सकद चीनी चढ़े दो माशे कड़वे तेल में मिलाकर तीन दिन लगावे ।

बीजा बोल की टिकिया कि तर खुजली को गुण करती है तथा कफ और पित्त को निकालती है । काबली हड़ का बकल, बरेड़े का बकल, आबछा, काली बिढग छिलो हुई प्रत्येक एक मांग, सूखी निसोत दो मांग, कूड छान कर पानी में मिला कर गोछिया बनाव मात्रा साढ़े तीन माशे और जो अधिक दस्त चाह तो दो तोले ग्यारह माशे खाव ।

तेल कि तर खुजली को गुणदायक है तीन तोले पैनसिख महीन पीस कर एक सेर गौ के घी में मिलाकर औटावे जब धुमा न रहे एक तगर में पानी भर के औषधि को घृत सहित उस में ढाल दो वर्ष पीतल हो जाय जब प ऊपर से तेल लेकर उस पर मर्दन कर ।

दवा कि खुजली को गुण कर पाच सेर कड़वे तेल को स्वय औटाव और आक की पत्तियां इक्कीस नग लकर एक २ कर उस में डाले जब सप्त पत्त जल कर राख हो आधे सत्तार कर थोड़ा पैनसिख उस में ढाल कर मिलावे और शीशी में रख कर खुजली पर मक्के दो तीन दिन में दूर हो जायगी ।

अथवा कठक का भूसका जो पुगना और कीड़ा का खाया न हो कोयिलों की आध में जलाकर महीन पीसे और कड़वे तेल में मिला कर मले और तीन चार घड़ी पश्चात् ठंडे जल से पांच और शरद क्रतु में गरम जल दोष ।

कक्षा के, पानी में पीस कर आरजे कड़ स दाद का खुजा कर उस पर इतनी दूर लगावे कि सुख कर दो तीन दिन में दूर होवे।

अथवा सिंदूर, गधक, हल्दी, कालीमिर्च, सुहागा बराबर लेकर घी में मिला कर प्रतिदिन चार वा पांच बार मर्दन करे।

अथवा पंवार के बीज, आंवला, कट्या, दही के पानी में पीसकर दाद को खुजला कर मले।

अथवा पारा, आंवलासार गधक, नीलाथोथा, सुहागा, नीबू के रस में पीस कर दाद का खुजा कर लगावे।

फ्रसल इलाज जर्ब अर्थात् तर खुजली और हकड़

अर्थात् सूखी खुजली की चिकित्सा में

जो कि यह रोग बाह्य त्वचा पर उत्पन्न होता है इसलिये त्वचा के रोगों में गिना जाता है और तर खुजली का मादा मायःस्वारी कफ है और सूखी में वात की विशेषता होती है।

चिकित्सा इष्टअदाम फ्रसद खोले और स्ना भोग तथा बेगन, मिर्च, तेल आदि गर्म और सख्तानो वस्तुओं से पथ्य रख और प्रतिदिन पित्तपापड़ का अवलह खाये।

दवा काषठी हड्डका चक्कल, बरेड़े का चक्कल, आंवला, कालीहड्ड, सिरफा के पत्तियां, अक्राम मत्पेक सात माशे, पित्तपापड़े के पत्त दो तोल ग्यारह माशे, कूद छानकर गाय के घों में मकरो कर त्रिगुण पूरा मिलावे मात्रा दो तोल।

अथवा नीम की कोपल दो तोल पानी में पीसकर पंद्रह दिन तक पिये और इसी रीति से सिरफा का पीना भी गुण करता है।

अथवा पड़वा विरायता, पित्तपापड़ा, कालीहड्ड मत्पेक एक तोल रात को पानी में भिगोकर रात काळ पीस छामकर पिये।

अथवा गधक, आंवलासार हल्दी, चावत्रो मत्पेक दस माशे पित्तपापड़ा एक तोल आठ माशे सबको तीन भाग करके उसमें से एक भाग रात को जल में भिगादे आतःकाल छानकर पिये। और चमके फोक को कड़व तेल में मिला कर शरीर पर मर्दन करे और गरम जलसे स्नान करे।

अथवा हमली को भिगोकर मलना और पान करना सूखी और तर खुजली को आराम करता है।

अथवा कालोहक बीकुट करके पांच तालि आठमाश, अमरवेल एक तोला साढ़े पांच माशे आध सेर गरम पानी में भिगो दे। मातः काल छानकर दो तोला नौ माशे घूरा मिलाकर दो बार पीवे और सुजिवा में लिखा है कि पचि दिन आधसेर दूध और आधा शिकनबीज मिलाकर पीना गुणदायक है।

और यह औषधि शेखुन रूम क मत से भी परीक्षित है, परन्तु इसकी दवा गवारों के योग्य हैं और लोगों के लिये इतनी दवा अति भूख लगाने वाली और इतर का निषेध करने वाली है।

गधक का तेल किंदाद तथा तर और सूखी खुमली को दूर करता है। गधक आक क दूध में दो दिवस पर्यन्त खरल करके टिकिया बना कर छाया में सुखावे फिर भाजन में डाल कर जल भर के चार महर मदी आध से औटाव भितना तल पानी पर आवे उसको काम में लावे और कोई २ गधक को पीली रगत के आक के दूध में औटा कर दो दिन खरल करवे है।

दवा नीकापोया, सूखा तवाकू मत्यक साढ़े तीन माशे कबला सात माशे सफ़द बीनी चौदह माशे कड़व तेल में मिलाकर तीन दिन लगावे।

बीजा बोल की टिकिया कि तर खुमली को गुण करती है तथा कफ और पित्त का निकालती है। कावली हड़ का बक्कल, बड़े का बक्कल, आबला, काली भिदग छिछी हुई मत्यक एक भाग, सूखी निसोव दो भाग कूट छान कर पानी में मिला कर गोछिया बनावे यात्रा साढ़े तीन माशे और जो अधिक दस्त चाहे तो दो तोले ग्यारह माशे खाये।

तेल कि तर खुमली को गुणदायक है तीन तोले मैनेसिक महीन पीस कर एक सेर गौ के घी में मिलाकर औटावे जब घुमा न रहे एक तगार में पानी भर के औषधि को घृत सहित उस में डाल दो जब शीतल हो जाय जल के ऊपर से तेल लेकर उस पर मर्दन करे।

दवा कि खुमली को गुण करे। पोषा सेर पड़वे तेल को खूब औटावे और आक की पचिया इक्कीस नग लेकर एक २ कर उस में डाल जब सब पचे जल कर गाख हो जावे तब आध सेर पोषा मैनेसिक उस में डाल कर भिखावे और शीशी में रख कर खुमली पर मछे दो तीन दिन में दूर हो जायगी।

अथवा फठक का मूमला जो पुराना और कीड़ों का खाया न हो कोयलों की आँच में जलाकर महीन पीसे और कड़वे तेल में मिला कर मले और तीन बार घड़ी पर खात तब जल से पावे और शरद कृतु में गरम नक होवे।

अथवा अफरा, कालीमिर्च, नीलायोषा मत्येक तीन माश, घट्टक की घारुद एक तोला आठ माश, जः तोल आठ माश घी में मिलाकर मले और एक महर पश्चात् गरम जल और बेसन से स्नान करे ।

अथवा आक का दूध जमा कर छाया में सुखावे फिर जला कर कड़वे तेल में मिलाकर घदन पर मले और चार घड़ी पश्चात् स्नान करे ।

अथवा सहजने की जड़ कड़वे तेल में जलाकर छान कर घदन पर मले ।

पीली हरताल का तेल कि खुजली और दाद को गुण करे । पीली हरताल एक भाग बीठा तेरु दो भाग मयम तेल को औटावे जब जाल होजाय हरताल पीस कर थोड़ी र उस में डाल कर लकड़ी क चमचे से उसे चलाता रहे और आँव मदी कर जब तेल की रंगत मयूर के सहश होजाय और तेल में अग्नि लग जाय उस समय देगची को बंद करदे और तेल की ज्वाला बुझ जाय इसी प्रकार देगची को पाँच बार खाले और बंद करे फिर उठा कर शीशों में रखे और शरीर पर मल कर घूप में बैठ और गरम पानी से नहाय ।

अथवा पवार के बीज सेर भर, गधक एक तोला आठ माश, एक सेर गाय का दूध, पाव सेर घी मिला कर औटावे जब दूध जल कर घी रह जावे छान कर मले ।

स्याह दवा चिभिटी, आवला, कालीमिर्च, कालीहड्ड मत्येक एक तोला नीलायोषा एक भाग कड़वे तेल में मयम चिभिटी जलावे फिर हड्ड आवला नीलायोषा प्रत्येक २ जला कर कालीमिर्च कूट छान कर उस में मिला कर घदन पर मले ।

अथवा कनेर के पत्ते बीस नग पाव भर कड़वे तेल में जला कर तेल घदन पर मले ।

पवार का तेल कि खुजली को दूर करता है पवार के बीज एक सेर गधक एक तोला आठ माश, गौ का दूध दो सेर, घी पाव सेर में औटावे जब दूध जलकर घी रहजाय उसे मले ।

अथवा पालक के बीज पोस्त के दाने बराबर पानी में पीसकर घदन पर मले फिर गरम पानी से नहाय दो तीन दिन में आराम होजायगा ।

अथवा, बदक को धारुद कड़वे तेल में मिलाकर शरीर स मलकर धूप में बैठ फिर न्हाय ।

अथवा बर्गद के पत्ते और सूखी धूसर की लकड़ी जो पृथ्वी पर पड़ी हो और पास्त के टाड़े बराबर लेकर जलावे और उसकी भस्म कड़वे तेल में मिलाकर मले और थोड़ी देर धूप में बैठकर गरम जल से न्हाय ।

अथवा कलमी शोरा कड़वे तेल में मिलाकर मर्दन कर ।

अथवा मरदी गुलाब के फूलों का सिरके में मिलाकर मर्दन करे ।

अथवा साधन जल में पीसकर लगावे परचाय न्हाय ।

अथवा सुहागा, चमली का तेल, गुलाब और नींबू के रस में मिलाकर मले और कोई २ थोड़ा कपूर डालते हैं ।

अथवा गधक सात माश, पारा, नीलाघोषा मुना मत्स्येक पीने दो माश गौ के घी में जो इक्कीस बार घोया हो मिलाकर मले और दो घड़ी परचाय शीतल जल से न्हाय ।

अथवा अफीम तिक्तके तेल में मिलाकर मले ।

अथवा गिंदर, भावलासार, गधक, मुर्दासग, नीलाघोषा मत्स्येक एक तोला आठ माश सबको महीने पीसकर चार तोले गौ के घी में मिलाकर मर्दन करे और लिखा है कि नित्य अर्द्धाण्ण जल से स्नान करना सूखी और तर खुजली को उपश करती है ।

मर्दन नीलाघोषा, भावलासार, गधक, कपूर मत्स्येक एक तोला आठ माश गौ का घी पुला हुआ तीन घाले औषधि छुटछानकर घी में मिलाकर प्रतिदिन मर्दन कर धूप में बैठकर स्नान करे ।

फसल जनाज अर्थात् कर्तु दुर्गंधि की चिकित्सा में

चिकित्सा इसकी यथाचित शरीर को पीला आदि से शुद्ध करना है ।

दवा कि, धमकगंधि को दूर करे, चूना मल में पीसकर लगावे ।

अथवा जामन की छाल और पक्ष मल में खोटाकर बगल को घोषे ।

अथवा आदु अर्थात् शफाल के पत्ते पीसकर बगल से मल फिर गरम जल से धोवे ।

अथवा मुर्दासग पीसकर मले तो धमकगंध दूर हो ।

अथवा अफरा, कालीमिर्च, नीलायोषा, प्रत्येक तीन माशे, घड़ू की चारुद एक तोला आठ माशे, छ, तोल आठ माशे घी में मिलाकर मले और एक महर पंद्रहात गरम जल और बेसन से स्नान करें।

अथवा आक का दूध जमा कर छाया में सुखावे फिर जला कर कड़वे तेल में मिलाकर घदन पर मले और चार घड़ी पंद्रहात स्नान करें।

अथवा सहजने की जड़ कड़वे तेल में जलाकर छान कर घदन पर मले।

पोली हरताल का तेल कि खुजली और दाद को गुण करे।
पोली हरताल एक भाग पीठा तेक दो भाग प्रथम तेल को औटाव जब छाछ होजाय हरताल पीस कर थोड़ी र उस में डाल कर लकड़ी के चमचे से उसे चलाता रहे और आंच मदी कर जब तेल की रगत मयूर के सदृश होजाय और तेल में आग्ने लग जाय उस समय देगची को बंद करद और तेल की ज्वाला बुझ जाय इसी प्रकार दसवी को पांच बार खाल और बंद करे फिर ठंडा कर थोड़ी में रखे और शरीर पर मल कर धूप में बैठे और गरम पानी से नहाय।

अथवा पवार के बीज सर भर, गंधक एक तोला आठ माशे, एक सर गाय का दूध, पांच सर घी मिला कर औटावे जब दूध जल कर घी रह जावे छान कर मले।

स्याह दवा चिमटी, आवका, कालीमिर्च, काळीहड़, प्रत्येक एक तोला नीलायोषा एक भाग कड़वे तेल में प्रथम चिमटी जलावे फिर हड़, आवका नीलायोषा प्रत्येक २ जला कर, काळीमिर्च, कूट छान कर उस में मिला कर घदन पर मले।

अथवा कनेर के पचे बीस नग पाव भर कड़वे तेल में जला कर तेल घदन पर मले।

पवार का तेल कि खुजली को दूर करता है पवार के बीज एक सर गंधक एक तोला आठ माशे, गौ का दूध दो सर, घी पाव सर में औटावे जब दूध जल कर घी रहजाय उसे मले।

अथवा पोलक के बीज पास्त के दाने घराघर पानी में पीसकर घदन पर मले फिर गरम पानी से नहाय दो तीन दिन में आराम होजायगा।

अथवा, घड़ू की बाखूद कड़वे तेल में मिलाकर शरीर स मलकर धूप में बैठे फिर न्हाय ।

अथवा घर्गद के पत्ते और सूखी यूहर की लकड़ी जो पृथ्वी पर पड़ी हो और पास्त के ढोड़े बराबर लेकर, जलावे और समकी भस्म कड़वे तेल में मिलाकर मले और थोड़ी देर धूप में बैठकर गरम जल से न्हाय ।

अथवा कलपी शीरा कड़वे तेल में मिलाकर मर्दन करे ।

अथवा पहेदी गुलाब के फूलों का तेल सिरके में मिलाकर मर्दन करे ।

अथवा साधन जल में पीसकर लगावे परचाव न्हाय ।

अथवा सुहागा, चपली का तेल, गुलाब और नीबू के रस में मिलाकर मले और कोई २ थोड़ा कपूर डालते हैं ।

अथवा गधक सात माशे, पारा, नीलाथोया सुना मत्स्येक पीने दो माशे गौ के घी में जो इक्कीस बार घोया हो मिलाकर मले और दो घड़ी परचाव शीतल जल से न्हाय ।

अथवा अफीम तिलके तेल में मिलाकर मले ।

अथवा गिंदर, आवलासार गधक, मुदासग, नीलाथोया मत्स्येक एक तोला आठ माशे मधको महीन पीसकर चार ताके गौ के घी में मिलाकर मर्दन करे और लिखा है कि नित्य अर्द्धोष्ण जल से स्नान करना सूखी और तर खुजली को गुण करता है ।

मर्दन नीलाथोया, आवलासार, गधक, कपूर मत्स्येक एक तोला आठ माशे गौ के घी घुला हुआ तीन ताके औषधि कूटछानकर घी में मिलाकर प्रतिदिन मर्दन कर धूप में बैठकर स्नान करे ।

क्रमल जनाज अर्थात् कंद दुर्गाधि की चिकित्सा में चिकित्सा इसकी यथाचित शरीर का मेल आदि से शुद्ध करना है ।

दवा कि पक्कगधि का दूर करे । घृना जल में पीसकर लगावे ।

अथवा जामन की छाल और पत्ते जल में खोटाकर मगल को घावे ।

अथवा आदू अर्थात् शकवाल के पत्ते पीसकर मगल से मल फिर गरम जल से धोवें ।

अथवा मुदासग पीसकर पंखे ता पक्कगधि दूर हो ।

अथवा अकरा, कालीमिर्च, नीलायाथा, प्रत्येक तीन माशे, बदक की वारुद एक तोला आठ माशे, छ' तोला आठ माशे घी में मिलाकर मले और एक महर पश्चात् गरम जल और बेसन से स्नान करे।

अथवा आक का दूध जमा कर छाया में सुखावे फिर जला कर कड़वे तेल में मिलाकर बदन पर मले और चार घड़ी पश्चात् स्नान करे।

अथवा सहजने की जड़ कड़वे तेल में जलाकर छान कर बदन पर मले।

पीली हरताल का तेल कि खुजली और दाद को गुण करे।

पीली हरताल एक भाग पीटा तेरु दो भाग प्रथम तेल को औटाव जब ताल होजाय हरताल पीस कर थोड़ी २ घस में डाल कर लकड़ी के चमचे से घसे चलावा रहे और आंच मदी कर जब तेल की रात मयूर के सदृश होजाय और तेल में अग्नि लग जाय उस समय देगची को बंद करदे और तेल को ज्वाला बुझ जाय इसी प्रकार देगची को पांच बार खाल और बंद करे फिर ठंडा कर शीशी में रख और शीशी पर मल कर घुष में बैठ और गरम पानी से न्हाय।

अथवा पवार के बीज सेर भर, गंधक एक तोला आठ माशे, एक सेर गाय का दूध, पांच सेर घी, मिला कर औटावे जब दूध जल कर घी रह जाय छान कर मले।

स्याह दवा चिभिटी, आनला, कालीमिर्च, कालीहड़, प्रत्येक एक तोला नीलायाथा एक भाग कड़वे तेल में प्रथम चिभिटी जलावे फिर हड़ घावला नीलायाथा प्रत्येक २ जला कर कालीमिर्च, कूट छान कर घस में मिला कर बदन पर मले।

अथवा कनेर के पत्ते बीस नंग पाव भर कड़वे तेल में जला कर तेल बदन पर मले।

पवार का तेल कि खुजली को दूर करता है पवार के बीज एक सेर गंधक एक तोला आठ माशे, गौ का दूध दो सेर, घी पाव सेर में औटावे जब दूध जल कर घी रहजाय घसे मले।

अथवा पालक के बीज पीस के दाने घराघर पानी में पीसकर बदन पर मले फिर गरम पानी से न्हाय दो तीन दिन में आराम होजायगा।

अथवा घट्ट की घारु कड़वे तेल में मिलाकर शरीर से मलकर घूप में बैठे फिर न्हाय ।

अथवा वर्गद के पत्ते और सूखी यूहर की लकड़ी जो पृथ्वी पर पड़ी हो और पास्त के हाड़े बराबर लेकर, जलावे और उसकी भस्म कड़वे तेल में मिलाकर मले और थोड़ी देर घूप में बैठकर गरम जल से न्हाय ।

अथवा कलमी शोरा कड़वे तेल में मिलाकर मर्दन करे ।

अथवा मर्दों गुलाब के फूलों का सेल सिरके में मिलाकर मर्दन करे ।

अथवा साबन जल में पीसकर लगावे परचात न्हाय ।

अथवा सुहागा, चमली का तेल, गुलाब और नीबू के रस में मिलाकर मले और कोई २ थोड़ा कपूर डालते हैं ।

अथवा गधक सात माशे, पारा, नीलाथोया मुना मत्येक पौने दो माशे गौ के घी में जो इक्कीस बार घोया हो मिलाकर मले और दो घड़ी परचात शीतल जल से न्हाय ।

अथवा अफीम तिलके तेल में मिलाकर मले ।

अथवा गिंदर, आवलासार, गधक, मुर्दासग, नीलाथोया मत्येक एक सोळा आठ माशे मक्की महीने पीसकर चार ठोके गौ के घी में मिलाकर मर्दन करे और लिखा है कि नित्य अर्द्धोष्ण जल से स्नान करना सुखी और तर खुनकी को शुष्क करता है ।

मर्दन नीलाथोया, आवलासार, गधक, कपूर मत्येक एक सोळा आठ माशे गौ के घी धुला हुआ तीन ताक औषधि कुट्टानकर घी में मिलाकर मर्दिदिन मर्दन कर घूप में बैठकर स्नान करे ।

फसल जनाज अर्थात् कच्छ दुर्गाधि की चिकित्सा में

चिकित्सा इसकी योग्यचित शरीर का पैर आदि से शुद्ध करना है ।

दवा कि पुष्पगंधि शो हर करे । घुना जल में पीसकर लगावे ।

अथवा जामन की जाक और पत्ते जल में ओटाकर बरात को ओवे ।

अथवा आदि अर्थात् शक्रवाल के पत्ते पीसकर बगुल से मले फिर गरम जल से धोवे ।

अथवा मुर्दासग पीसकर मले तो बगुलगंध दूर हो ।

फसल सीत अर्थात् हाथ पांवों में अधिक पसीना आने की चिकित्सा में

दवा मूग जलों पीसकर मले ।

अथवा बेगन, पोस्त के छोड़े जाँकट कर जल में भौंटा कर हाथ पांव
उस में भिगोया करे ।

अथवा कण्ठी, पीली कौड़ी जलाकर पृथक २ महीन पीसकर मले ।

अथवा काळे घूँरे क बीज महीन पीसकर एक माशा प्रति-दिन एक
सप्ताह पर्यन्त खाय ।

अथवा बर की पत्तियाँ पीसकर मले ।

अथवा पत्रकी सुखी पत्तियाँ पीसकर हाथ पांवों पर मले ।

अथवा नील की छातिका चाफड़ा लेकर उसके अर्द्धाण्य पानी से घोबे
इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यन्त करे । और वासुद्ध लगाना ।

अथवा किड्करी पानी में पीसकर मलना या पुष्करसूत पीसकर हथेली
और तल्वों पर मलना शीत को दूर करता है ।

अथवा कट कटेरे की जड़ सुखी पीसी हुई एक तोला शहद में मिला-
कर सात दिवस पर्यन्त खाय ।

गोली कि सीत को दूर करती है शिंगरफ, पेदे के बीजोंकी मिर्गी प्रत्येक
साढ़े तीन माशे पीली कौड़ी जली हुई साढ़े दस माशे काली मिर्च एक तोला
साढ़े पाँच माशे कूट ज्ञानकर सात माशे खटा चूक मिलाकर काली मिर्च के
प्रमाण गोलीयाँ बनाकर एक २ गोली दोनों समय खाया करे ।

शवि

फसल इलाज इतिफाक अंगुरतान अर्थात् अंगुलियों के फूलने और खुजली की चिकित्सा में

यह रोग वायु की सर्दों से होता है ।

चिकित्सा गेहूँ की भूसी और लवण औटाकर घोबे ।

अथवा जलजण वा चुकंदर के काँड़े वा उसके जड़ से जिस में मटर
वा मटर औटाया हो घोबे ।

फसल इलाज ज़राहत अर्थात् घावों की चिकित्सा में

- जिस घाव में पोंप निकले उस को ऊँह कहते हैं और जिस घालीस दिन पूरे हो जाय वह नासूर कहलाता है।
- जख्म अर्थात् घुर्की कि घाव को सुखावे पट्टा कि एक घास है जो नदी के किनारे होती है और उसकी चटाई बनाते हैं उसको जला कर उसकी राख घाव पर छिड़के यदि सिरके में पिटाकर नासूर पर लगावे तो गुण करे।
- अथवा कनेर की सुखी पत्ती पीस कर घाव पर धुँके।
- अथवा सगजराहत वा सेरुसदी पीस कर धुँके।
- अथवा स्त्री घर्म का वस्त्र जला कर घाव पर धुँके।
- अथवा गधे का मांस चर्म सहित जलाकर उसकी भस्म घाव पर छिड़के दो ही दिन में घाव भर आवेगा।
- अथवा सिरस की सुखी छाल पीस कर धुँके।
- अथवा मुर्गी का पर जला कर उसकी राख घाव पर छिड़के।
- अथवा कछुवे के सिर की भस्म प्रथम घाव को पीटे तब से जुपर छिड़के तीन दिन में आराम हो।
- दवा कि घाव को शुद्ध करे साबुन जल में पीसकर थोड़ा गेरु मिला कर भरहम के सद्गुण बना कर काम में लावे और कभी गेरु के काम में लाते हैं।
- धुर्की कि घाव के सूतक मांस को दूर करे और दुःख न दे सुनी फिट करी परीन पीस कर धुँके।
- दवा कि घाव को भरदे असगव नागौरी परीन पीसकर घाव पर धुँके और घोषा तुरई के पत्र घाव पर बांधें।
- अथवा कृषी के पत्र घाव पर बांधें पर तब सापित बांधना उत्तम है।
- धुर्की सिर की पत्ती जला कर उसकी भस्म घाव पर धुँके।
- अथवा स्नादी परीन पीस कर घाव पर धुँके।
- अथवा सानू मछली पीस कर धुँके।
- अथवा इतर पीस कर छिड़के दुष्ट घाव को गुण करता है।

बुकी कि फलने वाले घाव का गुण करती है कमल और बरगद के पत्ते बराबर जला कर सनकी राख र गुन में मिलाकर घाव पर छिड़के ।

बुकी कि घाव और फफाँवों को गुण करे कपूर, चतुर्थ भाग, सुने नाजबू क बीज अर्द्ध भाग, प्याज का छिड़का जलाया हुआ एक भाग, जले घाव दो भाग सबको पासकर छिड़के ।

गोली कि औरगजेबी घाव को जिस में कि छिद्र होते हैं गुण करती है वेलागिरि की सींगी, कत्था, नीलायाया बराबर जैरर गोलीया, बनास और शुद्ध बाँधना जड़ ही फाँड़े के मूळ मवाद को दूर करता है ।

अथवा मसर, जला कर मूस के दूध में मिला कर दोनों समय घाव पर लगावे तो अशुद्ध घाव को गुण करे ।

रोगन अथवा तेल के नुमखे

रोगन कि घेव के भर लाने का अद्वैत गुणदायक है । समाल के पत्ते, फरास के पत्ते, चणेकी के पत्ते, घतूर के पत्ते प्रत्येक साढ़ तीन माशे, मीठा तेल आध सेर, पत्तों को पीसकर तेल में मिलाकर जलावे, जमचै स खूब रगड़ कर आँव पर म उतार ले द्वितीय बार जयचै से चलावे जब फोक नीचे बैठ जाय शुद्ध कर तेल काम में लावे ।

द्वितीय रोगन कि घाव को भर लावे कजा के पत्ते, नीम के पत्ते प्रत्येक एक तात्ता आठ माशे तेल में मूँन जब स्याह होजावे तब नीलायाया एक माशे पास कर मिलाकर काम में लावे ।

अथवा यह कि घाव को शीघ्र भर कर अरुद्धा करे गुण एक तोला आठ माशे इलदी एक गाँठ सिंदूर चार माशे मथग तेल में नीमकी टिकिया बना कर जलावे फिर इलदी चलावे परचात गुण फिर सिंदूर मिलाकर काम में लावे ।

रोगन कि प्रत्येक प्रकार के घावों को गुणदायक है । मीठा तेल एक सेर कड़ाहा में डाल कर शीटीवे पंचास नीम के पत्तों की टिकिया और आध पाव केनेर के पत्तों की टिकिया पाव सेर मोम बकायन की पत्तियाँ तेरह तोल चार माशे, एक मोला साढ़ चार माशे तेल में टिकिया बना कर तेल में डाल कर जलावे जब सल कर स्याह होजावे छान कर काम में लावे ।

नीम का तेल कि घाव को गुणदायक है नीम की पत्तियाँ पीस कर

टिकिया बनाकर तेल में जलाव जब स्याह होजावे छानकर काम में लावे यह तेल साढ़ा है कान की पीड़ा को भी गुण करता है और जो घाव पर टपकावे फवला और कत्पा एक २ तोला और भिला लेवे कि घाव जल्द भर जावे और जब मवाद निकालना चाहे योड़ा नीलायोया डाल दे ।

कवेले का तेल कि घाव को अद्वितीय गुण करता है और योड़ेही दिनों में अच्छा करता है । कवेला तीन चार महीन खरखा करके दो तोले स्याह मास बराबर के कड़ेवे तेल में भिजा कर कपड़े में छान के बखित समय पर कई भिगोकर घाव पर रखे और कई एक चूदे टपकावे ।

भिलावे का तेल बहुधा घावों को गुणदायक है यहां तक कि पशुओं के घावों का भी गुण करता है भिलावे सात नग आध पाव पीठे तेल में जला कर सलखड़ी भिजाकर मुर्गी के पर से लगावे ।

कौंच के बीजों का तेल कि घाव और नासूरों को गुण करता है । कौंच के बीज छिल हुए तीन तोले चार माशे घरीन पीस कर टिकिया बना कर आध पाव पीठे तेल में जला कर छान कर घाव पर टपकाव और किसी किसी ने पीठे तक क बड़े कड़ेवा तेल लिखा है ।

कुचले का तेल कि घाव को गुणदायक है और नासूर को भी अच्छा करता है । कालीमिर्च साढ़े तीन माशे, नीलायोया एक चने की बराबर, कुचले पांच नग, पीठा तेल एक तोला साढ़े पांच पासे, पांडी नीम की पत्तियां, अजदायन एक तोला आठ माशे, कवेला तीन तोले चार माशे, तेल को कड़ाही में औंटावे और नीम की पत्तियों की टिकिया बनाकर उसमें जलावे जब स्याह होजावे तब निकाल कर छानकर चीनी वा शीशे के बर्तन में रखे और कई को इसमें भिगो कर घाव या नासूर पर रखे जब सूख जाय फिर भिगो दे ।

तेल घाव दूर करने के लिये । सुलखंडी छिली हुई जल और तेल में औंटावे जब पानी जल कर तेल मात्र रहजाय छानकर हुई हुई के साथ छाल कर काम में लावे ।

अथवा पीठासेल पाव सेर, नीम की कौपल, अरंड की कौपल मस्येक तीन तोले चार माशे कौपल को तेल में जलाकर रात तीन तोले चार माशे, कवेला एक तोले आठ माशे घरीन पीस कर तेल में भिजाकर घाव पर टपकावे सो सब प्रकार के घावों को गुण करे यहां तक कि पशुओं के घावों को

भी गुणदायक है जा मृतक मांस आधक होता एक माशे नालापोया मिलावे
अथवा यह कि घाव भरने की अद्वितीय है और 'चपदश' के घावों को
भी गुण करता है मिलाए, कौंच के बीज प्रत्येक एक तोला आठ माशे, खुरा-
सानी अजवायन, मुर्दासंग प्रत्येक तीन माशे, नालापोया दो माशे, तिल का तेल
आधपाव पहिले तल को अग्नि पर रखे जब चफान आवे मिलावा सममें डाल
कर जलावे फिर कौंच के बीज, अजवायन अलग से डाले पर्याप्त नीला-
पोया, मुर्दासंग पीसकर मिलावे और आंध पर से उतारकर खूब रगड़े जब हूब
सहज होजाय यदि घाव मज्जयान पर हो तो ज्ञानकर नहीं तो बिना छाने काम
में लावे और यह तेल नासूर का भी गुण करता है।

कुचले का तेल कि अकौता अर्थात् गज को भी गुण करता है आठ
नग कुचले पीठे तेल में जलाकर काम में लावे।

प्रसल प्रत्येक प्रकार के घावों के मरहमों के व्याख्यान में

मरहम प्याज, साबन, सफ़ेद कत्था प्रत्येक छः तोले आठ माशे, नीम की
पत्तियां ग्यारह नग, मीठा तेल छः तोले आठ माशे प्रथम प्याज को टूटकरकरके
तेल में जलावे फिर नीम की पत्तियां जलाकर कत्था पीसकर डाले और थोड़ा-
सा बच्च जलाकर मिलावे फिर रगड़कर काम में लावे।

मरहम कौंच का भारतवर्षियों का बनाया हुआ कि घाव को अति
शीघ्र भर लाता है पाव सेर मीठा तेल लोहे के बर्तन में गरम कर उतार के फिर
कौंच के बीज पीसकर मिलावे और नीम के पत्ते तथा नरयोकी पत्तियों की
टिकिया बनाकर छः तोले आठ माशे मोम गरम कर के तेल में मिलाकर काम
में लावे।

मरहम कि जल से बनता है और चिकनाई उस में नहीं होती और
घर्तवा काष्ठ में पानी अवगुण नहीं करता और सब प्रकार के घावों को गुण
करता है यहां तक कि नासूर को भी अच्छा करता है गूगल, पारा प्रत्येक साढ़
तीन माशे, रसौत सात माशे प्रथम गूगल और रसौत को जल में रगड़े फिर
पारा मिलाकर काम में लावे।

मरहम कि घाव तथा नासूर को गुण दायक है राख और घी प्रत्येक
आपपाव, कत्था, फिटकरी, नालापोया, लोषान प्रत्येक सवा दो तोले घी को
थोड़े पानी से दो घड़ी मज्जकर औषधियां कूट ज्ञानकर मिलावे सगपरमुर की

धूल, कत्था, नीलायोंया, सफेद कौड़ी, नीली कौड़ी बराबर कूट छानकर घी में मिलावे और छाछी के वास्ते थोड़ा मक्का और भिछाके गोखिया बनावे ।

संगमरमर की धूल का मरहम

संगमरमर की गोखिया, मुर्दासंग प्रत्येक एक तोला आठ मांशे, कत्था, राख, मोम प्रत्येक सात मांशे, घी आधपाव प्रथम घी को मले भेकारे तपीकर मुर्दासंग प्रथम पीसकर उस में डोके जब जलनाय चतार कर राख तथा मोम मिलावे पश्चात् उस में कत्था और संगमरमर की धूल की गोखी पीसकर मिलाकर काम में छाबे सब तरह के घाब और फोड़ों को गुण दायक है ।

मरहम कि सब प्रकार के घाब और फोड़ों को गुण दायक है और घाब को शीघ्र भरकाता है राख साढ़े तीन मांशे, शिगरफ एक मांशे, मुर्दासंग एक मांशे, कौंच के बीज छिले हुए साढ़े तीन मांशे, सरसों का तेल तीन तोले चार मांशे, पहले कौंच के बीज तेल में जलावे और फिर नीम के पत्तों की टिकिया उस में जलाव फिर छानकर औषधियां उसमें डाले और रंगड़ ।

मरहम कि विवाई को गुण करे राख, घी प्रत्येक एक तोला और आठ मांशे मोम पांच मांशे घी तपाकर मोम उस में मिलावे फिर राख डालकर और पांच को मली भांति घोबे फिर मरहम घावों में भर और मति दिन चार बार इसी प्रकार करे ।

मरहम कि सब प्रकार के घावों की गुण दायक है चर्म की सुख जला कर सुपारी जलाई हुई इड़की गुठली जलाई हुई और आख की कोपल जलाई हुई, मुर्दासंग, कत्था प्रत्येक दश मांशे, घी गरम करके औषधियां मिलाकर मरहम बनावे ।

अथवा घी शरद ऋतु में तीन तोले चार मांशे और ग्रीष्म ऋतु में एक तोला आठ मांशे लेकर नीलायोंया एक मांशे, मोम सफेद एक तोला आठ मांशे, सिंदूर पांच मांशे मिलाकर प्रकारानुसार मरहम बनावे ।

मरहम कि यनेल उपदश, नाख और घोंघे आदि को गुण करता है । सरसों का तेल, सेलखड़ी, मोम प्रत्येक एक तोला आठ मांशे, जगल चार मांशे लेकर मरहम बनावे ।

अथवा राख, शिगरफ प्रत्येक छः मांशे नीलायोंया दारची पीटे तेल में खरक करके मरहम बनावे ।

अथवा मोम, राख, कत्था प्रत्येक एक तोला मोम को घी में पिघलाकर

पारिजे राख का पीसकर मिलावे और तीन उफानों के बाद कत्था ढाली रगड़ कर चार माशे कपूर मिलावे फिर उफान देकर चत्तार ले यदि पुराने घाव पर लगावे तो थोड़ी छुपारी जलाकर मिलावे ।

अथवा राख एक भाग, मोम आधाभाग, घी चार भाग प्रकारानुसार मरहम बनावे ।

मरहम कि दूदी हद्दी के बास्ते गुण दायक है पकी ईंट महीन पीसकर थोड़े दूध में मिलावे और चावल उसमें पकाकर तीन सप्ताह पर्यन्त स्नायु अस्ति पूर्वानुसार होनाय ।

मरहम एक घाव को गुण करे । काली हड्डी, कबेला मल्लिक साढ़े चार माशे, नीलायोया सवा दो माशे कूट छानकर थोड़े घीमें मिलाकर काममें लावे ।

मरहम इगलेंडीय लागों का बनाया हुआ मोम एक तोला आठ माशे धुनी फिटकरी, सिद्धर मल्लिक दो माशे, मुर्दासग चार माशे, नीलायोया चार रत्ती, घी तीन ताळे छः माशे घी और माप को तपाकर अभिन पर से चत्तार कर औषधियाँ उसमें मिलाव ।

अथवा रूंदी का तेल पावपर, अरुंड की कोपल का रस पावसेर दोनों को आठवां जब पानी जलकर तेलमात्र रहजाय तब एक तोला आठ माशे पत्थर का चूना रगड़ कर उसमें मिलाकर पीसे और घाव पर लगावे छिपाने रहे कि चूना चार प्रकार का होता है एक पत्थर का, दूसरा घोघे का, तीसरा सीप का चौथा कैकर का ।

मरहम कि घाव मरने को अद्वयुक्त गुण दायक है पुरानी कई जली हुई दम तोले, पाँच ताळे मोम और उसकी बराबर खुरासानी बज और गाय का घी चार ताळे चार माशे, नीलायोया दो रत्ती पारिजे घी और मोम को एक वासन में गरम करे और उसमें कई की राख ढाले पश्चात् बज मिलावे फिर नीलायाया भून पीसकर मिलावे और मरहम बनाकर काम में लावे ।

अथवा सफेद कत्था, मुर्दासग, सेलखड़ी मल्लिक एक तोला आठ माशे, राख दम ताळे, कंबल का डुकड़ा जलाया हुआ चौथाई गज, घी ग्यारह ताळे आठ माशे औषधियों को महीन पीसकर घी में मिलाकर मरहम बनावे ।

मरहम कि भगंदर को गुण करे अर्थात् उस फोड़े को जो अह कोप और गुदा के बीच में होता है कीमूखत चपड़ा जलाया हुआ, पपरिया कत्था, सेलखड़ी, मोम मल्लिक एक तोला आठमाशे, गौ का घी सौ बार घुला हुआ,

पोस को घृत में मिलाकर ठंडा कर के सब औषधियाँ उस में मिलीं।

मरहम कि फोड़े के घाव को गुण दायक है नीलायोया एक माशे, मुर्दा-सग दो माशे, सफेद कत्या चार माशे, राख आठ माशे, कवेछा सोलह माशे, कपूरी मोम ग्यारह माशे, गौ का घी बत्तीस माशे, प्रथम घी थोकर हाथ से मेलें पश्चात् औषधियाँ मिलाकर हाथ से मलकर मरहम बनावे।

मरहम सफेद घाव मरने के लिये कपूर साढ़े तीन माशे सफेद मोम एक तोला आठ माशे, सफेदा तीन तोले चार माशे, मीठा तेल एक तोला आठ माशे प्रथम तेल गरम करके मोम डाले और थुढ़ कर आध पर रखे फिर उतार ठंडा करके और औषधियाँ डालकर मरहम बनाकर काम में लावे।

फसल उन दानों की चिकित्सा में जो वर्षा ऋतु में उत्पन्न होते हैं।

मसूर के छिलके जलाकर, आंबला जलाकर उसकी बराबर महदी, कवे-छा, योड़ा नीलायोया मुना योड़े तेल में मिला पीस कर दानों पर मले।

दवा कि आतशक अर्थात् उपदश के घावों को गुण करे फिटकरी, नीलायोया, मुर्दासग, मुहागा मल्यक एक माशे, कवेछा, बावची, पारा, गेरु पवार के बीज मल्यक चार रत्ती, काछी मिर्च जली हुई तीन माशे, कुचले जले-हुए तीन नग सब को महीन कूट छानकर आध पाध घी में मिलाकर काम में लावे।

अथवा जली हुई कोढ़ी, नीलायोया मुना, हस्दी जली हुई बराबर नीबू के रस में खरख करके मालिश करे।

अथवा सुपारी, हस्दी, बावची मल्यक जली हुई एक तोला आठ माशे, महदी, कत्या, मुहागा मुनी, फिटकरी मुनी मल्यक दस माशे, मसूर की दाख जलाकर, पोस्त के ढोंके जलाकर मल्यक पांच तोले, काछी मिर्च पांच माशे सब को महीन कूट छानकर कड़वे तेल में मिलावे और प्रथम तीन दिवस निरुपद्रव हाक के पत्र गरम करके अकौते पर बांध और तीन दिवस परचाय यह तेल काम में लावे अति गुणदायक और परीक्षित है।

अथवा बावची गरम कर के कूट छान कर प्रथम अकौते पर सरसों का तेल जुपड़ कर यह दवा छिड़के।

अथवा दूध, मांस और चिरोली पीसकर अकौते पर लगावे।

अथवा कठहर के पत्ते घी से चुपड़ कर आढ़ोणा कर अकौते पर बांधे और चार घड़ी परचात दूसरा पत्ता बांधे ।

अथवा गेरू, सुना सुहागा, बराबर समेली के तेल में जला रगड़ कर चार पांच बार मले ।

अथवा करील का कोयला सरसों के तेल में मिलाकर लगावे ।

अथवा भिछावा भीठ तेल में जलाकर मले और थोड़ा नीलायोया, सुना पीसकर मालिश करे ।

अथवा नीलायोया, कालीमिर्च, चूनेकी बरी, सुहागा मल्यक एक तोला आठ माश, मइदी की पत्तिया तीन, तेल चार माश, कड़वा तेल छ तोला आठ माश सब को महीन पीस कर कड़वे तेल में मिलाकर आटावे और कई एक बार मर्दन करे ।

अथवा सिंदूर, कालीमिर्च, सुपारी, नीलायोया, कौड़ी जली हुई, समुद्र कर्था, कुचला बराबर पीस कर दूने तेल में मिलाकर काम में लावे ।

अथवा साधन, चूना परस्पर पीस कर लगावे ।

अथवा सिंदूर महीन पीसकर नीबू के रस में भिंगोदे प्रातः काळ अकौते को कंठ से खींच कर उस पर लगावे ।

अथवा कुचला साढ़े बारह तोले, फिटकरी साढ़े पाँच तोले, दस माश घी में मिलाकर मले ।

अथवा यह कि उस अकौते के घाव को जो पैर में होता है गुण कर अलसी की खल, तालाव की मिट्टी दोनों बराबर जल में मिलावे और उससे एक मोटा टुकड़ा बनाकर प्रातः काल से सायंकाल पर्यंत बांधे तीन चार दिन में आराम होजयागा ।

फुसल नासूर की चिकित्सा में ।

पिपेटन की लड़ पानी में घिस कर नासूर पर रखे ।

अथवा घुची उस में भिंगोकर नासूर पर रखे थोड़े दिन में आराम होजायगा ।

अथवा पुराना कबल जलाकर थोड़ा नीलायोया कूट खान कर नासूर पर छिड़के ।

अथवा फनगजूर जलाकर उस की राख नासूर पर छिड़के ।

अथवा साँप की काँचली जलाकर उसकी राख बर्गद के दूध में मिला कर वा कई उस में भिगोकर रखे और दस दिन परचात कई उस पर से उठा लें।

अथवा गौ के खुरकी राख, जूते के तले की राख धराधर लेकर एक नग छिपकली सरसों के तेल में जलाकर राख उस में मिलाकर कई एक घूद नासूर पर टपकावे।

अथवा इपली के बीज पानी में भिगोकर छीलें फिर उनको जल में पीसकर बची उसमें भिगो कर नासूर पर रखे। यद्यपि पीड़ा उसमें होती है परन्तु आराम शीघ्र होजाता है और कोई २ कौड़ी जला पीमकर मिलाते हैं।

अथवा गूँठर के दूध में फाया भिगोकर घाव पर रखे और कुछ काल पर्यन्त इसी प्रकार करे तो नासूर और भगदर को गुण करे।

अथवा समुद्रमाख जलाकर उसकी राख नासूर में भरे।

अथवा कई आक के दूध में भिगोकर छाया में सुखा के फिर उसकी बची बनाकर सरसों के तेल में जलावे और उससे काजल पाड़कर नासूर पर लगावे तो नासूर की पीड़ा को दूर करे।

अथवा भरद की कोंपल जो कच्ची और कोमल हों पानी में पीसकर मर्दी के सहस्र लगावे।

अथवा चिड़िया की घोट पानी में महीन पीसकर नासूर पर लगावे।

अथवा कटे की राख महीन पीसकर ज्ञानकर इपेली पर रख कर नासूर पर रखे।

अथवा मकड़ी का जाला कपड़े से साफ करक नासूर पर बांधे।

अथवा गिलोय, इल्दी कूटकर तेल में औटावे जब जलजाय पीसकर लेप करे।

अथवा करील की कोंपल एक घासे, मुर्दासग एक रसी, बर्गद का दूध एक घूद पानी के संग पत्थर पर पीमकर लगाकर उस पर एक घूद बर्गद के दूध की टपकावे।

अथवा छाटी कटेरी का फल कूट छानकर जल में मिलाकर फाया उस में भिगो कर नासूर पर बांधे।

अथवा घोड़े का मुँग जलाकर अलसी का तेल मिलाकर नासूर पर बांधे और जो नासूर अवयव के भीतर होतो दाहिने में मिलाकर नासूर से भगदर

अथवा जिस हुके में सुलेफ्रा पीते हैं उस का जल तीन दिन न बदले जब पानी पर जाता पड़ जावे उस जाले को नासूर पर लगावे ।

अथवा बिसखपरे की जड़, मइदी के पत्ते, फरास के पत्ते, सरमा के पत्ते नीम के पत्ते, जीत के पत्ते, बैर के पत्ते अरंड के पत्ते, राल प्रत्येक तीन तौल चार मांशे, मीठा तेज सेर भर प्रथम बिसखपरे की जड़ टुक २ करके तेज में जलावे फिर पत्तों को टिकिया बनाकर तेल में जलावे और छान कर सब मिलाकर रगड़े ।

अथवा सफेद मोम, खुरासाना बच प्रत्येक एक तौला आठ मांशे मीठा तेज-पान, सेर प्रथम तेल गरम करके घब उसमें जलाकर छान कर मोम उसमें मिलाकर गरम बनावे ।

अथवा चिरचेंदे की पत्तियां जल में पीसकर कपड़ा उसमें भिंगो के बची बना कर नासूर में रखे और उस में से थोड़ा अर्क नासूर पर टपकावे ।

अथवा अखरोट की पींगी, मोम, मीठा तेज बराबर ले गरम बनावे ।

अथवा भैंसा गूगल, मोम, गोमूत्र में पीसाकर बची बना नासूर में रखे ।

फसल रुधिर बन्द करने वाली औषधियों के वर्णन में

दवा, कपड़ा बलगार और दाराई जलाकर सुहागा सुना और हर्दों महीन पीस कर कंठे की राख इन औषधियों को जिस जगह से रुधिर बहता हो उस स्थान पर बांधे तो रुधिर बंद हो ।

अथवा घाड़े को लीद बांधे और अडे का क्लिक्का लेकर भीतर का पर्दा उस को निकाल कर छाया में सुखा पीसकर बुके ।

अथवा सगमरमर जला पीस कर उस की राख घाब पर बुके ।

अथवा किसी जंतु का फेंफड़ा सुखाकर जला कर उस की राख घाब पर बांधे ।

अथवा नीलाथोथा महीन पीसकर घाब में भर दे ।

अथवा माजू जलाकर घाब पर बुके ।

अथवा मूंगा महीन पीसकर बुके ।

अथवा चाफा काई पीसकर लगावे ।

अथवा चुकंदर पीसकर या रई जलाकर बुके ।

फसल इलाज हर्कुनार अर्थात् अग्नि से जल जाने की चिकित्सा में

देवा श्मश्री की बाँस पीसकर गांध के घी में मिलाकर लेप करे।

अथवा घण्ट की कोपल गौ के दही में पीसकर लेप करे।

अथवा अरुंड के पत्तों का रस वा चापा क फूल जलाकर सरसों के तेल में मिलाकर लगावे और अरुंड की सफेदी भीठे तेल में मिलाकर लगावे।

अथवा देवात की स्याही और अनार की पत्तियाँ पीसकर लगाना गुण करता है और जो शरीर जलकर श्वेत होगया हो तो हड़, बरेड़ा, आबला पीसकर लगाना पूर्व रंगत पर छाता है।

अथवा पुराने छप्पर की घाँस पीसकर लगाना परन्तु उस में कड़वा तेल जरूर पिळाना चाहिये।

अथवा गैहू का, जौ का आटा महीन पीसकर लगाना और जलमाने के पश्चात् दाग रहजाय तो जामन की पत्तियाँ पीसकर मले।

अथवा घेर की कोपल दही में पिळकर कई बार मदन करे।

अथवा ईंग जल में पीसकर लगावे।

अथवा मूँहबेरी की पत्तियाँ भीठे तेल में पीसकर मले।

अथवा यह उस जलने को जो चर्म जलकर गिरपड़ा हो और पीड़ा होती हो उसी समय शान्ति करे। राख महीन पीसकर गरम भीठ तेल में डाले जब पिघल जाय मिलाकर मदन करे।

अथवा मरही की पत्तियाँ जल में पीसकर लेप करे और माखन के साथ लगाना दुमरा गुण करता है।

फसल इलाज जर्बह व सकत अर्थात् चोट की

चिकित्सा में।

मकद हो कि सर्वह उसको कहते हैं कि अवयव पर कोई वस्तु गिरपड़े और सकत वह है कि खूब अवयव किसी वस्तु पर गिरे जो उस के कारण सोंप वा छ्वर हा सो मध्यम सोय और छ्वर की चिकित्सा फसद, पुछने और सुर्गोपन बरतुओं से करे।

गोली कि चोट को गुण करती है पीपल की पत्तियां २१ जग पीसकर गुड़ मिलाकर गोलीया बनाकर सात दिन खाय ।

दवा कि चोट को गुण दायक है चारह सींगे का सींग जल में घिसकर पिये ।

अथवा कच्चा बैंगन घूरे के साथ खाय और थोड़ी सोंफ पीसकर पिये ।

अथवा खरिया मिट्टी एक तोला जल में पीसे जब मिट्टी नीचे बैठ जाय जल नितारकर पीवे ।

चूर्ण कि चोट को गुण दायक है और पीड़ा को गुण दायक है लवण का माशे घूरा सफेद छ माशे, फकी बनाकर खाय ।

दवा हज्जलघृत आधे माशे से एक माशे तक खाता मोमयाई के सदृश गुण करती है ।

गोली कि चोट के लिये अति गुण दायक है यहाँ तक कि पशुओं की चोट को भी गुण करती है गैहूँ जलाकर चस की बराबर गुड़ मिलाकर खूब पीसकर थोड़ा घी मिलाकर मात्रा डेढ़ तोले, तीन दिन में चोट और पीड़ा को आराम करे इस औषधि को हिन्दी मोमयाई कहते हैं ।

दवा कि चोट और खून जमजाने को गुण करे एक माशे फिटकरी पीसकर चार तोले घी में मूँने जब फिटकरी घी में जमजाय ऊपर से घृत में घूरा और मैदा मिलाकर हलवा बनावे और खाय और चसी हलवे की गोली बनाकर उसमें चस फिटकरी को रखकर खाय तीन दिन तक इसी प्रकार करे यह दवा मोमयाई से उत्तम है ।

मर्दन कि चोट को गुण दायक है भिन्नभार की लकड़ी पानी में घिसकर लगावे ।

अथवा सहजने की पत्तियां बराबर के पीटे तेल में मिलाकर चोट पर मलकर घूष में बैठे ।

दवा माँदगी को गुण करे कोई तेल गुजगुना कर नाखूनों पर मले ।

अथवा रंटी की भाँगी, काले तिल पृथक्-२ कूट कर पीटे तेल में मिला कर लेप करे तो चोट दूर हो और सूखा हुआ अवयव अपने पूर्वे रूप पर आजाय ।

दवा कि श्रोत्र और घोष को गुण करे । तिल की खल कूट कर गरम जल में डाले जब भले प्रकार छुलजाय महीन वस्त्र पर लगाकर अवयव वै रले ।

अथवा, मीठा तेल, अर्द्धोष्ण तलेवाँ पुर मले और जगली कड़ा की बाँध से सेक करे और पाँच फैलाये रखे ।

अथवा साबुन पीस कर जल में गरम कर के मले और जिस अवयव को वायु ने मारा हो उसको भी गुण करता है और जो साबुन में हल्दी मिला कर लेप कर सो भी अत्युत्तम है ।

दवा कि चोट और ग्रन्थी को जो चोट के कारण पड़गयी हो गुणदायक है । पुराने नारियल की मिर्गी जो कड़वी न हो कूट कर चार भाग हल्दी महीन पीस कर मिलावे और थोड़ी पोटली में गरम करके बाँध कर दो तीन घड़ी सेक करे फिर चोट और सोय पर बाँधे दो तीन दिवस में आराम हो जायगा ।

दवा हल्दी, पैदाऊकड़ी, गेंहूँ की मैदा मस्येक भाग पाव लोटेन सज्जी एक तोला आठ माशे, मीठा तेल पाव सेर, मयम तेल गरम कर मैदा उस में थूने फिर औषधियाँ महीन पीस कर पूरक २ उस में ढाले मयम सज्जी परचाव पैदाऊकड़ी, फिर हल्दी मिला कर थोड़ा पानी ढाल कर पकावे जब पानी जल जाय गरमागरम लेकर सेके । इसको छपड़ी करते हैं ।

दवा कि चोट तथा मोच को नवीन हो वा पुरानी अर्द्धोष्ण को गुणदायक है । पैदाऊकड़ी तीन तोला चार माशे, सोंठ और कुचला दूक २ कर के हाँड़ी में एक सेर जल गरम करके ढालकर सुलबद करके आठवाँ जब तीसरा भाग पानी रुझाय पहिले मफारा लेवे फिर अवयव को उस पानी में धोकर दवा को फोक पीसकर गुनगुना २ बाँध तीन दिवस में आराम आवे ।

अथवा पहिले अवयव को गरम जल से धोव फिर अद की, जर्दी में थोड़ा गेरू मिलाकर अर्द्धोष्ण लेप करे और अवयव को सेके कि दवा सूत जाव । फसल इलाज समन मुफरित अर्थात् अधिक मोटा हो जाने की चिकित्सा में

इस रोगकी उत्पत्ति कई प्रकार से होती है और प्राय स्त्रियोंकी मरुति में अधिक है ।

चिकित्सा यदि शरीर में कपिर की अधिकता होने तो फसल से महीनो कफ का विरचक दे । और वे औषधियाँ जो शरीर को दुपला करती हैं और सुखाती हैं काम में लाये ।

चूर्ण कि शरीर को दुपला करे खुली राख सात माशे, स्पार जोरा,

अजवायन प्रत्येक चौदह माशे मात्रा तीन माशे तक एक दो तोल सादे। सिकज
धीन के संग खाय।

अथवा सिंदूर एक माशा, दो तोल सिकजधीन और जल के संग पीव।

अथवा सिरका, मसूर और जौ की रोटी खाना और घबूह की साया
में बैठना।

अथवा रांग की अगूठी पहनना और फड़वी वा खट्टी वस्तु खाना और
गरम वा तीक्ष्ण वस्तु खाना और भूखा रहना और मोटे वस्त्र पहनना।

अथवा पृथ्वी पर सोना शरद काल में नगा रहना शरीर का दुर्बल करता है।

फसल इलाज हजाल मुफरित अर्थात् शरीर के अधिक

क्षीण होजाने की चिकित्सा में

जो कि क्षीणता भी एक रोग है इसलिये कई एक औषधियाँ मोटा करने
के वास्ते लिखी जाती हैं।

औषधि कि विशेष कर खी को मोटा करे। असगव, मूखली स्याह, ज्वेत,
बराबर गौ के दूध में औटावे जब दूध सूख जाय सुखा पीस कर बराबर का
बूरा भिछाकर दो तोल प्रति दिन गौ के दुग्ध के संग खाय और रोटी दूध
के संग खाना गुण करता है।

अथवा मीठे बादाम की मिंगी, निशाश्ता, फलीरा बराबर का बूरा भिछा
कर दूध के संग एक तोल खाय।

पाक कि शरीर को मोटा करे यह सहज नुसखा हावी समीर से लिखा
गया है। कालीमिर्च, सौंठ प्रत्येक दो तोल स्याह माशे, धुलतिल, अखरोट
की मिंगी प्रत्येक साढ़े, चौदह तोल, पीपल पौने नौ तोल, बूरा दो सिर, शरद
यथोचित प्रकारानुसार पाक बनावे मात्रा साढ़े चार माशे तक खाय।

फसल इलाज खवनह अर्थात् मुहांसे अर्थात् उन दानों की
चिकित्सा में जो युवा अवस्था में रुधिर की अधिकता
और प्रवृत्ता से निकलते हैं

जो बहुत निकले और दुख दे तो फसल सरेख खोलें पश्चात् शीतल औष-
धियाँ मर्दन वा लेप द्वारा काम में लावे।

चिकित्सा अमकवास के रक्त की झाल, व दाना अनार, शायारलदी,
ताम्रपौषा भरभर पीस कर उबटने के संदेश मले और सूखने पर घाड़ाले।

अथवा गजोंठ, लाल चन्दन, मसूर, लोध, लहसुन की कोपक सूत
बानकर मरीन करके रातको मुहासों पर लगा के मबरे धो डाले ।

अथवा यह कि मुखको चमकाने चावल, जौ, जने, मसूर और मटर का
आटा मल्येक इनमें से मुखको चमकल करता है सबटना बनाकर काम में लावे ।

औषधि कि स्त्री का मुख शुद्ध करने में अद्भुत गुण रखती है और
विशेष करके अत्युच्चम है खोपरे की घड़ी में छिद्र करके एक तोले आठ माश
कैसर और एक तोले आठ माशे जावित्री को पानी में पीस कर चस में डाल
कर उसी दुकड़े से छिद्र पद करके आठ सेर गौ के दूध में मदी आंच से
औटावे जब कि सध दूध शोषण होजाय दवा को खोपरे से निकाल कर पीस
कर चने के प्रपाण गोतिरिया बनाये मातृ काली एक गाली चायूत में रख के
खोपरे इस को एक परम मित्रने परीक्षित कहा है और जो चवूर का गोद कतीरा
और निशास्ता, ईसबगोल, एलुआ वा कुलफा के जल में भिलाकर देशादन
में मुख पर मले तो धूप से रंग काळा न पड़े ।

कसल इलाज कलफ अर्थात् भाई की चिकित्सा में

जो कि चहरे पर स्पाह दाग पड़जाते हैं ।

दवा कि भाई को दूर करे । तरवूज में छिद्र कर के चस में चावल भर
कर साव दिवस रख फिर चावल निकाल सुखा कर सबटना बनावे ।

अथवा आंव की बिजली, जामन की गुठली पानी में पीसकर लगावे ।

अथवा राजपू के पत्ते, तुलसी की पत्तियां पीसकर मुख पर मले ।

अथवा कुलीजम पीसकर लगाना थोड़े ही दिनमें त्वचा के भीरे की
स्याही को आकर्षण करके दूर करवा है उचित है कि कई एक दिन लगा
कर फिर चावल पीसकर मर्दन करे कि बाहर की त्वचा की रगत बराबर होजाये ।

अथवा चौराई की जड़ और ठहनी जलाकर जल में पीसकर भाई
पर मले और एक घड़ी धूप में बैठे सूखजाने के परचातु गरम जल से धो डाले
और सेवा नोने पीसकर मुख पर मले ।

अथवा तुलसी की सूखी पत्तियां पीसकर मुख पर मले ।

अथवा कलपी शोरा, हरताल मल्येक साढ़े तीन माश खीन पात्र करके
एक पात्र जल में भिलाकर मले एक घड़ी धूप में बैठकर पीछे गरम जल से
धोवे तीन दिन में भाई दूर होजाये ।

अथवा कासजी नीबू काटकर इल्दी गौ कुट कर उसमें मरकर फिर नीबू के दोनों टुकड़ मिलाकर एक सप्ताह पर्यन्त रखे फिर निकालकर नरसक की पुरानी जड़ के संग पीस कर रातको लगाकर मात काल गरम जल से धोवाले ।

अथवा कना की पिंगी दूध में भिगो पीस कर मुख पर मले तो मुख प्राति बेगोमय होवे ।

अथवा शहर सिरके और नमक में मिलाकर मला करे ।

अथवा नीम की गुठली सिरके में पीस कर मले ।

अथवा माजु दो भाग, कतया दो भाग कुट छान कर गौ के बाजा दूध में मिलाकर प्रति दिन कई बार मुख पर मले अति शीघ्र गुण करे ।

अथवा कपोत की बीट जल में पीसकर प्रति दिन कई बार मुखपर मले ।

अथवा ममूर नीबू के रस में पीस कर लगावे ।

अथवा खुनी फिटकरी एक सोछा भाठ म शे, घूना दस मासे, नीबू के रस में खूब पीसकर मरहम के सदृश बनाकर भाई पर मले तो एक दो सप्ताह में दूर होवे और जब नीबू का रस सूख जाय तब और डालदे ।

फसल छीप की चिकित्सा में

दवा छीपको गुण करे इल्दी, काले तिळ, मेंसके दूध में पीसकर मले ।

अथवा चपा के फूल स्या जाल व पत्तिवा पानीमें पीसकर लगावे ।

अथवा नीबू के रस में पीसकर लगावे तो छीप और भाईको गुण करे ।

अथवा यह छीपको गुण दायक है चौलाई की जड़ और वह नियां जला कर उन की भस्मयानी में मिलाकर छीप पर लगावे और घड़ी भर धूप में बैठ कर पश्चात् गरम जल से धो डाले ।

अथवा पवार के बीज बौकुट कर दही के पानी में मिलाकर दो दिन दियस रख फिर शरीर पर मलकर नहा डाले ।

अथवा सुहाग, चदन जल में पीसकर लगावे ।

फमल मस्मे और तिलकी चिकित्सा में

दवा मोर की बीट सिरके में पीसकर लगावे ।

अथवा घूना और सजी पानी में घोलकर मस्तों को जगजी पट

अथवा मजीठ, काल चन्दन, मसूर, लोच, लहसुन का कापूस
छानकर महीन करके रात को मुहासों पर लगा के सुबह धो डालें।

अथवा यह कि मुख को चमकाव चावल, जी, चने, मसूर और मटर का
आटा मल्येक इनमें से मुख को चमकाव करता है चबटना घनाकर काम में लावे।

औषधि कि स्त्री का मुख शुद्ध करने में अद्भुत गुण रखती है। और
विशेष करके अत्युत्तम है खापरे की घड़ी में छिद्र करके एक सोछे आठ माप

केसर और एक तोले आठ माप जामिनी को पानी में पीस कर उसमें डालि
कर उसी डुफड़े से छिद्र पद करके आठ सेर गौ के दूध में मदी आंच के

औटावे जब कि सब दूध शोषण होजाय दवा को खोपरे से निकाल कर पीस
कर चने के प्रमाण गोलिएं बनावे प्रातः काल एक गोली तांबूल में रख के

खावे इस को एक परम मित्रन परीक्षित कहा है और जो बघूर का गोंद कतीर
और निशास्ता, ईसवगोल, एलुमा वा कुलफा के बल में पीलाकर देखाटा

में मुख पर मले तो धूप से रंग काला न पड़े।
क्रमल इलाज कलफ अर्थात् भाई की चिकित्सा में

जो कि चहरे पर स्याह दाग पड़जाते हैं।
दवा कि भाई को दूर करे। तरबूज में छिद्र कर के उस में चावल म

कर सात दिवस रखे फिर चावल निकाल सुखा कर चबटना बनावे।
अथवा आंव की बिजली, जामन की गुठली पानी में पीसकर लगावे

अथवा राजयू के पत्ते, तुलसी की पत्तियां पीसकर मुख पर मले।
अथवा कुलीजन पीसकर लगाना पाँच ही दिन में त्वचा के भीतर स

स्याही को आकर्षण करके दूर करता है उचित है कि कई एक दिन लग
कर फिर चावल पीसकर मर्दन करे कि बाहर की त्वचा की रगत बराबर होजाय

अथवा चौराई की जल और वहनी जलाकर जल में पीसकर भा
पर मले और एक घड़ी धूप में बैठे सुखजाने के पश्चात् गरम जल से धो डालें

और संध्या नोन पीसकर मुख पर मले।
अथवा तुलसी की सूखी पत्तियां पीसकर मुख पर मले।

अथवा कलमी शोरा, दरताल मल्येक साढ़े तीन माप तीन भाग कर
एक भाग जल में पीलाकर मले एक घड़ी धूप में बैठकर पीछे गरम जल
से तीन दिन में भाई दूर होवे।

अथवा कागजी नीबू काटकर हल्दी औ कुट कर उसमें भरकर फिर नीबू के दोनों टुकड़ मिलाकर एक सप्ताह पर्यन्त रखे फिर निकालकर नरसक की पुरानी जड़ के संग पीस कर रातको लगाकर प्रातः काल गरम जल से धोवावे ।

अथवा कच्चा की भिंगी दूध में भिगो पीस कर मुख पर मले तो मुख प्रति वेगोमय होवे ।

अथवा शहद सिरके और नमक में मिलाकर मला करे ।

अथवा नीप की गुठली सिरके में पीस कर मले ।

अथवा माजु दो भाग, कट्या दो भाग कुट छान कर गौ के ताजा दूध मिलाकर प्रति दिन कई बार मुख पर मले अति शीघ्र गुण करे ।

अथवा पपोव की बीट जल में पीसकर प्रति दिन कई बार मुख पर मले ।

अथवा मसूर नीबू के रस में पीस कर लगावे ।

अथवा सुनी फिटकरी एक तोला भाठ मले, चूना दस मासे, नीबू के रस में खूब पीसकर मसूर के सदृश बनाकर भाई पर मले तो एक दो प्याह में दूर होवे और जब नीबू का रस सुखमाय तब और डालदे ।

फ्रमल छीप की चिकित्सा में

दवा छीपको गुण करे हल्दी, काले निच, भैंसके दूध में पीसकर मले ।

अथवा चपा के फूल तथा जाल व पत्तियां पानीमें पीसकर लगावे ।

अथवा नीबू के रस में पीसकर लगावे तो छीप और भाईको गुण करे ।

अथवा यह छीपको गुण दायक है चौलाई की जड़ और दह तिगां जला उन की मसूपानी में मिलाकर छीप पर लगावे और घड़ी भर धूप में बैठ परचात गरम जल से धो डाले ।

अथवा पवार के बीज औकुट कर दही के पानी में मिलाकर दो तीन स रख फिर शरीर पर मलकर नहा डाले ।

अथवा सुहग, चदन जल में पीसकर लगावे ।

फसल मसमे और तिलकी चिकित्सा में

दवा मोर की बीट सिरके में पीसकर लगावे ।

अथवा चूना और सज्जी पानी में चोलाकर मसमों को जगमों पेट से

रगड़ कर मले, दा तीन दिवस में आराम हो जायगा ।

अथवा धनिया पीसकर लगाना मस्से और तिलको आराम करता है ।

अथवा कुंदर के पत्ते शहद में मिलाकर लेप करे ।

अथवा कुंजफे के पत्ते मस्सों पर लगाना गुणदायक है ।

अथवा सीप जलाकर सिरके में मिलाकर मस्सों पर मलना मस्सों को दूर करता है ।

अथवा पीली हरताल, चूने की कली, मास कूटने के बट्टे से कूटकर मले ।

अथवा यह कि तोफेतुलमनीन वाले ने लिखा है कि सूखे चने चांद की पहिली मित्ती अर्थात् शुक्ल पक्ष की तौणको मस्सों की गणनानुसार एक एक चना एक २ मस्से से छुआकर सब को एक कपड़े में बांधकर उस कपड़े को हाथ में लेकर दोनों पाखों के बीच में हाथ निकाल कर उस पोढ़ली को इस प्रकार फेंके कि वह कंधे के ऊपर से पीढ़ की ओर जा गिरे एक मास में सब मस्से दूर हो जायग एक मित्र कहता था कि मेरी परीक्षा में आया है ।

फ़सल इलाज खारक अर्थात् बदकी चिकित्सा में

वर्चित है कि आदिमें उसके बैठाने की चिकित्सा करे क्योंकि जब एक फर फूट जाती है तो अति दुख देती है और कभी उसके चीरने की आवश्यकता होती है और उस समय पकाने वाली औषधियां काम में लाने की जरूरत पड़ती है ।

दवा कि बद को गुण करे केलाकी जड़ पनुण्य क सूत्र में पीसकर अर्द्धोष्ण कर कपड़े पर लगाके उस पर रख ।

अथवा पीपल के पत्ते सीधी ओर से गरम करके बांधे ।

अथवा बिसौड़े के पत्ते गरम करके बांधे ।

अथवा मरमा के पत्ते बांधे ।

अथवा समालु के पत्ते अर्द्धोष्ण बांधे ।

अथवा मेथी, इलियों, पीतकर बांधे ।

अथवा आवला, लिहसौड़े की छाल, इगली की छाल, पानी में पीसकर लेप पर ।

अथवा गारपाठा दो दूह करके थोड़ी रसौत और हलदी गरम करके बांधे ।

अथवा पद की आदि में चूना शहद में मिलाकर मरदम की तरह कपड़े

पर रखकर बाँधे ।

अथवा विनोले की टिकिया गरम करके बाँधे और किसी र ने चूने में अड़ की संक्रंदी मिलाकर बाँधना लिखा है ।

अथवा हड़का बककल रेंडी क तेल में भूनकर सिरके में छपीर कर लेप करना लिखा है ।

लेप कि बंद के तोड़ने को अति गुणदायी है नीलाघोषा अथवा भाग, हाथों, हस्तदी, राज प्रत्येक एक भाग गुगल दो भाग छड़ डई भाग परस्पर पीसकर लेप करे ।

अथवा चने का आटा, गुगल में मिला कर टिकिया बना कर बाँधे और ऊपर स नीम की पत्तियाँ गरम कर बाँधे और कभी नीम के पत्ते ही बाँधना काफी है ।

अथवा कुचला चदन की तरह घिसकर कालीमिर्च मिलाकर गुनगुना र लेप करे ।

अथवा राई जल में पीस कर लगाव ।

अथवा लग कि बंद के वास्ते अति परीक्षित है यदि बंद बड़ी हो सो चार दिन में छुसाइ प्याज को खूब कूट कर कन्या के मूत्र में लगावे जब खूब औठकर गलगावे टिकिया बनाकर बाँध ।

दवा कि कर्ण सोय और बखराइ को अत्यन्त गुणदायक है राई गरम जल में पीस कर छप कर ।

लेप कि बखराइ और उस सोय को जो कानों के पीछे होता है शीघ्र सुतादेता है तुलसी की पत्तियाँ उन की बराबर आड़ की कोंपल पीसकर लवण मिलाकर अच्छे से लेप करे ।

क्रमल इलाज औराम अर्थात् सोय की चिकित्सा में

विदित है कि सोय अवयव अर्थात् जोड़ों के फूटन और गाढ़ हान को कहते हैं कि जोड़ पर दोष पड़ने से और चतुर्दिशा रीढ़ अथवा जल विकार उत्पन्न होता है ।

चिकित्सा औषधियाँ दोष के गन्ताने वाली और रोकन और पचाने वाली और चहान वाली समयावृत्तार अर्थात् आदि में अधिकता, अ्युनता और समाप्ति को भेद प्रकार विचार कर काम में लाव और रक्तज्ञान के पदनात

घुलान वाले गरहम को घोंटे ।

गोली जदवार कि सोयों के गलाने में तनजबी खताई की प्रतिनिधि है जदवार, गेरु, रसीत, खसपी के बीज, लाल चदन, रेवतचीनी, मकोय, सफ़ेद कत्था, कालीजीरी बराबर कुछ छानकर गोलियाँ बनावे ताज़ा मकोह के पत्ते वा घनिये के अर्क में ।

अथवा सिरके वा गुलाब जल में पीसकर मर्दन करे जदवार अर्थात् निर्विषी एक दवा का नाम है जो खता दश में उत्पन्न होती है ।

मर्दन कि मुख के सोय को दूर करे रलदी, गेरु, सोंठ, विषमार बराबर कुछ छान कर गोलियाँ बनावे और मकोह के पत्तों के रस में पीस कर मले ।

औषधि कि पीड़ा को शान्ति करे और सोय को घुलावे अजवायन महीन कुछ छान कर नीबू के रस में औटाकर अर्द्धोष्ण सोय पर बांधे यदि नीबू का रस मांस न होसके तो सिरका काम में लावे ।

मर्दन कि सोय को गुण करे आंघ की बिजली जल में पीसकर गुण-गुनी कर लगावे खैरचन्नाख में किला है कि यह सोय को घुलाने में जर्दव के सुर्य है ।

अथवा अरठ की छाल, विसखपरे की छाल, सोंठ पीस कर अर्द्धोष्ण मर्दन करे और गुनगुने करके घतूरे के पत्ते बांधना सोय को घुलाता है ।

अथवा बकरी की मेंगनी मलना पुराने सोय को बंद करता है ।

दवा कि कखराई और पुरानी सूजन को जो जानके नीचे होती है दूर करे। किसी एक मसिद्ध वृक्ष है जिसको चावसूनी भी कहते हैं उसके पत्ते लेकर और उन की बराबर अरठ के पत्ते पीस कर थोड़ा लवण मिलाकर अर्द्धोष्ण कर बांधे ।

अथवा यह कि कखराई को गुण करे और इस औषधि को लाल दाख कहते हैं मुर्दासग, सज, लाल चदन, कषाषा, नीलाधोया कुछ छान कर जल में मिलाकर लेष करे ।

लेप कि पीड़ा के शान्ति करने और मल के पचाने को अति श्रेष्ठ है मूग, गोविषा और मसूर का आटा सष बराबर, मल और सिरके में घोलकर छापसी के समान पकाकर लेप करे ।

दवा कि पीड़ा और सोय को बंद करती है सिरस के पत्ते मसिदिन

फेई धार गरम करके बांधे ।

अथवा गौमय वा गऊ का गोबर सोय पर बांधे ।

अथवा पनिरा मनुष्य के मूत्र में पीसकर छेप करे ।

अथवा कायफल एक तोला आठ माशे, सौंठ तीन तोला, चार माशे, कपी तीन तोला चार माशे, सिरके में पीसकर गरम करके लगावे ।

अथवा इन्द्रायन की जड़ सिरके में पीस कर अर्द्धोष्ण लगावे ।

अथवा ईसवगोक्ष जौकुट करके छेप करे ।

अथवा पीपल की छाल पीसकर लगावे ।

अथवा अब्बासी के पत्ते गरम कर बांधे ।

मर्दन कि सोय को पका तोड़ कर मल को निकाळे रसासन के बीज पीसकर अर्द्धोष्ण मर्दन करे ।

अथवा कगनी के पत्त, इमली, चावल बराबर लेकर औटावे और पीस कर फोड पर लगावे एक ही दिन में पकादे ।

अथवा इमली के बीज औठाकर बांध यह फोडों के पकाने और फोडने में अत्युत्कृष्ट है ।

अथवा सख के पत्ते, मूगकी दाल, कपोत की बीज पीसकर अर्द्धोष्ण फाड़ पर बांधे ।

लेप कि फोड़े को अति गुणदायक है और दोष को पचाकर निकालता है थोड़ी तवाछू खड़ के जल में औटाकर लेप करे ।

मर्दन कि फाड़े को गुण करे जिस दिन पीड़ा निकले चूना तेलमें मिला पर लगावे बढ़ने न देगा ।

दवा उस फोड़ के वास्ते जिस में पीड़ा अधिक हो और गरम न हो इस से अधिक फोड़ दवा नरम करने वाली नहीं है सिरस के बीज, बैनफल, जगल मत्स्येक नौ माशे, रेवतपीपी एक तोला, प्याज और नीम के पत्ते मत्स्येक एक तोला, एलुआ छ माशे, गुग्गुलु, अब्बासी के बीज मत्स्येक सात माशे, मैथी छ माश पीसकर सीधे मदिरा में मिलाकर अर्द्धोष्ण लेप करे ।

अथवा कधुतर के परंजलाकर उनकी राख तेलमें मिलाकर मर्दन करे फाड़ को पकाकर तोड़गा ।

रिफादह अथात् पट्टी, मेंदा लकड़ी सात सांशे कूट जानकर कन्या के मूत्र में आटा पीसकर कपड़े पर रख कर पट्टी की तरह बांधे ।

दवा कि घाव को खोले हन्दी जलाकर उस की भस्म कढ़वे तेल में मिलाकर घाव पर रखे ।

लेप कि फाड़ को तोड़े साबन, रेवतचीनी, गूगल, मैनफल पीसकर वस्त्र पर रख कर अर्द्धोष्ण बांधे ।

दवा कि घाव को गुण करे लिसौड़े के पत्ते, गोदी के पत्ते, जलाकर उनकी राख घी में मिलाकर घाव पर बांधे ।

लेप कि फाड़ के फोड़ों को गुण करे सोंठ, रेंडी दोनों जल में महीन पीस कर अर्द्धोष्ण लेप करे और उस पर अरब के पत्ते बांधे ।

दवा कि पांय के छालों को जो रास्ता चलने से पड़ताते हैं गुण करे चाबकपका के दाघि में मिलाकर लेप करे तुरन्त आराम होवे ।

दवा कि भगदर के सोय को गुण करे अहूसा के पत्त पीसकर थोड़ा लवण मिला कर बांधे ।

अथवा कराळ के पत्त और अरब गरम कर बांध सोय दूर होवे ।

अथवा यह कि रीह की पीड़ा को शान्ति करे अक्राकरा कायफल, खुरासानी अजवायन, सोंठ, नरकाचूर बराबर लेकर रेंडी तथा तिल के तेल में मिलाकर मर्दन करे ।

अथवा महुए के पत्तों पर इस तेल को लगाकर अर्द्धोष्ण बांधे ।

मर्दन कि उस सूजन को गुण करे जो भिलावे के घूस्त्र से होती है आंघा हलदी, साठीचाबक, दूब, घस जल में पीसकर सोय पर मले और ऐसे ही चिंगोली खाना मिलाए के सोय को गुण दायक है । और गूजर की छात पानी में पीस कर लेप करे या भिलावे के घूस्त्र से उत्पन्न हुआ सोय दूर होवे ।

अथवा सुर्दासग पीसकर लगावे ।

अथवा भीठतेल मले उसी समय सोय दूर होनाय ।

लेप कि उस सोय को दूर करे जो भिलाए से उत्पन्न हो वेदकी लकड़ी पीस कर लेप करे ।

अथवा यह कि रसौली को गुण करे करोंदे के पत्ते घों से चुपड़ कर एक सप्ताह पर्यन्त रसौली पर धाँपे ।

फसल इलाज सचूर अर्थात् फुनसियों की चिकित्सा में

दवा कि फुनसियों को गुण करे सिरस की छाज जल में पीस के लगावे। गोली कि फुनसियों के बधिर विकार को और शरीर फूड निकलने को गुण दायक है । गेरु, रसौत, काजी इष्ट, मुर्दासंग, कत्या, छाज चन्दन परापर छूट छान कर गोलियाँ बनावे और एक गोली मकोष के अर्क में पीस कर लेप करे ।

गोली कि सष प्रकार की फुनसियों को दूर करे । काषली इष्ट का वकल, भग, चूने की कलई, सफेद कत्या एक २ भाग नीलायोया आधा भाग पानी में पीसकर गोलियाँ बनावे एक गोली घों में मिलाकर लगावे ।

अथवा कत्या, मुर्दासंग, मुना नीलायोया, बेलागिरी की मिंगी, परापर पीस कर गोलियाँ बनावे और धाँधित समय पर पानी में पीस कर लगावे यह गोलियाँ बस फोड़े को भी गुण दायक हैं जिसे औरंगजेबी कहते हैं अर्थात् यह फोड़ा जिसमें छिद्र होते हैं ।

लेप कि उन फुनसियों को गुण करे जिन में जलान हो गेरु, माजु, कत्या सिरके में पीसकर लेप करे ।

गोली सफेद कत्या, मुना नीलायोया, जली सुपारी, मुर्दासंग, काषली इष्ट का वकल, रेवत छाज परापर जल में पीसकर गोलियाँ बनावे ।

लेप कि कठमाळा जो गर्दन के नीचे होती है गुणदायक है । सन के बीज, मूली के बीज, सहजन के बीज, जौ, सरसों, अलसी परापर छूट छान कर गौ दुग्ध में पीसकर लेप करे ।

मर्दन कि षटों और दाढ़ को गुण करे अथचूर पानी में पीसकर थोड़ा कषण मिला कर मखे ।

मर्दन उन फुनसियों के वास्ते जो मक्खी मखने से होती हैं मधुवा जल में पीस कर मखे ।

अथवा अथचूर जल में पीस कर लगावे ।

अथवा सफेद जीरा, सोठ जल में पीस कर लगावे ।

अथवा केंचुआ जल में पीस कर लगावे । जहर और दाने दूर होवें यदि केंचुआ प्राप्त नहो तो उस की मिट्टी का लेप करे ।

अथवा चूना नीषू के रस में पीसकर मले और यदि नीषू न मिले तो तेल और चिरोमी में पीसकर मर्दन करे ।

अथवा रक्तचदन, श्वेतचदन, मुर्दासग पीस कर लगावे ।

अथवा खल, हलदी जल में पीस कर मर्दन करे तो मकड़ी का विष दूर होवे ।

फसल इलाज शकाक अतराफ़ यानी हाथ पावों के फटजाने की चिकित्सा में

कारण इसका खुश्की है ।

दवा कि हाथ पाव फटजाने को गुण करे । मही जल में पीसकर लगावे और चार घड़ी पश्चात् दूर कर रेंडी का तेल मले ।

दवा एही फटभाय तो बर्गद का दूध भरदे ।

अथवा घघूर का गोंद पीस कर मरे ।

अथवा लाहौरी साबुन पानी में पीस कर रात को सोते समय घावों में भरदे मातःकाल घोडाले ।

गुण जानना चाहिये कि जो दाने, खुश्की से हथेली पर हों उनको छानन करते हैं और पांव के घावों को अकौसा करते हैं । और औषधियां अकौसे की चिकित्सा में वर्णन हो चुकी हैं ।

अफ़ारा कि छानन को गुण करे । घघूर की जाल, आमकी छाल पानी में छोटावे और हाडी का मुख दब घद करे कि घुआ बाहर न जाने पावे फिर हांडी को उतारकर हथेली और सलवों को अफारा दे और पश्चात् माखन ब घी मले

अथवा छोटी कटेरी जल पत्ते और रहनी सहित टुक़र कर पानी के साथ हांडी में डालकर ढक दे फिर रोगी के हाथ, पांव घी से छुपड़कर उसका घुआ देने और नय शीतल होने लगे जल से हाथ पांव धो डाले ।

दवा कि छानन को गुण करती है योडा नौसादर पीठे तेल में पीसकर मले ।

चिकित्सा हाथ पांव निष्काम होजाने के वास्ते कि सर्दी से स्याह हों

जाते हैं मयम हाथ पावों को गरम जल में रख पीछे अर्द्धोष्ण तल मले ।

क्रसल इलाज कसरत कमल

अर्थात् अधिक जू उत्पन्न होजाने की चिकित्सा में, इसका कारण शरीर में मैल की अधिकता है ।

चिकित्सा शरीर को पहले घिरेचक द्वारा शुद्ध करे, किष्ठापुलखवास में लिखा है कि चाँदनीमें बैठकर पाखों को साफ करना विशेष कर जू उत्पन्न करता है ।

औपधि कि लू को दूर करे । नाभ का पिचा सिर में डाले ।

अथवा पारा, मूली के पत्ते या पानों के रसमें मिलाकर उसमें धागा भिगोकर सिरमें रखे तो दो तीन दिवस में सब जू मरजाय ।

क्रसल इलाज सञ्जसा

अर्थात् बफाकी चिकित्सा में यह रोग यह है कि सिर पर से मूलीके सहस्र झड़ा करे जिसे फ्यास भी कहते हैं इसकी चिकित्सा सिरमें तेल डालना है ।

दवा जवासा कलौरी के मूत्र में पीसकर सिरमें डाले ।

अथवा चूने के चून को एक घड़ी सिरके में डाल दे परचाय सिरके को शहद में मिलाकर सिर पर मले ।

अथवा नीबू के रसमें घूरा मिलाकर सिरमें डाले और दो पहर परचाय सिरको घोंडाळे ।

अथवा सामन से सिर घोना जू और बफा को गुण करता है ।

अथवा जुकदर के पत्ते और बटुहे रसमें क्षण मिलाकर सिर से मले तो बफा और जू दूर होते ।

क्रसल इलाज अमराज अजाफ्रीर यानी नखों के रोगों की चिकित्सा में

औपधि नख के दूजाने को अनार की पाचिया पीसकर बांधे ।

अथवा नीळा वस्त्र बांधकर उस पर विद्याप किया करे ।

चिकित्सा नख फटजाने की, एक भाग सिरफा, दो भाग तिखके तेल में जोटाकर थोड़ा सरेस उसमें घालकर लगावे जब मरहम के सहस्र हो भाप पढ़ने करे ।

अथवा केंचुआ जल में पीस कर लगावे । जहर और दाने दूर होंगे यदि केंचुआ प्राप्त न हो तो उस की मिट्टी का लेप करे ।

अथवा चूना नीबू के रस में पीसकर मले और यदि नीबू न मिले तो बेल और चिरोंमी में पीसकर मर्दन करे ।

अथवा रक्तचदन, श्वेतचदन, मुर्दासग पीस कर लगावे ।

अथवा खल, हलदी जल में पीस कर मर्दन करे तो मकड़ी का विष दूर होंगे ।

फसल इलाज शकाक अतराफ़ यानी हाथ पावों के फटजाने की चिकित्सा में

कारण इसका खुरकी है ।

दवा कि हाथ पांव फटजाने को गुण करे । महदी जल में पीसकर लगावे और चार घड़ी पश्चात् दूर कर रेंडी का तेल मके ।

दवा एही फटजाय तो बर्गद का दूध भरदे ।

अथवा बघूर का गोद पीस कर भरे ।

अथवा लाहौरी साबुन पानी में पीस कर रात को सोवे समय घावों में भरदे प्रातःकाल धोवाले ।

गुण जानना चाहिये कि जो दाने, खुरकी से हथेली पर हों उनको छानन करते हैं और पांव के घावों को अकौता करते हैं । और औषधियां अकौते की चिकित्सा में वर्णन हो चुकी हैं ।

बफ़ारा कि छानन को गुण करे । बघूर की छाल, आमकी छाल पानी में छोटावे और हांडी का मुख दृढ़ बंद करे कि घुआ बाहर न जाने पावे फिर हांडी को उतारकर हथेली और तलवों को बफ़ारा दे और पश्चात् साबुन धो घी मले

अथवा खोबी कठेरी जड़ पत्ते और रहनी सहित दूध २ कर पानी के साथ हांडी में डालकर ढक दे फिर रोगी के हाथ पांव धी से छुपड़कर उसका घुआ देवे और जब शीतल होने लगे जल से हाथ पांव धो डाले ।

दवा कि छानन को गुण करती है थोड़ा नौसादर मीठे तेल में पीसकर मले ।

चिकित्सा हाथ पांव निष्काम होजाने के वास्ते कि सर्दी से रक्षा हो

जाते हैं प्रथम हाथ पाँवों को गरम जल में रख पीछे अर्धोप्युक्त तल मलें ।

फ़सल हलाज कसरत कमल

अर्थात् अधिक जल उत्पन्न होगाने की चिकित्सा में, इसका कारण शरीर में मेल की अधिकता है ।

चिकित्सा शरीर को पहले धिरेचक द्वारा शुद्ध करे, कितापुताखनास में लिखा है कि चांदनी में बैठकर बाओं को साफ़ करना विशेष कर जल उत्पन्न करता है ।

औषधि कि जल को दूर करे । नाभ का पिछा सिर में टाके ।

अथवा पारा, मूली के पचे या पानों के रसमें मिलाकर उसमें पागालिगोकर सिरमें रखे तो दो तीन दिवस में सब जल मरनाय ।

फ़सल हलाज सबूसा

अर्थात् बफ़ा की चिकित्सा में यह रोग यह है कि सिर पर से मूसी के सदृश भड़का कर जिसे प्यास भी कहते हैं इसकी चिकित्सा सिरमें तैल टाकना है ।

दवा नवासा कलौरी के मूत्र में पीसकर सिरमें टाके ।

अथवा चूने के चून को एक घड़ी सिरके में टाक दे पश्चात् सिरके को शहद में मिलाकर सिर पर मले ।

अथवा नीबू के रसमें घृा मिलाकर सिरमें टाके और दो परर पश्चात् सिरको घोंटावे ।

अथवा साबन से सिर घोंना जल और बफ़ा को गुण करता है ।

अथवा चुकंदर के पचे और नरके रसमें लवण मिलाकर सिर से मले तो बफ़ा और जल दूर होवें ।

फ़सल हलाज अमराज अजाफ़ीर यानी नखों के रोगों की चिकित्सा में

औषधि नख के दूधजाने को अनार की पत्तियाँ पीसकर पिये ।

अथवा नीला पल्ल बाँधकर उस पर पिछाव किया करे ।

चिकित्सा नख फटजाने की, एक भाग सिरका, दो भाग सिद्ध तैल में चौटाकर पोड़ा सरेस उसमें टाककर लगावे जब मरहम के सदृश हो जाय पदेन करे ।

फसल इलाज हस्वह व जदरी की चिकित्सा में

मकट हो कि हस्वह वह छोटी शीतला है जिसे हिन्दी में जसरा बोलते हैं। और जदरी वह है कि सभी फुनसियाँ हों उसके शुभ भेद का मोलिया कहते हैं उसका कारण दूध वा दूसरी तरह के पलों का जमा होना है फिर उनके उपन-ने से होता है उचित है कि जब शीतला का समय आवे तो भारतवर्ष में प्रायः चैत्र का महीना है दूध पीने वाले बालक और उसके दूध पिलाने वाली को बधिर साफ करने वाली औषधियाँ जैसे पित्तबापड़ा और सिरफोके का आसव खूपफला, शर्बत उष्ण, सादा काहू के बीजों का शीरा और ईसर्गोल का छुआव इत्यादि कभी २ पिलाया करे और जिस बालक की अवस्था दो वर्ष स कम हो शीतला फाल में शीतला निकलने से पूर्व जोक लगवाना उचित है और सम ऋतु में चिकनाई मात तथा मिष्टानादि से बचते रहें और जब शीतला निकल आवे फिर उष्ण और शीतल वस्तु न दें और भारतवर्ष में जब शीतला निकलती है तब गरम वस्तुओं का सेवन करते हैं और आहार में बने शुद्ध दते हैं खर काल में शीतला निकलने के समय केवल खिचड़ी वा भूग की दाल सेवन करे और मसूर की दाल भी गुणदायक है और शीतला के कई भेद बुरे हैं उन में आराम कम होता है उन भेदों में से फाली और ऊदी है और स्वेत तथा न्यून अत्युत्तम है। जब कई एक सहज औषधियाँ लिखवा हूँ जो शीतला निकलने के पहले देवे तो आशा है कि कभी न निकले और जो निकले तो ईश्वर कृपा से कम निकले।

दवा शकायक को शर्बत पिलाना पन्धे को शीतला नहीं निकलने देता कि उसका नुमखा मिरगी रोग में लिखा गया है।

दवा शीतला को दूर करने और कम निकलने के वास्ते जब शीतला निकलने का समय हो जो बालक दूध पीता हो चार बोलें खोपरा उस के दूध पिलाने वाली को एक सप्ताह पर्यन्त खिलावे और जो बालक दो वर्ष का हो वो दो तोला खोपरा और जो तीन वर्ष का हो तो तीन तोला खोपरा एक सप्ताह पर्यन्त बालक के दूध पिलाने वाली को खिलावे अवश्य शीतला कम निकलेगी यह नुसखा इंग्लैण्ड वासी डाक्टर का मतलाया है।

दवा कि यदि शीतला ऋतु में खाप खासला न निकल और जो भी तो कम। कदराण कि हिन्दू लोग उसकी याज्ञा बनाते हैं शीसर को पिछावे।

अथवा घाड़ी का दूध पिखावे ।

अथवा तीन बार सेमल के बीज निगले तो शीतला बहुत कम निकले ।

अथवा नेत्रवाला शीतला निकलने के पहले नीपू के रस के सग स्वाय शीतला कम निकलेगी हिन्दी औपधि कि बच्चोंकी शीतला को गुण करे दिल्ली मुकरदी जौ कुट करके अनारदागा बराबर प्रकृति के अनुसार जलमें भौटाकर पिचपापड़े के अर्क के सग पिखाना चाहिये ।

मर्दन कि शीतला की फुसियों को दूर करता है पीसक की छाल, सिरस की छाल, त्रिहसौड़े की छाल, गूतर की छाल कुट जानकर गौके घृत में मिला कर फुसियों पर मल और जो जलन के सग हों अल्पन्त गुण करे ।

उबटना कि शीतला के दागों को दूर करे आबाहकदी, सरकदेकी जड़ जली कौड़ी बराबर कुटजानकर घेस के दूध में मिलाकर रातको मुख पर लगावे मात फाळ भूसी भिगोये हुए जल से धो डाले ।

उबटना कि रग को लाल करे और चमकावे दिल्ली मधूर, जर्बूके के बीजों की दिंगी बराबर पीसकर उबटना बनावे ।

अथवा नागरमोया ओटाकर उससे मुख घोषा करे ।

फसल वालों की औपधि के व्याख्यान में

तुलसीधर और तशवीरुशर अर्थात् वालों को पढ़ाना और स्पाह करना दवा कि वालों को पढ़ावे नीम के पत्ते और पैर के पत्ते पीसकर म्हाते समय सिरमें डाले और बार घड़ी परचात बोडाते ।

दवा कि वालों को लबा करे सीताफल के बीज घेर के पत्ते परापर पीस कर तीन बोले चार माश वालों की जड़में मले और चार घड़ी परचात अर्द्धांज जल से धो डाले ।

अथवा फसौली पानी में पीसकर उससे बाळ घोषे और हत्ती मफार सात दिवस तक बोधे ।

अथवा आबल नीपू के रस में पीसकर वालों की जड़ में मले ।

अथवा करीब की जड़ पीस कर वालों में मले तो बाळ लपे होनापगे और बफा दूर होनायगी ।

तेल कि वालों को स्पाह करे । एक सेर भीठे तेल में गेदे की परब्रिया

फसल इलाज हस्वह व जदरी की चिकित्सा में

मकट हो कि हस्वह वह छोटी शीथला है जिसे हिन्दी में खसरा बोलते हैं। और जदरी वह है कि बड़ी फुनसियाँ हों उसके शुभ भेद का योतिया कहते हैं उसका कारण दूध वा दूसरी तरह के पलों का जमा होना है फिर उनके चक्कने से होता है उचित है कि जब शीतला का समय आवे तो भारतवर्ष में प्रायः चैत का महीना है दूध पीने वाले बालक और उसके दूध पिलाने वाली को बधिर साफ करने वाली औपन्नियाँ जैसे पिच्छापड़ा और सिरफोके का आसब खूपकला, शर्बत जभाव, सादा काहू के बीजों का शीरा और, ईसबगोल का छुआब इत्यादि कभी २ पिलाया करे और जिस बालक की अवस्था दो वर्ष से कम हो शीतला काल में शीतला निकलने से पूर्व जोक लगवाना उचित है और कम ऋतु में चिकनाई मात तथा मिष्टानादि से बचते रहें और जब शीतला निकल आवे फिर वण्ण और शीतल वस्तु न दें और भारतवर्ष में जब शीतला निकलती है तब गरम वस्तुओं का सेवन करते हैं और आहार में चन गुद दते हैं जबर काल में शीतला निकलने के समय केवल खिचड़ी वा मूग की दाल सेवन करे और मसूर की दाल भी गुणदायक है और शीतला के कई भेद बुरे हैं उन में आराम कम होता है उन भेदों में से फाली और ऊदी है और स्वेत तथा न्यून अत्युत्तम है। जब कई एक सहज औपधियाँ लिखता हूँ जो शीतला निकलने के पहले दबे तो आशा है कि कभी न निकले और जो निकले तो ईश्वर कृपा से कम निकले।

दवा शकायक का शर्बत पिलाना बच्चे को शीतला नहीं निकलने देता कि उसका नुमखा मिरगी रोग में लिखा गया है।

दवा शीतला को दूर करने और कम निकलने के वास्ते जब शीतला निकलने का समय हो जो बालक दूध पीता हो चार तोले खोपरा उस के दूध पिलाने वाली को एक सप्ताह पर्यन्त खिछावे और जो बालक दो वर्ष का हो तो दो तोला खोपरा और जो तीन वर्ष का हो तो, तीन तोला खोपरा एक सप्ताह पर्यन्त बालक के दूध पिलाने वाली को खिछावे अवश्य शीतला कम निकलेगी यह नुमखा इग्लैण्ड वर्सी टावर का बतलाया है।

दवा कि यदि शीतला ऋतु में खाप शीतला न निकले और जो निकले भी तो कम। ऊदराज कि हिन्दू लोग उसकी माला बनाते हैं पीसकर बालक को पिछावे।

अथवा घाड़ी का दूध पिलावे ।

अथवा तीन चार सेमल के बीज निगले तो शीतला बहुत कम निकले ।

अथवा नेत्रवाता शीतला निकलने के पहले मीथू के रस के सग स्वाद्य शीतला कम निकलेगी हिन्दी औषधि कि बच्चोंकी शीतला को गुण्य करे दिल्ली मुकद्दी जी कुट करके अनारदाना बराबर प्रकृति के अनुसार जगमें औटाकर पित्तपापड़े के अर्क के सग पिछाना चाहिये ।

मर्दन कि शीतला की फुसियों को दूर करता है पीसकर की छाल, सिरस की छाल, लिहसौड़े की छाल, गुत्तर की छाल कूट छानकर गौके घृत में मिला कर फुसियों पर मल और जो जलन के सग हो अत्यन्त गुण्य करे ।

उबटना कि शीतला के दागों को दूर करे आवाहलदी, सरकटेकी जड़ जली कौड़ी बराबर कूटछानकर भेस के दूध में मिलाकर रातको मुख पर लगावे मात काक यूसी मिगाये हुए जल से धो डाले ।

उबटना कि रग को लाल करे और चमकावे दिल्ली मसूर, खर्बूजे के बीजों की मिंगी बराबर पीसकर उबटना बनावे ।

अथवा नागरमोथा औटाकर उससे मुख पोया करे ।

फुसल बालों की औषधि के व्याख्यान में

तुल्यशर और तशवीदुशर अर्थात् बालों को बढ़ाना और स्वाह करना दवा कि बालों को बढ़ावे नीम के पत्ते और पैर के पत्ते पीसकर न्हाते समय सिरमें डाले और चार घड़ी परचात थोडाले ।

दवा कि बालों को लम्बा करे सीताफल के बीज बेर के पत्ते बराबर पीस कर तीन सौले चार माशे बालों की जड़में मले और चार घड़ी परचात अर्द्धोष्ण जल से धो डाले ।

अथवा फलोंकी पानी में पीसकर उससे बाल धोवे और इसी प्रकार सात दिवस तक धोवे ।

अथवा आवले नीपू के रस में पीसकर बालों की जड़ में मले ।

अथवा करील की जड़ पीस कर बालों में मले तो बाल लम्बे होनायग और बफा दूर होनायगी ।

तेल कि बालों को स्वाह करे । एक सेर पीठे तेल में गेंदे की परावियां

फसल इलाज हस्वह व जदरी की चिकित्सा में

प्रकट हो कि हस्वह वह छोटी शीतला है जिसे हिन्दी में खसरा बोलते हैं। और जदरी वह है कि बड़ी फुनसियाँ हों उसके, शुभ भेद का मोतिया कहते हैं उसका कारण दूध वा दूसरी तरह के पत्तों का जमा होना है फिर उनके चक्कने से होता है उचित है कि जब शीतला का समय आवे तो भारतवर्ष में प्रायः घैस का महीना है दूध पीने वाले बालक और उसके दूध पिलाने वाली को बधिर साफ करने वाली औपधियाँ जैसे पिच्छापत्र और सिरफोके का आसब खूबफला, शर्बत उश्माव, सादा काहू के बीजों का खीरा और ईसबगोल का छुआव इत्यादि कभी २ पिलाया करे और जिस बालक की अवस्था दो वर्ष से कम हो शीतला काल में शीतला निकलने से पूर्व नौक लगवाना उचित है और उस ऋतु में चिकनाई मात तथा मिष्टानादि से बचते रहें और जब शीतला निकल आवे फिर उष्ण और शीतल वस्तु न दें और भारतवर्ष में जब शीतला निकलती है तब गरम वस्तुओं का सेवन करते हैं और आहार में चने गुड़ देते हैं उधर काल में शीतला निकलने के समय केवल खिचड़ी वा मूग की दाल सेवन करे और मसूर की दाल भी गुणदायक है और शीतला के कई भेद घुरे हैं उन में आराम कम होता है उन भेदों में से काली और ऊदी है और स्वेत तथा न्यून अत्युत्तम है। जब कई एक सहज औपधियाँ लिखता हूँ जो शीतला निकलने के पहले देखे तो आशा है कि कभी न निकले और जो निकले तो ईश्वर कृपा से कम निकले।

दवा शकायक को शर्बत पिलाना बच्चे को शीतला नहीं निकलने देना कि उसका जुसखा मिरगी रोग में लिखा गया है।

दवा शीतला को दूर करने और कम निकलने के वास्ते जब शीतला निकलने का समय हो जो बालक दूध पीता हो चार तोला खोपरा उस के दूध पिलाने वाली को एक सप्ताह पर्यन्त खिलावे और जो बालक दो वर्ष का हो तो दो तोला खोपरा और जो तीन वर्ष का हो तो तीन तोला खोपरा एक सप्ताह पर्यन्त बालक के दूध पिलाने वाली को खिलावे अथवा शीतला कम निकलेगी यह जुसखा इगलेंड वासी डाक्टर का बसलाया है।

दवा कि यदि शीतला ऋतु में खाय शीतला न निकले और जो निकले भी तो कम। ऊदराज कि हिन्दू लोग उसकी माता पनासे हैं पीसकर बालक को खिलावे।

अथवा घाड़ी का दूध पितावे ।

अथवा तीन चार सेमल के बीज निगले तो शीतला बहुत कम निकले ।

अथवा मेमवाला शीतला निकलने के पक्षे नीबू के रस के सग खाय शीतला कम निकलेगी हिन्दी औपधि कि बच्चोंकी शीतला को गुण करे छिली मुहरी जौ कुव करके अनारदाना बराबर मकृषि के अनुसार जलमें ओटाकर पिचपापड़े के अर्क के सग पिछाना चाहिये ।

मर्दन कि शीतला की फुसियों को दूर करताहै पीपल की छाल, सिरस की छाल, रिहसौड़े की छाल, गूलर की छाल कूट छानकर गौके घृत में मिला कर फुसियों पर मल और जो जलन के सग हों अत्यन्त गुण करे ।

उबटना कि शीतला के दागों को दूर करे आबाहलदी, सरकदेकी जड़ जली कौड़ी बराबर कूटछानकर भैर के दूध में मिलाकर रातको मुख पर लगावे प्रात काळ भूसी मिगोये हुए जल से धो डाले ।

उबटना कि रग को लाल करे और चमकावे छिली मसूर, खर्बूजे के बीजों की मिगी बराबर पीसकर उबटना बनावे ।

अथवा नागरमोथा ओटाकर उससे मुख घोवा करे ।

फसल वालों की औपधि के व्याख्यान में

तुलसीअर और तशबीदुशअर अर्गात् वालों को पढ़ाना और स्पाह करना दवा कि वालों को पढ़ावे नीम के पत्ते और पैर के पत्त पीसकर न्हाते समय सिरमें डाल और चार घड़ी पश्चात् धोडाले ।

दवा कि वालों को लया करे सीताफल के बीज बेर के पत्ते बराबर पीस कर तीन तोले चार माशे वालों की जड़में मले और चार घड़ी पश्चात् अर्द्धोष्ण जल से धो डाले ।

अथवा कलौंजी पानी में पीसकर उससे बाक घोवे और इसी प्रकार साव दिवस तक घोवे ।

अथवा आपल नीबू के रस में पीसकर वालों की जड़ में मले ।

अथवा करीस की जड़ पीस कर वालों में मले तो बाक लपे होनापगे और बका दूर होनायगी ।

तेल कि वालों को स्पाह करे । एक सेर मीठे तेल में गेंदे की अर्द्धियां

काटकर देवाची में औटावे फिर उसे जमीन में दबा दे एक मास पश्चात् निकाल कर उस तेल को बालों में मला करे ।

तेल कि बालों की स्याही की रत्ता करे और स्वेत्त न होने दे हरा भाऊ की जड़ खूब कूट कर चतने ही तिल के तेल में दोनों की बराबर जल डाल कर औटावे जब सब पानी और आधा तेल जलजाय लेकर गाढ़ा २ बालों की जड़ में लगावे थोड़े ही दिनों में सफेद बाल स्याह हो जायंगे और कभी सफेद नहोंगे ।

मक्खी का तेल कि बालों को स्याह रखे सौ नग मक्खियाँ तिल के तेल में डाल कर बात्नीस दिवस धूप में रखे पश्चात् शुद्ध कर के बालों में लगाया करे ।

रोशान कि बालों की स्याही और बढ़ने के वास्ते सर्व के पत्ते एक भाग आंवले दो भाग जल में औटावे जब जलजाय तिल का तेल मिलाकर औटावे कि पानी जल कर तेल मात्र रहजाये फोक सहित रगड़ कर बालों की जड़ में मले ।

अथवा मांगरे का रस पीठे तेल में औटावे जब रस जल कर तेल मात्र रह जाय प्रति दिन बालों में मले ।

अथवा स्नान के समय स्याह तिल की पत्तियों से बालों को घावे तो बाल लंबे और कोमल होंगे ।

अथवा कुसुम के बीज और कुसुम के पड़ का बकल दोनों बराबर जला कर भस्म करे और चमेला के तेल में मिला कर परहम के सदृश कर के बालों की जड़ में मले तो लंबे और कोमल हो जायंगे ।

अथवा हसरान जला कर सिर पर लगावे, बालों को नगिरने दे ।

ओषधि कि बालों को नगिरने दे हाथी दाँत की भस्म रसोत मिला कर लगावे ।

अथवा करीला की कोंपल बिना जल पीस कर मले दो तीन दिन में पाछ निकल आवें ।

अथवा मांगरा पीस कर मले ।

अथवा जुकदर के पत्तों का रस छ तोले आठ माशे कड़वे तेल में मिला कर जला के काम लावे ।

अथवा घोड़े वगैरे का घुम जला कर उस की भस्म कड़वे तेल में मिला

कर मल और सँग जलकर मलना भी गुण दायक है ।

अथवा गणक पानी में पीस कर और शहद मिलाकर मले ।

अथवा ओषला कुकुर के रस में पीसकर मले ।

अथवा थोड़ा दही तब के बिना कलई के पात्र में डालकर पैसे से इतना रगड़े कि रग हरा होजाय फिर बालों से मले ।

अथवा यह कि गिरे बालों को सगात्तावे पहले भाँवले के जल से जहाँ से बाल चढ़गये हों थोड़ाछे कई एक घाव इलाके २ करदे कि बधिर निकल आये पश्चात् नौसादर महीन पीसकर माखन में मिला कर मर्दन करे एक सप्ताह में बाल निकल आवें और वैद्यों का विश्वास है कि कुकुर और हाथी दाँतका चूरा कुक्कुट की चर्बी में मिलाकर भिस् स्थान पर लगावे बाल निकल आवें ।

फसल उन औषधियों के ध्यान में जो बालों को निकलने से रोकें ।

दवा बैल का पित्त मुर्ग के अंडे की सफेदी में मिलाकर बाल चखाड़ कर मले तो फिर कभी उस जगह बाल न जमें ।

अथवा जोंक को लवण में लपेट कर सुखा कर बकरी के मूत्र में पीस कर बाल चखाड़ कर मले वहाँ फिर कभी बाल न जमें ।

अथवा ईसगोख का लुभाव सिरके में मिलाकर बाल चखाड़ कर मले और जो थोड़ा समुद्रफेन मिलावे तो अत्यंत गुण करता है ।

अथवा बकरी की मँगनी, राई महीन पीसकर बाल चखाड़ कर मले ।

अथवा रेंडी का गूदा पीस कर बाल चखाड़ कर मले ।

अथवा कुचला पानी में पीसकर बाल चखाड़ कर मले ।

अथवा जोंक सिरके में गलाकर बाल चखाड़ कर मले ।

अथवा चींटी के अंडे बाल चखाड़ कर मले ।

अथवा साँप की काँपली बाल चखाड़ कर लगावे ।

अथवा चमगादड़ का रक्त और कुक्कुट का पित्त तथा खर्गोश का बधिर और कछुए का पित्त तथा तीतर की चर्बी मत्पेक बालों को चखाड़ कर मले बाल नहीं निकलने दता ।

घराघर सफेद बूरा मिलाकर चाशनी करे माथा प्रकृति के अनुसार देवे ।

टिकिया बंसलोचन कि पिचज्वर में विरेचक के प्रवात देनी चावित है वशलोचन, गुलाब के फूल मल्येक पांच भाग, काहू के बीज, कासनी के बीज तर्बूज के बीजों की मिंगी, खीरे ककड़ी के बीज मल्येक तीन भाग, नीलोफर के फूल दो भाग कूट छानकर टिकिया घनावे माथा सात मासे ।

दवा पिचज्वर को गुणदायक है काहू के बीज, कुलफे के बीज सात २ मासे शीरा निकालकर, इपली का नितरा हुआ जल दो तोले मिलाकर एक तोले ईसबगोल छिड़ककर पिये ।

अथवा पिचपापड़े के पत्तों का शीरा, कासनी के बीज मल्येक सात मासे पानी में पीसकर दो तोले शिकनवीन सादा मिलाकर पिये ।

शर्वत नीबू कि पिचज्वर का नाश करे विदग्ध दोपों तथा कधिरकी जलन को बंद करता है चौदह तोले सवा दो मासे बूरे की चाशनी करके दस तोले नीबू का रस छानकर मिलाकर चाशनी होजाने पर काम में लावे ।

काथ अर्थात् काढ़ा कि पिचज्वर को नाश करे और जो तीसरे दिन आता हो अत्यन्त गुणदायक है भारतवर्षीय वैद्यों की रीति से गिलोय, घनियाँ, रक्तचन्दन, कमलगट्टे की मिंगी, नीम की इतरछाल मल्येक पांच मासे कूट छान कर तीन पाव जल में औठावे जब आध पाव रहे छानकर पीवे यदि प्रकृति के अगीकार करने के लिये दो तोले शर्वत नीलोफर मिलाके तो कुछ हानि नहीं ।

शर्वत नीलोफर कि गरमी के ज्वर और मस्तक पीड़ा को गुण करे नीलोफर के ताजा फूल चौदह तोले सवा दो मासे गोखरू चार तोले सवा दो सेर जल में चढ़ादे, औटा छोनकर सेरभर कूट में चाशनी करे माथा छ तोले तक

माउलकरा अर्थात् पीठे कट्टा पानी कि कधिर और पिचज्वर तथा उपेक्षित को गुणदायक है । बड़ा पीठा कट्टू लेकर कपरमिट्टी करके मध्यम तनूर में एक ईंट पर रखदे जब पकजावे निकाल कर मिट्टी दूर करके कट्टू में छिड़ करदे, बंस का जल लेकर कूट और तुरजवीन शीरखिस्त नीलोफर के शर्वत शिकनवीन व घनफला के शर्वत के साथ जो चावित हो पीवे ।

काढ़ा कि गरमी के पुराने ज्वर को गुण करे । गिलोय, पिचपापड़ा, मुलहठी, घनियाँ जौकूट करके फाफड़ा सींगी, कड़वा खस, काळ चंदन, नीम के पत्ते, खर्जुन के बीज जौकूट करके घराघर, इस में से तीन तोले चार मासे

लेकर पानी में औटावे जब चौथा भाग रहे छान कर पिये ।

अथवा नीलोत्तर नौमाशे, खूबकछा साढ़े चार माशे दोनों को ढेढ़पाव जल में औटावे जब आध पाव शेष रहे भूने बस में छानकर कि नीलोत्तर रहजाय और खूबकछा छन आवे तब थोड़ी मिथी डाल कर पिये ।

अथवा गिलोय, नीम की छाल, धनियाँ, पन्नाख, रक्त चन्दन, छस प्रत्येक तीन तोले चार माशे सेर भर जलमें औटावे जब आध पाव रहे छान कर पिये

अथवा छिल्ली मुल्हटी, काशडासोंगी, गिलोय, पिचपापड़ा, विरायवा, रक्तचन्दन, नेत्रपाळा, अरळ का बकल, धनियाँ, लवासा, प्रत्येक दो दिरम अर्थात् सात माशे प्रति दिन तीनपाव पानी में भिंगोकर रात काल औटाव जब आधपाव रहजाय छानकर पिये ।

कंजा की गोली कि तप जाड़े और कफ तथा पित्तज्वर को गुणदायक है । कंजा की मिर्गी, पीपल प्रत्येक साढ़े तीन माशे, श्वेत जीरा, बधुलकी पत्ती प्रत्येक पाँचे दो माशे कुंठ छानकर पान से कालसे की परावर गोलियाँ बनावे और तीन विंसे पर्यन्त मास मध्याह्न और सायंकाल को एकएक गोली खाय ।

गोली कि पित्तज्वर को गुणदायक है सक्रुद तथा चार भाग, बरूँर एक भाग कुंठ छानकर जगली घेरके प्रमाण गोलियाँ बनावे मात्रा एक गोली ।

गोली कि जाड़े के ज्वर को गुणकरे भरतखडीय वैद्यों के मत से सक्रुद कथा एक माशे, सस्त्रिया एक रत्ती पीसकर मोठ प्रमाण गोलियाँ बनावे और जाड़ा चढ़ने के पश्चात् एक गोली खाय ।

अथवा घड़े का पर चने परावर, अफीम एक रत्ती, नीम के पत्ते ठाई नग परस्पर पीसकर गुड़ में गिलाकर गोलियाँ बनावे और जाड़ा चढ़ने के तीन घण्टे पश्चात् एक गोली निगल जावे जब ज्वर आवे दूसरी गोली देवे विश्वास है कि तीसरी गोली देने की जरूरत न होगी ।

कर्म कि तप जाड़े को गुणदायक है । हुलहुल के पत्ते दहने हाथ में कलाई के ऊपर बाहर की ओर रम कर उस पर एक छोटी ठिकड़ी हड़ बांधे वहाँ एक छात्ता चपल होगा बारी के दिन जाड़ा न आवेगा और ज्वर दूर हो जावेगा ।

मुनी फिटकरी, मिथी दो तोले पीसकर रोगी की प्रकृति के अनुसार आध पाशे से दो माशे तक देवे यदि खाँसी हो तो इस दवा का सेवन चचित् ।

अथवा अफ्रीम एक माशे, काली मिर्च दो माशे, कीकर की लकड़ी का कोयला छ' माशे पीस जान कर एक माशे प्रकृत्यानुसार ज्वर की बारी के दिन न्यूनाधिक चार घड़ी पहले देव और प्रातःकाल ही निराहार न दे कि घमन होनायगी किन्तु थोड़ा खिला देवे और दवा देने पर दो पर अथवा अधिक काल व्यतीत होजावे, तब भोजन दे इसके बीच में न दे अनुमान है कि एक मात्रा ही काफी होगी ।

अथवा तुलसीपत्र छ. माशे, काली मिर्च चार नग, पीपल एक नग, मिथी एक तोला पीस कर पीवे ।

अथवा घूर के बीज एक कुल्हड़े में भर कर उसका मुख बंद कर कपरमिट्टी कर तनूर में रखे जब बीज जल जाय उनकी मसम तरुण को चार माशे और बालक को चार रत्ती खिछावे ।

हिन्दी औषधि कि एक दिन में कफ ज्वर और पित्तज्वर को बंद करे हरताल, फिटकरी प्रत्येक एक तोला साढ़े पांच माशे, ग्वारपाठे के रसमें उसे नीम के सोटे से जिसमें पैसा जड़ा हो सोलह दिन रगड़े और टिकिया बना सुखाकर मिट्टी के पात्र में नीचे ऊपर पीपल वा अरंड की लकड़ी की खाक देकर कपरोटी कर बागह पर भगली कड़ों की आंच देकर मात्रा चावल ममाण देवे और भोजन दूध चावल दे ।

घूनी वैद्यक की पुस्तकों में लिखा है कि स्त्री धर्म के बख्त की घूनी तप जाड़े को दूर करती है ।

खस का अवलोक कि पित्तज्वर और तृषा को दूर करता और हृदय और कलने को बल देता है । आष सेर खस के अर्क में छ' ताले आठ माश खस रात को भिगोदे और प्रातःकाल औठावे जब आपा क्षेप रहे पाष सेर घूरा डालकर चाशनी करे और एक माशे खस का इत्र मिलाकर अवलोक बनावे और थोड़ा गुलाब बढ़ावे और शर्षप की विशेषता के लिये एक तोला पीठा कद्दू पीसकर डालदे और दिक के तप के लिये इसी शर्षप में दो चार रत्ती कपूर मिलाते हैं और दस्त तथा तलैयन तद्विषय के समय सात माशे वशलो-चन मिलाते हैं इम अवलोक में अत्यन्त गुण है ।

गुण ज्वर की बारी के दिन रोगी को भोजन न दे किन्तु जब तप को गरमी होने लगे आहार देवे गरमी के भोजन में सबसे उत्तम भोजन खिचड़ी और दाल भात है कुत्ते धिया कद्दू तोरई का साग और जौका कूड़ा है ।

कफ के ज्वर का मादा जो नसों के बाहर सड़ गया हो तो प्रति दिन ज्वर बारी करता है और उस को नाशिया कहते हैं ।

और जो उस का मादा नसों के भीतर सड़ा हो उसको मवाजबह कहते हैं और वह भी प्रति दिन आता है ।

कफ ज्वर का चिन्ह तृषा का कम होना, निद्रा की विशेषता, मूत्र में सफेदी और स्वाद का फीका होना है ।

चिकित्सा दोष पचाने के पश्चात् कफ को भिफाछे ।

काढ़ा कि कफ के तप को गुण करता है । सोंफ साढ़े तीन माशे, सोंफ की जड़, छिली मुलहरी चौकुर करके गावजवा, करकफ के बीज मत्स्यक सात माशे, इसराज साढ़े दस माशे औटाकर दो तोले गुलकद और दो तोले शर्बत बजूरी मिलाकर पिये ।

अद्भुत कर्म एक मक्खी, आधी बाली मिर्च, बहुत थोड़ी हींग जल में पीसकर आंख में लगावे ।

अथवा चल्छ का पर, गूगळ, फाले वस्त्र में छपेटकर घृत से चुपड़कर बत्ती बनावे और जलाकर काजल पाड़े और आंख में छगावे, चौथैरे ज्वरको अति गुण करता है ।

अथवा श्वेत घृतुरा शनिवार को उखाड़कर दाहिने हाथ पर बांधे एकही दिन में ज्वर दूर हो ।

गोली कि कफ ज्वर को गुणदायक है । बड़ी पीपळ कजा की मिर्गी एक एक तोला, श्वेतजीरा, बबूल की पत्ती छ पाशे कूट छानकर घने के प्रमाण गो-छिया बनावे एकर गोली तीनों समय तीन दिन पर्यन्त खाय ज्वर दूर होवे ।

काढ़ा कि चतुर्शेष के ज्वर को गुण करता है । घमाया सात माशे घराबर के शर्बत क साय जल में औटाकर पिये ।

शर्बत बजूरी मौतदिल कि तपों को जड़मूल से लोष सोंफ, कासी की जड़ मत्स्यक छ तोले आठ माशे, कद पाचमर मकारानुमार शर्बत बनावे ।

ओषधि कि कफज्वर को गुण करे । मकड़ी का एक मक्कद जाला साफ करके गुड़ में लपेटकर ज्वर आने के पहले दब जाड़ा नई आना और ज्वर दूर हो जाता है परन्तु तीन दिवस सधन करना चाहिये ।

अथवा आक की कली जो खिली नहो गुड़ में लपेटकर गोली बनाकर

निगल जावे इसी प्रकार तीन दिवस करने से ज्वर साफ जावे ।

गोली शफ़ा कि तप जाड़े को खावे । घृतूरा साढ़े छ. तोळे रेवतचीनी ढाई ठोले, सोठ, वपुल का गोद मत्पेक चौदह माशे कूट, छानकर चने के प्रमाण गोलियां बनावे दो गोली जाड़ा आने के पहले खावे ।

दवा कि कफज्वर को गुण करे । कजा की फोंपल तीन, नग काली मिर्च दो नग पानी में पीसकर पिलावे ।

अथवा कजा की मिंगी पानी में पीसकर नाभि में उपकावे ।

गोली आक की जड़ दो भाग काली मिर्च एक भाग दोनों को बकरी के दूध में पीसकर चने के प्रमाण गोलियां बनावे मात्रा एक गोली चारोंसे पहिले देवे ।

आनन्द भैरव गोली कि कफ की सब बीमारियां जुकाम, अजीर्ण कफज्वर और हाथ पांव आदि सब अवयवों के सर्द पसीने के लिये भारत-वर्षीय वैद्यों की बनाई हुई । बछनाग, शुद्ध काली मिर्च, सुहागा पीपल सिंगरफ़ बराबर नीबू के रस में पांच घड़ी खरल कर चढ़द के प्रमाण गोलियां बनावे । मात्रा एक गोली मांसकाळ और एक गोली सायंकाल बूरे के साथ लेवे और जिसकी मरुति अति ठंडी हो दे गोली दे ।

और दूसरे नुसखे में मैनफल के बीज, अकरकरा, सोंठ अधिक किये हैं सात दिन तक पान के रस में खरल कर गोलियां बनावे और उसके अर्क से खाना लिखा है ।

गोली कि तप जाड़े को गुण करे । पारा, आवलासार गंधक, बछनाग शुद्ध कर मत्पेक एक दांग सोंठ, कालीमिर्च पीपल मत्पेक पांच दांग, घृतूरे के बीज, तीस दांग, इरताल आठ दांग, पारा और गंधक खूब पीसकर औषधियां खूब कूट छानकर चार महर अदरक के रस में खरल कर दो २ रत्ती की गोलियां बनावे । मात्रा एक गोली बूरे अथवा जल के साथ देवे ।

दवा कि तप जाड़े को गुण करे । पारा, गंधक, सोंठ, कालीमिर्च पीपल सुहागा, जमालगोटा शुद्ध सब बराबर नीबू के रस में दो पहर खरल करके कालीमिर्च के प्रमाण गोलियां बनावे-मात्रा एक-गोली ।

अथवा हृच्छुल के पत्ते कालीमिर्च मत्पेक एक नग पीसकर कालीमिर्च के प्रमाण गोलियां बनावे और एक २ गोली तीन दिन खाय ।

अथवा आक की पीछी पत्ती फोयलों की आंच में मसू करके मांसकाळ

चार रत्नी शब्द के संग साथ ।

गोली रामबाण कि जुधोको अधिक करे और अजीर्ण तथा कफ
ज्वर को दूर करे । पारा, गंधक और शुद्ध बछनाग, लौंग मल्लेक चार तोले
दो माशे, नायफळ सप्तादांग शुद्ध जमालगोटा दार्ई तोले छूट छान कर तीन
दिघस नीचू के रस में खरख करके काली मिर्च के प्रमाण गोष्ठियां बनावे मा-
त्रा दो गोली तक गरम जल के संग ।

भंगका चूर्ण भारतवर्षीय वैद्यों का बनाया हुआ ज्वर आने से घड़ी
भर पहिले खावे । पीपल, काली मिर्च, कलौजी, चिरायता, गेरू मल्लेक एक
माशे, भंग की पत्तियां दो माशे महीन छूट छान कर फली बनावे मात्रा एक
माशे, यदि बालक हो तो कम देवे ।

अथवा एक तोला आठ माशे सखिया बेंगन में रखकर कपरोटी कर
जगली कंदों में फूँद दे फिर इसी प्रकार बेंगन में आंच देकर परचात पीसकर
लोहे की कड़ाही में आधसेर जल के संग घोलकर मदाग्नि से औटावे जब
सूखजाय तब कड़ाही से निकालकर एक तोला आठ माशे गेरू के साथ खरख
करे हुत वांछित समय पर एक चांचल से एक रत्नी तक रोगी की सामर्थ्या-
नुसार खिलावे भोजन मूंगकी दाल, भात और लवण अति न्यून देवे ।

गुण जानना चाहिये कि चौथैया ज्वर घात से उत्पन्न होता है कि दो
दिन बीच देकर आता है । उसका माहा नसों के भीतर सड़ता है उससे वात
ज्वर की उत्पत्ति कम होती है और जिसका माहा बाहर सड़ता है उसे अधिक
पह ज्वर परसों रहता है और बड़ी कठिनता से जाता है ठीक चिकित्सा इस
की पचनाने के पीछे उस के दूध का निकलना है ।

अब कई एक सहस्र औषधियां जो चौथैये को गुणदायक हैं वर्णन की
जाती हैं ।

- दवा हींग, क्षपण दो माशे, सेर भर जल में औटावे जब छः तोले आठ
माशे रहजाय तब पीच थोड़े ही दिन में चौथैया दूर होजायगा ।

अथवा नौसादर तीन रत्नी, काली मिर्च दा नग, पारी के दिन छूटकर
खिलावे ।

अथवा कलौजी छः तोले आठ माशे महीन पीस शब्द में मिछाकर
निष्पद्रव चार दिन तक खाय परन्तु जिस दिन कि ज्वर की पारी हो उसी
दिन से प्रारम्भ करे ।

गोली स्वाह धतूरे के पत्त, तांबूल काली मिर्च, मत्स्यक-ठाई नग महीन पीसकर काली मिर्च के प्रमाण गोलियाँ बनावे और एक २ गोली दोनों समय देवे परीक्षित है।

चूर्ण कि चौथैये और कफ ऊपर को दूर करे। समुद्रफल की मिंगी काली मिर्च, तुलसी के पत्ते बराबर कुड़ छानकर फकी बनावे और एक माशे अथवा न्यून प्रकृत्यानुसार पानी के सग बारी से चार घड़ी पहले देवे।

अथवा देस के फूल घनियाँ मत्स्यक एक, तोला आठ माशे चने की भूसी तीन, तोला चार माशे कुड़ छानकर बराबर तीन भाग करे, एक भाग जल के सग लेवे।

अथवा तीन चार माशे घुना पानी में घोळकर एक नीपू चसमें निचोड़े जब घुना गाढ़ा होजावे और नीचे बैठ जावे तब चस का नितरा पानी ऊपर के चिन्हों के समय अर्थात् जब जमाई अगड़ाई आने लगें तब पिलावे जो एक बार का पिलाना गुण न करे तो दूसरी बार दे।

दवा कि चौथैये को गुण करती है साढ़े दस माशे अजवायन कुड़ छान कर शहद में मिलाकर चरावे।

अथवा ग्वारपाठे का ऊपर का छिलका दूर करके अग्नि पर रखे और थोड़ी अफ्रीम और हलदी महीन पीसकर चस पर डाले फिर आंच पर से चतारकर बख्त में रखके निचोड़े और फहवा के दो प्यालों में भर कर पिये तो तीन दिन में चौथैया ऊपर दूर होव।

गोली पलासपापड़े का छिलका दूर करके सफेद मिंगी चसकी लेपर और चसकी बराबर कजा की मिंगी मिलाकर अग्नि महीन पीसकर काली मिर्च के प्रमाण गोलियाँ बनावे और एक गोली घासी जल के साथ निगल जाया करे।

दवा नीम की इतर छाल आठ तोले चार माशे आधसेर जलमें औटावे जब आधपाव रहजाय तीन चार डुक्के चुबक परपर के गरम कर के चस में चुभावे जब छः सात तोले रहजाय तब रोगी को पिलावे और इसी प्रकार तीन दिवस पर्यंत करे।

गोली पुराने तप के वास्ते घुना, अक्षय, फलोंजी, पीपलामूल, पीपल मत्स्यक एक तोले कुड़ छानकर साढ़े तीन तोले गुड़ में मिलाकर दस माशे

के अनुमान गोलियाँ बनाने और मातःकाष्ठ निराहार एक गोली गरम जल के सग खाए ।

शर्वत कि सष प्रकार के ज्वरों और खाँसी को दूर करता है गिकोय, पित्तपापडा, नीलोफर, खीरे ककड़ी के बीज खतपी के बीज, कासनी के बीज, चन्दन चूरा मत्स्य एक तोला मुलहठी पाँचतोला, लिहसोड़े तीस नग बीहदाना एक ताले साढ़ तीन माशे दूधपाव षट में चाशनी कर ।

काढ़ा कि चौथैये को गुण करे । पोस्त के डोह दस नंग, काठी मिर्च क सग छूट कर औटाकर पिये ।

दवा कि चौथैय ज्वर को निश्चय गुण दायक है । एक तुवां कला में छिद्र कर के उसका मुख षट करके निगलमाय ।

पाक कछौमी, कि चौथैये और वातज्वर को षट करता है ज्वर का तीसरा भेद तपैदिक कि हगारत शरीरा को घेर असखी जोड़ और असख जोड़ों में विशय कर हृदय में स्थिति करता है और मायः नित्यज्वर वा और गरम ज्वर रहते २ तपैदिक होजाता है और दिक का ज्वर अवएव बहुत कम उत्पन्न होता है और इस ज्वर की गरमी की विशयता भोजन करने के पश्चात होती है इसकी चिकित्सा ठंडाई आदि हैं ।

टिकिया कपूर कि तपैदिक को गुण करे । कपूर केसर मत्स्य साढ़े तीन माशे छिल्ली मुलहठी, बीहदाना सफेद, पोस्त के दाने, मत्स्य सात माशे कुलफे के बीज, खीरा, ककड़ी के बीजों की मिर्गी, काहू के बीजों की मिर्गी, चन्दन, गुलाब में घिसा हुआ तर्पुन के बीजों की मिर्गी मत्स्य १०॥ माशे षट्टर का गोंद कत्या मत्स्य दो माशे सष औपचियों को छूट ध्यान कर टिकिया बनावे मात्रा साढ़े चार माशे ॥

आषजन कि गरमी को दूर करता है ताजाकदू, ताजा तर्पुन जोकूट कर के खीरा, ककड़ी के डुकड़े, नीलोफर, काहू के पत्ते, कुलफे के पत्ते इन औपचियों में से भितनी प्राप्त होसकें जल में औटाव षष आषा रइजाय तष आषजन कर के शरीर से पानी पोंछ कर ठंढे रौशन जैसे कि रौशन कदू आदि से सेक करे ।

गोली काफूर कि गरम ज्वर और तपैदिक को गुणदायक है चन्दन गुलाब में घिसकर साढ़े तीन माशे, कहरमोहरा गढ़ा हुआ, सफेद कत्या कधीरा कुलफे के बीज, बनफशा, पास्त के दाने मत्स्य साढ़े तीन माशे, केशुर पीन

दो माशे, मीठे कद् के बीजों की मिगी, बीहदान की मिगी प्रत्येक ढाई तोले फूट छान कर ईसबगोल वा बीहदाने के लुआष में गोलियां बनावे ।

नकू कि सपैदिक को गुण करे । गिलोय जौकूट कर एक तोले, मुलहट्टी छिल्ली हुई छ. माशे, खतमी के बीज, खन्वासी पिचपापडा प्रत्येक तीन तोले चार माशे पाषसेर गरम जल में रात को भिगोदे मात काला उस का निवरा जल लेकर काहू के बीज, कुलफे के बीज उसी पानी में पीस कर थोड़ा घूरा मिठाकर पिये और इसी प्रकार कई दिवस पर्यन्त सेवन करे ।

काढ़ा नीम के पत्ते इकीस नग साबित काली मिर्च इकीस नग दोनों की महीन पत्र में पोडली बांधकर आधसेर जल में औठावे जब छा तोले आठ माशे रहनाय तब उसको छान कर नित्य दोनों समय पीवे आराम होजायगा परंतु सात दिनें इसी प्रकार करे ।

फ़सल बौरान के व्याख्यान में

बौरान रोग के सग प्रकृति के सरसाम को कहते हैं यदि प्रकृति प्रबल आवे बौरान शुभ है और एक सप्ताह में कोई भी प्रबल न आवे किन्तु दूसरे सरसाम की आवश्यकता रह वह बौरान मध्यम है और प्रकृति पर रोग प्रबल आवे तो वह बौरान अशुभ है जो प्रकृति बौरान के समय चतुरावयव के उत्तम पावे से निकृष्ट अवयव की ओर फेंके उसको बौरान इतकीली कहते हैं और शुभ बौरान के बारह दिन हैं चौथा, सातवां, ग्यारहवां, चौदहवां, बीसवां, इकीसवां, चौबीसवां, सत्ताईसवां, इकतीसवां, चौतीसवां, सैंतीसवां, चालीसवां और अशुभ वा भययुक्त बौरान के आठ दिन हैं छठा, आठवां, दसवां, बारहवां, पंद्रहवां, सोलहवां, अठारहवां, उन्नीसवां और जिन में बौरान अर्थात् सरसाम नहीं होता तेरह दिन हैं बाईसवां, तेईसवां, पच्चीसवां, अट्ठाईसवां, उन्नीसवां, तीसवां, बत्तीसवां, तेतीसवां, पैंतीसवां, छत्तीसवां, अड़तीसवां, उन्तालीसवां और पांच दिन बाकअफिलवस्त हैं अर्थात् उनमें भी बौरान होता है कभी नहीं भी होता सोसरा, पांचवां नवां, तेरहवां, सत्रहवां पुकरात इक्रीम के मतसे चालीस दिवस परचात बौरान अर्थात् सरसाम नहीं होता है और बौरान कई प्रकार से होता है । कभी नकसीर फूटती है और कभी दस्त आवे है कभी घगन होती है कभी मूत्र द्रव होता है और कभी पसीना निकलता है ।

गुण जिस दिन ऊपर आवे यदि सूर्य अस्त से पहिले आवे उस दिन

को रोगकी आदि का गिनना चाहिये और जो सूर्यस्ति क पक्षि आवे तो दूसरा दिन रोगोत्पत्ति का प्रथम दिन गिनना चाहिये और घोरान तथा घारी के दिन विशेषक देना उचित नहीं किन्तु अत्यन्त घुरा है और वैद्यों का चाहिये कि घोरान के दिन कठस्थ याद रखें कि किसी जगह भूल चूक न रहे ।

प्रसूत इलाज समूह अर्थात् विष की चिकित्सा में

जिस पशुपक्ष ने आहर खाया होवे उस की चिकित्सा सप के मतानुसार गरम जल पिलाकर प्रथम कराना है और कई घार दुग्ध तथा घी पिलाना आर कुवकुट की पुराज जल में रगड़ कर जिस समय पिलावे उसी समय विष घसन द्वारा बाहर निकल आवे और जानना चाहिये कि जगल और नदी के काटने वाले जल बहुत होते हैं उनके काटने से प्रकृति में व्यस्य मगट होती है इसका सामान्य नियम यह है कि विष को शोषण कर दे और जब तक रोग स छुटकारा न हो कमी घास को न भरने दे और फाद काहर और निर्बिपी इत्यादि वे औषधियाँ विष को दूर करें खाने पीने द्वारा सेवन करे ।

दवा कि सब प्रकार के गरम विषको दूर करे । चौलाई की ताजा जड़ एक तोला सूती हो सो छ मासे जल में पीसकर गौ के घी के सग खाय ।

अथवा गौघृत दो तोला ग्यारह मासे सेंधा नोन सात मासे पिलाकर खाय सर्प के काट को गुणदायक है ।

अथवा छोटी कटरी पीसकर खाय भारतवासियों के मत से विषघ्न है ।

अथवा कुचला काली मिर्च पीसकर थोड़ा सा खाय सर्प के विषको दूरकरे ।

अथवा एक मासे दर्पायी नारियल पीसकर पिलावे सब प्रकार के विषको दूर करे ।

अथवा चिनौके की मिर्ची कुछ छानकर दूध में औटाकर पिलावे ।

अथवा कसेरु खाना विषको दूर करता है ।

दवा कि सलिया की हानि को दूर करे तीन तोले कट्या जल में घोळ कर पिलावे ।

अथवा एक मासे कपूर कई तोले गुलाब में रगड़ कर पिलावे ।

अथवा बकरी का दूध औटाके गौघृत से भगाकर पिलावे ।

दवा कि विषको घसन द्वारा निकाले । कमलगट्टा एक मासे नीलायोधा दो रसी परस्पर पीसकर गरम जल के साथ पिये ।

दो माशे, मीठे कद् के बीजों की मिर्गी, बाँहदान की मिर्गी मत्स्येक ढाई ताले कूट छान कर ईसबगोल वा बाँहदाने क छुभाष में गोलिएं बनावे ।

नकू कि तपैदिक को गुण करे । गिलोय जौकूट कर एक तोले, मुलहटी छिली हुई छ. माशे, खतमी के बीज, खड्वासी पिचपापडा मत्स्येक तीन तोले चार माशे पावसेर गरम जल में रात को भिगोदे मात काल उस का निचरा जल लेकर काहू के बीज, कुलफे के बीज उसी पानी में पीस कर थोड़ा घूरा मिछाकर पिये और इसी प्रकार कई दिवस पर्यन्त सेवन करे ।

काढ़ा नीय के पचे इक्कीस नग सावित काली मिर्च इक्कीस नग दोनों की महीन घुस में पोटली बांधकर आधसेर जल में भौटावे जब छः तोले आठ माशे रहजाय तब उसको छान कर नित्य दोनों समय पीवे आराम होजायगा परन्तु सात दिने इसी प्रकार करे ।

फसल बौरान के व्याख्यान में

बौरान रोग के सग प्रकृति के सरसाम को कहते हैं यदि प्रकृति प्रबल आवे बौरान शुभ है और एक सप्ताह में कोई भी प्रबल न आवे किन्तु दूसरे सरसाम की आवश्यकता रह वह बौरान मध्यम है और प्रकृति पर रोग प्रबल आवे तो वह बौरान अशुभ है जो प्रकृति बौरान के समय चतुरावयव के उत्तम मांस से निकट अवयव की ओर फेंके उसको बौरान इतकीली कहते हैं और शुभ बौरान के बारह दिन हैं चौथा, सातवां, ग्यारहवां, चौदहवां, बीसवां, इक्कीसवां, चौबीसवां, सत्ताईसवां, इकत्तीसवां, चौत्तीसवां, सैंतीसवां, चात्तीसवां और अशुभ वा भययुक्त बौरान के आठ दिन हैं छठो, आठवां, दसवां, बारहवां, पंद्रहवां, सोलहवां, अठारहवां, उअसिवां और जिन में बौरान अर्थात् सरसाम नहीं होता तेरह दिन हैं बारहवां, तेईसवां, पन्नीसवां, अट्ठाईसवां, छन्तीसवां, तीसवां, बत्तीसवां, सेतीसवां, पैंतीसवां, छत्तीसवां, अड़तीसवां, चन्तात्तीसवां और पांच दिन बाकप्रकृतवस्त हैं अर्थात् उनमें भी बौरान होता है कभी नहीं भी होता तीसरा, पाँचवां नवां, तेरहवां, सत्रहवां शुक्ररात इक्कीम के मतसे चात्तीस दिवस पश्चात् बौरान अर्थात् सरसाम नहीं होता है और बौरान कई प्रकार से होता है । कभी नकसीर फुटती है और कभी दस्त आवे हैं कभी घगन होती है कभी मूत्र द्रव होता है और कभी पसीना निकलता है ।

गुण जिस दिन ज्वर आवे यदि सूर्य अस्त से पहिले आवे उस दिन

को रोगकी आदि का गिनना चाहिये और जो सूर्यस्ति क पीछे आये तो दूसरा दिन रोगोत्पत्ति का प्रथम दिन गिनना चाहिये और बौरान तथा बारी के दिन घिरेचक्र देना सचित नहीं किन्तु अत्यन्त पुरा है और वैद्यों का चाहिये कि बौरान के दिन कठस्थ पाद रखें कि किसी जगह भूल चूक न रहे ।

प्रसल हलाज समूह अर्थात् विष की चिकित्सा में

जिस मनुष्य ने जहर खाया होवे उस की चिकित्सा सब के मतानुसार गरम जल पिलाकर वमन कराना है और कई बार दुग्ध तथा घी पिलाना आर कुक्कुट की पुरीज जल में रगड़ कर जिस समय पिलावे उसी समय विष वमन द्वारा बाहर निकल जावे और जानना चाहिये कि जगल और नदी के फाटने वाले जल बहुत होते हैं उनके फाटने से प्रकृति में व्यत्यय प्रगट होती है इसका सामान्य नियम यह है कि विष को शोषण कर दे और जब तक रोग स छुट कारा न हो कभी घाव को न भरने दे और फाद जहर और निर्बिषी इत्यादि वे औषधियां विष को दूर करे खाने पीने द्वारा सेवन करे ।

दवा कि सब प्रकार के गरम विषको दूर करे । चौलाई की ताजा जड़ एक तोला सूखी हो तो छ माशे जल में पीसकर गौ के घी के सग खाय ।

अथवा गौघृत दो तोला ग्यारह माशे सेषा गोन सात माशे मिलाकर खाय सर्प के कांठ को गुणदायक है ।

अथवा छोटी कटरी पीसकर खाय भारतवासियों के मत से विषघ्न है ।

अथवा कुचला काळी मिर्च पीसकर थोड़ा सा खाय सर्प के विषको दूरकरे ।

अथवा एक माशे दर्पायी नारियल पीसकर पिलावे सब प्रकार के विषको दूर करे ।

अथवा विनौके की मिर्गी कूट छानकर दूध में औटाकर पिलावे ।

अथवा कसेक खाना विषको दूर करता है ।

दवा कि सखिया की हानि को दूर करे तीन तोले कत्था जल में घोल कर पिलावे ।

अथवा एक माशे कपूर कई तोले गुलाब में रगड़ कर पिलावे ।

अथवा बकरी का दूध औटाके गौघृत से भंगार कर पिलावे ।

दवा कि विषको वमन द्वारा निकासे । कमलगुहा एक माशे नीलायोया दो रत्ती परस्पर पीसकर गरम जल के साथ पिये ।

दो माशे, मीठे कटू के बीजों की भिंगी, बीहदाने की भिंगी मत्पेक ढाई ताले कूट छान कर ईसबगोल वा बीहदाने के लुआय में गोलियां बनावे ।

नकू कि तपैदिक को गुण करे । गिलोय जौकूट कर एक तोले, मुलहटी छिली हुई छ माशे, खतमी के बीज, खग्वासी पिचपापड़ा मत्पेक तीन तोले चार माशे पावसेर गरम जल में रात को भिगोवे मात काल उस का नितरा जल लेकर काहू के बीज, कुलफे के बीज उसी पानी में पीस कर थोड़ा घूरा मिलाकर पिये और इसी प्रकार कई दिवस पर्यन्त सेवन करे ।

काढ़ा नीम के पत्ते इक्कीस नग साबित काली मिर्च इक्कीस नग दोनों की महीन वस्त्र में पोटीली बांधकर आधसेर जल में भौटावे जब छः तोले आठ माशे रहभाय सब उसको छान कर नित्य दोनों समय पीवे आराम होजायगा परंतु सात दिनें इसी प्रकार करे ।

फसल बौरान के व्याख्यान में

बौरान रोग के सग प्रकृति के सरसाम को कहते हैं यदि प्रकृति प्रबल आवे बौरान शुभ है और एक सप्ताह में कोई भी प्रबल न आवे किन्तु दूसरे सरसाम की आवश्यकता रह वह पौरान मध्यम है और प्रकृति पर रोग प्रबल आवे तो वह बौरान अशुभ है जो प्रकृति बौरान के समय चतुरावयव के चक्षुष मादे से निकृष्ट अवयव की ओर फेंके उसको बौरान इतकीली कहते हैं और शुभ बौरान के बारह दिन हैं चौथा, सातवां, ग्यारहवां, चौदहवां, बीसवां, इक्कीसवां, चौबीसवां, सत्ताईसवां, इकत्तीसवां, चौतीसवां, सैंतीसवां, चालीसवां और अशुभ वा भययुक्त बौरान के आठ दिन हैं छठा, आठवां, दसवां, बारहवां, पंद्रहवां, सोलहवां, अठारहवां, उन्नीसवां और जिन में बौरान अर्थात् सरसाम नहीं होता तेरह दिन हैं बारहवां, वेईसवां, पच्चीसवां, अट्ठाईसवां, उन्नीसवां, तीसवां, बत्तीसवां, तेवीसवां, पैंतीसवां, छत्तीसवां, अड़तीसवां, उन्तालीसवां और पाच दिन पाकअफिलवस्त हैं अर्थात् उनमें भी बौरान होता है कभी नहीं भी होता तीसरा, पाँचवां नवां, तेरहवां, सत्रहवां युक्तरास इक्कीस के मतसे चालीस दिवस परमात बौरान अर्थात् सरसाम नहीं होता है और बौरान कई प्रकार से होता है । कभी नकसीर फूटती है और कभी दस्त आवे है कभी वगन होती है कभी मूत्र द्रव होता है और कभी पसीना निकलता है ।

गुण जिस दिन अगर आवे यदि सूर्य अस्त से पहिले आवे उस दिन

को रोगकी आदि का गिनना चाहिये और जो सूर्यस्ति क पीछे आवे तो दूसरा दिन रोगोत्पत्ति का प्रथम दिन गिनना चाहिये और यौरान तथा पारी के दिन विरेचक देना सचित नहीं किन्तु अत्यन्त बुरा है और वैद्यों का चाहिये कि यौरान के दिन कठस्थ पाद रखें कि किसी जगह भूल शुरू न रहे।

फ्रसल इलाज समूह अर्थात् विष की चिकित्सा में

जिस मनुष्य ने जहर खाया होवे उस की चिकित्सा सब के मतानुसार गरम जल पिलाकर वमन कराना है और कई बार दुग्ध तथा घी पिलाना और कुक्कुट की पुराज जल में रगड़ कर जिस समय पिलावे उसी समय विष वमन द्वारा बाहर निकल आवे और जानना चाहिये कि जगल और नदी के काटने वाले जल बहुत होते हैं उनके काटने से प्रकृति में व्यत्यय प्रगट होती है हमका सामान्य नियम यह है कि विष को शोषण कर दे और जब तक रोग से छुटकारा न हो कभी घाव को न भरने दे और फाद जहर और निर्भिषी इत्यादि औषधियाँ विष को दूर करें खाने पीने द्वारा सेवन करे।

दवा कि सब प्रकार के गरम विषको दूर करे। चौलाई की ताजा जड़ क सोला सूखी हो तो छ. मांशे जल में पीसकर गौ के घी के संग खाय। अथवा गौघृत दो सोला ग्यारह मांशे सेधा नोन साथ मांशे मिलाकर प सर्प के काट को गुणदायक है।

अथवा छोटी कटरी पीसकर स्नाय मारतवासियों के मस से विषघ्न है। अथवा कुचला काली मिर्च पीसकर थोड़ा सा स्नाय सर्प के विषको दूरकरे।

अथवा एक मांशे दयांशी नारियल पीसकर पिलावे सब प्रकार के दू दूर करे।

अथवा बिनौले की मिर्गी फूर खासकर दूध में औटाकर पिलावे। अथवा कसेरू खामा विषको दूर करता है।

दवा कि संखिया की हाथि जो दूर करे तीन तोले कट्या जल में घोल पिलाव।

अथवा एक मांशे कपूर कई तोली गुलाब में रगड़ कर पिलावे। अथवा बकरी का दूध औटाके गौघृत से भगार कर पिलावे।

दवा कि विषको वमन द्वारा निकाले। कमलगट्टा एक मांशे नीलाबोया दो रत्नी परस्पर पीसकर गरम जल के साथ पिये।

अथवा यह अफीम के विष को दूर करे अरंड की जड़ पीसकर एक कड़वा का प्याला भर कर पिये ।

अथवा अरंड की पत्तियाँ पीसकर पिये ।

अथवा अरंड की कोपल पीसकर पिये ।

अथवा तेजधन जल में पीसकर कड़वा का प

अथवा दो माशे अफीम दो तीन बार में खाय ।

गुण अखरोट की मिर्गी तिर्यक पानी अमृत तुल्य है गौ का घी अफीम का सयोगी है ।

दूध घट्टे का विष दूर करने के लिये बैंगन के टुकड़े कर दूध में मल कर पिछावे ।

अथवा तीन तोले चार माशे चिनौले की मिर्गी जल में पीसकर पिये ।

अथवा लवण पानी में पीसकर पिये ।

दवा कि सिंदूर की हानि का दूर करे सात दिवस पर्यंत अदरक नींबू के रस में नोन के साथ मलकर रोटी के संग खाय और मुखमें डालकर रखे ताकि उसका अर्क गले में पहुँचता रहे ।

अथवा तिल्ली की पत्तियाँ और लवण एक २ तोला साढ़े दस दस माशे चावल पौने छ तोले अखरोट की मिर्गी सवा ग्यारह तोले सबको अजीर्न के साथ फूटकर खिंचावे ।

दवा पारे और शिगरक की हानि को दूर करे । जवासा पोड़े जल में पीसकर घीरा निकालकर पिये ।

अथवा रेडी का सेक पांच माशे आधपाध गौ दुग्ध में मिलाकर पिये

औषध कि मिलावे के अक्युण को गुण करती है जो मिठावे खाने से शरीर में खुजली और सौष उत्पन्न हो तो इमली की पत्तियों को घीरा पिये या घीज निखाळकर पिये या बीजों को खाये ।

अथवा चिरोजी और सिल्ल भैम के दूध में पीमकर खाय ।

अथवा अखरोट खाय कि मिलावे का मी फाद अहर है यदि मिलावे के घूम से अधयध पर सौष हुआ हो तो आवाहलदी साठीचावक दूध या सी जल में पीसके मले ।

अथवा काले तिल और माखन ।

दवा कि बछनाग के विष को गुणदायक है सोवू चाहे जिस रीति से खाये कि बछनाग का फाद जहर है ।

ओषधि कि मकड़ी का विष दूर करे चौलाई का साग जल में पीसकर लगावे ।

दवा उस मनुष्य को जिसने सिंह की मूछ का वाल खाया हो कसौटी क पत्तों का रस तीन दिवस पिये ।

अथवा तीन चार महीन निगलजाय सिंह की मूछ का वाल खाने का लक्षण यह है कि बैठते समय चदर में पीटा हाव और अरुह के पत्ते पर मृत तो पत्ता टुकड़े होजाय ।

दवा कि सब प्रकार के विषों को दूर करे । लैक्चजल में लिखा है कि हुलहुल के बीज एक तोल साढ़े पाच माश पीसकर खाये ।

ओषधि साँप के काट के चारसे । सप कई प्रकार का होता है परंतु काला सब से ज़ियादा विषियक है और छुटकारा नहीं दना चाहिय कि जब सप काट अवयव यदि काटन योग्य हो तो जैसे जगली आदि तुरन्त काट डाले और जो काटन योग्य न हो तो फौरन जलाव सर्प के काटे मनुष्य को सोने न द्भार चक्की का शब्द कान में न पहुचने दें ।

दवा कि साँप के काटे को गुण करे । जो काले ने काटा हो तो सात नग जमालगोटा और जो किसी और प्रकार के ने काटा हो तो तीन नग जमालगोटा घोलकर खिलावे और मूंग का बराबर पीस कर आँखों में लगा और जमालगोटा स्नान के पीछे १४ कांटा हो सींगी लगाकर चूम कि विष शरीर में न फैले और लहमन प्याज और राई खुब खाये सपे व विष को गुण करे धुनरिवात अकबरी में लिखा है कि जो सप का काटा मूर्च्छित होजाय हो तो उस के पेट पर नाभि के ऊपर जल घारे कि ऊपर का चर्म छिल जाय और कपिर न निकले फिर जमालगोटा जल में पीसकर लगावे यमन होकर सचेत हो जायगा परन्तु दूसरी विधि काम में लाये । एक और पुस्तक में लिखा है कि साँप का दसा मनुष्य सचेत हो जाता है और हलने चलने की शक्ति मिल कुछ न रहे परन्तु मरा न हो तो कुछला जल में पीसकर उसके गले में डाल और थोड़ा सा पीसकर शरीर और गले से मछे मूछा दूर हो जायगी ।

दवा कि साप क विष को गुणदायक है। तीन नग आख की कोपल गुड़ में छपेट कर खिलावे और उनके ऊपर घी पिलावे और तीन कली आख की खिलावे और सात कालीमिर्च और एक माशे इन्द्रायन पीसकर देना लिखा है या आक का दूध जिस मुक्ताम पर साप ने काटा हो टपकावे जब तक शोषण रहे बंद न करे तब विष का असर न रहे दूध शोषण न होगा।

अथवा आख की जड़ पीसकर पिलावे और कोई २ इस में आख की कड़ मिलाते हैं।

गोली कालीमिर्च, जमालगोटा मत्स्यक सात माशे तीन नग नीबू के रस में पीसकर चने के मवाण गोखिया बनावे और जल में पीसके आख में लगावे और दो तीन नग खिलावे।

अथवा कसौदी के बीज महीन पीसकर आख में लगावे।

अथवा खटमल निगल जाय।

अथवा तेलिया मुहागा एक तोले आठ माशे भून कर घी में मिलाकर पिलावे।

अथवा चूह का पेट काढ़कर जिस जगह साप ने काटा हो बांधे जहर शोषण करता है।

अथवा सिरस की छाल उसकी जड़ की छाल तथा उस के फूल और बीज चारों एक तोले आठ माशे एक चमचे गोमूत्र के संग एक दिन में तीन बार पिये सिरस का पुराना पेठ कि जिसकी छाल स्याह होगी हो गुण में विशेष होता है और किसीने लिखा है कि जब सर्प मिथुन राशि में आवे अर्थात् वैशाख मास में जो कि सिरस की छाल तीन दिवस पर्यन्त प्रति दिन सात माशे साठे चावलों के घोंवन में पीस कर पिये एक वर्ष के लिये विष यत्न जन्तुओं के विष से कुशल रहेगा और जो उसे काटेगा तुरंत मर जायगा।

अथवा जामन का ढाई पत्ता जल में पीस कर पिलावे।

अथवा ताजा केंचुआर दो माशे जल में पीस कर पिलावे।

अथवा कागज का एक सफेद टाव जल में घोल छान कर पिलावे।

अथवा जहां सर्प ने काटा हो अथवा किसी विषयस्त जानवर का डक लगा हो पक्ष तक कि पागल कुत्ते ने भी काटा हो उस पर मूचना अत्यंत गुण करता है।

अथवा कटीक कूट ज्ञानकर जल में मिलाकर पिलावे वमन आकर विष दूर होगा ।

अथवा समुद्रफळ महीन पीसकर दोनों आंखों में लगावे ।

अथवा गगन धूल नाक में फूके ।

अथवा कसौदी की जड़ साढ़ तीन माशे, काली मिर्च पौने दो माशे खावे

अथवा सात माशे फिटकरी जल में पीसकर पिलावे ।

अथवा महुआ आर कुचला पीसके लेप करे ।

गुण पुस्तकों में लिखा है कि बारहसींगे का सींग लटकाना सर्पादि के काटने से राकता है और बारहसींगे का सींग और बकरी का खुर और अक्रर-करे की धूनी सापादि को भगाती है । और राइ साप की वृद्ध है जो राइ को नौसादर के सग पीस कर घर में डाले तो सर्प भाग जावे और फिर न आवे ।

औपधि, कि बिच्छू की बिया पीवे और लगावे तो बिच्छू का विष दूर होवे । मुनिज में लिखा है कि एक मनुष्य के शरीर को बिच्छू ने चाक्रीस जगह काटा या समन श्रीधरी सात माशे इन्द्रायन का ताजा फल खालिया उसी समय आराम होगया और भित्त जगह बिच्छू को जलाया जावे वहां से और बिच्छू भाग जाय ।

अथवा हींग हरताल नीबू के रस में पीस कर गोखिया बनावे और बिच्छू के काटे पर लगावे ।

अथवा प्याज का जीरा मले और गुड़ मिलावे और मोम जलाकर उसकी धूनी घाव की दे ।

अथवा बिसखपरे और चिरमिठ की दहनी पीम कर मले ।

अथवा कोंच के पीज पीम के मले ।

अथवा गुषरीला कीड़ा जो गोघर में उत्पन्न होता है पीस के मले ।

औपधि कि मिट्ट के विष का दूर करे इसबगोल सिरके में डालके लुआप त्रिकाळ के पीवे ।

अथवा तीन हथेली घनिय्यां खाय वा काइ पीस कर सिर में मले ।

अथवा खतमी और खन्वाजी का लुआप मल ।

अथवा मक्खी मिट्ट के काट पर मले ।

अथवा शहद खाय और मल

अथवा मकोह की पत्ती मिरक में पीस कर लगावे और अर्चनवा का गरम जल से धोवे और धनिये का अर्क सिरके में मिलाकर लगावे ।

अथवा कपूर मिरक में मिलाकर लगावे ।

अथवा कपूर सिरक में मिलाकर मर्दन करे और भिड़ के छत्त की मिट्टी का लेप करे ।

अथवा तिल सिरके में पीसकर मले ।

अथवा गंधक पीस कर मलना अति गुणदायक है ।

अथवा जिसको भिड़ ने काटा हो वह अपनी जिडा पकड़ ले पीड़ा दूर होवे ।

अथवा जहां लहसन और गंधक जुलावे वहां की भिड़ उड़नाय ।

औपधि कि विष को दूर करे तीन तोले लहसन का रस तीन तोले शहद में टपकावे उसी समय भित्तावे और जिस जगह काटा हो वहां भी मले

अथवा तितली के पंच-पानी में पीसकर वा उनका रस निचोड़ कर मुख में टपकावे कई बार के सेवन से साँप और बिच्छू का विष दूर होजाता है और बिच्छू का मलना उसके काटे को गुणदायक है ।

अथवा आक का दूध बिच्छू के काटे पर मलना गुणदायक है और बिच्छू के काटे पर मक्खी मलना वा भूखा लहसन और अमचूर पीस के मलना ।

अथवा समुद्रफल पीस कर लेप करना और मुहकी अरब का नख पीस कर लगाना वा नौसादर सुहागा चूने की कछई परावर हथेली पर मल कर सूचना और कसौदी का फल खाना तथा कसौदी के बीज पीस के लेप करना और चूरे की मँगगी पीस कर मलना ।

अथवा सखी महीन पीस के शहद में मिला के मलना और मोर का पर तमाक के पटके चिलम में पीना ।

अथवा पलास पापड़ा जल में पीस कर लगाना गुण करता है ।

कर्म कि बिच्छू के विष को दूर करे छिन्वा है कि पीस अक सलटे भिन अयोध पीस स आरन्ध्र कर प्रक पर समाप्त करे ।

अथवा अजषायन औटा क घाव को घोंव ।

अथवा मृत्ती नोन में मिलाकर घाव पर रख और जो मृत्ती बिच्छू पर रखे ता मर जाय ।

अथवा इतना हींग सादी चाबिल पानी में पीस कर मले ।

दवा कि बिच्छू के डंक की पीड़ा को दूर कर भग के बीज कूट के मास में मिर्चा के खिजावे । *

अथवा घाम की पत्ती घी में पीस कर घाव पर मल ।

अथवा नीबू का रस घाव पर टपकाव ।

अथवा गरम जल में निमक मिलाकर घाव पर मले ।

अथवा नागरमोया छिपकली के काटे के वास्ते घृत वा तेल वा राख मले और सुसी औटाकर गरम र नतूल कर अर्थात् जहाँ काटा हो तरा दें ।

चावले कुत्ते के काटने का चिकित्सा

जिस मनुष्य को उन्मत्त क़रने काटा हो उसको योही देर परचाव सन-मत्तावस्था उत्पन्न होती है जस इस अवस्था की प्रवृत्तता होती है जीनकी आशा नहीं रहती उस की चिकित्सा में डील न करे और चालीस दिवस तक घाव को न भरने दें और सींगियों से खूब चूम और घ व क आसपास पछने लगावे और लहसन सिरके में पीसकर उसपर लेप करे और शीतल वायु से बेचता रहे जब तक क़र का काटा जल से डरे जीन की आशा न करे ।

दवा कि उन्मत्त क़र क काटने को गुण करे सक्रदजीरा, पदरद नग काळीमिर्च के माथ पीम छान कर पितावे कुत्ते के काटे हुए को अति गुण कर ।

अथवा प्याज कूटकर दूध में मिलाकर लेप करे कि घाव भरने न पाव ।

अथवा कुचला मनुष्य के मूत्र में औटा कर लेप कर और मदिरा में औटाकर छान कर एक रत्ती नित्य खाया करे ।

अथवा जल में औटाकर थोड़ा कद मिलाकर खाय ।

अथवा पांच ताजे केहवा कूट मौकूट करक एक प्याल जल में औटावे जब जल कर सादे तीन मास रहे छान कर पिये ।

अथवा उसी कुत्ते की जीभ काटे क उसकी मसम घाव पर छिड़के बांधे
मर जायगा और उसका विस असर न करेगा ।

दवा कि जो कुत्ते के काटे हुए की चन्मत्तावस्था में है, अस्यन्त गुण
करती है । तकिनताई वातलाती कि एक जानवर है जो वर्षी ऋतु में होता है
एक दिबिया में बंद करके सुखा कर एक चने के प्रमाण गुह में छपेट कर
छिड़ावे ।

अथवा अमूर की लकड़ों की खाक सिरके में मिलाकर लगावे ।

द्वितीय औपधि इंगलैण्डिय वैधों की प्रसाई जो कुत्ते के काटे हुए को
अवश्य गुण करे । महीन बनात लाल रंग की छेकर चने के प्रमाण सात
हुकड़े करके गुह में मिलाकर सात गोखियां बना कर खाय ।

अथवा पछने और बहुत कथिर निकालाने के बाद राई कूट कर लेप करे ।

अथवा आख का दूध घाव पर लगावे ।

अथवा उसी कुत्ते के बाल कि जिसने काटा-हो जलाकर चने की
मसम घाव पर लगावे ।

अथवा सर्वांरिश कलौजी खाना गुण करता है ।

अथवा मूली के पत्ते गरम करके बांधे ।

अथवा चूड़ की मेगनी पीस कर लगावे ।

अथवा सम्राट्ट के पत्ते पीसकर लेप करे ।

अथवा बाजरे का फूल जो बालों पर होता है एक मांशे गुह में छपेट
कर गोखियां बदा कर प्रति दिन खाय ।

अथवा तीन दोनो चार माश कलौजी अर्द्धोष्ण जल के साथ तीन
दिवस फांके ।

गोली कि चूड़े के विष को दूर करे । सिरस के बीज, नीम के पत्ते,
जला के बीजों की मिगी परावर गौमूत्र में पीस कर गोखियां बना कर
बाछत काल पर रमक कर लगावे और गौ की चर्बी घर में लगावे सब मूमे
भाग जाय ।

औपधि कि मनुष्य के काटने के विष को दूर करे गोभी के पत्ते शरद
में पीम कर लेप कर ।

दवा कि बिस्ती के काटे को गुणदायक है काले सिद्ध जल में पीसकर मके । अथवा पीदीना खाद्य और लप भी करे ।

दवा कि कनखजूरे के विष को दूर करे मीठा तेल दीपक में जलावे जलने के प्रस्ताव जा शप रहे लेकर कनखजूरे के काटे पर मर्दन करे ।

औपधि जींक के घाव को जो पकनाय गुण करे पोस्त के दाने पीस कर लेप कर ।

अथवा प्याज, लहसन पीस के लगाव ।

दवा कि बदर के विष को दूर करे सुर्दासग लवण जल में पीस कर लेप करे और कल्लोनी तथा शरद लगावे कि घाव खुल्लारह और प्याज का छेप भी गुण करता है । औपधि मच्छर दूर करने को घोंड़े की पूछ व घाल दवाँज पर लटकाने तो मच्छर कम आवे और सुसी तथा गुग्गुल और गंधक और धारहसींगे के सींग की धूनी से मच्छर भागजाते हैं ॥ इति ॥



हमारे यहां ज्योतिष, वैद्यक, वेद, वेदान्त इत्यादि बम्बई, कलकत्ता, लखनऊ, काशी, मथुरा, आगरा अनेक जगह को छपी हुई सर्व प्रकार की पुस्तकें विक्रियार्थ प्रस्तुत रहती हैं और (काम छपाई का भी) सुस्ता व बाज्जित समय पर किया जाता है जिन महाशयों को पुस्तकें लेने तथा किसी कामके छपवाने की आवश्यकता हो वो इस प्रेस को सूचित करें। हमी प्रकार किसी रोग की वैद्यक दवा लेने की आवश्यकता हो तो पत्र द्वारा रोग का हाल लिखकर हमसे बात चीत करें आशा है कि शीघ्र गुण दिखानेवाली औषधि उनको भेजी जायगी इसके उपरान्त हर प्रकार का मथुराजी का सामान भी हमारे यहां से चौथाई रुपया पेशगी आनेपर वी पी. द्वारा भेजा जाता है जो मात्र मगाना हो अवश्य हमसे मंगाईये।

निवेदक—

राधारमण भार्गव

प्राक्तिक

रामनारायण प्रेस

मथुरा ।

सुश्रुत संहिता ।

माधुरी भाषा टीका चित्र सञ्चक-पद ग्रन्थ आयुर्वेद की एक मुख्य अङ्क है इसकी प्रशंसा जगद्विख्यात है इसलिये अहा प्रशंसा करना उचित है इसकी भाषा न होने से नागरी पाठकों को इसकी योग्यता मालूम करना कठिन था मने इसकी टीका माधुरी भाषा (प्रजभाषा) में कराकर अत्यन्त सरलता से छपाया है इसको पास रखने से कम पढ़ा हुआ मनुष्य भी वैद्य विद्यामें निपुण (चतुर) हो सकता है इसमें शरीर के रोग व रोग होने के कारण व चिकित्सा अनेक माति से सरलता पूर्वक वर्णित है मुख्य प्रति पुस्तक केषल ४॥ मात्र है महसूत डाक अलग ।

इलाजुलगुर्वा भाषा ।

आप लोगों ने इस ग्रन्थ का नाम तो सुनाही होगा । यथा नाम तथा गुण की बात हममें है अमीर आवसों तो बड़े बड़े डाक्टर, इकीम और वैद्यों का भेट हुआ सकते हैं, पर शरीर जिन्हें पेट भरने तकफा भी ठिकाना नहीं है क्या करें, भगवान की इसी प्यारी सृष्टि के लिये यह ग्रन्थ है, इस में कौबियोंकी क्रीमत्त के लुनखे हैं जो तीर की तरह काम देते हैं एक २ रोग पर छो ९ पचास पचास लुसख हैं जिनके तैयार करने के लिय बहुत से आवसियों की आवश्यकता नहीं पड़ती इस पुस्तक को एक २ प्रति हर गृहस्थों को अपने पास रखना अवित है पुस्तक माटे चिकित्सा कायज्ञ तथा मोटे अङ्गुरों में छपी हुई है । धितायती कपड़े की जिल्द म् १॥

कौतुकरत्न मञ्जुष (इन्द्रजात) सादा जिल्द १॥

मुन्शी रामचन्द्रजी प्रसिद्ध सुश्राधिस समर्पित इनमें बर्थाकरण, उद्याटन, आकषेण आदि अनेक गुण यत्र मञ्जुष लिखा है सिधाय इन कामनाओं के सय मित्र दायक और भी अनेक बातें लिखी हैं यह ग्रन्थ इस काल में कदपतक क समान फल देता है प्रति पुस्तक डाक महसूत व फ्रीम मनिआइट सहित १॥ या परन्तु अब हमने रियायती मूल्य १) दिया कर दिया है डाक महसूत अलग ।

प्रेम सागर ।

भगवान धारण की अद्भुत कीलाओं का विस्तार सहित वणन इन पुस्तक में किया गया है स्था ९ पर सुन्दर चित्र भी हैं छपाई माटे कायज्ञ पर चम्पक का धार की है मूल्य २)

सटीक सातोंकाण्ड

श्रीरामलीला रामायण ।

यह ग्रन्थ भा रामलीलापुराणी प्रत्येक प्रेमी जगों के लिये अमूल्य रत्न है, इस गृहस्थों पैरागों व अन्य सय साधारण अर्थोंमें स करे क्यों न पढ़ सबका काम स्याद हाकीडे, सय बड़ा सरल और सरल है मुक्तता छत रामायण का छात्र २ वापाद दादा सय गवा प्रसंग २ पर पढ़ नवीया इत्यादि सया उछमता से समझाये गये हैं इसका ध्येयार्थ पड़े २ गदा भाषाओं का सुग २ रत्न और माधुरी चित्रा इतक सादा मौजूद हैं इसकी भाषा सुक मवान व कदम रामलीला के मों पाठों के लिय पद मक जो पुस्तक है मूल्य प्रति पुस्तक १॥ २०० पय प्रसंग

सूचना ।

रामनारायण प्रेस मथुरा

में

हर प्रकार की छपाई का काम सादा व रंगीन उर्दू, हिन्दी, अंगरेजी, संस्कृत, गुजराती, बगला, मरहटी आदि सब ही भाषाओं में किताबी व जोषवर्क मसलन बड़े २ चित्र, नकशे, पचाग, वाल नोटिस, शादी व दावत वगैरह के कार्ड (निमन्त्रणपत्र) लेथू व टाइप में निहायत खूबसूरती व सफाई और शुद्धताके साथ नियत समय पर किया जाता है विशेष तारीफ़ करने की आवश्यकता नहीं ।

हमको पूर्ण आशा है कि जो महाशय इस प्रेस से एक मरतबा काम करा लेते हैं उनको फिर किसी दूसरे प्रेस में जाने की जरूरत नहीं रहती ।

एक दफ़े बतौर नमूने के कुछ काम भेजकर परीक्षा अवश्य करियेगा ।

रामनारायण प्रेस सम्बन्धी पुस्तकालय जो भार्गव बुकडिपो के नाम से प्रसिद्ध है जिसमें सर्व प्रकार की बम्बई, लखनऊ, काशी, इलाहाबाद वगैरह की धार्मिक व स्कूली पुस्तकें हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी भाषाओं की व स्टेशनरी का हर प्रकार का सामान हैंडिल, पेन-सिल, टवात रघड, स्याही, ड्राइंगबक्स, लिफाफे, लेटरपेपर और हर एक तरह का कागज व मथुराजी की प्रसिद्ध देसी दस्तकारी की वस्तुएँ सस्ते मूल्य पर मिलती हैं ।

निवेदक-राधारमण भार्गव मैनेजर

रामनारायण प्रेस मथुरा ।

